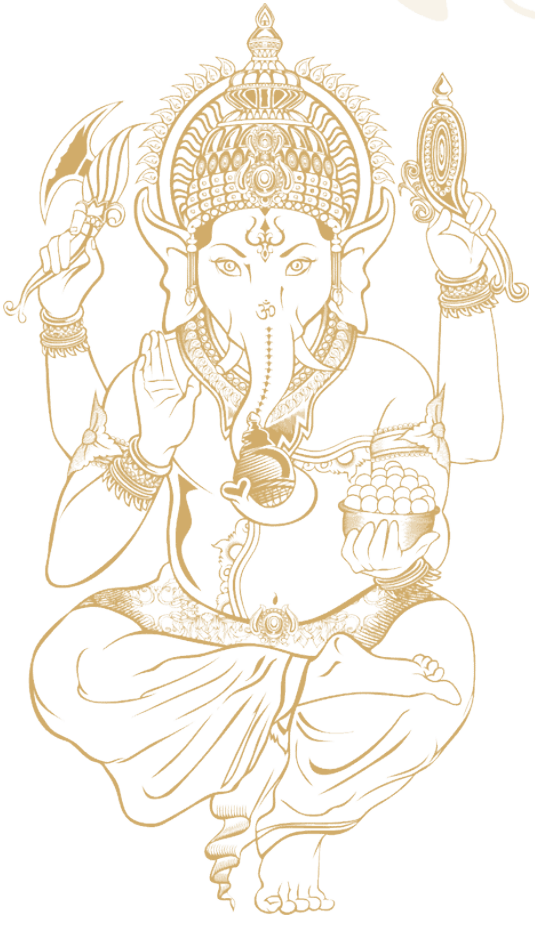

Balkrishan Sharma

09 Apr 1962

11:30 AM

Simla

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 121740701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**09/04/1962**
दिन	सोमवार
जन्म समय	**11:30:00 घंटे**
इष्ट	13:40:59 घटी
स्थान	**Simla**
राज्य	Himachal Pradesh
देश	India

अक्षांश	31:06:00 उत्तर
रेखांश	77:10:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	11:08:40 घंटे
वेलान्तर	-00:01:45 घंटे
साम्पातिक काल	00:16:42 घंटे
सूर्योदय	06:01:36 घंटे
सूर्यास्त	18:45:07 घंटे
दिनमान	12:43:31 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	25:35:06 मीन
लग्न के अंश	23:46:05 मिथुन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मिथुन - बुध
राशि-स्वामी	**वृष - शुक्र**
नक्षत्र-चरण	**मृगशिरा - 1**
नक्षत्र स्वामी	मंगल
योग	सौभाग्य
करण	बालव
गण	देव
योनि	सर्प
नाड़ी	मध्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	वे-वेद
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मेष

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1884	चैत्र	19
पंजाबी	संवत : 2018	चैत्र	27
बंगाली	सन् : 1368	चैत्र	26
तमिल	संवत : 2018	पंगुनी	27
केरल	कोल्लम : 1137	मीनम	26
नेपाली	संवत : 2018	चैत्र	27
चैत्रादि	संवत : 2019	चैत्र	शुक्ल 5
कार्तिकादि	संवत : 2019	चैत्र	शुक्ल 5

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 5
तिथि समाप्ति काल _____: 12:37:06
जन्म तिथि _____: 5
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: रोहिणी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 08:30:54 घंटे
जन्म योग _____: मृगशिरा
सूर्योदय कालीन योग _____: सौभाग्य
योग समाप्ति काल _____: 16:05:05 घंटे
जन्म योग _____: सौभाग्य
सूर्योदय कालीन करण _____: बालव
करण समाप्ति काल _____: 12:37:06 घंटे
जन्म करण _____: बालव
भयात _____: 07:27:46
भभोग _____: 60:25:33
भोग्य दशा काल _____: मंगल 6 वर्ष 1 मा 14 दि

घात चक्र

मास _____: मार्गशीर्ष
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: हस्त
योग _____: शुक्ल
करण _____: शकुनि
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: वृष
सूर्य _____: वृश्चिक
चन्द्र _____: कन्या
मंगल _____: धनु
बुध _____: कन्या
गुरु _____: मकर
शुक्र _____: मकर
शनि _____: तुला
राहु _____: मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

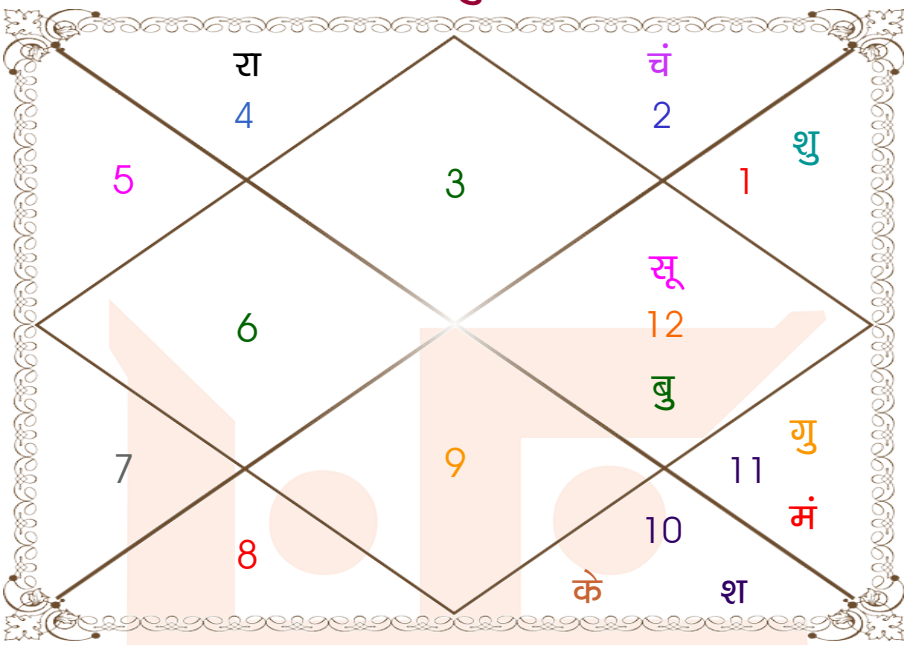

चन्द्र कुंडली

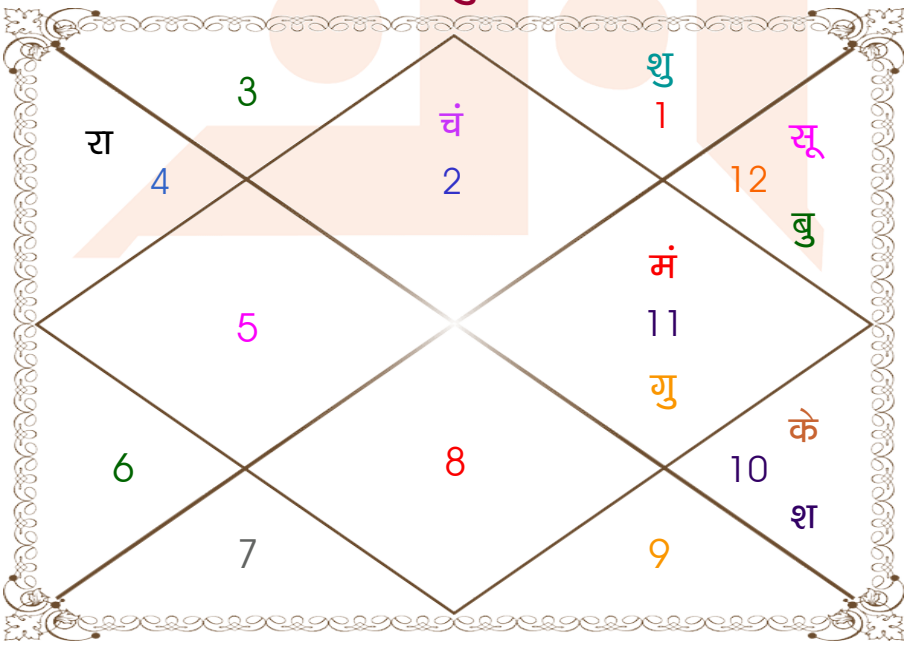

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

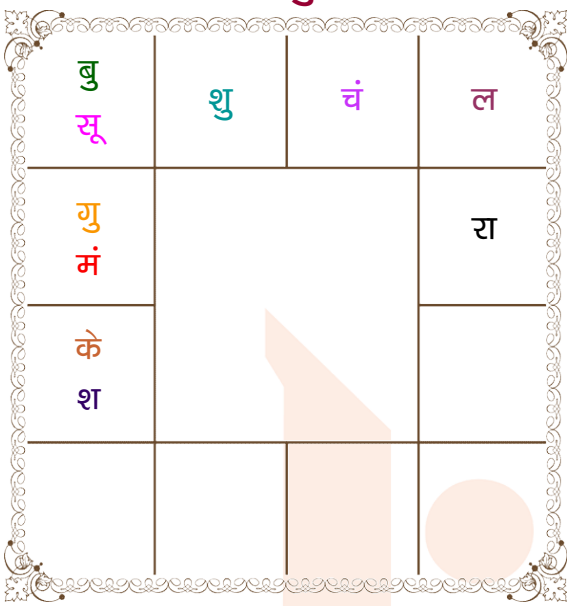

लग्न कुंडली

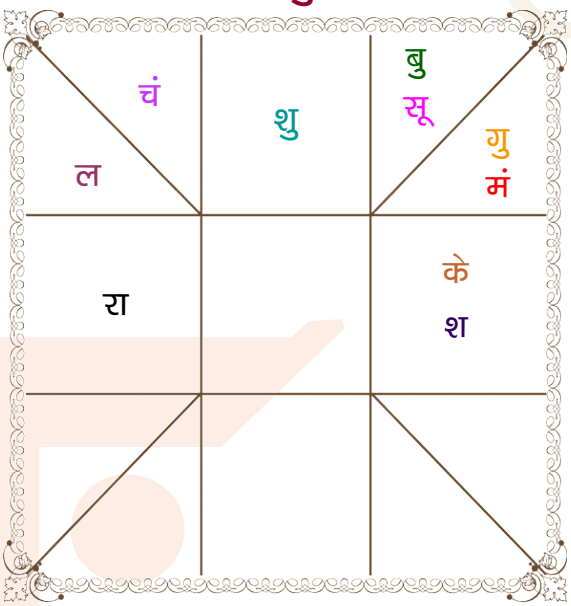

विंशोत्तरी
मंगल 6वर्ष 1मा 14दि

मंगल

09/04/1962

23/05/2081

मंगल	23/05/1968
राहु	23/05/1986
गुरु	23/05/2002
शनि	23/05/2021
बुध	23/05/2038
केतु	23/05/2045
शुक्र	23/05/2065
सूर्य	24/05/2071
चन्द्र	23/05/2081

योगिनी
संकटा 6वर्ष 11मा 29दि

उल्का

07/04/2020

08/04/2026

उल्का	07/04/2021
सिद्धा	08/06/2022
संकटा	08/10/2023
मंगला	07/12/2023
पिंगला	07/04/2024
धान्या	07/10/2024
भ्रामरी	07/06/2025
भद्रिका	08/04/2026

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	23:46:05	309:50:52	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	शनि	---
सूर्य			मीन	25:35:06	00:58:57	रेवती	3	27	गुरु	बुध	राहु	मित्र राशि
चंद्र			वृष	25:00:22	13:25:08	मृगशिरा	1	5	शुक्र	मंगल	राहु	मूलत्रिकोण
मंगल			कुंभ	28:32:22	00:46:48	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	सम राशि
बुध		अ	मीन	18:19:30	01:58:06	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	नीच राशि
गुरु			कुंभ	09:40:47	00:12:04	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	सम राशि
शुक्र			मेष	13:11:48	01:13:55	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	बुध	सम राशि
शनि			मक	16:37:36	00:03:56	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	शनि	स्वराशि
राहु	व		कर्क	22:27:18	00:05:14	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	चंद्र	शत्रु राशि
केतु	व		मक	22:27:18	00:05:14	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष	व		सिंह	03:20:39	00:01:18	मघा	2	10	सूर्य	केतु	सूर्य	---
नेप	व		तुला	19:25:27	00:01:27	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	मंगल	---
प्लूटो	व		सिंह	14:34:53	00:01:06	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	---
दशम भाव			मीन	11:12:58	--	उ०भाद्रपद	--	26	गुरु	शनि	चंद्र	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:19:35

लग्न-चलित

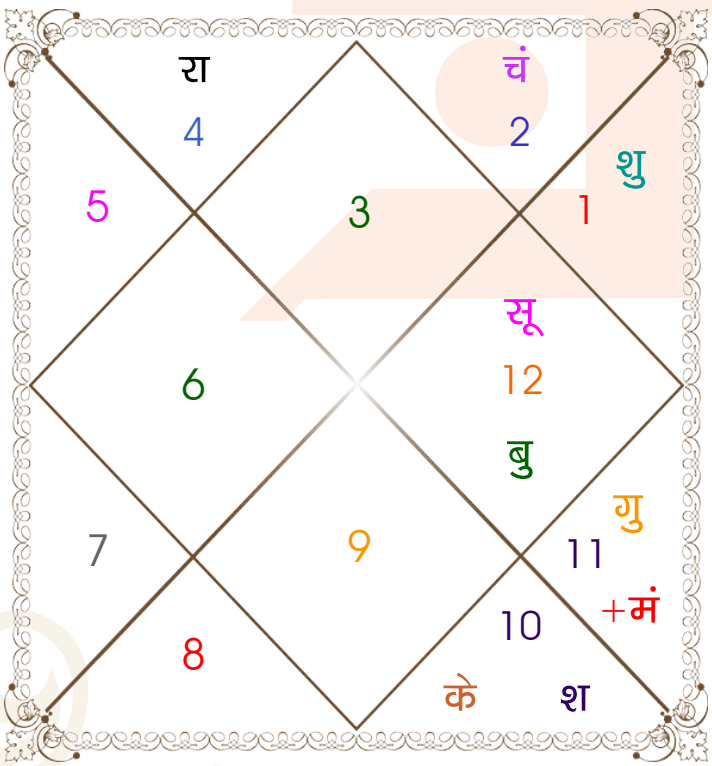

चन्द्र कुंडली

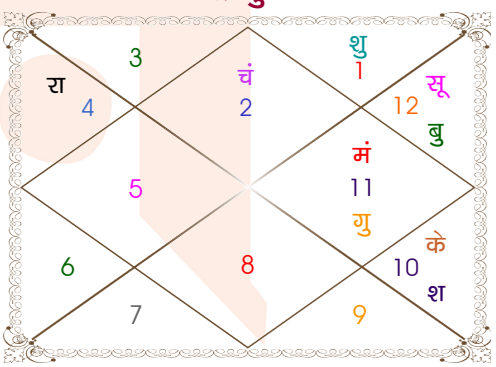

नवमांश कुंडली

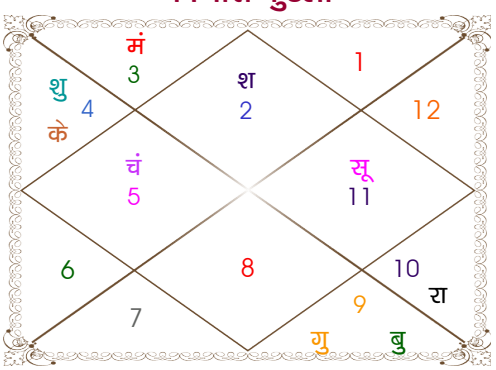

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मिथुन	06:40:34	मिथुन	23:46:05
2	कर्क	06:40:34	कर्क	19:35:03
3	सिंह	02:29:32	सिंह	15:24:00
4	सिंह	28:18:29	कन्या	11:12:58
5	कन्या	28:18:29	तुला	15:24:00
6	वृश्चिक	02:29:32	वृश्चिक	19:35:03
7	धनु	06:40:34	धनु	23:46:05
8	मकर	06:40:34	मकर	19:35:03
9	कुम्भ	02:29:32	कुम्भ	15:24:00
10	कुम्भ	28:18:29	मीन	11:12:58
11	मीन	28:18:29	मेष	15:24:00
12	वृष	02:29:32	वृष	19:35:03

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	23:46:05
2	कर्क	15:55:01
3	सिंह	10:59:15
4	कन्या	11:12:58
5	तुला	16:16:47
6	वृश्चिक	21:48:59
7	धनु	23:46:05
8	मकर	15:55:01
9	कुम्भ	10:59:15
10	मीन	11:12:58
11	मेष	16:16:47
12	वृष	21:48:59

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी

चलित कुंडली

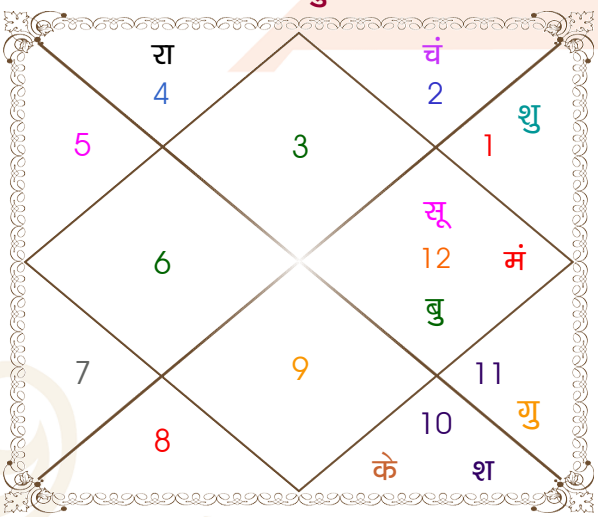

भाव कुंडली

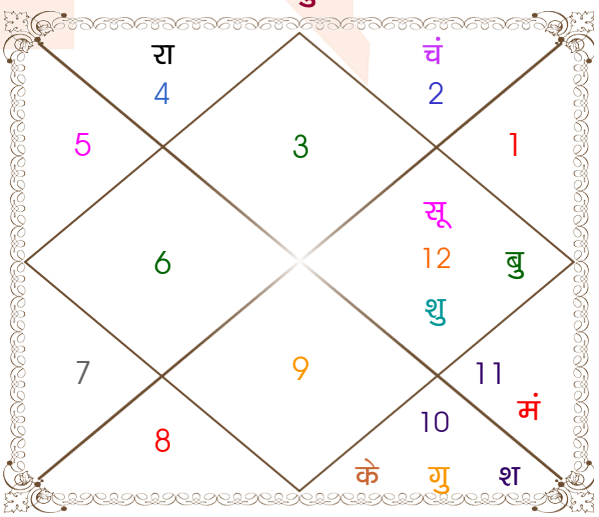

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	बाल	मुदित	भोजन	12.27	55 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	बाल	स्वस्थ	गमन	15.80	26 %
मंगल	आत्मा	भ्रातृ	मृत	शान्त	निद्रा	4.98	65 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	कुमार	विकल	भोजन	0.00	46 %
गुरु	कलत्र	धन	कुमार	शान्त	भोजन	1.62	47 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	युवा	निपीदित	भोजन	8.74	36 %
शनि	पुत्र	आयु	युवा	स्वस्थ	कौतुक	3.89	29 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	खल	भोजन	0.00	77 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	खल	नेत्रपाणि	0.00	77 %
कुल						47.29	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी

चलित कुंडली

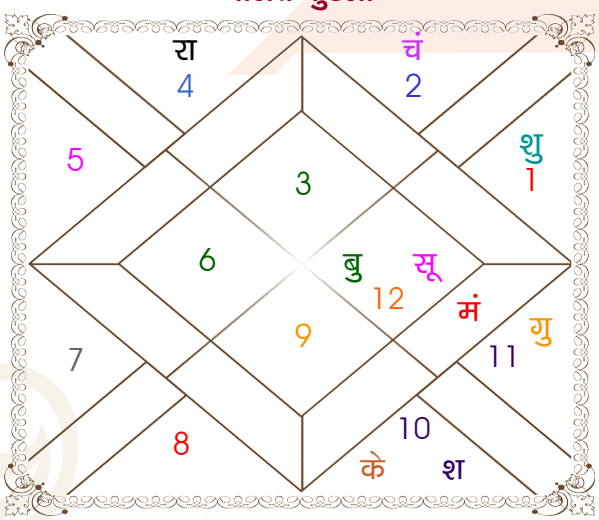

लग्न-चलित

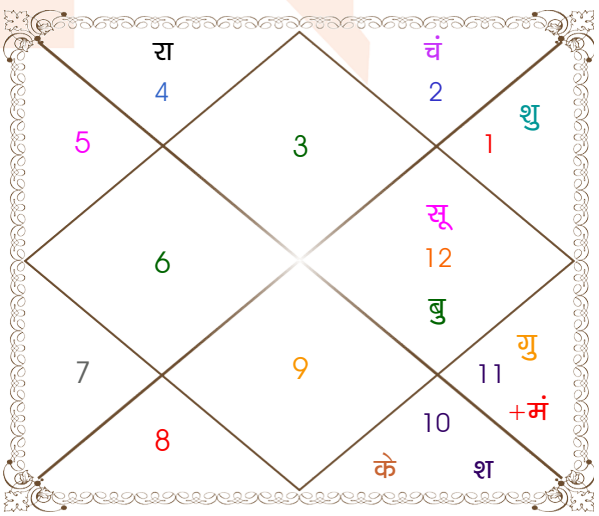

सुदर्शन चक्र

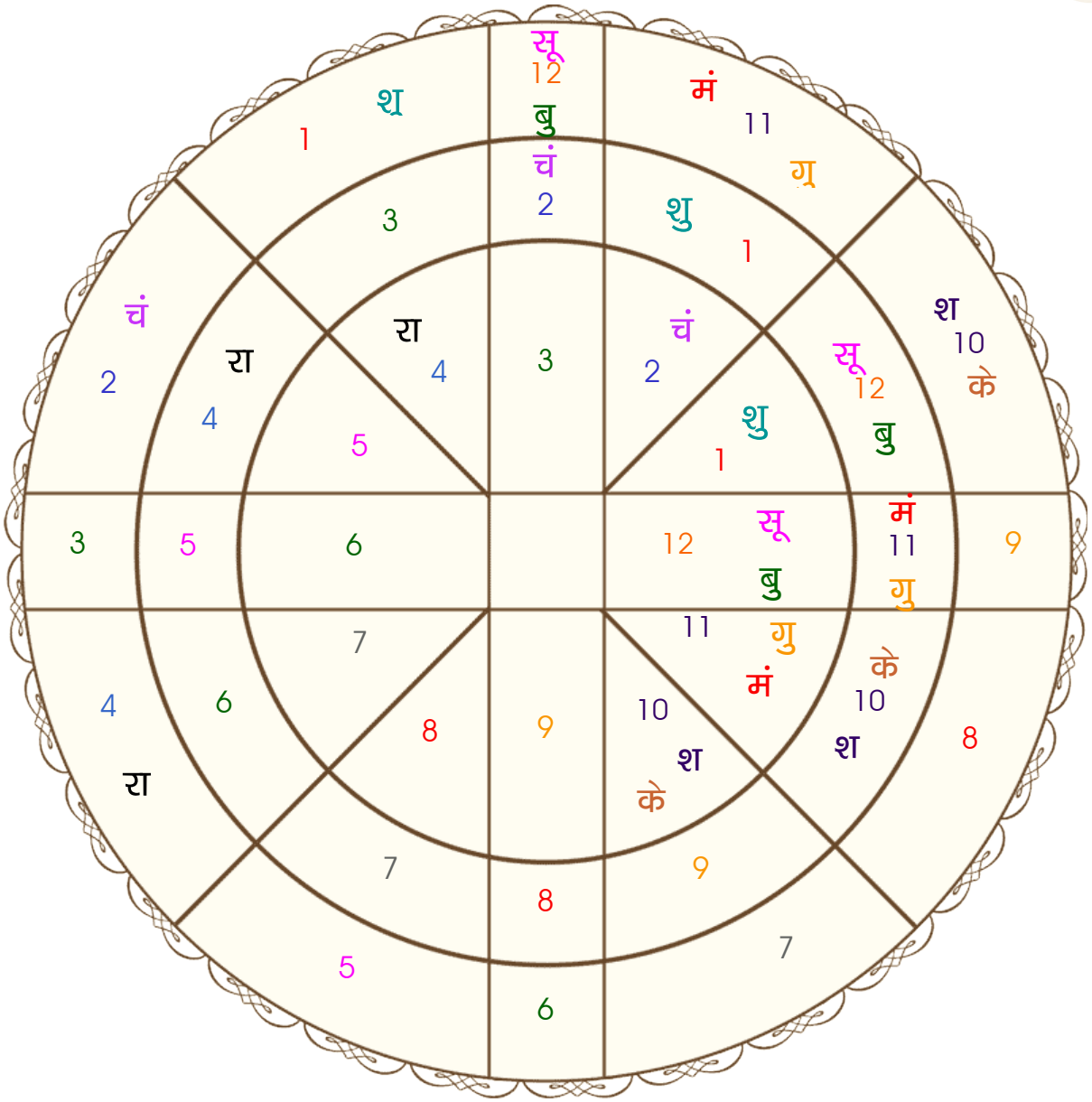

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : मंगल 6 वर्ष 1 मास 14 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मीन	25:35:06	गुरु	बुध	राहु	शुक्र
चंद्र		वृष	25:00:22	शुक्र	मंगल	राहु	बुध
मंगल		कुंभ	28:32:22	शनि	गुरु	शुक्र	बुध
बुध		मीन	18:19:30	गुरु	बुध	बुध	शनि
गुरु		कुंभ	09:40:47	शनि	राहु	गुरु	शुक्र
शुक्र		मेष	13:11:48	मंगल	केतु	बुध	शनि
शनि		मक	16:37:36	शनि	चंद्र	शनि	शुक्र
राहु	व	कर्क	22:27:18	चंद्र	बुध	चंद्र	राहु
केतु	व	मक	22:27:18	शनि	चंद्र	शुक्र	बुध
हर्ष	व	सिंह	03:20:39	सूर्य	केतु	सूर्य	शनि
नेप	व	तुला	19:25:27	शुक्र	राहु	मंगल	गुरु
प्लूटो	व	सिंह	14:34:53	सूर्य	शुक्र	शुक्र	गुरु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मिथु	23:46:05	बुध	गुरु	शनि	गुरु
2	कर्क	15:55:01	चंद्र	शनि	गुरु	शुक्र
3	सिंह	10:59:15	सूर्य	केतु	शनि	राहु
4	कन्या	11:12:58	बुध	चंद्र	मंगल	राहु
5	तुला	16:16:47	शुक्र	राहु	शुक्र	राहु
6	वृश्चि	21:48:59	मंगल	बुध	सूर्य	गुरु
7	धनु	23:46:05	गुरु	शुक्र	शनि	गुरु
8	मक	15:55:01	शनि	चंद्र	शनि	शनि
9	कुंभ	10:59:15	शनि	राहु	शनि	बुध
10	मीन	11:12:58	गुरु	शनि	चंद्र	राहु
11	मेष	16:16:47	मंगल	शुक्र	चंद्र	चंद्र
12	वृष	21:48:59	शुक्र	चंद्र	शुक्र	गुरु

के.पी. अयनांश : 23:19:34

फॉरच्युना : सिंह 23:11:21

लग्न कुंडली

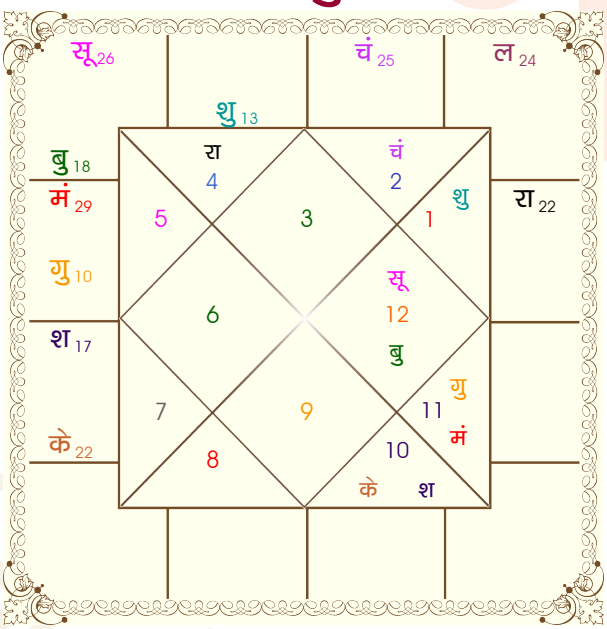

भाव कुंडली

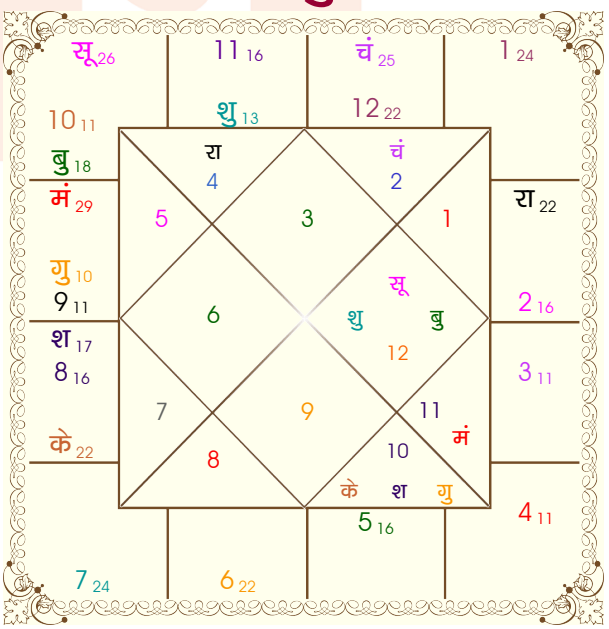

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- बुध, राहु-
2	चंद्र- गुरु, शनि- राहु, केतु-
3	सूर्य-
4	सूर्य- बुध, राहु-
5	शुक्र-
6	चंद्र- मंगल-
7	मंगल- गुरु-
8	मंगल, गुरु, शुक्र, शनि, केतु,
9	चंद्र, मंगल, शनि-
10	सूर्य+ मंगल- बुध+ गुरु- शुक्र, राहु,
11	चंद्र- मंगल-
12	चंद्र, शुक्र- शनि, केतु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 3- 4- 10+
चंद्र	2- 6- 9, 11- 12,
मंगल	6- 7- 8, 9, 10- 11-
बुध	1, 4, 10+
गुरु	2, 7- 8, 10-
शुक्र	5- 8, 10, 12-
शनि	2- 8, 9- 12,
राहु	1- 2, 4- 10,
केतु	2- 8, 12,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	गुरु
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	मंगल
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	चन्द्र
लग्न अन्तर स्वामी	शनि
राशि अन्तर स्वामी	राहु

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	सू बु रा	बु
2	गु	रा	श के	चं
3	--	--	--	सू
4	--	--	सू बु रा	बु
5	--	--	--	शु
6	--	--	चं	मं
7	--	--	मं	गु
8	मं शु	गु श के	--	श
9	चं	मं	--	श
10	सू बु रा	सू बु शु	मं	गु
11	--	--	चं	मं
12	श के	चं	--	शु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	3	---	मीन	10
चंद्र	2	4,8,12	वृष	12
मंगल	6,11	---	कुम्भ	9
बुध	1,4	6	मीन	10
गुरु	7,10	1	कुम्भ	8
शुक्र	5,12	7,11	मेष	10
शनि	8,9	2,10	मकर	8
राहु	---	5,9	कर्क	2
केतु	---	3	मकर	8

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	1,4	6	10	---	5,9	2
चंद्र	6,11	---	9	---	5,9	2
मंगल	7,10	1	8	5,12	7,11	10
बुध	1,4	6	10	1,4	6	10
गुरु	---	5,9	2	7,10	1	8
शुक्र	---	3	8	1,4	6	10
शनि	2	4,8,12	12	8,9	2,10	8
राहु	1,4	6	10	2	4,8,12	12
केतु	2	4,8,12	12	5,12	7,11	10

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	355.59	55.01	328.54	348.33	309.68	13.20	286.63	112.45	292.45	123.34	199.42	134.58
सूर्य	--	तृती	--	युति	--	--	--	पंच	--	--	--	--
355.59	0.00	2.97	0.00	7.25	0.00	0.00	0.00	2.05	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	--	--	तृती	--	--	--	--
55.01	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.36	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	4था	--	--	--	अष्ट	--	--	--	--	--	सप्त
328.54	0.00	9.32	0.00	0.00	0.00	0.86	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.09
बुध	युति	--	--	--	--	--	--	पंच	--	अष्टां	--	--
348.33	7.25	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.41	0.00	1.00	0.00	0.00
गुरु	अष्ट	5वां	--	--	--	तृती	--	--	--	सप्त	9वां	सप्त
309.68	0.15	0.34	0.00	0.00	0.00	1.82	0.00	0.00	0.00	7.88	5.23	8.71
शुक्र	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	सप्त	पंच
13.20	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.95	2.81
शनि	3रा	--	--	3रा	--	चतु	--	सप्त	युति	--	10वा	--
286.63	5.91	0.00	0.00	9.84	0.00	1.87	0.00	8.19	8.19	0.00	9.57	0.00
राहु	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	सप्त	युति	चतु	--
112.45	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.19	0.00	10.00	4.17	2.10	0.00
केतु	तृती	पंच	--	तृती	--	--	युति	सप्त	--	सप्त	--	--
292.45	2.05	2.36	0.00	1.41	0.00	0.00	8.19	10.00	0.00	4.17	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	सप्त	--	--	युति	सप्त	--	--	युति
123.34	0.00	0.00	0.00	0.00	7.88	0.00	0.00	4.17	4.17	0.00	0.00	3.84
नेप	--	--	--	--	--	सप्त	चतु	--	चतु	--	--	--
199.42	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.95	2.23	0.00	2.10	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	सप्त	--	सप्त	--	--	--	--	युति	तृती	--
134.58	0.00	0.00	1.09	0.00	8.71	0.00	0.00	0.00	0.00	3.84	0.90	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	83.77	109.58	135.40	161.22	195.40	229.58	263.77	289.58	315.40	341.22	15.40	49.58
सूर्य	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
355.59	0.00	0.00	0.00	0.66	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.66	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
55.01	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.43	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.43
मंगल	पंच	--	--	सप्त	--	--	--	--	युति	युति	--	4था
328.54	0.95	0.00	0.00	2.41	0.00	0.00	0.00	0.00	1.94	2.41	0.00	5.92
बुध	चतु	पंच	--	--	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
348.33	0.44	2.84	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.35	0.00	2.84
गुरु	5वां	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--
309.68	0.95	0.00	8.26	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.26	0.00	0.22	0.00
शुक्र	--	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
13.20	0.00	0.00	2.51	0.00	9.73	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.73	0.00
शनि	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	चतु	पंच
286.63	0.00	9.52	0.00	0.00	9.92	0.00	0.00	9.52	0.00	8.44	2.85	2.14
राहु	--	युति	--	--	--	पंच	--	--	--	--	--	--
112.45	0.00	9.55	0.00	0.00	0.00	2.19	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	पंच
292.45	0.00	9.55	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.55	0.00	0.00	0.00	2.19
हर्ष	--	युति	युति	--	पंचा	--	--	सप्त	सप्त	--	--	--
123.34	0.00	1.29	3.03	0.00	1.00	0.00	0.00	1.29	3.03	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	--	--
199.42	0.00	0.00	0.00	0.00	9.13	0.00	1.26	3.00	1.48	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--
134.58	0.00	0.00	9.96	0.00	2.93	0.77	0.00	0.00	9.96	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	83.77	105.92	130.99	161.22	196.28	231.82	263.77	285.92	310.99	341.22	16.28	51.82
सूर्य	--	--	अष्टां	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
355.59	0.00	0.00	0.81	0.66	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.66	0.00	1.65
चंद्र	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
55.01	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.45	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.45
मंगल	पंच	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	4था
328.54	0.95	0.00	0.00	2.41	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.41	0.00	7.62
बुध	चतु	पंच	--	--	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
348.33	0.44	2.42	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.35	0.00	1.83
गुरु	5वां	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--
309.68	0.95	0.00	9.91	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.91	0.00	0.00	0.00
शुक्र	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
13.20	0.00	2.27	2.51	0.00	9.48	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.48	0.00
शनि	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	चतु	पंच
286.63	0.00	9.97	0.00	0.00	9.99	0.00	0.00	9.97	0.00	8.44	2.99	0.63
राहु	--	युति	--	--	--	पंच	--	--	--	--	--	--
112.45	0.00	7.75	0.00	0.00	0.00	2.96	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	पंच
292.45	0.00	7.75	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.75	0.00	0.00	0.00	2.96
हर्ष	--	--	युति	--	पंचा	--	--	--	सप्त	--	--	--
123.34	0.00	0.00	6.96	0.00	0.10	0.00	0.00	0.00	6.96	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	--	--
199.42	0.00	0.00	0.00	0.00	9.46	0.00	1.26	1.82	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	युति	--	तृती	--	--	--	सप्त	--	--	--
134.58	0.00	0.00	9.30	0.00	2.71	0.00	0.00	0.00	9.30	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

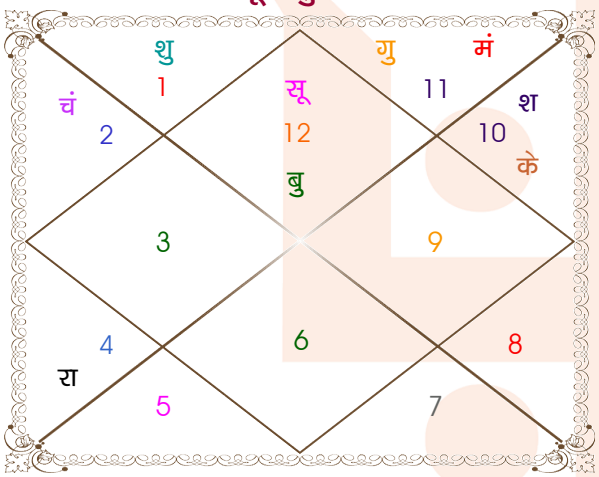

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

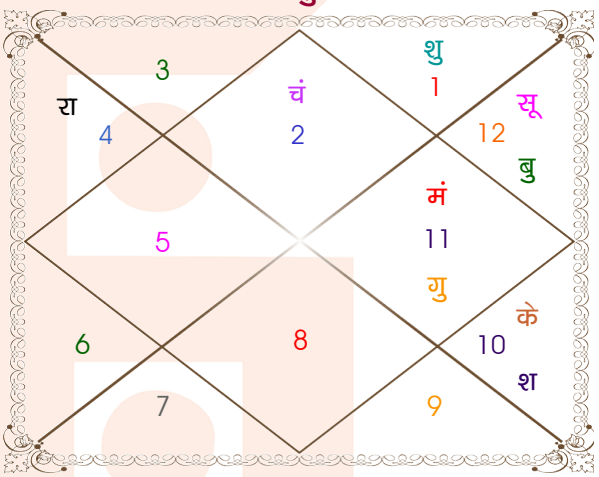

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

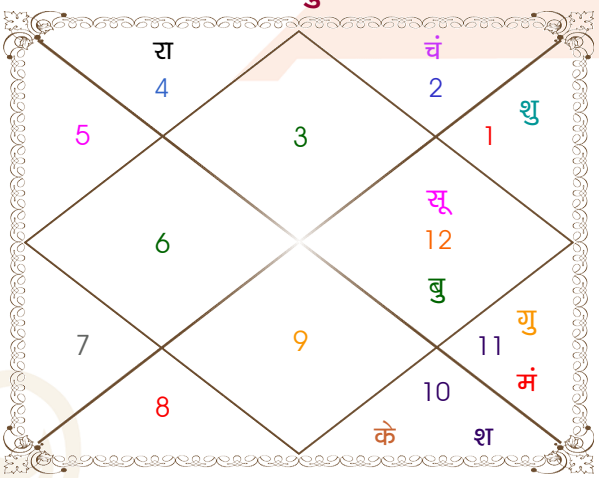

देह विचारः

होरा कुंडली

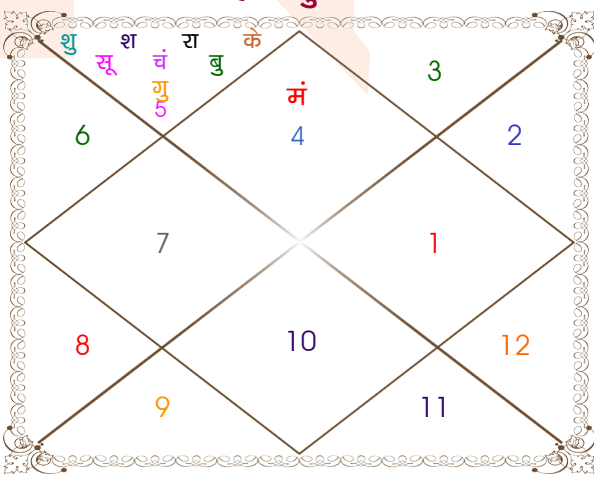

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

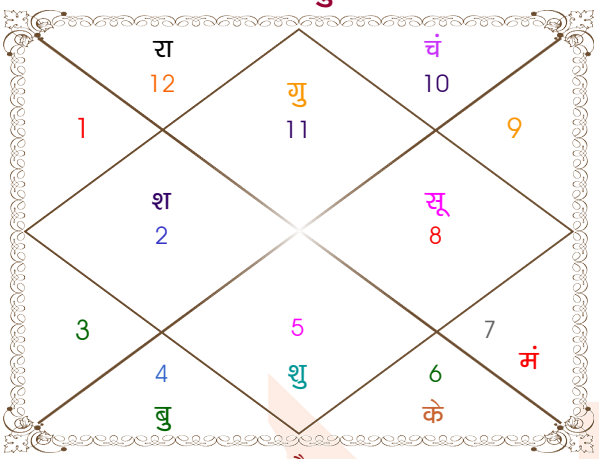

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

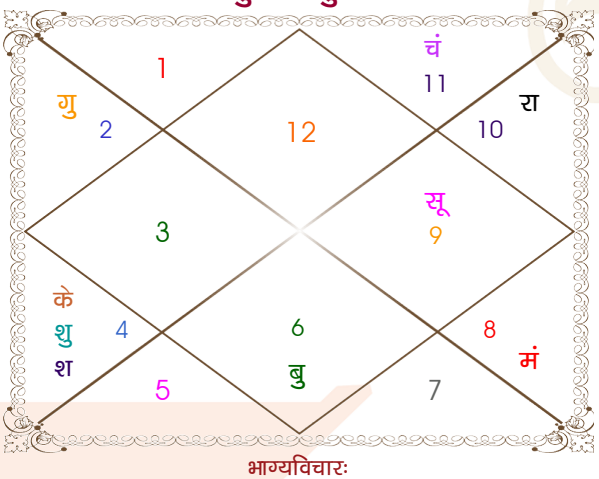

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

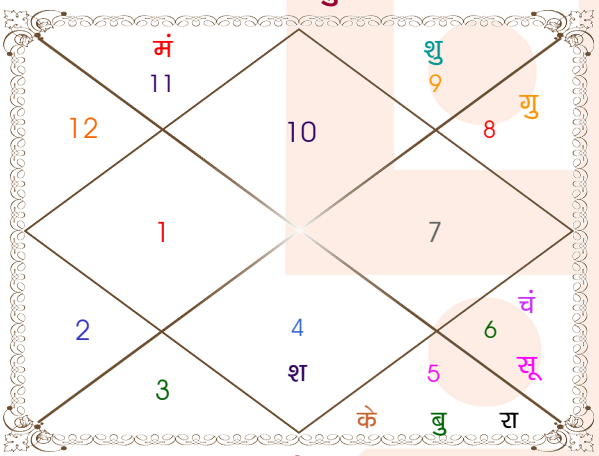

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

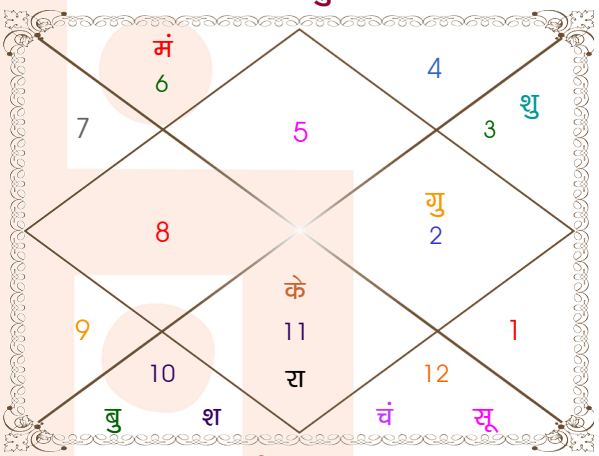

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

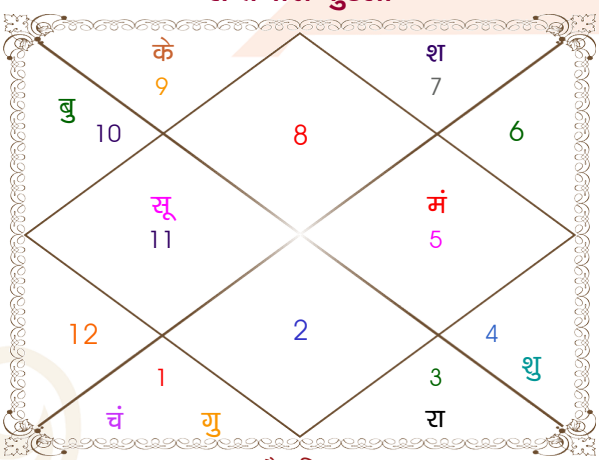

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

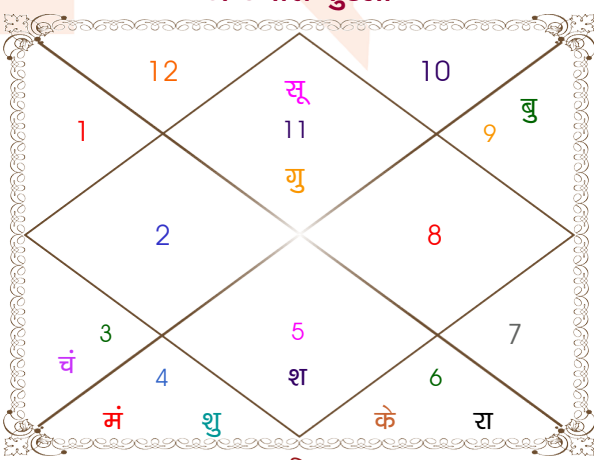

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

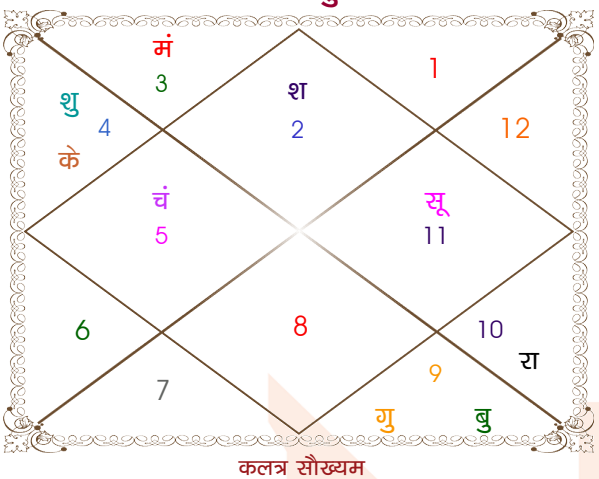

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

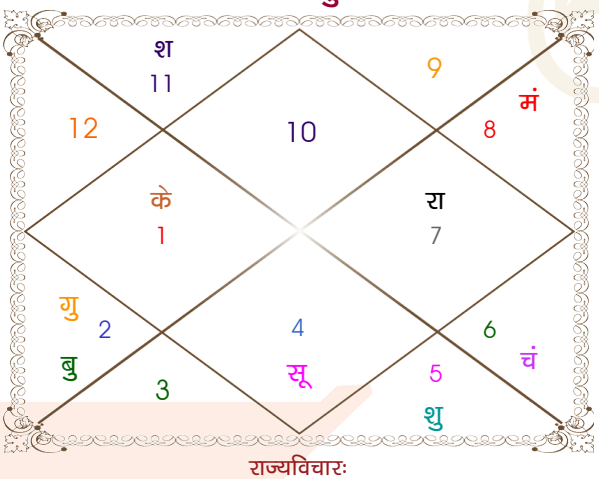

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

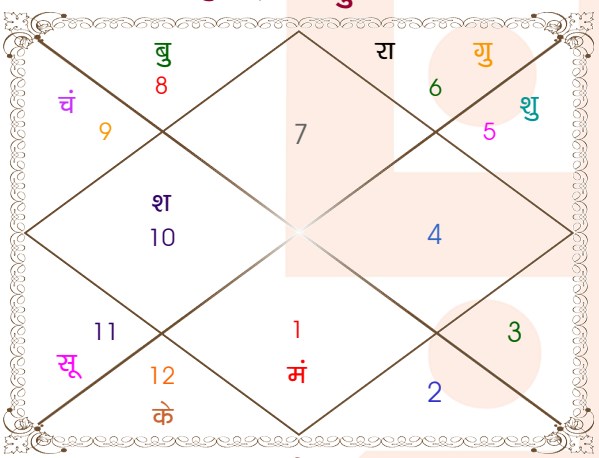

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

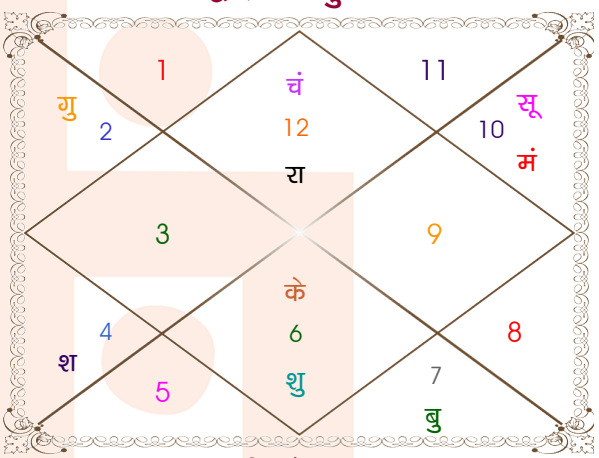

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

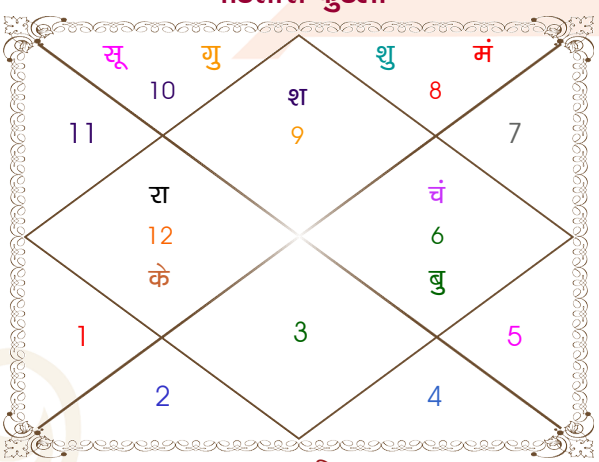

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

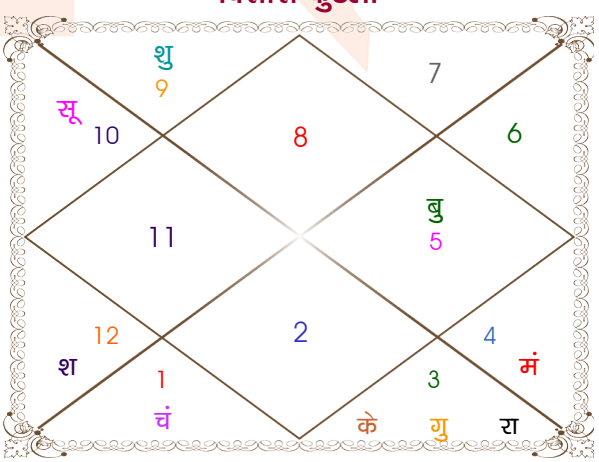

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

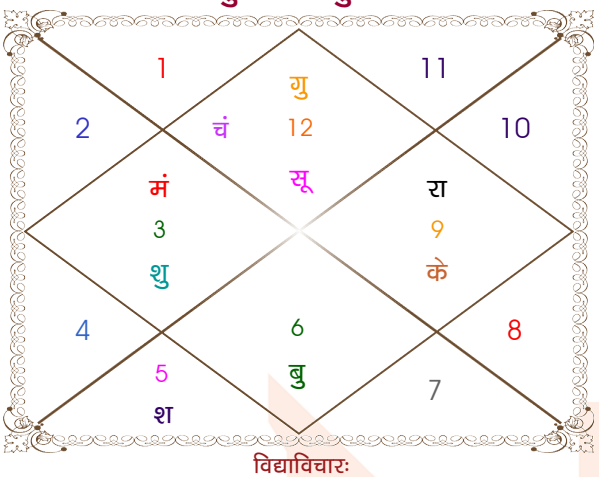

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

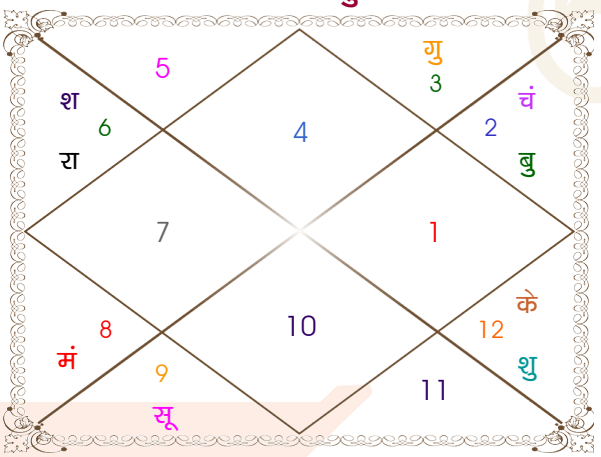

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

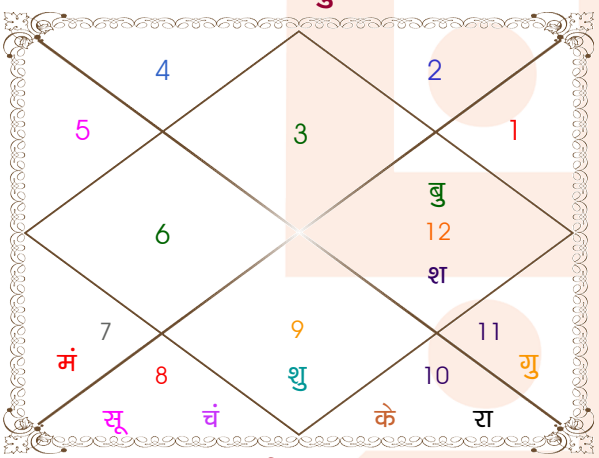

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

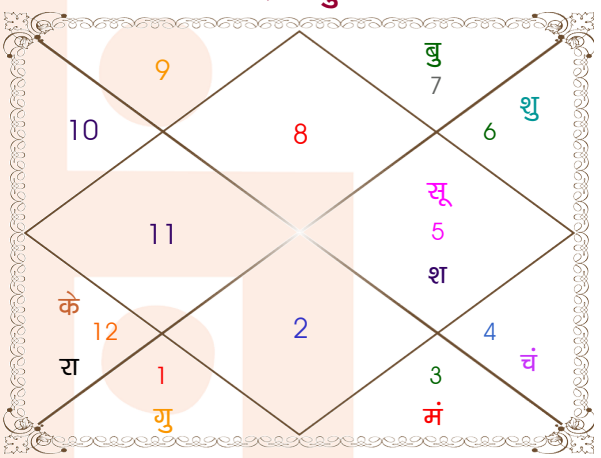

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

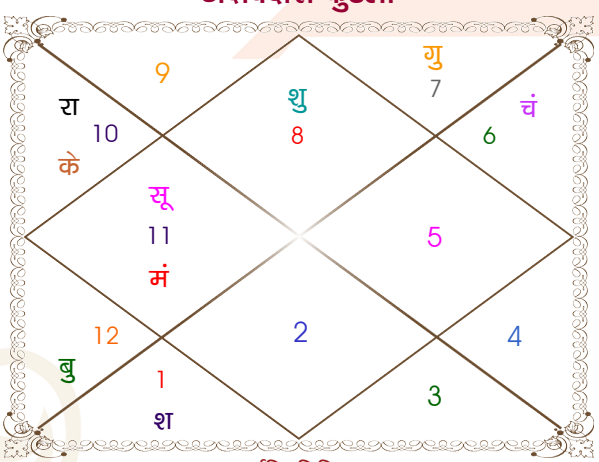

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

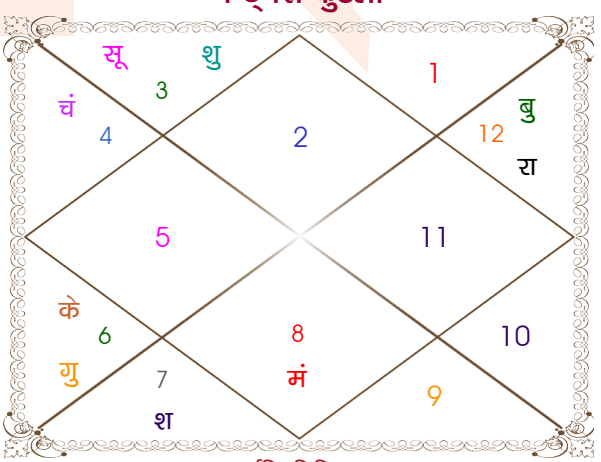

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मिथु	मीन	वृष	कुंभ	मीन	कुंभ	मेष	मक	कर्क	मक
होरा	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	कुंभ	वृश्चि	मक	तुला	कर्क	कुंभ	सिंह	वृष	मीन	कन्या
चतुर्थांश	मीन	धनु	कुंभ	वृश्चि	कन्या	वृष	कर्क	कर्क	मक	कर्क
सप्तमांश	वृश्चि	कुंभ	मेष	सिंह	मक	मेष	कर्क	तुला	मिथु	धनु
नवमांश	वृष	कुंभ	सिंह	मिथु	धनु	धनु	कर्क	वृष	मक	कर्क
दशमांश	मक	कर्क	कन्या	वृश्चि	वृष	वृष	सिंह	कुंभ	तुला	मेष
द्वादशांश	मीन	मक	मीन	मक	तुला	वृष	कन्या	कर्क	मीन	कन्या
षोडशांश	धनु	मक	कन्या	वृश्चि	कन्या	मक	वृश्चि	धनु	मीन	मीन
विंशांश	वृश्चि	मक	मेष	कर्क	सिंह	मिथु	धनु	मीन	मिथु	मिथु
चतुर्विंशांश	मीन	मीन	मीन	मिथु	कन्या	मीन	मिथु	सिंह	धनु	धनु
सप्तविंशांश	कर्क	धनु	वृष	वृश्चि	वृष	मिथु	मीन	कन्या	कन्या	मीन
त्रिंशांश	मिथु	वृश्चि	वृश्चि	तुला	मीन	कुंभ	धनु	मीन	मक	मक
खवेदांश	वृश्चि	सिंह	कर्क	मिथु	तुला	मेष	कन्या	सिंह	मीन	मीन
अक्षवेदांश	वृश्चि	कुंभ	कन्या	कुंभ	मीन	तुला	वृश्चि	मेष	मक	मक
षष्ट्यंश	वृष	मिथु	कर्क	वृश्चि	मीन	कन्या	मिथु	तुला	मीन	कन्या

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
चन्द्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
मंगल	1 ---	1 ---	4 गोपुर	6 केरल
बुध	0 ---	0 ---	1 ---	3 कुसुम
गुरु	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
शुक्र	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---
शनि	1 ---	2 किंसुक	4 गोपुर	4 नागपुष्प
राहु	0 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम
केतु	0 ---	1 ---	2 पारिजात	5 कन्दुक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	15.40	14.45	14.05	13.80	16.05	12.55	16.35	8.60	8.50
सप्तवर्ग	14.60	14.78	14.55	14.05	15.30	12.30	16.25	8.38	9.25
दशवर्ग	13.00	16.55	17.08	15.08	13.23	14.10	16.43	8.58	11.85
षोडशवर्ग	13.15	16.58	16.18	15.43	14.03	14.20	16.23	8.45	10.58

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
चंद्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु
राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु
केतु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम	अधिशत्रु	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	सम	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	सम	---	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	---	सम	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	55	53	50	1	12	55	31
सप्तवर्गज बल	120	139	113	98	113	83	122
ओजयुग्मक बल	15	15	30	15	30	15	0
केन्द्र बल	60	15	15	60	15	30	30
द्रेष्काण बल	0	15	0	15	15	0	15
कुल स्थान बल	250	236	207	189	184	182	198
कुल दिग्बल	55	25	56	28	15	11	52
नतोन्नत बल	56	4	4	60	56	56	4
पक्ष बल	40	80	40	40	20	20	40
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	0	15	0
मास बल	0	0	0	0	30	0	0
वार बल	0	45	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	60	0
अयन बल	79	1	26	36	16	48	53
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	235	130	70	136	182	198	98
कुल चेष्टाबल	0	0	12	5	15	47	23
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-15	-14	-5	-15	-5	-19	-7
कुल षट्बल	585	429	358	368	425	462	373
रूप षट्बल	9.8	7.1	6.0	6.1	7.1	7.7	6.2
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	2.0	1.2	1.2	0.9	1.1	1.4	1.2
संबंधित पद	1	5	4	7	6	2	3

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	44.76	32.30	24.32	2.31	13.29	50.85	26.83
कष्ट फल	10.67	17.17	22.14	57.02	46.54	8.26	32.63

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	368	429	585	368	462	358	425	373	373	425	358	462
भावदिग्बल	60	40	10	30	20	50	30	20	20	0	50	40
भावदृष्टि बल	68	31	36	52	87	24	2	-6	-5	-4	-4	38
कुल भाव बल	497	500	631	450	569	432	458	387	388	421	404	541
रूप भाव बल	8.3	8.3	10.5	7.5	9.5	7.2	7.6	6.5	6.5	7.0	6.7	9.0
संबंधित पद	5	4	1	7	2	8	6	12	11	9	10	3

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

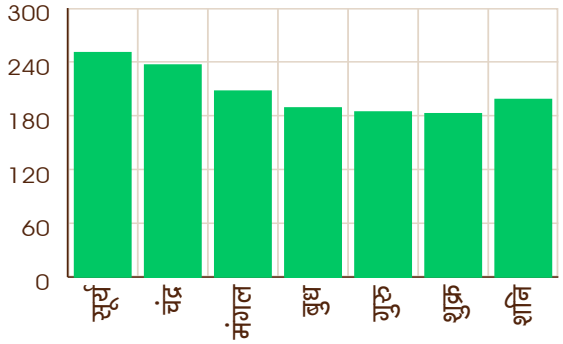

दिग्बल

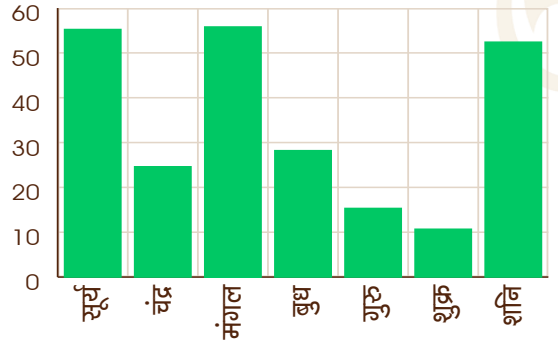

कालबल

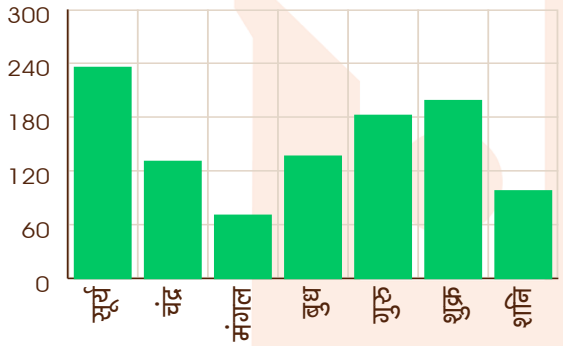

चेष्टाबल

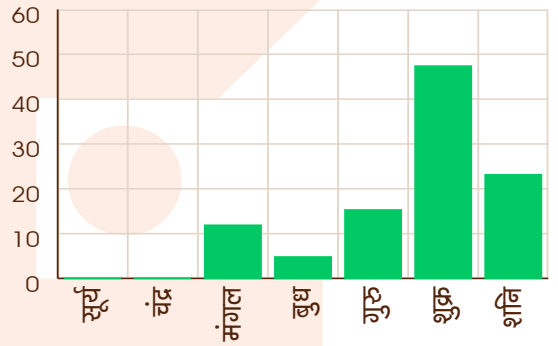

नैसर्गिक बल

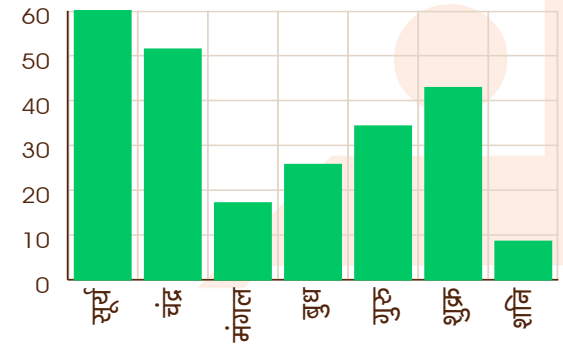

दृग्बल

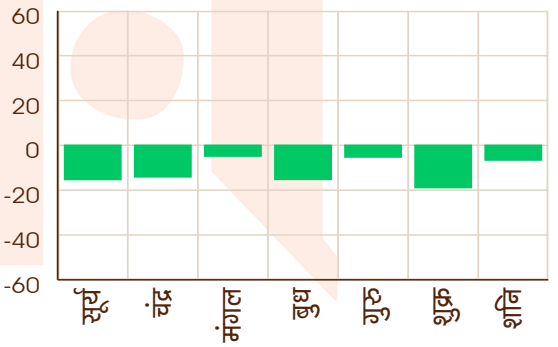

रूप षट्बल

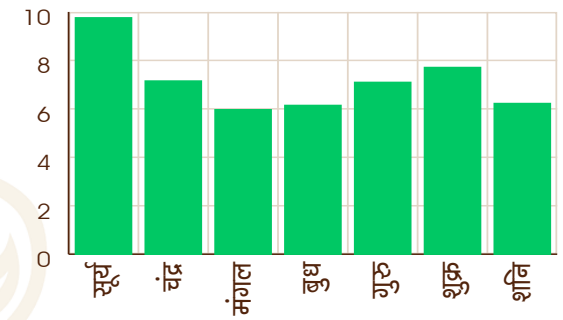

न्यूनतम षट्बल

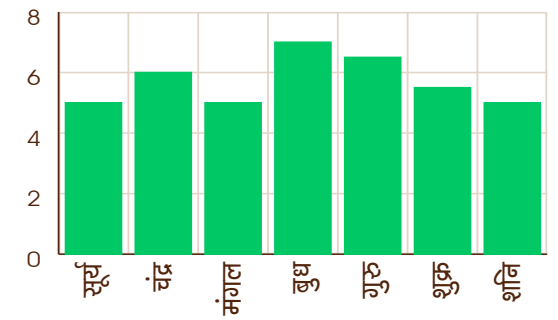

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

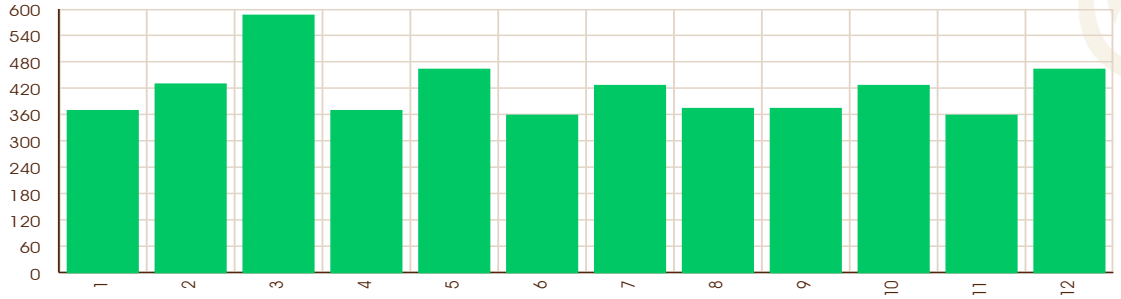

भावदिग्बल

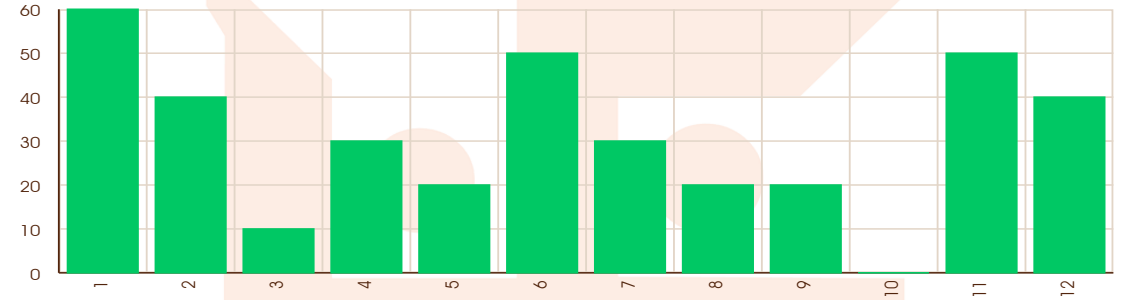

भावदृष्टि बल

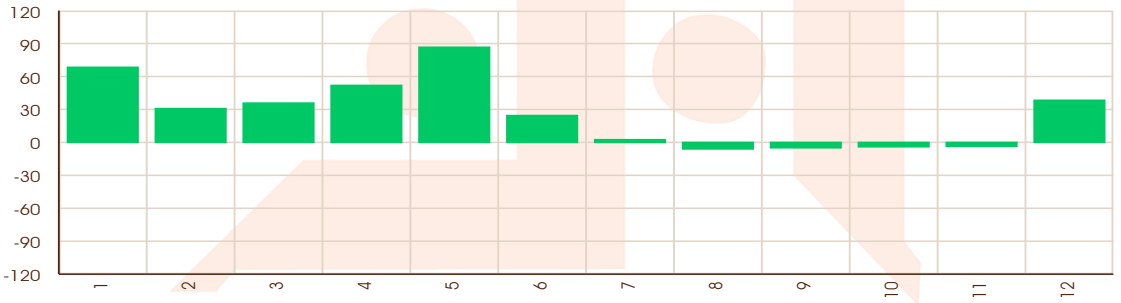

भाव बल

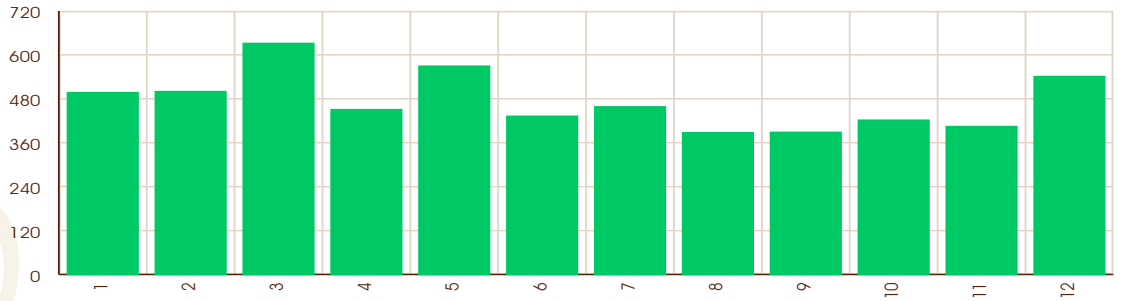

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

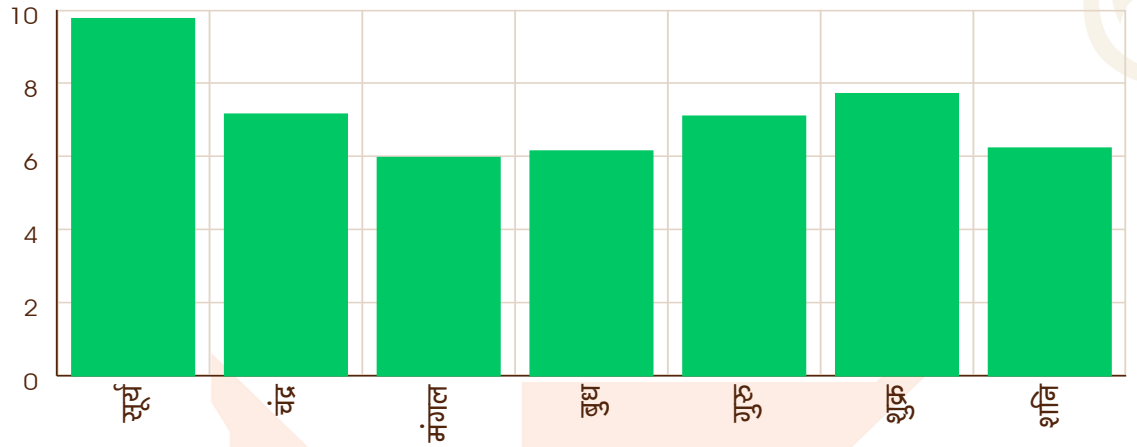

इष्ट - कष्ट फल

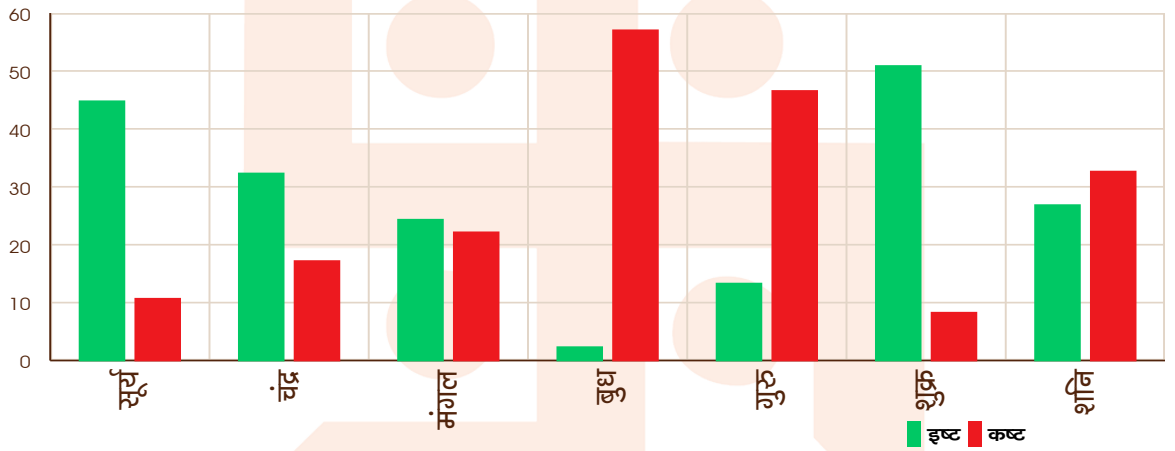

रूप भाव बल

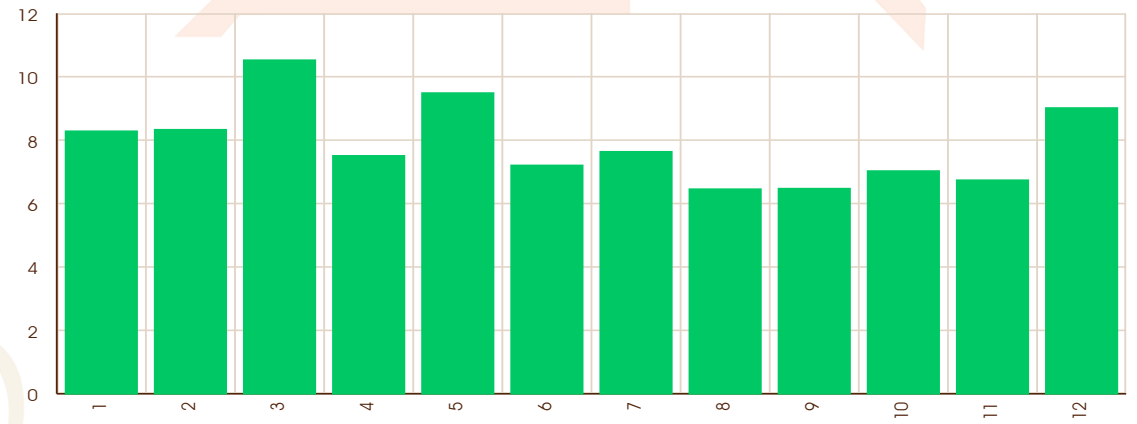

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	मिथु	23:46:05	--	--	पुनर्वसु	2	7
गुलिक	गु	सिंह	15:29:16	--	--	पू०फाल्गुनी	1	11
काल	का	कन्या	06:18:11	--	--	उ०फाल्गुनी	3	12
मृत्यु	मृ	वृष	22:11:30	--	--	रोहिणी	4	4
यमघंटक	यम	कर्क	05:07:15	--	--	पुष्य	1	8
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मिथु	14:48:16	--	मूल	आर्द्रा	3	6
धूम	धू	सिंह	08:55:06	उच्च	--	मघा	3	10
व्यतिपात	व्य	वृश्चि	21:04:54	उच्च	--	ज्येष्ठा	2	18
परिवेश	परि	वृष	21:04:54	--	--	रोहिणी	4	4
इन्द्रचाप	इ	कुंभ	08:55:06	--	--	शतभिषा	1	24
उपकेतु	उप	कुंभ	25:35:06	उच्च	--	पू०भाद्रपद	2	25

प्राणपद	:	कुंभ	17:33:58	कारकाँश लग्न	:	मिथु	16:51:20
भाव लग्न	:	मिथु	17:41:03	होरा लग्न	:	कन्या	09:46:59
घटी लग्न	:	वृष	16:04:49	वर्णद लग्न	:	धनु	03:33:04

उपग्रह कुंडली

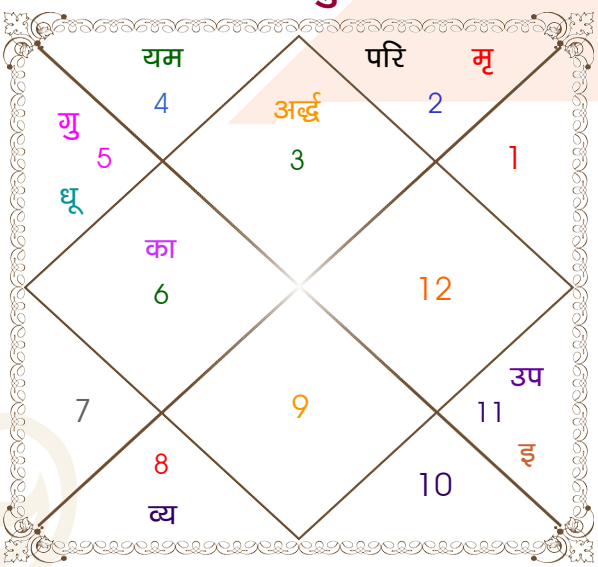

आरूढ़ कुंडली

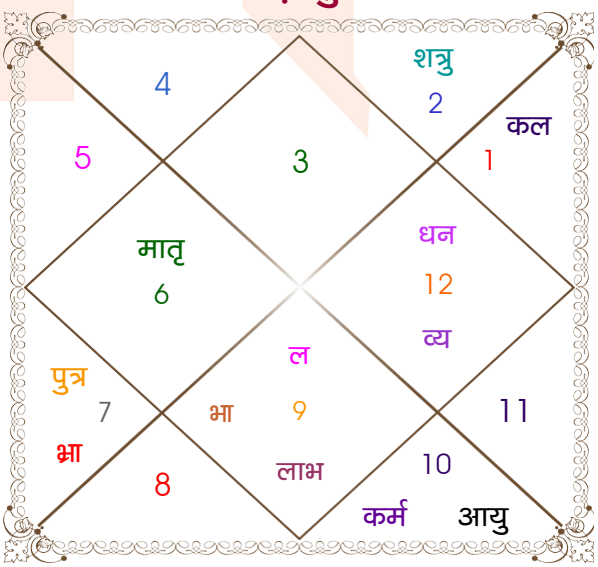

षन्नाडी चक्र

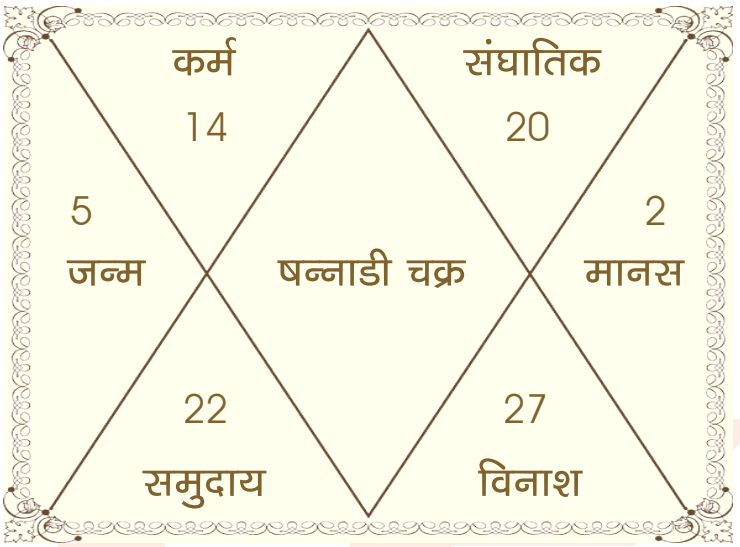

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
लग्न	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	6
कुल	5	3	3	2	4	4	5	6	5	4	3	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
मंगल	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1	6
सूर्य	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	6
शुक्र	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	7
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	4
कुल	5	4	4	4	3	4	5	5	4	3	6	2	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	7
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	5
शुक्र	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	4
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
चंद्र	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
कुल	2	4	2	3	1	5	5	3	2	5	3	4	39

बुध का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	7
कुल	4	3	3	3	6	6	4	3	6	5	5	6	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	9
शुक्र	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	6
बुध	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	5
लग्न	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	9
कुल	4	7	4	5	5	2	4	6	2	6	7	4	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	7
गुरु	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	5
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	5
चंद्र	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	9
लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
कुल	5	5	4	5	5	4	5	4	4	6	3	2	52

शनि का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	3
बुध	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	6
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	3
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
कुल	4	2	5	3	1	5	3	2	3	3	4	4	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	6
गुरु	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	9
मंगल	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	5
सूर्य	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	7
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	5	4	5	0	4	5	5	3	4	5	6	3	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	1	5	3	2	3	3	4	4	4	2	5	39
गुरु	4	5	5	2	4	6	2	6	7	4	4	7	56
मंगल	2	3	1	5	5	3	2	5	3	4	2	4	39
सूर्य	3	3	2	4	4	5	6	5	4	3	4	5	48
शुक्र	5	5	4	5	5	4	5	4	4	6	3	2	52
बुध	3	3	3	6	6	4	3	6	5	5	6	4	54
चंद्र	2	5	4	4	4	3	4	5	5	4	3	6	49
बिन्दु	22	25	24	29	30	28	25	35	32	30	24	33	337
रेखा	34	31	32	27	26	28	31	21	24	26	32	23	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	0	3	0	0	2	1	1	2	3	0	2	15
गुरु	0	1	3	0	0	2	0	4	3	0	2	5	20
मंगल	0	0	0	1	3	0	1	1	1	1	1	0	9
सूर्य	0	0	0	0	1	2	4	1	1	0	2	1	12
शुक्र	1	1	1	3	1	0	2	2	0	2	0	0	13
बुध	0	0	0	2	3	1	0	2	2	2	3	0	15
चंद्र	0	2	1	0	2	0	1	1	3	1	0	2	13
रेखा	2	4	8	6	10	7	9	12	12	9	8	10	97

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	0	1	0	0	2	1	0	0	3	0	2	10
गुरु	0	1	1	0	0	2	0	4	0	0	2	5	15
मंगल	0	0	0	1	3	0	1	1	1	1	1	0	9
सूर्य	0	0	0	0	1	2	4	1	0	0	2	1	11
शुक्र	1	1	1	3	1	0	1	1	0	2	0	0	11
बुध	0	0	0	2	3	1	0	2	2	2	3	0	15
चंद्र	0	2	1	0	2	0	0	1	1	1	0	2	10
रेखा	2	4	4	6	10	7	7	10	4	9	8	10	81

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	90	94	74	120	142	72	71
ग्रह पिंड	46	35	23	64	91	22	42
शोध्य पिंड	136	129	97	184	233	94	113

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

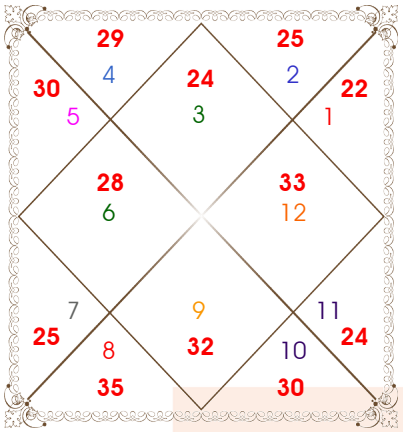

सूर्य का अष्टकवर्ग

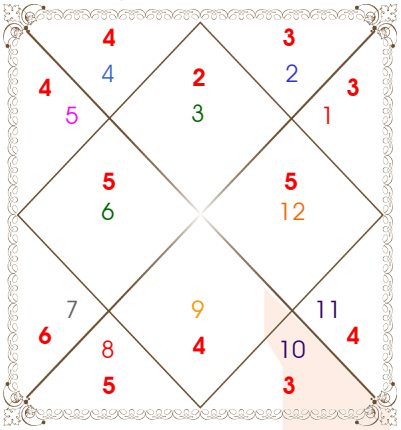

चंद्र का अष्टकवर्ग

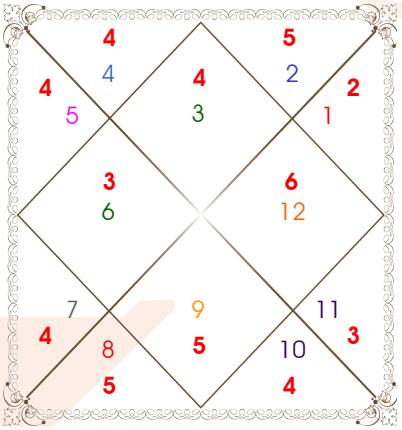

मंगल का अष्टकवर्ग

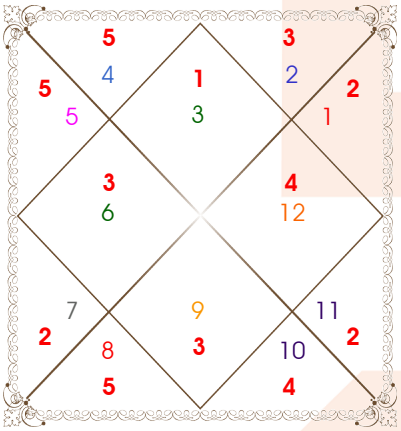

बुध का अष्टकवर्ग

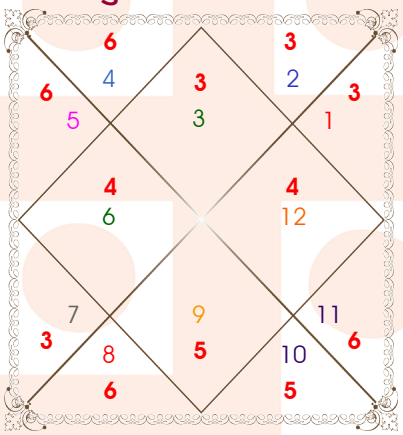

गुरू का अष्टकवर्ग

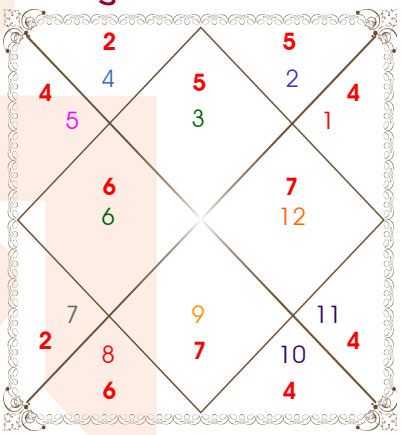

शुक्र का अष्टकवर्ग

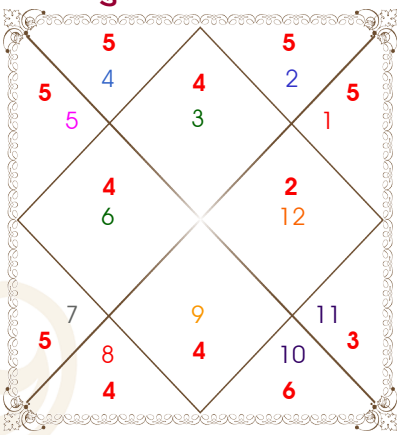

शनि का अष्टकवर्ग

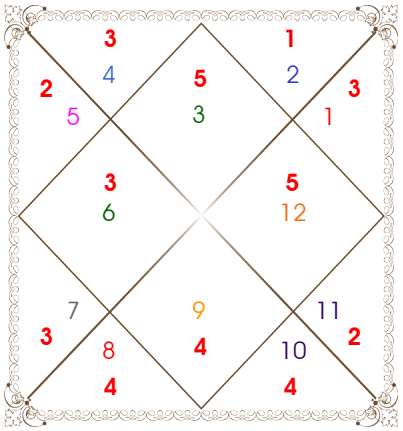

लग्न का अष्टकवर्ग

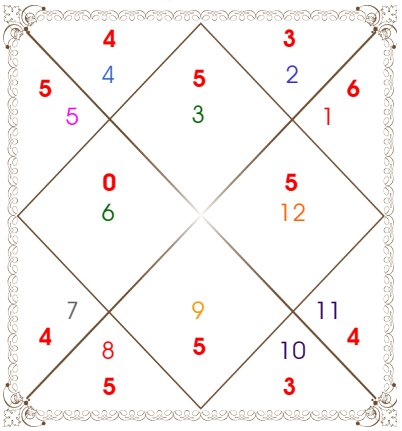

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

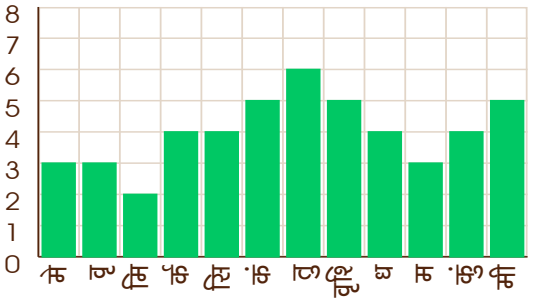

चन्द्र

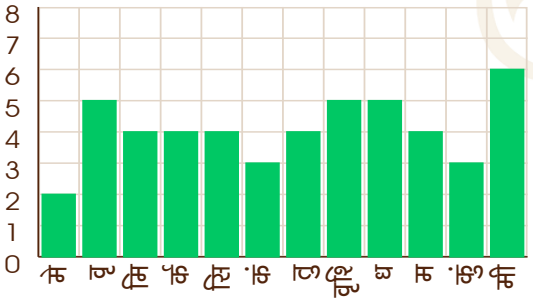

मंगल

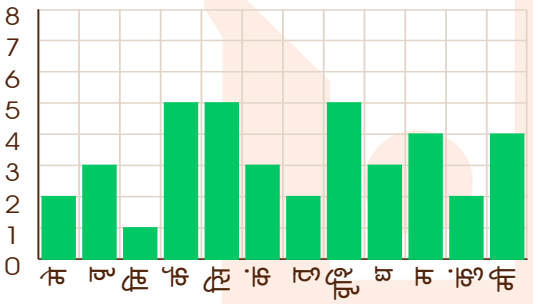

बुध

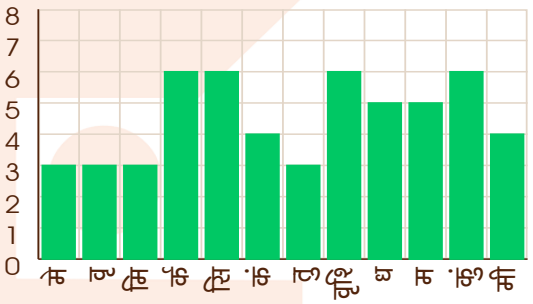

गुरु

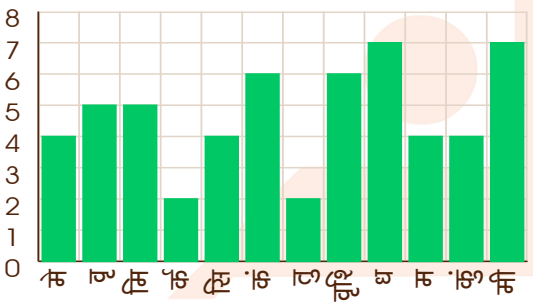

शुक्र

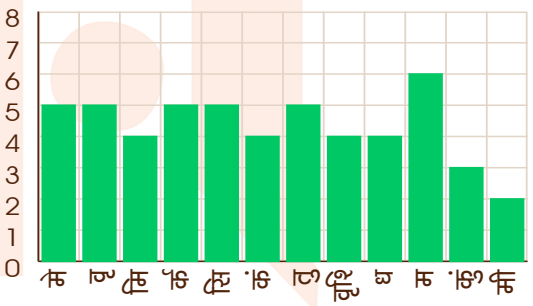

शनि

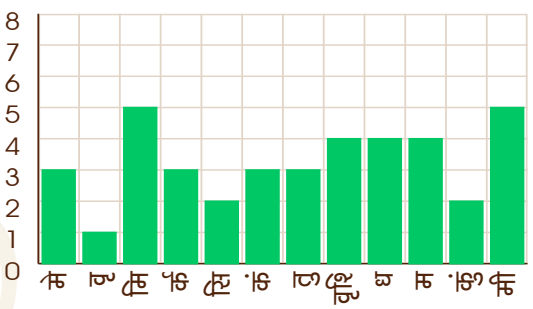

लग्न

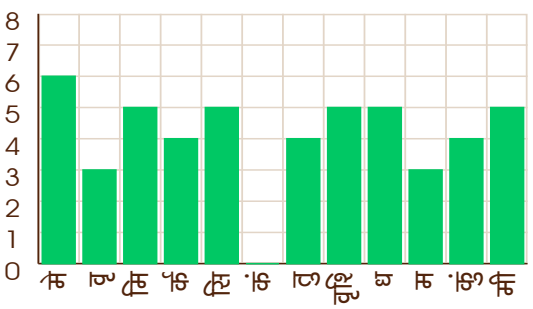

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

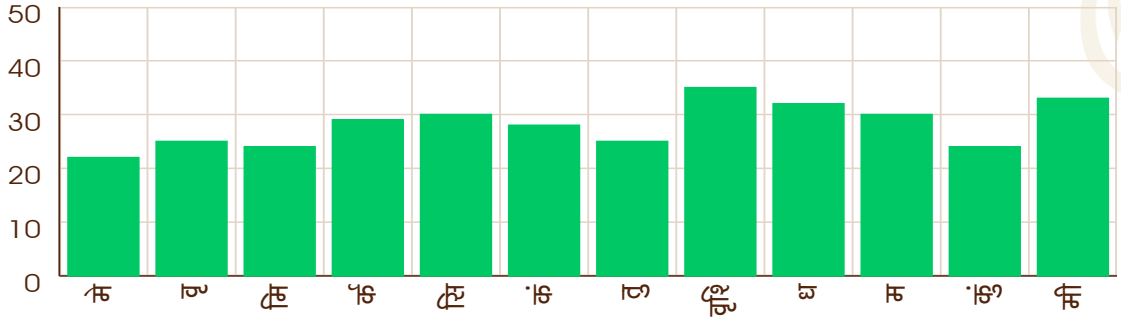

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

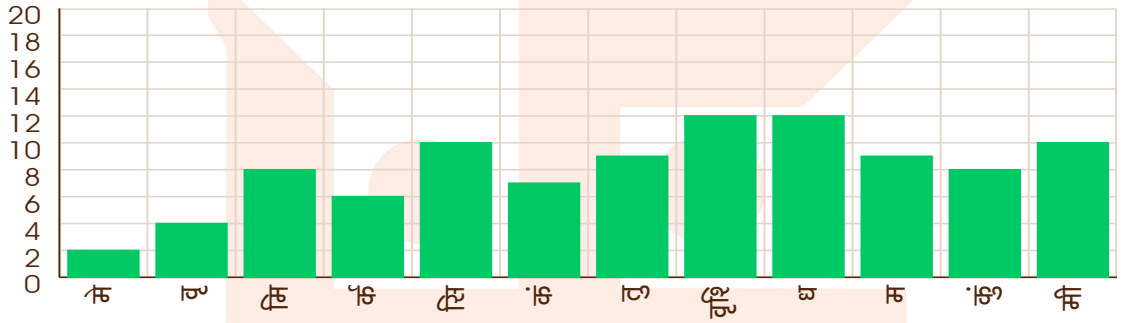

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

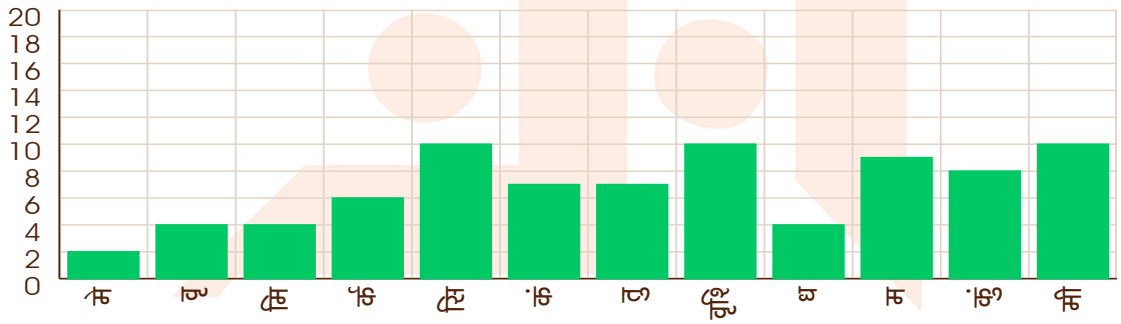

शोध्य पिंड

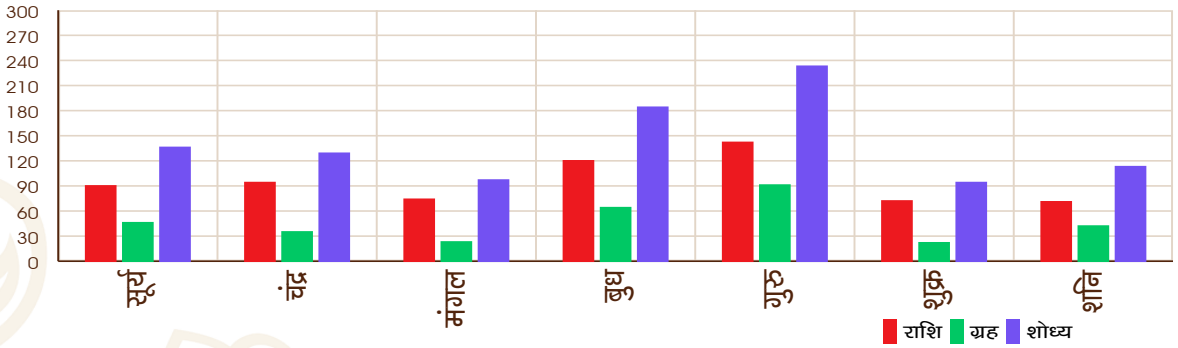

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 6 वर्ष 1 मास 14 दिन

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
09/04/1962		23/05/1968		23/05/1986		23/05/2002		23/05/2021	
23/05/1968		23/05/1986		23/05/2002		23/05/2021		23/05/2038	
	09/04/1962	राहु	03/02/1971	गुरु	11/07/1988	शनि	26/05/2005	बुध	20/10/2023
राहु	07/11/1962	गुरु	29/06/1973	शनि	22/01/1991	बुध	03/02/2008	केतु	16/10/2024
गुरु	14/10/1963	शनि	05/05/1976	बुध	29/04/1993	केतु	14/03/2009	शुक्र	17/08/2027
शनि	22/11/1964	बुध	22/11/1978	केतु	05/04/1994	शुक्र	14/05/2012	सूर्य	22/06/2028
बुध	19/11/1965	केतु	11/12/1979	शुक्र	04/12/1996	सूर्य	26/04/2013	चंद्र	22/11/2029
केतु	17/04/1966	शुक्र	10/12/1982	सूर्य	22/09/1997	चंद्र	25/11/2014	मंगल	19/11/2030
शुक्र	17/06/1967	सूर्य	04/11/1983	चंद्र	22/01/1999	मंगल	04/01/2016	राहु	07/06/2033
सूर्य	23/10/1967	चंद्र	05/05/1985	मंगल	29/12/1999	राहु	10/11/2018	गुरु	13/09/2035
चंद्र	23/05/1968	मंगल	23/05/1986	राहु	23/05/2002	गुरु	23/05/2021	शनि	23/05/2038

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
23/05/2038		23/05/2045		23/05/2065		24/05/2071		23/05/2081	
23/05/2045		23/05/2065		24/05/2071		23/05/2081		00/00/0000	
केतु	20/10/2038	शुक्र	22/09/2048	सूर्य	10/09/2065	चंद्र	23/03/2072	मंगल	19/10/2081
शुक्र	20/12/2039	सूर्य	22/09/2049	चंद्र	11/03/2066	मंगल	22/10/2072	राहु	09/04/2082
सूर्य	26/04/2040	चंद्र	24/05/2051	मंगल	17/07/2066	राहु	23/04/2074		00/00/0000
चंद्र	25/11/2040	मंगल	23/07/2052	राहु	11/06/2067	गुरु	23/08/2075		00/00/0000
मंगल	23/04/2041	राहु	24/07/2055	गुरु	29/03/2068	शनि	23/03/2077		00/00/0000
राहु	11/05/2042	गुरु	24/03/2058	शनि	11/03/2069	बुध	23/08/2078		00/00/0000
गुरु	17/04/2043	शनि	23/05/2061	बुध	16/01/2070	केतु	24/03/2079		00/00/0000
शनि	26/05/2044	बुध	23/03/2064	केतु	23/05/2070	शुक्र	22/11/2080		00/00/0000
बुध	23/05/2045	केतु	23/05/2065	शुक्र	24/05/2071	सूर्य	23/05/2081		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 6 वर्ष 1 मा 19 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु	
09/04/1962		07/11/1962		14/10/1963		22/11/1964		19/11/1965	
07/11/1962		14/10/1963		22/11/1964		19/11/1965		17/04/1966	
	00/00/0000	गुरु	22/12/1962	शनि	17/12/1963	बुध	12/01/1965	केतु	27/11/1965
	00/00/0000	शनि	14/02/1963	बुध	12/02/1964	केतु	02/02/1965	शुक्र	22/12/1965
	09/04/1962	बुध	04/04/1963	केतु	07/03/1964	शुक्र	03/04/1965	सूर्य	30/12/1965
बुध	31/05/1962	केतु	23/04/1963	शुक्र	13/05/1964	सूर्य	22/04/1965	चंद्र	11/01/1966
केतु	22/06/1962	शुक्र	19/06/1963	सूर्य	03/06/1964	चंद्र	22/05/1965	मंगल	20/01/1966
शुक्र	25/08/1962	सूर्य	06/07/1963	चंद्र	06/07/1964	मंगल	12/06/1965	राहु	11/02/1966
सूर्य	14/09/1962	चंद्र	04/08/1963	मंगल	30/07/1964	राहु	05/08/1965	गुरु	03/03/1966
चंद्र	16/10/1962	मंगल	24/08/1963	राहु	29/09/1964	गुरु	22/09/1965	शनि	27/03/1966
मंगल	07/11/1962	राहु	14/10/1963	गुरु	22/11/1964	शनि	19/11/1965	बुध	17/04/1966

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
17/04/1966		17/06/1967		23/10/1967		23/05/1968		03/02/1971	
17/06/1967		23/10/1967		23/05/1968		03/02/1971		29/06/1973	
शुक्र	27/06/1966	सूर्य	23/06/1967	चंद्र	10/11/1967	राहु	18/10/1968	गुरु	31/05/1971
सूर्य	18/07/1966	चंद्र	04/07/1967	मंगल	22/11/1967	गुरु	26/02/1969	शनि	17/10/1971
चंद्र	23/08/1966	मंगल	12/07/1967	राहु	24/12/1967	शनि	02/08/1969	बुध	18/02/1972
मंगल	17/09/1966	राहु	31/07/1967	गुरु	21/01/1968	बुध	19/12/1969	केतु	09/04/1972
राहु	20/11/1966	गुरु	17/08/1967	शनि	24/02/1968	केतु	15/02/1970	शुक्र	02/09/1972
गुरु	15/01/1967	शनि	06/09/1967	बुध	25/03/1968	शुक्र	29/07/1970	सूर्य	16/10/1972
शनि	24/03/1967	बुध	24/09/1967	केतु	07/04/1968	सूर्य	16/09/1970	चंद्र	28/12/1972
बुध	23/05/1967	केतु	02/10/1967	शुक्र	12/05/1968	चंद्र	08/12/1970	मंगल	17/02/1973
केतु	17/06/1967	शुक्र	23/10/1967	सूर्य	23/05/1968	मंगल	03/02/1971	राहु	29/06/1973

राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
29/06/1973		05/05/1976		22/11/1978		11/12/1979		10/12/1982	
05/05/1976		22/11/1978		11/12/1979		10/12/1982		04/11/1983	
शनि	11/12/1973	बुध	14/09/1976	केतु	14/12/1978	शुक्र	10/06/1980	सूर्य	27/12/1982
बुध	07/05/1974	केतु	07/11/1976	शुक्र	16/02/1979	सूर्य	04/08/1980	चंद्र	23/01/1983
केतु	07/07/1974	शुक्र	11/04/1977	सूर्य	08/03/1979	चंद्र	03/11/1980	मंगल	11/02/1983
शुक्र	27/12/1974	सूर्य	28/05/1977	चंद्र	09/04/1979	मंगल	06/01/1981	राहु	02/04/1983
सूर्य	17/02/1975	चंद्र	13/08/1977	मंगल	01/05/1979	राहु	20/06/1981	गुरु	15/05/1983
चंद्र	15/05/1975	मंगल	07/10/1977	राहु	27/06/1979	गुरु	13/11/1981	शनि	07/07/1983
मंगल	15/07/1975	राहु	23/02/1978	गुरु	18/08/1979	शनि	05/05/1982	बुध	22/08/1983
राहु	18/12/1975	गुरु	28/06/1978	शनि	17/10/1979	बुध	07/10/1982	केतु	10/09/1983
गुरु	05/05/1976	शनि	22/11/1978	बुध	11/12/1979	केतु	10/12/1982	शुक्र	04/11/1983

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
04/11/1983		05/05/1985		23/05/1986		11/07/1988		22/01/1991	
05/05/1985		23/05/1986		11/07/1988		22/01/1991		29/04/1993	
चंद्र	20/12/1983	मंगल	27/05/1985	गुरु	04/09/1986	शनि	04/12/1988	बुध	19/05/1991
मंगल	21/01/1984	राहु	24/07/1985	शनि	06/01/1987	बुध	14/04/1989	केतु	07/07/1991
राहु	12/04/1984	गुरु	13/09/1985	बुध	26/04/1987	केतु	07/06/1989	शुक्र	22/11/1991
गुरु	24/06/1984	शनि	13/11/1985	केतु	11/06/1987	शुक्र	08/11/1989	सूर्य	02/01/1992
शनि	19/09/1984	बुध	06/01/1986	शुक्र	18/10/1987	सूर्य	25/12/1989	चंद्र	11/03/1992
बुध	05/12/1984	केतु	28/01/1986	सूर्य	26/11/1987	चंद्र	12/03/1990	मंगल	28/04/1992
केतु	06/01/1985	शुक्र	02/04/1986	चंद्र	30/01/1988	मंगल	05/05/1990	राहु	30/08/1992
शुक्र	08/04/1985	सूर्य	22/04/1986	मंगल	16/03/1988	राहु	21/09/1990	गुरु	19/12/1992
सूर्य	05/05/1985	चंद्र	23/05/1986	राहु	11/07/1988	गुरु	22/01/1991	शनि	29/04/1993

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल	
29/04/1993		05/04/1994		04/12/1996		22/09/1997		22/01/1999	
05/04/1994		04/12/1996		22/09/1997		22/01/1999		29/12/1999	
केतु	19/05/1993	शुक्र	14/09/1994	सूर्य	18/12/1996	चंद्र	02/11/1997	मंगल	11/02/1999
शुक्र	15/07/1993	सूर्य	02/11/1994	चंद्र	12/01/1997	मंगल	30/11/1997	राहु	03/04/1999
सूर्य	01/08/1993	चंद्र	22/01/1995	मंगल	29/01/1997	राहु	11/02/1998	गुरु	18/05/1999
चंद्र	29/08/1993	मंगल	20/03/1995	राहु	14/03/1997	गुरु	17/04/1998	शनि	11/07/1999
मंगल	18/09/1993	राहु	13/08/1995	गुरु	22/04/1997	शनि	03/07/1998	बुध	29/08/1999
राहु	08/11/1993	गुरु	21/12/1995	शनि	07/06/1997	बुध	10/09/1998	केतु	18/09/1999
गुरु	23/12/1993	शनि	23/05/1996	बुध	18/07/1997	केतु	08/10/1998	शुक्र	13/11/1999
शनि	15/02/1994	बुध	08/10/1996	केतु	04/08/1997	शुक्र	29/12/1998	सूर्य	30/11/1999
बुध	05/04/1994	केतु	04/12/1996	शुक्र	22/09/1997	सूर्य	22/01/1999	चंद्र	29/12/1999

गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
29/12/1999		23/05/2002		26/05/2005		03/02/2008		14/03/2009	
23/05/2002		26/05/2005		03/02/2008		14/03/2009		14/05/2012	
राहु	08/05/2000	शनि	13/11/2002	बुध	13/10/2005	केतु	27/02/2008	शुक्र	23/09/2009
गुरु	02/09/2000	बुध	18/04/2003	केतु	09/12/2005	शुक्र	04/05/2008	सूर्य	20/11/2009
शनि	19/01/2001	केतु	21/06/2003	शुक्र	22/05/2006	सूर्य	25/05/2008	चंद्र	24/02/2010
बुध	23/05/2001	शुक्र	21/12/2003	सूर्य	10/07/2006	चंद्र	27/06/2008	मंगल	03/05/2010
केतु	13/07/2001	सूर्य	14/02/2004	चंद्र	30/09/2006	मंगल	21/07/2008	राहु	23/10/2010
शुक्र	06/12/2001	चंद्र	16/05/2004	मंगल	26/11/2006	राहु	20/09/2008	गुरु	26/03/2011
सूर्य	19/01/2002	मंगल	19/07/2004	राहु	23/04/2007	गुरु	13/11/2008	शनि	26/09/2011
चंद्र	02/04/2002	राहु	31/12/2004	गुरु	01/09/2007	शनि	16/01/2009	बुध	07/03/2012
मंगल	23/05/2002	गुरु	26/05/2005	शनि	03/02/2008	बुध	14/03/2009	केतु	14/05/2012

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु	
14/05/2012		26/04/2013		25/11/2014		04/01/2016		10/11/2018	
26/04/2013		25/11/2014		04/01/2016		10/11/2018		23/05/2021	
सूर्य	31/05/2012	चंद्र	13/06/2013	मंगल	19/12/2014	राहु	08/06/2016	गुरु	13/03/2019
चंद्र	29/06/2012	मंगल	17/07/2013	राहु	17/02/2015	गुरु	25/10/2016	शनि	07/08/2019
मंगल	19/07/2012	राहु	11/10/2013	गुरु	12/04/2015	शनि	08/04/2017	बुध	16/12/2019
राहु	09/09/2012	गुरु	28/12/2013	शनि	16/06/2015	बुध	02/09/2017	केतु	08/02/2020
गुरु	26/10/2012	शनि	29/03/2014	बुध	12/08/2015	केतु	02/11/2017	शुक्र	11/07/2020
शनि	20/12/2012	बुध	19/06/2014	केतु	05/09/2015	शुक्र	24/04/2018	सूर्य	26/08/2020
बुध	07/02/2013	केतु	23/07/2014	शुक्र	11/11/2015	सूर्य	15/06/2018	चंद्र	11/11/2020
केतु	27/02/2013	शुक्र	27/10/2014	सूर्य	01/12/2015	चंद्र	10/09/2018	मंगल	04/01/2021
शुक्र	26/04/2013	सूर्य	25/11/2014	चंद्र	04/01/2016	मंगल	10/11/2018	राहु	23/05/2021

बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
23/05/2021		20/10/2023		16/10/2024		17/08/2027		22/06/2028	
20/10/2023		16/10/2024		17/08/2027		22/06/2028		22/11/2029	
बुध	25/09/2021	केतु	10/11/2023	शुक्र	07/04/2025	सूर्य	01/09/2027	चंद्र	05/08/2028
केतु	15/11/2021	शुक्र	09/01/2024	सूर्य	28/05/2025	चंद्र	27/09/2027	मंगल	04/09/2028
शुक्र	11/04/2022	सूर्य	27/01/2024	चंद्र	23/08/2025	मंगल	15/10/2027	राहु	20/11/2028
सूर्य	25/05/2022	चंद्र	27/02/2024	मंगल	22/10/2025	राहु	01/12/2027	गुरु	28/01/2029
चंद्र	06/08/2022	मंगल	19/03/2024	राहु	26/03/2026	गुरु	11/01/2028	शनि	20/04/2029
मंगल	26/09/2022	राहु	12/05/2024	गुरु	11/08/2026	शनि	01/03/2028	बुध	03/07/2029
राहु	05/02/2023	गुरु	29/06/2024	शनि	22/01/2027	बुध	14/04/2028	केतु	02/08/2029
गुरु	03/06/2023	शनि	26/08/2024	बुध	18/06/2027	केतु	02/05/2028	शुक्र	27/10/2029
शनि	20/10/2023	बुध	16/10/2024	केतु	17/08/2027	शुक्र	22/06/2028	सूर्य	22/11/2029

बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
22/11/2029		19/11/2030		07/06/2033		13/09/2035		23/05/2038	
19/11/2030		07/06/2033		13/09/2035		23/05/2038		20/10/2038	
मंगल	13/12/2029	राहु	08/04/2031	गुरु	26/09/2033	शनि	16/02/2036	केतु	01/06/2038
राहु	05/02/2030	गुरु	10/08/2031	शनि	04/02/2034	बुध	04/07/2036	शुक्र	26/06/2038
गुरु	26/03/2030	शनि	04/01/2032	बुध	01/06/2034	केतु	31/08/2036	सूर्य	03/07/2038
शनि	22/05/2030	बुध	15/05/2032	केतु	19/07/2034	शुक्र	10/02/2037	चंद्र	16/07/2038
बुध	12/07/2030	केतु	09/07/2032	शुक्र	04/12/2034	सूर्य	01/04/2037	मंगल	25/07/2038
केतु	02/08/2030	शुक्र	11/12/2032	सूर्य	15/01/2035	चंद्र	22/06/2037	राहु	16/08/2038
शुक्र	02/10/2030	सूर्य	26/01/2033	चंद्र	25/03/2035	मंगल	18/08/2037	गुरु	05/09/2038
सूर्य	20/10/2030	चंद्र	14/04/2033	मंगल	12/05/2035	राहु	12/01/2038	शनि	28/09/2038
चंद्र	19/11/2030	मंगल	07/06/2033	राहु	13/09/2035	गुरु	23/05/2038	बुध	20/10/2038

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
20/10/2038		20/12/2039		26/04/2040		25/11/2040		23/04/2041	
20/12/2039		26/04/2040		25/11/2040		23/04/2041		11/05/2042	
शुक्र	30/12/2038	सूर्य	26/12/2039	चंद्र	13/05/2040	मंगल	03/12/2040	राहु	19/06/2041
सूर्य	20/01/2039	चंद्र	06/01/2040	मंगल	26/05/2040	राहु	26/12/2040	गुरु	09/08/2041
चंद्र	24/02/2039	मंगल	13/01/2040	राहु	27/06/2040	गुरु	15/01/2041	शनि	09/10/2041
मंगल	21/03/2039	राहु	01/02/2040	गुरु	25/07/2040	शनि	07/02/2041	बुध	02/12/2041
राहु	24/05/2039	गुरु	18/02/2040	शनि	28/08/2040	बुध	28/02/2041	केतु	25/12/2041
गुरु	20/07/2039	शनि	10/03/2040	बुध	27/09/2040	केतु	09/03/2041	शुक्र	27/02/2042
शनि	26/09/2039	बुध	28/03/2040	केतु	09/10/2040	शुक्र	03/04/2041	सूर्य	18/03/2042
बुध	25/11/2039	केतु	04/04/2040	शुक्र	14/11/2040	सूर्य	10/04/2041	चंद्र	19/04/2042
केतु	20/12/2039	शुक्र	26/04/2040	सूर्य	25/11/2040	चंद्र	23/04/2041	मंगल	11/05/2042

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
11/05/2042		17/04/2043		26/05/2044		23/05/2045		22/09/2048	
17/04/2043		26/05/2044		23/05/2045		22/09/2048		22/09/2049	
गुरु	26/06/2042	शनि	20/06/2043	बुध	16/07/2044	शुक्र	12/12/2045	सूर्य	10/10/2048
शनि	19/08/2042	बुध	17/08/2043	केतु	06/08/2044	सूर्य	11/02/2046	चंद्र	09/11/2048
बुध	06/10/2042	केतु	09/09/2043	शुक्र	06/10/2044	चंद्र	23/05/2046	मंगल	01/12/2048
केतु	26/10/2042	शुक्र	16/11/2043	सूर्य	24/10/2044	मंगल	02/08/2046	राहु	25/01/2049
शुक्र	22/12/2042	सूर्य	06/12/2043	चंद्र	23/11/2044	राहु	01/02/2047	गुरु	14/03/2049
सूर्य	08/01/2043	चंद्र	09/01/2044	मंगल	14/12/2044	गुरु	13/07/2047	शनि	11/05/2049
चंद्र	05/02/2043	मंगल	01/02/2044	राहु	07/02/2045	शनि	22/01/2048	बुध	02/07/2049
मंगल	25/02/2043	राहु	02/04/2044	गुरु	27/03/2045	बुध	13/07/2048	केतु	23/07/2049
राहु	17/04/2043	गुरु	26/05/2044	शनि	23/05/2045	केतु	22/09/2048	शुक्र	22/09/2049

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
22/09/2049		24/05/2051		23/07/2052		24/07/2055		24/03/2058	
24/05/2051		23/07/2052		24/07/2055		24/03/2058		23/05/2061	
चंद्र	12/11/2049	मंगल	18/06/2051	राहु	03/01/2053	गुरु	30/11/2055	शनि	23/09/2058
मंगल	17/12/2049	राहु	20/08/2051	गुरु	29/05/2053	शनि	03/05/2056	बुध	06/03/2059
राहु	19/03/2050	गुरु	16/10/2051	शनि	19/11/2053	बुध	18/09/2056	केतु	12/05/2059
गुरु	08/06/2050	शनि	23/12/2051	बुध	23/04/2054	केतु	13/11/2056	शुक्र	21/11/2059
शनि	12/09/2050	बुध	21/02/2052	केतु	26/06/2054	शुक्र	25/04/2057	सूर्य	18/01/2060
बुध	07/12/2050	केतु	17/03/2052	शुक्र	26/12/2054	सूर्य	13/06/2057	चंद्र	23/04/2060
केतु	12/01/2051	शुक्र	27/05/2052	सूर्य	18/02/2055	चंद्र	02/09/2057	मंगल	30/06/2060
शुक्र	23/04/2051	सूर्य	17/06/2052	चंद्र	21/05/2055	मंगल	28/10/2057	राहु	20/12/2060
सूर्य	24/05/2051	चंद्र	23/07/2052	मंगल	24/07/2055	राहु	24/03/2058	गुरु	23/05/2061

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
23/05/2061		23/03/2064		23/05/2065		10/09/2065		11/03/2066	
23/03/2064		23/05/2065		10/09/2065		11/03/2066		17/07/2066	
बुध	17/10/2061	केतु	17/04/2064	सूर्य	29/05/2065	चंद्र	25/09/2065	मंगल	19/03/2066
केतु	16/12/2061	शुक्र	27/06/2064	चंद्र	07/06/2065	मंगल	06/10/2065	राहु	07/04/2066
शुक्र	07/06/2062	सूर्य	18/07/2064	मंगल	13/06/2065	राहु	02/11/2065	गुरु	24/04/2066
सूर्य	28/07/2062	चंद्र	23/08/2064	राहु	30/06/2065	गुरु	26/11/2065	शनि	14/05/2066
चंद्र	23/10/2062	मंगल	17/09/2064	गुरु	14/07/2065	शनि	25/12/2065	बुध	01/06/2066
मंगल	22/12/2062	राहु	20/11/2064	शनि	01/08/2065	बुध	20/01/2066	केतु	09/06/2066
राहु	26/05/2063	गुरु	15/01/2065	बुध	16/08/2065	केतु	31/01/2066	शुक्र	30/06/2066
गुरु	11/10/2063	शनि	24/03/2065	केतु	23/08/2065	शुक्र	02/03/2066	सूर्य	07/07/2066
शनि	23/03/2064	बुध	23/05/2065	शुक्र	10/09/2065	सूर्य	11/03/2066	चंद्र	17/07/2066

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
17/07/2066		11/06/2067		29/03/2068		11/03/2069		16/01/2070	
11/06/2067		29/03/2068		11/03/2069		16/01/2070		23/05/2070	
राहु	05/09/2066	गुरु	20/07/2067	शनि	23/05/2068	बुध	24/04/2069	केतु	23/01/2070
गुरु	18/10/2066	शनि	04/09/2067	बुध	11/07/2068	केतु	12/05/2069	शुक्र	13/02/2070
शनि	09/12/2066	बुध	16/10/2067	केतु	01/08/2068	शुक्र	03/07/2069	सूर्य	20/02/2070
बुध	25/01/2067	केतु	02/11/2067	शुक्र	27/09/2068	सूर्य	19/07/2069	चंद्र	02/03/2070
केतु	13/02/2067	शुक्र	20/12/2067	सूर्य	15/10/2068	चंद्र	13/08/2069	मंगल	10/03/2070
शुक्र	09/04/2067	सूर्य	04/01/2068	चंद्र	13/11/2068	मंगल	01/09/2069	राहु	29/03/2070
सूर्य	25/04/2067	चंद्र	28/01/2068	मंगल	03/12/2068	राहु	17/10/2069	गुरु	15/04/2070
चंद्र	23/05/2067	मंगल	14/02/2068	राहु	24/01/2069	गुरु	27/11/2069	शनि	05/05/2070
मंगल	11/06/2067	राहु	29/03/2068	गुरु	11/03/2069	शनि	16/01/2070	बुध	23/05/2070

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
23/05/2070		24/05/2071		23/03/2072		22/10/2072		23/04/2074	
24/05/2071		23/03/2072		22/10/2072		23/04/2074		23/08/2075	
शुक्र	23/07/2070	चंद्र	18/06/2071	मंगल	05/04/2072	राहु	12/01/2073	गुरु	27/06/2074
सूर्य	11/08/2070	मंगल	06/07/2071	राहु	06/05/2072	गुरु	26/03/2073	शनि	12/09/2074
चंद्र	10/09/2070	राहु	20/08/2071	गुरु	04/06/2072	शनि	21/06/2073	बुध	20/11/2074
मंगल	01/10/2070	गुरु	30/09/2071	शनि	08/07/2072	बुध	07/09/2073	केतु	18/12/2074
राहु	25/11/2070	शनि	17/11/2071	बुध	07/08/2072	केतु	09/10/2073	शुक्र	10/03/2075
गुरु	13/01/2071	बुध	30/12/2071	केतु	19/08/2072	शुक्र	08/01/2074	सूर्य	03/04/2075
शनि	12/03/2071	केतु	17/01/2072	शुक्र	24/09/2072	सूर्य	04/02/2074	चंद्र	14/05/2075
बुध	02/05/2071	शुक्र	08/03/2072	सूर्य	04/10/2072	चंद्र	22/03/2074	मंगल	11/06/2075
केतु	24/05/2071	सूर्य	23/03/2072	चंद्र	22/10/2072	मंगल	23/04/2074	राहु	23/08/2075

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - शुक्र - गुरु		बुध - शुक्र - शनि		बुध - शुक्र - बुध		बुध - शुक्र - केतु	
26/03/2026 15:06		11/08/2026 14:42		22/01/2027 11:14		18/06/2027 01:48	
11/08/2026 14:42		22/01/2027 11:14		18/06/2027 01:48		17/08/2027 10:38	
गुरु	14/04/2026 00:39	शनि	06/09/2026 13:21	बुध	12/02/2027 05:42	केतु	21/06/2027 14:19
शनि	05/05/2026 20:59	बुध	29/09/2026 18:28	केतु	20/02/2027 18:57	शुक्र	01/07/2027 15:47
बुध	25/05/2026 10:08	केतु	09/10/2026 07:52	शुक्र	17/03/2027 05:22	सूर्य	04/07/2027 16:14
केतु	02/06/2026 11:18	शुक्र	05/11/2026 15:17	सूर्य	24/03/2027 13:18	चंद्र	09/07/2027 16:58
शुक्र	25/06/2026 11:14	सूर्य	13/11/2026 19:54	चंद्र	05/04/2027 18:31	मंगल	13/07/2027 05:29
सूर्य	02/07/2026 08:49	चंद्र	27/11/2026 11:37	मंगल	14/04/2027 07:46	राहु	22/07/2027 06:48
चंद्र	13/07/2026 20:47	मंगल	07/12/2026 01:01	राहु	06/05/2027 07:33	गुरु	30/07/2027 07:59
मंगल	21/07/2026 21:58	राहु	31/12/2026 14:54	गुरु	25/05/2027 20:42	शनि	08/08/2027 21:23
राहु	11/08/2026 14:42	गुरु	22/01/2027 11:14	शनि	18/06/2027 01:48	बुध	17/08/2027 10:38

बुध - सूर्य - सूर्य		बुध - सूर्य - चंद्र		बुध - सूर्य - मंगल		बुध - सूर्य - राहु	
17/08/2027 10:38		01/09/2027 23:11		27/09/2027 20:07		15/10/2027 22:45	
01/09/2027 23:11		27/09/2027 20:07		15/10/2027 22:45		01/12/2027 12:25	
सूर्य	18/08/2027 05:15	चंद्र	04/09/2027 02:56	मंगल	28/09/2027 21:28	राहु	22/10/2027 22:24
चंद्र	19/08/2027 12:18	मंगल	05/09/2027 15:09	राहु	01/10/2027 14:40	गुरु	29/10/2027 03:26
मंगल	20/08/2027 10:02	राहु	09/09/2027 12:17	गुरु	04/10/2027 00:37	शनि	05/11/2027 12:24
राहु	22/08/2027 17:55	गुरु	12/09/2027 23:05	शनि	06/10/2027 21:26	बुध	12/11/2027 02:44
गुरु	24/08/2027 19:36	शनि	17/09/2027 01:23	बुध	09/10/2027 11:00	केतु	14/11/2027 19:55
शनि	27/08/2027 06:35	बुध	20/09/2027 17:21	केतु	10/10/2027 12:22	शुक्र	22/11/2027 14:12
बुध	29/08/2027 11:22	केतु	22/09/2027 05:35	शुक्र	13/10/2027 12:48	सूर्य	24/11/2027 22:05
केतु	30/08/2027 09:05	शुक्र	26/09/2027 13:04	सूर्य	14/10/2027 10:32	चंद्र	28/11/2027 19:13
शुक्र	01/09/2027 23:11	सूर्य	27/09/2027 20:07	चंद्र	15/10/2027 22:45	मंगल	01/12/2027 12:25

बुध - सूर्य - गुरु		बुध - सूर्य - शनि		बुध - सूर्य - बुध		बुध - सूर्य - केतु	
01/12/2027 12:25		11/01/2028 21:54		01/03/2028 01:40		14/04/2028 01:14	
11/01/2028 21:54		01/03/2028 01:40		14/04/2028 01:14		02/05/2028 03:53	
गुरु	07/12/2027 00:53	शनि	19/01/2028 16:42	बुध	07/03/2028 07:12	केतु	15/04/2028 02:35
शनि	13/12/2027 14:11	बुध	26/01/2028 15:50	केतु	09/03/2028 20:46	शुक्र	18/04/2028 03:02
बुध	19/12/2027 10:56	केतु	29/01/2028 12:39	शुक्र	17/03/2028 04:42	सूर्य	19/04/2028 00:46
केतु	21/12/2027 20:53	शुक्र	06/02/2028 17:16	सूर्य	19/03/2028 09:29	चंद्र	20/04/2028 12:59
शुक्र	28/12/2027 18:28	सूर्य	09/02/2028 04:16	चंद्र	23/03/2028 01:27	मंगल	21/04/2028 14:20
सूर्य	30/12/2027 20:08	चंद्र	13/02/2028 06:35	मंगल	25/03/2028 15:01	राहु	24/04/2028 07:32
चंद्र	03/01/2028 06:56	मंगल	16/02/2028 03:24	राहु	01/04/2028 05:21	गुरु	26/04/2028 17:29
मंगल	05/01/2028 16:53	राहु	23/02/2028 12:21	गुरु	07/04/2028 02:06	शनि	29/04/2028 14:18
राहु	11/01/2028 21:54	गुरु	01/03/2028 01:40	शनि	14/04/2028 01:14	बुध	02/05/2028 03:53

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - सूर्य - शुक्र	
02/05/2028 03:53	
22/06/2028 21:44	
शुक्र	10/05/2028 18:51
सूर्य	13/05/2028 08:57
चंद्र	17/05/2028 16:26
मंगल	20/05/2028 16:53
राहु	28/05/2028 11:09
गुरु	04/06/2028 08:44
शनि	12/06/2028 13:22
बुध	19/06/2028 21:17
केतु	22/06/2028 21:44

बुध - चंद्र - चंद्र	
22/06/2028 21:44	
05/08/2028 00:36	
चंद्र	26/06/2028 11:58
मंगल	29/06/2028 00:20
राहु	05/07/2028 11:34
गुरु	11/07/2028 05:33
शनि	18/07/2028 01:24
बुध	24/07/2028 04:01
केतु	26/07/2028 16:23
शुक्र	02/08/2028 20:52
सूर्य	05/08/2028 00:36

बुध - चंद्र - मंगल	
05/08/2028 00:36	
04/09/2028 05:01	
मंगल	06/08/2028 18:52
राहु	11/08/2028 07:31
गुरु	15/08/2028 08:07
शनि	20/08/2028 02:49
बुध	24/08/2028 09:26
केतु	26/08/2028 03:42
शुक्र	31/08/2028 04:26
सूर्य	01/09/2028 16:39
चंद्र	04/09/2028 05:01

बुध - चंद्र - राहु	
04/09/2028 05:01	
20/11/2028 19:47	
राहु	15/09/2028 20:26
गुरु	26/09/2028 04:48
शनि	08/10/2028 11:45
बुध	19/10/2028 11:38
केतु	24/10/2028 00:18
शुक्र	05/11/2028 22:46
सूर्य	09/11/2028 19:54
चंद्र	16/11/2028 07:08
मंगल	20/11/2028 19:47

बुध - चंद्र - गुरु	
20/11/2028 19:47	
28/01/2029 19:35	
गुरु	30/11/2028 00:34
शनि	10/12/2028 22:44
बुध	20/12/2028 17:18
केतु	24/12/2028 17:54
शुक्र	05/01/2029 05:52
सूर्य	08/01/2029 16:39
चंद्र	14/01/2029 10:38
मंगल	18/01/2029 11:13
राहु	28/01/2029 19:35

बुध - चंद्र - शनि	
28/01/2029 19:35	
20/04/2029 17:51	
शनि	10/02/2029 18:55
बुध	22/02/2029 09:28
केतु	27/02/2029 04:10
शुक्र	12/03/2029 19:53
सूर्य	16/03/2029 22:12
चंद्र	23/03/2029 18:03
मंगल	28/03/2029 12:45
राहु	09/04/2029 19:41
गुरु	20/04/2029 17:51

बुध - चंद्र - बुध	
20/04/2029 17:51	
03/07/2029 01:08	
बुध	01/05/2029 03:05
केतु	05/05/2029 09:43
शुक्र	17/05/2029 14:56
सूर्य	21/05/2029 06:53
चंद्र	27/05/2029 09:30
मंगल	31/05/2029 16:07
राहु	11/06/2029 16:01
गुरु	21/06/2029 10:35
शनि	03/07/2029 01:08

बुध - चंद्र - केतु	
03/07/2029 01:08	
02/08/2029 05:33	
केतु	04/07/2029 19:24
शुक्र	09/07/2029 20:08
सूर्य	11/07/2029 08:21
चंद्र	13/07/2029 20:43
मंगल	15/07/2029 14:59
राहु	20/07/2029 03:39
गुरु	24/07/2029 04:14
शनि	28/07/2029 22:56
बुध	02/08/2029 05:33

बुध - चंद्र - शुक्र	
02/08/2029 05:33	
27/10/2029 11:18	
शुक्र	16/08/2029 14:31
सूर्य	20/08/2029 22:00
चंद्र	28/08/2029 02:29
मंगल	02/09/2029 03:13
राहु	15/09/2029 01:41
गुरु	26/09/2029 13:39
शनि	10/10/2029 05:21
बुध	22/10/2029 10:34
केतु	27/10/2029 11:18

बुध - चंद्र - सूर्य	
27/10/2029 11:18	
22/11/2029 08:14	
सूर्य	28/10/2029 18:21
चंद्र	30/10/2029 22:06
मंगल	01/11/2029 10:19
राहु	05/11/2029 07:27
गुरु	08/11/2029 18:15
शनि	12/11/2029 20:33
बुध	16/11/2029 12:31
केतु	18/11/2029 00:44
शुक्र	22/11/2029 08:14

बुध - मंगल - मंगल	
22/11/2029 08:14	
13/12/2029 11:19	
मंगल	23/11/2029 13:49
राहु	26/11/2029 17:52
गुरु	29/11/2029 13:29
शनि	02/12/2029 21:46
बुध	05/12/2029 21:37
केतु	07/12/2029 03:11
शुक्र	10/12/2029 15:42
सूर्य	11/12/2029 17:04
चंद्र	13/12/2029 11:19

बुध - मंगल - राहु	
13/12/2029 11:19	
05/02/2030 19:16	
राहु	21/12/2029 14:55
गुरु	28/12/2029 20:46
शनि	06/01/2030 11:14
बुध	14/01/2030 03:57
केतु	17/01/2030 08:01
शुक्र	26/01/2030 09:20
सूर्य	29/01/2030 02:32
चंद्र	02/02/2030 15:12
मंगल	05/02/2030 19:16

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - मंगल - गुरु	
05/02/2030 19:16	
26/03/2030 02:19	
गुरु	12/02/2030 05:48
शनि	19/02/2030 21:19
बुध	26/02/2030 17:31
केतु	01/03/2030 13:08
शुक्र	09/03/2030 14:18
सूर्य	12/03/2030 00:16
चंद्र	16/03/2030 00:51
मंगल	18/03/2030 20:28
राहु	26/03/2030 02:19

बुध - मंगल - शनि	
26/03/2030 02:19	
22/05/2030 10:42	
शनि	04/04/2030 04:15
बुध	12/04/2030 07:14
केतु	15/04/2030 15:31
शुक्र	25/04/2030 04:55
सूर्य	28/04/2030 01:44
चंद्र	02/05/2030 20:26
मंगल	06/05/2030 04:44
राहु	14/05/2030 19:11
गुरु	22/05/2030 10:42

बुध - मंगल - बुध	
22/05/2030 10:42	
12/07/2030 18:12	
बुध	29/05/2030 17:10
केतु	01/06/2030 17:00
शुक्र	10/06/2030 06:15
सूर्य	12/06/2030 19:50
चंद्र	17/06/2030 02:27
मंगल	20/06/2030 02:18
राहु	27/06/2030 19:01
गुरु	04/07/2030 15:13
शनि	12/07/2030 18:12

बुध - मंगल - केतु	
12/07/2030 18:12	
02/08/2030 21:18	
केतु	13/07/2030 23:47
शुक्र	17/07/2030 12:18
सूर्य	18/07/2030 13:39
चंद्र	20/07/2030 07:55
मंगल	21/07/2030 13:30
राहु	24/07/2030 17:33
गुरु	27/07/2030 13:10
शनि	30/07/2030 21:27
बुध	02/08/2030 21:18

बुध - मंगल - शुक्र	
02/08/2030 21:18	
02/10/2030 06:07	
शुक्र	12/08/2030 22:46
सूर्य	15/08/2030 23:12
चंद्र	20/08/2030 23:56
मंगल	24/08/2030 12:27
राहु	02/09/2030 13:47
गुरु	10/09/2030 14:57
शनि	20/09/2030 04:21
बुध	28/09/2030 17:36
केतु	02/10/2030 06:07

बुध - मंगल - सूर्य	
02/10/2030 06:07	
20/10/2030 08:46	
सूर्य	03/10/2030 03:51
चंद्र	04/10/2030 16:04
मंगल	05/10/2030 17:26
राहु	08/10/2030 10:37
गुरु	10/10/2030 20:35
शनि	13/10/2030 17:24
बुध	16/10/2030 06:58
केतु	17/10/2030 08:20
शुक्र	20/10/2030 08:46

बुध - मंगल - चंद्र	
20/10/2030 08:46	
19/11/2030 13:11	
चंद्र	22/10/2030 21:08
मंगल	24/10/2030 15:23
राहु	29/10/2030 04:03
गुरु	02/11/2030 04:38
शनि	06/11/2030 23:20
बुध	11/11/2030 05:58
केतु	13/11/2030 00:13
शुक्र	18/11/2030 00:57
सूर्य	19/11/2030 13:11

बुध - राहु - राहु	
19/11/2030 13:11	
08/04/2031 06:10	
राहु	10/12/2030 12:08
गुरु	29/12/2030 03:12
शनि	20/01/2031 06:05
बुध	09/02/2031 01:06
केतु	17/02/2031 04:41
शुक्र	12/03/2031 11:31
सूर्य	19/03/2031 11:10
चंद्र	31/03/2031 02:35
मंगल	08/04/2031 06:10

बुध - राहु - गुरु	
08/04/2031 06:10	
10/08/2031 10:37	
गुरु	24/04/2031 19:34
शनि	14/05/2031 11:28
बुध	01/06/2031 01:42
केतु	08/06/2031 07:33
शुक्र	29/06/2031 00:18
सूर्य	05/07/2031 05:19
चंद्र	15/07/2031 13:41
मंगल	22/07/2031 19:33
राहु	10/08/2031 10:37

बुध - राहु - शनि	
10/08/2031 10:37	
04/01/2032 21:53	
शनि	02/09/2031 19:00
बुध	23/09/2031 16:24
केतु	02/10/2031 06:51
शुक्र	26/10/2031 20:44
सूर्य	03/11/2031 05:42
चंद्र	15/11/2031 12:38
मंगल	24/11/2031 03:06
राहु	16/12/2031 05:59
गुरु	04/01/2032 21:53

बुध - राहु - बुध	
04/01/2032 21:53	
15/05/2032 20:36	
बुध	23/01/2032 14:30
केतु	31/01/2032 07:14
शुक्र	22/02/2032 07:01
सूर्य	28/02/2032 21:21
चंद्र	10/03/2032 21:15
मंगल	18/03/2032 13:58
राहु	07/04/2032 08:59
गुरु	24/04/2032 23:12
शनि	15/05/2032 20:36

बुध - राहु - केतु	
15/05/2032 20:36	
09/07/2032 04:33	
केतु	19/05/2032 00:40
शुक्र	28/05/2032 01:59
सूर्य	30/05/2032 19:11
चंद्र	04/06/2032 07:51
मंगल	07/06/2032 11:55
राहु	15/06/2032 15:30
गुरु	22/06/2032 21:22
शनि	01/07/2032 11:49
बुध	09/07/2032 04:33

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - राहु - शुक्र		बुध - राहु - सूर्य		बुध - राहु - चंद्र		बुध - राहु - मंगल	
09/07/2032 04:33		11/12/2032 10:06		26/01/2033 23:46		14/04/2033 14:32	
11/12/2032 10:06		26/01/2033 23:46		14/04/2033 14:32		07/06/2033 22:29	
शुक्र	04/08/2032 01:28	सूर्य	13/12/2032 17:59	चंद्र	02/02/2033 11:00	मंगल	17/04/2033 18:36
सूर्य	11/08/2032 19:45	चंद्र	17/12/2032 15:07	मंगल	06/02/2033 23:39	राहु	25/04/2033 22:11
चंद्र	24/08/2032 18:13	मंगल	20/12/2032 08:19	राहु	18/02/2033 15:04	गुरु	03/05/2033 04:03
मंगल	02/09/2032 19:32	राहु	27/12/2032 07:58	गुरु	28/02/2033 23:26	शनि	11/05/2033 18:30
राहु	26/09/2032 02:22	गुरु	02/01/2033 12:59	शनि	13/03/2033 06:23	बुध	19/05/2033 11:14
गुरु	16/10/2032 19:06	शनि	09/01/2033 21:57	बुध	24/03/2033 06:16	केतु	22/05/2033 15:18
शनि	10/11/2032 08:59	बुध	16/01/2033 12:17	केतु	28/03/2033 18:56	शुक्र	31/05/2033 16:37
बुध	02/12/2032 08:46	केतु	19/01/2033 05:29	शुक्र	10/04/2033 17:24	सूर्य	03/06/2033 09:49
केतु	11/12/2032 10:06	शुक्र	26/01/2033 23:46	सूर्य	14/04/2033 14:32	चंद्र	07/06/2033 22:29

बुध - गुरु - गुरु		बुध - गुरु - शनि		बुध - गुरु - बुध		बुध - गुरु - केतु	
07/06/2033 22:29		26/09/2033 07:46		04/02/2034 09:47		01/06/2034 16:38	
26/09/2033 07:46		04/02/2034 09:47		01/06/2034 16:38		19/07/2034 23:42	
गुरु	22/06/2033 15:43	शनि	17/10/2033 01:53	बुध	21/02/2034 00:33	केतु	04/06/2034 12:15
शनि	10/07/2033 03:11	बुध	04/11/2033 15:34	केतु	27/02/2034 20:45	शुक्र	12/06/2034 13:26
बुध	25/07/2033 18:30	केतु	12/11/2033 07:05	शुक्र	19/03/2034 09:54	सूर्य	14/06/2034 23:23
केतु	01/08/2033 05:02	शुक्र	04/12/2033 03:25	सूर्य	25/03/2034 06:38	चंद्र	18/06/2034 23:58
शुक्र	19/08/2033 14:35	सूर्य	10/12/2033 16:43	चंद्र	04/04/2034 01:13	मंगल	21/06/2034 19:35
सूर्य	25/08/2033 03:03	चंद्र	21/12/2033 14:53	मंगल	10/04/2034 21:25	राहु	29/06/2034 01:26
चंद्र	03/09/2033 07:50	मंगल	29/12/2033 06:24	राहु	28/04/2034 11:38	गुरु	05/07/2034 11:59
मंगल	09/09/2033 18:22	राहु	17/01/2034 22:19	गुरु	14/05/2034 02:57	शनि	13/07/2034 03:30
राहु	26/09/2033 07:46	गुरु	04/02/2034 09:47	शनि	01/06/2034 16:38	बुध	19/07/2034 23:42

बुध - गुरु - शुक्र		बुध - गुरु - सूर्य		बुध - गुरु - चंद्र		बुध - गुरु - मंगल	
19/07/2034 23:42		04/12/2034 23:18		15/01/2035 08:47		25/03/2035 08:35	
04/12/2034 23:18		15/01/2035 08:47		25/03/2035 08:35		12/05/2035 15:38	
शुक्र	11/08/2034 23:38	सूर्य	07/12/2034 00:58	चंद्र	21/01/2035 02:46	मंगल	28/03/2035 04:11
सूर्य	18/08/2034 21:13	चंद्र	10/12/2034 11:46	मंगल	25/01/2035 03:21	राहु	04/04/2035 10:03
चंद्र	30/08/2034 09:11	मंगल	12/12/2034 21:43	राहु	04/02/2035 11:43	गुरु	10/04/2035 20:35
मंगल	07/09/2034 10:21	राहु	19/12/2034 02:44	गुरु	13/02/2035 16:30	शनि	18/04/2035 12:07
राहु	28/09/2034 03:06	गुरु	24/12/2034 15:12	शनि	24/02/2035 14:40	बुध	25/04/2035 08:19
गुरु	16/10/2034 12:39	शनि	31/12/2034 04:30	बुध	06/03/2035 09:14	केतु	28/04/2035 03:55
शनि	07/11/2034 08:59	बुध	06/01/2035 01:15	केतु	10/03/2035 09:49	शुक्र	06/05/2035 05:06
बुध	26/11/2034 22:07	केतु	08/01/2035 11:12	शुक्र	21/03/2035 21:47	सूर्य	08/05/2035 15:03
केतु	04/12/2034 23:18	शुक्र	15/01/2035 08:47	सूर्य	25/03/2035 08:35	चंद्र	12/05/2035 15:38

विंशोत्तरी दशा - प्राण

बुध - शुक्र - गुरु - गुरु	
26/03/2026 15:06	
14/04/2026 00:39	
गुरु	29/03/2026 01:59
शनि	31/03/2026 23:53
बुध	03/04/2026 14:26
केतु	04/04/2026 16:12
शुक्र	07/04/2026 17:47
सूर्य	08/04/2026 15:52
चंद्र	10/04/2026 04:40
मंगल	11/04/2026 06:25
राहु	14/04/2026 00:39

बुध - शुक्र - गुरु - शनि	
14/04/2026 00:39	
05/05/2026 20:59	
शनि	17/04/2026 11:40
बुध	20/04/2026 13:57
केतु	21/04/2026 20:32
शुक्र	25/04/2026 11:56
सूर्य	26/04/2026 14:09
चंद्र	28/04/2026 09:50
मंगल	29/04/2026 16:26
राहु	02/05/2026 23:05
गुरु	05/05/2026 20:59

बुध - शुक्र - गुरु - बुध	
05/05/2026 20:59	
25/05/2026 10:08	
बुध	08/05/2026 15:27
केतु	09/05/2026 18:49
शुक्र	13/05/2026 01:00
सूर्य	14/05/2026 00:28
चंद्र	15/05/2026 15:34
मंगल	16/05/2026 18:56
राहु	19/05/2026 17:18
गुरु	22/05/2026 07:51
शनि	25/05/2026 10:08

बुध - शुक्र - गुरु - केतु	
25/05/2026 10:08	
02/06/2026 11:18	
केतु	25/05/2026 21:24
शुक्र	27/05/2026 05:36
सूर्य	27/05/2026 15:15
चंद्र	28/05/2026 07:21
मंगल	28/05/2026 18:37
राहु	29/05/2026 23:36
गुरु	31/05/2026 01:21
शनि	01/06/2026 07:56
बुध	02/06/2026 11:18

बुध - शुक्र - गुरु - शुक्र	
02/06/2026 11:18	
25/06/2026 11:14	
शुक्र	06/06/2026 07:18
सूर्य	07/06/2026 10:54
चंद्र	09/06/2026 08:53
मंगल	10/06/2026 17:05
राहु	14/06/2026 03:52
गुरु	17/06/2026 05:28
शनि	20/06/2026 20:51
बुध	24/06/2026 03:03
केतु	25/06/2026 11:14

बुध - शुक्र - गुरु - सूर्य	
25/06/2026 11:14	
02/07/2026 08:49	
सूर्य	25/06/2026 19:31
चंद्र	26/06/2026 09:19
मंगल	26/06/2026 18:59
राहु	27/06/2026 19:49
गुरु	28/06/2026 17:53
शनि	29/06/2026 20:06
बुध	30/06/2026 19:34
केतु	01/07/2026 05:13
शुक्र	02/07/2026 08:49

बुध - शुक्र - गुरु - चंद्र	
02/07/2026 08:49	
13/07/2026 20:47	
चंद्र	03/07/2026 07:49
मंगल	03/07/2026 23:55
राहु	05/07/2026 17:19
गुरु	07/07/2026 06:06
शनि	09/07/2026 01:48
बुध	10/07/2026 16:54
केतु	11/07/2026 09:00
शुक्र	13/07/2026 06:59
सूर्य	13/07/2026 20:47

बुध - शुक्र - गुरु - मंगल	
13/07/2026 20:47	
21/07/2026 21:58	
मंगल	14/07/2026 08:03
राहु	15/07/2026 13:02
गुरु	16/07/2026 14:47
शनि	17/07/2026 21:23
बुध	19/07/2026 00:45
केतु	19/07/2026 12:01
शुक्र	20/07/2026 20:12
सूर्य	21/07/2026 05:52
चंद्र	21/07/2026 21:58

बुध - शुक्र - गुरु - राहु	
21/07/2026 21:58	
11/08/2026 14:42	
राहु	25/07/2026 00:28
गुरु	27/07/2026 18:42
शनि	31/07/2026 01:21
बुध	02/08/2026 23:44
केतु	04/08/2026 04:42
शुक्र	07/08/2026 15:30
सूर्य	08/08/2026 16:20
चंद्र	10/08/2026 09:44
मंगल	11/08/2026 14:42

बुध - शुक्र - शनि - शनि	
11/08/2026 14:42	
06/09/2026 13:21	
शनि	15/08/2026 17:17
बुध	19/08/2026 09:30
केतु	20/08/2026 21:49
शुक्र	25/08/2026 05:36
सूर्य	26/08/2026 12:44
चंद्र	28/08/2026 16:37
मंगल	30/08/2026 04:56
राहु	03/09/2026 02:20
गुरु	06/09/2026 13:21

बुध - शुक्र - शनि - बुध	
06/09/2026 13:21	
29/09/2026 18:28	
बुध	09/09/2026 20:17
केतु	11/09/2026 04:47
शुक्र	15/09/2026 01:38
सूर्य	16/09/2026 05:29
चंद्र	18/09/2026 03:54
मंगल	19/09/2026 12:24
राहु	22/09/2026 23:58
गुरु	26/09/2026 02:15
शनि	29/09/2026 18:28

बुध - शुक्र - शनि - केतु	
29/09/2026 18:28	
09/10/2026 07:52	
केतु	30/09/2026 07:51
शुक्र	01/10/2026 22:05
सूर्य	02/10/2026 09:33
चंद्र	03/10/2026 04:40
मंगल	03/10/2026 18:03
राहु	05/10/2026 04:27
गुरु	06/10/2026 11:02
शनि	07/10/2026 23:22
बुध	09/10/2026 07:52

विंशोत्तरी दशा - प्राण

बुध - शुक्र - शनि - शुक्र		बुध - शुक्र - शनि - सूर्य		बुध - शुक्र - शनि - चंद्र		बुध - शुक्र - शनि - मंगल	
09/10/2026 07:52		05/11/2026 15:17		13/11/2026 19:54		27/11/2026 11:37	
05/11/2026 15:17		13/11/2026 19:54		27/11/2026 11:37		07/12/2026 01:01	
शुक्र	13/10/2026 21:06	सूर्य	06/11/2026 01:07	चंद्र	14/11/2026 23:13	मंगल	28/11/2026 01:00
सूर्य	15/10/2026 05:52	चंद्र	06/11/2026 17:30	मंगल	15/11/2026 18:20	राहु	29/11/2026 11:24
चंद्र	17/10/2026 12:29	मंगल	07/11/2026 04:58	राहु	17/11/2026 19:29	गुरु	30/11/2026 18:00
मंगल	19/10/2026 02:43	राहु	08/11/2026 10:28	गुरु	19/11/2026 15:11	शनि	02/12/2026 06:19
राहु	23/10/2026 05:02	गुरु	09/11/2026 12:41	शनि	21/11/2026 19:04	बुध	03/12/2026 14:49
गुरु	26/10/2026 20:25	शनि	10/11/2026 19:49	बुध	23/11/2026 17:30	केतु	04/12/2026 04:12
शनि	31/10/2026 04:12	बुध	11/11/2026 23:40	केतु	24/11/2026 12:37	शुक्र	05/12/2026 18:26
बुध	04/11/2026 01:03	केतु	12/11/2026 11:08	शुक्र	26/11/2026 19:14	सूर्य	06/12/2026 05:54
केतु	05/11/2026 15:17	शुक्र	13/11/2026 19:54	सूर्य	27/11/2026 11:37	चंद्र	07/12/2026 01:01

बुध - शुक्र - शनि - राहु		बुध - शुक्र - शनि - गुरु		बुध - शुक्र - बुध - बुध		बुध - शुक्र - बुध - केतु	
07/12/2026 01:01		31/12/2026 14:54		22/01/2027 11:14		12/02/2027 05:42	
31/12/2026 14:54		22/01/2027 11:14		12/02/2027 05:42		20/02/2027 18:57	
राहु	10/12/2026 17:30	गुरु	03/01/2027 12:48	बुध	25/01/2027 09:51	केतु	12/02/2027 17:40
गुरु	14/12/2026 00:09	शनि	06/01/2027 23:49	केतु	26/01/2027 14:55	शुक्र	14/02/2027 03:52
शनि	17/12/2026 21:33	बुध	10/01/2027 02:06	शुक्र	30/01/2027 02:00	सूर्य	14/02/2027 14:08
बुध	21/12/2026 09:07	केतु	11/01/2027 08:41	सूर्य	31/01/2027 02:55	चंद्र	15/02/2027 07:14
केतु	22/12/2026 19:31	शुक्र	15/01/2027 00:05	चंद्र	01/02/2027 20:28	मंगल	15/02/2027 19:13
शुक्र	26/12/2026 21:50	सूर्य	16/01/2027 02:18	मंगल	03/02/2027 01:32	राहु	17/02/2027 02:00
सूर्य	28/12/2026 03:20	चंद्र	17/01/2027 22:00	राहु	06/02/2027 04:18	गुरु	18/02/2027 05:22
चंद्र	30/12/2026 04:29	मंगल	19/01/2027 04:35	गुरु	08/02/2027 22:46	शनि	19/02/2027 13:52
मंगल	31/12/2026 14:54	राहु	22/01/2027 11:14	शनि	12/02/2027 05:42	बुध	20/02/2027 18:57

बुध - शुक्र - बुध - शुक्र		बुध - शुक्र - बुध - सूर्य		बुध - शुक्र - बुध - चंद्र		बुध - शुक्र - बुध - मंगल	
20/02/2027 18:57		17/03/2027 05:22		24/03/2027 13:18		05/04/2027 18:31	
17/03/2027 05:22		24/03/2027 13:18		05/04/2027 18:31		14/04/2027 07:46	
शुक्र	24/02/2027 20:41	सूर्य	17/03/2027 14:10	चंद्र	25/03/2027 13:44	मंगल	06/04/2027 06:29
सूर्य	26/02/2027 02:00	चंद्र	18/03/2027 04:50	मंगल	26/03/2027 06:50	राहु	07/04/2027 13:17
चंद्र	28/02/2027 02:52	मंगल	18/03/2027 15:06	राहु	28/03/2027 02:49	गुरु	08/04/2027 16:39
मंगल	01/03/2027 13:05	राहु	19/03/2027 17:29	गुरु	29/03/2027 17:55	शनि	10/04/2027 01:08
राहु	05/03/2027 05:03	गुरु	20/03/2027 16:56	शनि	31/03/2027 16:21	बुध	11/04/2027 06:13
गुरु	08/03/2027 11:14	शनि	21/03/2027 20:48	बुध	02/04/2027 09:53	केतु	11/04/2027 18:11
शनि	12/03/2027 08:05	बुध	22/03/2027 21:43	केतु	03/04/2027 02:59	शुक्र	13/04/2027 04:24
बुध	15/03/2027 19:10	केतु	23/03/2027 07:59	शुक्र	05/04/2027 03:51	सूर्य	13/04/2027 14:40
केतु	17/03/2027 05:22	शुक्र	24/03/2027 13:18	सूर्य	05/04/2027 18:31	चंद्र	14/04/2027 07:46

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 13 वर्ष 11 मास 27 दिन

चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष	
09/04/1962		06/04/1976		06/04/1993		07/04/2011		06/04/2022	
06/04/1976		06/04/1993		07/04/2011		06/04/2022		06/04/2034	
चंद्र	21/06/1962	बुध	03/10/1978	शुक्र	21/01/1996	सूर्य	22/04/2012	मंगल	04/07/2023
बुध	24/10/1964	शुक्र	23/05/1981	सूर्य	06/10/1997	मंगल	11/06/2013	गुरु	06/11/2024
शुक्र	19/04/1967	सूर्य	02/01/1983	मंगल	17/08/1999	गुरु	04/09/2014	शनि	19/04/2026
सूर्य	24/10/1968	मंगल	05/10/1984	गुरु	23/08/2001	शनि	02/01/2016	केतु	07/11/2027
मंगल	21/06/1970	गुरु	01/09/1986	शनि	25/10/2003	केतु	05/06/2017	चंद्र	03/07/2029
गुरु	06/04/1972	शनि	20/09/1988	केतु	21/02/2006	चंद्र	11/12/2018	बुध	07/04/2031
शनि	12/03/1974	केतु	02/12/1990	चंद्र	16/08/2008	बुध	22/07/2020	शुक्र	15/02/2033
केतु	06/04/1976	चंद्र	06/04/1993	बुध	07/04/2011	शुक्र	06/04/2022	सूर्य	06/04/2034

गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष	
06/04/2034		07/04/2047		06/04/2061		06/04/2076	
07/04/2047		06/04/2061		06/04/2076		00/00/0000	
गुरु	20/09/2035	शनि	14/12/2048	केतु	16/03/2063	चंद्र	09/04/2078
शनि	16/04/2037	केतु	06/10/2050	चंद्र	09/04/2065		00/00/0000
केतु	21/12/2038	चंद्र	10/09/2052	बुध	21/06/2067		00/00/0000
चंद्र	05/10/2040	बुध	30/09/2054	शुक्र	18/10/2069		00/00/0000
बुध	01/09/2042	शुक्र	01/12/2056	सूर्य	22/03/2071		00/00/0000
शुक्र	07/09/2044	सूर्य	31/03/2058	मंगल	09/10/2072		00/00/0000
सूर्य	01/12/2045	मंगल	11/09/2059	गुरु	15/06/2074		00/00/0000
मंगल	07/04/2047	गुरु	06/04/2061	शनि	06/04/2076		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल	
09/04/1962		21/06/1962		24/10/1964		19/04/1967		24/10/1968	
21/06/1962		24/10/1964		19/04/1967		24/10/1968		21/06/1970	
	00/00/0000	बुध	24/10/1962	शुक्र	14/03/1965	सूर्य	11/06/1967	मंगल	26/12/1968
	00/00/0000	शुक्र	06/03/1963	सूर्य	08/06/1965	मंगल	07/08/1967	गुरु	04/03/1969
	00/00/0000	सूर्य	27/05/1963	मंगल	10/09/1965	गुरु	08/10/1967	शनि	16/05/1969
	00/00/0000	मंगल	23/08/1963	गुरु	20/12/1965	शनि	14/12/1967	केतु	02/08/1969
	00/00/0000	गुरु	27/11/1963	शनि	09/04/1966	केतु	24/02/1968	चंद्र	24/10/1969
	00/00/0000	शनि	09/03/1964	केतु	04/08/1966	चंद्र	10/05/1968	बुध	21/01/1970
	09/04/1962	केतु	28/06/1964	चंद्र	07/12/1966	बुध	30/07/1968	शुक्र	25/04/1970
केतु	21/06/1962	चंद्र	24/10/1964	बुध	19/04/1967	शुक्र	24/10/1968	सूर्य	21/06/1970

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र	
21/06/1970		06/04/1972		12/03/1974		06/04/1976		03/10/1978	
06/04/1972		12/03/1974		06/04/1976		03/10/1978		23/05/1981	
गुरु	02/09/1970	शनि	30/06/1972	केतु	18/06/1974	बुध	17/08/1976	शुक्र	01/03/1979
शनि	20/11/1970	केतु	29/09/1972	चंद्र	30/09/1974	शुक्र	05/01/1977	सूर्य	01/06/1979
केतु	13/02/1971	चंद्र	04/01/1973	बुध	19/01/1975	सूर्य	02/04/1977	मंगल	08/09/1979
चंद्र	14/05/1971	बुध	18/04/1973	शुक्र	16/05/1975	मंगल	05/07/1977	गुरु	25/12/1979
बुध	18/08/1971	शुक्र	05/08/1973	सूर्य	27/07/1975	गुरु	15/10/1977	शनि	20/04/1980
शुक्र	28/11/1971	सूर्य	11/10/1973	मंगल	13/10/1975	शनि	02/02/1978	केतु	22/08/1980
सूर्य	29/01/1972	मंगल	23/12/1973	गुरु	06/01/1976	केतु	30/05/1978	चंद्र	02/01/1981
मंगल	06/04/1972	गुरु	12/03/1974	शनि	06/04/1976	चंद्र	03/10/1978	बुध	23/05/1981

बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु	
23/05/1981		02/01/1983		05/10/1984		01/09/1986		20/09/1988	
02/01/1983		05/10/1984		01/09/1986		20/09/1988		02/12/1990	
सूर्य	18/07/1981	मंगल	10/03/1983	गुरु	22/12/1984	शनि	01/12/1986	केतु	02/01/1989
मंगल	17/09/1981	गुरु	21/05/1983	शनि	16/03/1985	केतु	08/03/1987	चंद्र	22/04/1989
गुरु	22/11/1981	शनि	06/08/1983	केतु	14/06/1985	चंद्र	19/06/1987	बुध	18/08/1989
शनि	01/02/1982	केतु	28/10/1983	चंद्र	18/09/1985	बुध	07/10/1987	शुक्र	21/12/1989
केतु	18/04/1982	चंद्र	25/01/1984	बुध	29/12/1985	शुक्र	31/01/1988	सूर्य	07/03/1990
चंद्र	08/07/1982	बुध	28/04/1984	शुक्र	16/04/1986	सूर्य	11/04/1988	मंगल	29/05/1990
बुध	03/10/1982	शुक्र	06/08/1984	सूर्य	21/06/1986	मंगल	28/06/1988	गुरु	27/08/1990
शुक्र	02/01/1983	सूर्य	05/10/1984	मंगल	01/09/1986	गुरु	20/09/1988	शनि	02/12/1990

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु	
02/12/1990		06/04/1993		21/01/1996		06/10/1997		17/08/1999	
06/04/1993		21/01/1996		06/10/1997		17/08/1999		23/08/2001	
चंद्र	30/03/1991	शुक्र	11/09/1993	सूर्य	20/03/1996	मंगल	15/12/1997	गुरु	07/11/1999
बुध	02/08/1991	सूर्य	17/12/1993	मंगल	24/05/1996	गुरु	01/03/1998	शनि	04/02/2000
शुक्र	13/12/1991	मंगल	02/04/1994	गुरु	02/08/1996	शनि	22/05/1998	केतु	10/05/2000
सूर्य	03/03/1992	गुरु	25/07/1994	शनि	16/10/1996	केतु	18/08/1998	चंद्र	19/08/2000
मंगल	31/05/1992	शनि	25/11/1994	केतु	05/01/1997	चंद्र	20/11/1998	बुध	05/12/2000
गुरु	04/09/1992	केतु	06/04/1995	चंद्र	01/04/1997	बुध	28/02/1999	शुक्र	30/03/2001
शनि	16/12/1992	चंद्र	25/08/1995	बुध	01/07/1997	शुक्र	13/06/1999	सूर्य	07/06/2001
केतु	06/04/1993	बुध	21/01/1996	शुक्र	06/10/1997	सूर्य	17/08/1999	मंगल	23/08/2001

शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य	
23/08/2001		25/10/2003		21/02/2006		16/08/2008		07/04/2011	
25/10/2003		21/02/2006		16/08/2008		07/04/2011		22/04/2012	
शनि	26/11/2001	केतु	12/02/2004	चंद्र	26/06/2006	बुध	04/01/2009	सूर्य	13/05/2011
केतु	09/03/2002	चंद्र	08/06/2004	बुध	06/11/2006	शुक्र	03/06/2009	मंगल	21/06/2011
चंद्र	26/06/2002	बुध	11/10/2004	शुक्र	27/03/2007	सूर्य	02/09/2009	गुरु	03/08/2011
बुध	21/10/2002	शुक्र	20/02/2005	सूर्य	21/06/2007	मंगल	11/12/2009	शनि	18/09/2011
शुक्र	21/02/2003	सूर्य	11/05/2005	मंगल	23/09/2007	गुरु	29/03/2010	केतु	06/11/2011
सूर्य	07/05/2003	मंगल	07/08/2005	गुरु	02/01/2008	शनि	23/07/2010	चंद्र	29/12/2011
मंगल	28/07/2003	गुरु	11/11/2005	शनि	21/04/2008	केतु	25/11/2010	बुध	22/02/2012
गुरु	25/10/2003	शनि	21/02/2006	केतु	16/08/2008	चंद्र	07/04/2011	शुक्र	22/04/2012

सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र	
22/04/2012		11/06/2013		04/09/2014		02/01/2016		05/06/2017	
11/06/2013		04/09/2014		02/01/2016		05/06/2017		11/12/2018	
मंगल	04/06/2012	गुरु	01/08/2013	शनि	02/11/2014	केतु	10/03/2016	चंद्र	20/08/2017
गुरु	20/07/2012	शनि	24/09/2013	केतु	04/01/2015	चंद्र	20/05/2016	बुध	10/11/2017
शनि	08/09/2012	केतु	21/11/2013	चंद्र	12/03/2015	बुध	04/08/2016	शुक्र	04/02/2018
केतु	01/11/2012	चंद्र	22/01/2014	बुध	22/05/2015	शुक्र	24/10/2016	सूर्य	28/03/2018
चंद्र	28/12/2012	बुध	29/03/2014	शुक्र	05/08/2015	सूर्य	12/12/2016	मंगल	24/05/2018
बुध	27/02/2013	शुक्र	07/06/2014	सूर्य	20/09/2015	मंगल	04/02/2017	गुरु	26/07/2018
शुक्र	03/05/2013	सूर्य	20/07/2014	मंगल	09/11/2015	गुरु	03/04/2017	शनि	30/09/2018
सूर्य	11/06/2013	मंगल	04/09/2014	गुरु	02/01/2016	शनि	05/06/2017	केतु	11/12/2018

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
11/12/2018		22/07/2020		06/04/2022		04/07/2023		06/11/2024	
22/07/2020		06/04/2022		04/07/2023		06/11/2024		19/04/2026	
बुध	07/03/2019	शुक्र	27/10/2020	मंगल	23/05/2022	गुरु	28/08/2023	शनि	09/01/2025
शुक्र	07/06/2019	सूर्य	25/12/2020	गुरु	13/07/2022	शनि	26/10/2023	केतु	18/03/2025
सूर्य	02/08/2019	मंगल	27/02/2021	शनि	06/09/2022	केतु	29/12/2023	चंद्र	30/05/2025
मंगल	01/10/2019	गुरु	08/05/2021	केतु	03/11/2022	चंद्र	05/03/2024	बुध	16/08/2025
गुरु	06/12/2019	शनि	22/07/2021	चंद्र	05/01/2023	बुध	16/05/2024	शुक्र	06/11/2025
शनि	16/02/2020	केतु	11/10/2021	बुध	12/03/2023	शुक्र	01/08/2024	सूर्य	26/12/2025
केतु	02/05/2020	चंद्र	05/01/2022	शुक्र	22/05/2023	सूर्य	16/09/2024	मंगल	19/02/2026
चंद्र	22/07/2020	बुध	06/04/2022	सूर्य	04/07/2023	मंगल	06/11/2024	गुरु	19/04/2026

मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
19/04/2026		07/11/2027		03/07/2029		07/04/2031		15/02/2033	
07/11/2027		03/07/2029		07/04/2031		15/02/2033		06/04/2034	
केतु	01/07/2026	चंद्र	29/01/2028	बुध	05/10/2029	शुक्र	21/07/2031	सूर्य	26/03/2033
चंद्र	17/09/2026	बुध	27/04/2028	शुक्र	13/01/2030	सूर्य	24/09/2031	मंगल	08/05/2033
बुध	09/12/2026	शुक्र	29/07/2028	सूर्य	15/03/2030	मंगल	03/12/2031	गुरु	24/06/2033
शुक्र	07/03/2027	सूर्य	25/09/2028	मंगल	20/05/2030	गुरु	17/02/2032	शनि	13/08/2033
सूर्य	30/04/2027	मंगल	26/11/2028	गुरु	31/07/2030	शनि	09/05/2032	केतु	06/10/2033
मंगल	28/06/2027	गुरु	02/02/2029	शनि	17/10/2030	केतु	05/08/2032	चंद्र	02/12/2033
गुरु	30/08/2027	शनि	16/04/2029	केतु	08/01/2031	चंद्र	07/11/2032	बुध	01/02/2034
शनि	07/11/2027	केतु	03/07/2029	चंद्र	07/04/2031	बुध	15/02/2033	शुक्र	06/04/2034

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध	
06/04/2034		20/09/2035		16/04/2037		21/12/2038		05/10/2040	
20/09/2035		16/04/2037		21/12/2038		05/10/2040		01/09/2042	
गुरु	05/06/2034	शनि	29/11/2035	केतु	04/07/2037	चंद्र	21/03/2039	बुध	15/01/2041
शनि	08/08/2034	केतु	11/02/2036	चंद्र	27/09/2037	बुध	25/06/2039	शुक्र	03/05/2041
केतु	16/10/2034	चंद्र	30/04/2036	बुध	26/12/2037	शुक्र	04/10/2039	सूर्य	08/07/2041
चंद्र	28/12/2034	बुध	23/07/2036	शुक्र	31/03/2038	सूर्य	06/12/2039	मंगल	18/09/2041
बुध	16/03/2035	शुक्र	20/10/2036	सूर्य	28/05/2038	मंगल	11/02/2040	गुरु	05/12/2041
शुक्र	07/06/2035	सूर्य	13/12/2036	मंगल	31/07/2038	गुरु	25/04/2040	शनि	27/02/2042
सूर्य	27/07/2035	मंगल	10/02/2037	गुरु	07/10/2038	शनि	13/07/2040	केतु	28/05/2042
मंगल	20/09/2035	गुरु	16/04/2037	शनि	21/12/2038	केतु	05/10/2040	चंद्र	01/09/2042

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु	
01/09/2042		07/09/2044		01/12/2045		07/04/2047		14/12/2048	
07/09/2044		01/12/2045		07/04/2047		14/12/2048		06/10/2050	
शुक्र	25/12/2042	सूर्य	20/10/2044	मंगल	21/01/2046	शनि	20/06/2047	केतु	09/03/2049
सूर्य	04/03/2043	मंगल	05/12/2044	गुरु	17/03/2046	केतु	08/09/2047	चंद्र	08/06/2049
मंगल	20/05/2043	गुरु	25/01/2045	शनि	16/05/2046	चंद्र	02/12/2047	बुध	13/09/2049
गुरु	10/08/2043	शनि	20/03/2045	केतु	18/07/2046	बुध	01/03/2048	शुक्र	25/12/2049
शनि	07/11/2043	केतु	17/05/2045	चंद्र	24/09/2046	शुक्र	05/06/2048	सूर्य	26/02/2050
केतु	10/02/2044	चंद्र	19/07/2045	बुध	05/12/2046	सूर्य	03/08/2048	मंगल	05/05/2050
चंद्र	22/05/2044	बुध	22/09/2045	शुक्र	19/02/2047	मंगल	06/10/2048	गुरु	18/07/2050
बुध	07/09/2044	शुक्र	01/12/2045	सूर्य	07/04/2047	गुरु	14/12/2048	शनि	06/10/2050

शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल	
06/10/2050		10/09/2052		30/09/2054		01/12/2056		31/03/2058	
10/09/2052		30/09/2054		01/12/2056		31/03/2058		11/09/2059	
चंद्र	11/01/2051	बुध	29/12/2052	शुक्र	31/01/2055	सूर्य	16/01/2057	मंगल	25/05/2058
बुध	25/04/2051	शुक्र	24/04/2053	सूर्य	16/04/2055	मंगल	07/03/2057	गुरु	23/07/2058
शुक्र	12/08/2051	सूर्य	04/07/2053	मंगल	07/07/2055	गुरु	01/05/2057	शनि	25/09/2058
सूर्य	18/10/2051	मंगल	20/09/2053	गुरु	04/10/2055	शनि	28/06/2057	केतु	02/12/2058
मंगल	30/12/2051	गुरु	13/12/2053	शनि	08/01/2056	केतु	30/08/2057	चंद्र	13/02/2059
गुरु	18/03/2052	शनि	13/03/2054	केतु	19/04/2056	चंद्र	05/11/2057	बुध	02/05/2059
शनि	11/06/2052	केतु	18/06/2054	चंद्र	07/08/2056	बुध	15/01/2058	शुक्र	23/07/2059
केतु	10/09/2052	चंद्र	30/09/2054	बुध	01/12/2056	शुक्र	31/03/2058	सूर्य	11/09/2059

शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र	
11/09/2059		06/04/2061		16/03/2063		09/04/2065		21/06/2067	
06/04/2061		16/03/2063		09/04/2065		21/06/2067		18/10/2069	
गुरु	14/11/2059	केतु	07/07/2061	चंद्र	28/06/2063	बुध	05/08/2065	शुक्र	31/10/2067
शनि	22/01/2060	चंद्र	12/10/2061	बुध	16/10/2063	शुक्र	07/12/2065	सूर्य	20/01/2068
केतु	05/04/2060	बुध	24/01/2062	शुक्र	11/02/2064	सूर्य	22/02/2066	मंगल	17/04/2068
चंद्र	24/06/2060	शुक्र	14/05/2062	सूर्य	22/04/2064	मंगल	16/05/2066	गुरु	21/07/2068
बुध	16/09/2060	सूर्य	20/07/2062	मंगल	10/07/2064	गुरु	14/08/2066	शनि	31/10/2068
शुक्र	13/12/2060	मंगल	02/10/2062	गुरु	02/10/2064	शनि	19/11/2066	केतु	18/02/2069
सूर्य	06/02/2061	गुरु	20/12/2062	शनि	01/01/2065	केतु	02/03/2067	चंद्र	16/06/2069
मंगल	06/04/2061	शनि	16/03/2063	केतु	09/04/2065	चंद्र	21/06/2067	बुध	18/10/2069

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 4 वर्ष 0 मास 29 दिन

मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष	
09/04/1962		09/05/1966		09/05/1978		07/01/1989		07/09/2001	
09/05/1966		09/05/1978		07/01/1989		07/09/2001		07/01/2013	
	09/04/1962	राहु	25/02/1968	गुरु	10/10/1979	शनि	09/01/1991	बुध	17/04/2003
राहु	28/08/1962	गुरु	01/10/1969	शनि	18/06/1981	बुध	26/10/1992	केतु	14/12/2003
गुरु	13/04/1963	शनि	26/08/1971	बुध	22/12/1982	केतु	22/07/1993	शुक्र	03/11/2005
शनि	07/01/1964	बुध	08/05/1973	केतु	06/08/1983	शुक्र	02/09/1995	सूर्य	29/05/2006
बुध	05/09/1964	केतु	19/01/1974	शुक्र	17/05/1985	सूर्य	20/04/1996	चंद्र	09/05/2007
केतु	13/12/1964	शुक्र	20/01/1976	सूर्य	27/11/1985	चंद्र	10/05/1997	मंगल	05/01/2008
शुक्र	23/09/1965	सूर्य	26/08/1976	चंद्र	18/10/1986	मंगल	04/02/1998	राहु	17/09/2009
सूर्य	18/12/1965	चंद्र	26/08/1977	मंगल	02/06/1987	राहु	30/12/1999	गुरु	23/03/2011
चंद्र	09/05/1966	मंगल	09/05/1978	राहु	07/01/1989	गुरु	07/09/2001	शनि	07/01/2013

केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष	
07/01/2013		07/09/2017		07/01/2031		07/01/2035		07/09/2041	
07/09/2017		07/01/2031		07/01/2035		07/09/2041		00/00/0000	
केतु	16/04/2013	शुक्र	28/11/2019	सूर्य	21/03/2031	चंद्र	29/07/2035	मंगल	16/12/2041
शुक्र	25/01/2014	सूर्य	28/07/2020	चंद्र	21/07/2031	मंगल	18/12/2035	राहु	09/04/2042
सूर्य	20/04/2014	चंद्र	07/09/2021	मंगल	14/10/2031	राहु	17/12/2036		00/00/0000
चंद्र	09/09/2014	मंगल	18/06/2022	राहु	20/05/2032	गुरु	07/11/2037		00/00/0000
मंगल	18/12/2014	राहु	18/06/2024	गुरु	01/12/2032	शनि	28/11/2038		00/00/0000
राहु	31/08/2015	गुरु	29/03/2026	शनि	20/07/2033	बुध	08/11/2039		00/00/0000
गुरु	14/04/2016	शनि	08/05/2028	बुध	12/02/2034	केतु	29/03/2040		00/00/0000
शनि	09/01/2017	बुध	29/03/2030	केतु	09/05/2034	शुक्र	08/05/2041		00/00/0000
बुध	07/09/2017	केतु	07/01/2031	शुक्र	07/01/2035	सूर्य	07/09/2041		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु	
09/04/1962		28/08/1962		13/04/1963		07/01/1964		05/09/1964	
28/08/1962		13/04/1963		07/01/1964		05/09/1964		13/12/1964	
	00/00/0000	गुरु	28/09/1962	शनि	25/05/1963	बुध	11/02/1964	केतु	11/09/1964
	00/00/0000	शनि	03/11/1962	बुध	02/07/1963	केतु	25/02/1964	शुक्र	27/09/1964
	09/04/1962	बुध	05/12/1962	केतु	18/07/1963	शुक्र	05/04/1964	सूर्य	02/10/1964
बुध	14/05/1962	केतु	18/12/1962	शुक्र	01/09/1963	सूर्य	17/04/1964	चंद्र	10/10/1964
केतु	29/05/1962	शुक्र	25/01/1963	सूर्य	15/09/1963	चंद्र	07/05/1964	मंगल	16/10/1964
शुक्र	10/07/1962	सूर्य	05/02/1963	चंद्र	07/10/1963	मंगल	21/05/1964	राहु	31/10/1964
सूर्य	23/07/1962	चंद्र	24/02/1963	मंगल	23/10/1963	राहु	26/06/1964	गुरु	13/11/1964
चंद्र	13/08/1962	मंगल	09/03/1963	राहु	02/12/1963	गुरु	29/07/1964	शनि	29/11/1964
मंगल	28/08/1962	राहु	13/04/1963	गुरु	07/01/1964	शनि	05/09/1964	बुध	13/12/1964

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
13/12/1964		23/09/1965		18/12/1965		09/05/1966		25/02/1968	
23/09/1965		18/12/1965		09/05/1966		25/02/1968		01/10/1969	
शुक्र	30/01/1965	सूर्य	28/09/1965	चंद्र	29/12/1965	राहु	15/08/1966	गुरु	13/05/1968
सूर्य	13/02/1965	चंद्र	05/10/1965	मंगल	07/01/1966	गुरु	11/11/1966	शनि	14/08/1968
चंद्र	09/03/1965	मंगल	10/10/1965	राहु	28/01/1966	शनि	23/02/1967	बुध	04/11/1968
मंगल	25/03/1965	राहु	22/10/1965	गुरु	16/02/1966	बुध	27/05/1967	केतु	08/12/1968
राहु	07/05/1965	गुरु	03/11/1965	शनि	10/03/1966	केतु	05/07/1967	शुक्र	16/03/1969
गुरु	14/06/1965	शनि	16/11/1965	बुध	31/03/1966	शुक्र	22/10/1967	सूर्य	14/04/1969
शनि	29/07/1965	बुध	28/11/1965	केतु	08/04/1966	सूर्य	24/11/1967	चंद्र	02/06/1969
बुध	07/09/1965	केतु	03/12/1965	शुक्र	02/05/1966	चंद्र	18/01/1968	मंगल	06/07/1969
केतु	23/09/1965	शुक्र	18/12/1965	सूर्य	09/05/1966	मंगल	25/02/1968	राहु	01/10/1969

राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
01/10/1969		26/08/1971		08/05/1973		19/01/1974		20/01/1976	
26/08/1971		08/05/1973		19/01/1974		20/01/1976		26/08/1976	
शनि	19/01/1970	बुध	22/11/1971	केतु	23/05/1973	शुक्र	21/05/1974	सूर्य	31/01/1976
बुध	28/04/1970	केतु	29/12/1971	शुक्र	05/07/1973	सूर्य	26/06/1974	चंद्र	18/02/1976
केतु	07/06/1970	शुक्र	10/04/1972	सूर्य	18/07/1973	चंद्र	26/08/1974	मंगल	02/03/1976
शुक्र	01/10/1970	सूर्य	11/05/1972	चंद्र	08/08/1973	मंगल	08/10/1974	राहु	03/04/1976
सूर्य	05/11/1970	चंद्र	02/07/1972	मंगल	23/08/1973	राहु	25/01/1975	गुरु	03/05/1976
चंद्र	01/01/1971	मंगल	07/08/1972	राहु	30/09/1973	गुरु	03/05/1975	शनि	06/06/1976
मंगल	11/02/1971	राहु	08/11/1972	गुरु	03/11/1973	शनि	26/08/1975	बुध	07/07/1976
राहु	26/05/1971	गुरु	30/01/1973	शनि	14/12/1973	बुध	08/12/1975	केतु	20/07/1976
गुरु	26/08/1971	शनि	08/05/1973	बुध	19/01/1974	केतु	20/01/1976	शुक्र	26/08/1976

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
26/08/1976		26/08/1977		09/05/1978		10/10/1979		18/06/1981	
26/08/1977		09/05/1978		10/10/1979		18/06/1981		22/12/1982	
चंद्र	25/09/1976	मंगल	10/09/1977	गुरु	17/07/1978	शनि	16/01/1980	बुध	04/09/1981
मंगल	16/10/1976	राहु	18/10/1977	शनि	07/10/1978	बुध	12/04/1980	केतु	06/10/1981
राहु	10/12/1976	गुरु	21/11/1977	बुध	20/12/1978	केतु	18/05/1980	शुक्र	06/01/1982
गुरु	28/01/1977	शनि	01/01/1978	केतु	19/01/1979	शुक्र	29/08/1980	सूर्य	03/02/1982
शनि	27/03/1977	बुध	06/02/1978	शुक्र	16/04/1979	सूर्य	29/09/1980	चंद्र	21/03/1982
बुध	18/05/1977	केतु	21/02/1978	सूर्य	12/05/1979	चंद्र	19/11/1980	मंगल	22/04/1982
केतु	08/06/1977	शुक्र	05/04/1978	चंद्र	24/06/1979	मंगल	25/12/1980	राहु	14/07/1982
शुक्र	08/08/1977	सूर्य	17/04/1978	मंगल	24/07/1979	राहु	28/03/1981	गुरु	26/09/1982
सूर्य	26/08/1977	चंद्र	09/05/1978	राहु	10/10/1979	गुरु	18/06/1981	शनि	22/12/1982

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल	
22/12/1982		06/08/1983		17/05/1985		27/11/1985		18/10/1986	
06/08/1983		17/05/1985		27/11/1985		18/10/1986		02/06/1987	
केतु	04/01/1983	शुक्र	22/11/1983	सूर्य	26/05/1985	चंद्र	24/12/1985	मंगल	31/10/1986
शुक्र	11/02/1983	सूर्य	25/12/1983	चंद्र	11/06/1985	मंगल	12/01/1986	राहु	04/12/1986
सूर्य	22/02/1983	चंद्र	17/02/1984	मंगल	23/06/1985	राहु	02/03/1986	गुरु	04/01/1987
चंद्र	13/03/1983	मंगल	26/03/1984	राहु	22/07/1985	गुरु	14/04/1986	शनि	09/02/1987
मंगल	27/03/1983	राहु	01/07/1984	गुरु	17/08/1985	शनि	05/06/1986	बुध	13/03/1987
राहु	30/04/1983	गुरु	26/09/1984	शनि	17/09/1985	बुध	21/07/1986	केतु	26/03/1987
गुरु	30/05/1983	शनि	07/01/1985	बुध	14/10/1985	केतु	09/08/1986	शुक्र	03/05/1987
शनि	05/07/1983	बुध	09/04/1985	केतु	26/10/1985	शुक्र	02/10/1986	सूर्य	14/05/1987
बुध	06/08/1983	केतु	17/05/1985	शुक्र	27/11/1985	सूर्य	18/10/1986	चंद्र	02/06/1987

गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
02/06/1987		07/01/1989		09/01/1991		26/10/1992		22/07/1993	
07/01/1989		09/01/1991		26/10/1992		22/07/1993		02/09/1995	
राहु	29/08/1987	शनि	03/05/1989	बुध	12/04/1991	केतु	10/11/1992	शुक्र	28/11/1993
गुरु	15/11/1987	बुध	14/08/1989	केतु	20/05/1991	शुक्र	25/12/1992	सूर्य	06/01/1994
शनि	15/02/1988	केतु	26/09/1989	शुक्र	06/09/1991	सूर्य	08/01/1993	चंद्र	11/03/1994
बुध	08/05/1988	शुक्र	26/01/1990	सूर्य	09/10/1991	चंद्र	30/01/1993	मंगल	25/04/1994
केतु	11/06/1988	सूर्य	04/03/1990	चंद्र	03/12/1991	मंगल	15/02/1993	राहु	18/08/1994
शुक्र	17/09/1988	चंद्र	04/05/1990	मंगल	10/01/1992	राहु	28/03/1993	गुरु	29/11/1994
सूर्य	16/10/1988	मंगल	16/06/1990	राहु	17/04/1992	गुरु	03/05/1993	शनि	31/03/1995
चंद्र	04/12/1988	राहु	03/10/1990	गुरु	14/07/1992	शनि	14/06/1993	बुध	19/07/1995
मंगल	07/01/1989	गुरु	09/01/1991	शनि	26/10/1992	बुध	22/07/1993	केतु	02/09/1995

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु	
02/09/1995		20/04/1996		10/05/1997		04/02/1998		30/12/1999	
20/04/1996		10/05/1997		04/02/1998		30/12/1999		07/09/2001	
सूर्य	13/09/1995	चंद्र	22/05/1996	मंगल	26/05/1997	राहु	19/05/1998	गुरु	22/03/2000
चंद्र	02/10/1995	मंगल	13/06/1996	राहु	06/07/1997	गुरु	20/08/1998	शनि	27/06/2000
मंगल	16/10/1995	राहु	10/08/1996	गुरु	11/08/1997	शनि	08/12/1998	बुध	23/09/2000
राहु	20/11/1995	गुरु	01/10/1996	शनि	22/09/1997	बुध	16/03/1999	केतु	29/10/2000
गुरु	20/12/1995	शनि	01/12/1996	बुध	31/10/1997	केतु	26/04/1999	शुक्र	08/02/2001
शनि	26/01/1996	बुध	24/01/1997	केतु	15/11/1997	शुक्र	19/08/1999	सूर्य	11/03/2001
बुध	28/02/1996	केतु	16/02/1997	शुक्र	30/12/1997	सूर्य	23/09/1999	चंद्र	02/05/2001
केतु	12/03/1996	शुक्र	21/04/1997	सूर्य	13/01/1998	चंद्र	20/11/1999	मंगल	07/06/2001
शुक्र	20/04/1996	सूर्य	10/05/1997	चंद्र	04/02/1998	मंगल	30/12/1999	राहु	07/09/2001

बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
07/09/2001		17/04/2003		14/12/2003		03/11/2005		29/05/2006	
17/04/2003		14/12/2003		03/11/2005		29/05/2006		09/05/2007	
बुध	29/11/2001	केतु	01/05/2003	शुक्र	07/04/2004	सूर्य	13/11/2005	चंद्र	27/06/2006
केतु	02/01/2002	शुक्र	10/06/2003	सूर्य	12/05/2004	चंद्र	01/12/2005	मंगल	17/07/2006
शुक्र	10/04/2002	सूर्य	22/06/2003	चंद्र	08/07/2004	मंगल	13/12/2005	राहु	07/09/2006
सूर्य	09/05/2002	चंद्र	12/07/2003	मंगल	17/08/2004	राहु	13/01/2006	गुरु	23/10/2006
चंद्र	27/06/2002	मंगल	26/07/2003	राहु	29/11/2004	गुरु	09/02/2006	शनि	16/12/2006
मंगल	01/08/2002	राहु	31/08/2003	गुरु	01/03/2005	शनि	14/03/2006	बुध	03/02/2007
राहु	28/10/2002	गुरु	03/10/2003	शनि	18/06/2005	बुध	12/04/2006	केतु	23/02/2007
गुरु	14/01/2003	शनि	10/11/2003	बुध	24/09/2005	केतु	24/04/2006	शुक्र	22/04/2007
शनि	17/04/2003	बुध	14/12/2003	केतु	03/11/2005	शुक्र	29/05/2006	सूर्य	09/05/2007

बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
09/05/2007		05/01/2008		17/09/2009		23/03/2011		07/01/2013	
05/01/2008		17/09/2009		23/03/2011		07/01/2013		16/04/2013	
मंगल	23/05/2007	राहु	07/04/2008	गुरु	30/11/2009	शनि	05/07/2011	केतु	12/01/2013
राहु	28/06/2007	गुरु	29/06/2008	शनि	25/02/2010	बुध	06/10/2011	शुक्र	29/01/2013
गुरु	30/07/2007	शनि	06/10/2008	बुध	14/05/2010	केतु	13/11/2011	सूर्य	03/02/2013
शनि	07/09/2007	बुध	02/01/2009	केतु	16/06/2010	शुक्र	01/03/2012	चंद्र	11/02/2013
बुध	11/10/2007	केतु	07/02/2009	शुक्र	16/09/2010	सूर्य	03/04/2012	मंगल	17/02/2013
केतु	25/10/2007	शुक्र	21/05/2009	सूर्य	13/10/2010	चंद्र	28/05/2012	राहु	04/03/2013
शुक्र	04/12/2007	सूर्य	21/06/2009	चंद्र	28/11/2010	मंगल	05/07/2012	गुरु	17/03/2013
सूर्य	16/12/2007	चंद्र	12/08/2009	मंगल	30/12/2010	राहु	11/10/2012	शनि	02/04/2013
चंद्र	05/01/2008	मंगल	17/09/2009	राहु	23/03/2011	गुरु	07/01/2013	बुध	16/04/2013

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
16/04/2013		25/01/2014		20/04/2014		09/09/2014		18/12/2014	
25/01/2014		20/04/2014		09/09/2014		18/12/2014		31/08/2015	
शुक्र	02/06/2013	सूर्य	29/01/2014	चंद्र	02/05/2014	मंगल	15/09/2014	राहु	25/01/2015
सूर्य	17/06/2013	चंद्र	06/02/2014	मंगल	10/05/2014	राहु	30/09/2014	गुरु	28/02/2015
चंद्र	10/07/2013	मंगल	10/02/2014	राहु	01/06/2014	गुरु	13/10/2014	शनि	10/04/2015
मंगल	27/07/2013	राहु	23/02/2014	गुरु	20/06/2014	शनि	29/10/2014	बुध	16/05/2015
राहु	07/09/2013	गुरु	07/03/2014	शनि	12/07/2014	बुध	12/11/2014	केतु	31/05/2015
गुरु	15/10/2013	शनि	20/03/2014	बुध	01/08/2014	केतु	18/11/2014	शुक्र	13/07/2015
शनि	29/11/2013	बुध	01/04/2014	केतु	10/08/2014	शुक्र	05/12/2014	सूर्य	25/07/2015
बुध	09/01/2014	केतु	06/04/2014	शुक्र	02/09/2014	सूर्य	10/12/2014	चंद्र	16/08/2015
केतु	25/01/2014	शुक्र	20/04/2014	सूर्य	09/09/2014	चंद्र	18/12/2014	मंगल	31/08/2015

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
31/08/2015		14/04/2016		09/01/2017		07/09/2017		28/11/2019	
14/04/2016		09/01/2017		07/09/2017		28/11/2019		28/07/2020	
गुरु	30/09/2015	शनि	27/05/2016	बुध	12/02/2017	शुक्र	20/01/2018	सूर्य	10/12/2019
शनि	05/11/2015	बुध	04/07/2016	केतु	26/02/2017	सूर्य	02/03/2018	चंद्र	30/12/2019
बुध	07/12/2015	केतु	19/07/2016	शुक्र	07/04/2017	चंद्र	09/05/2018	मंगल	13/01/2020
केतु	20/12/2015	शुक्र	02/09/2016	सूर्य	19/04/2017	मंगल	25/06/2018	राहु	19/02/2020
शुक्र	27/01/2016	सूर्य	16/09/2016	चंद्र	09/05/2017	राहु	25/10/2018	गुरु	22/03/2020
सूर्य	08/02/2016	चंद्र	08/10/2016	मंगल	23/05/2017	गुरु	10/02/2019	शनि	30/04/2020
चंद्र	26/02/2016	मंगल	24/10/2016	राहु	29/06/2017	शनि	18/06/2019	बुध	04/06/2020
मंगल	11/03/2016	राहु	04/12/2016	गुरु	31/07/2017	बुध	11/10/2019	केतु	18/06/2020
राहु	14/04/2016	गुरु	09/01/2017	शनि	07/09/2017	केतु	28/11/2019	शुक्र	28/07/2020

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
28/07/2020		07/09/2021		18/06/2022		18/06/2024		29/03/2026	
07/09/2021		18/06/2022		18/06/2024		29/03/2026		08/05/2028	
चंद्र	31/08/2020	मंगल	24/09/2021	राहु	06/10/2022	गुरु	12/09/2024	शनि	29/07/2026
मंगल	24/09/2020	राहु	05/11/2021	गुरु	11/01/2023	शनि	24/12/2024	बुध	15/11/2026
राहु	24/11/2020	गुरु	13/12/2021	शनि	07/05/2023	बुध	26/03/2025	केतु	30/12/2026
गुरु	17/01/2021	शनि	27/01/2022	बुध	18/08/2023	केतु	03/05/2025	शुक्र	08/05/2027
शनि	22/03/2021	बुध	08/03/2022	केतु	30/09/2023	शुक्र	19/08/2025	सूर्य	15/06/2027
बुध	19/05/2021	केतु	25/03/2022	शुक्र	30/01/2024	सूर्य	21/09/2025	चंद्र	19/08/2027
केतु	11/06/2021	शुक्र	11/05/2022	सूर्य	06/03/2024	चंद्र	14/11/2025	मंगल	03/10/2027
शुक्र	18/08/2021	सूर्य	26/05/2022	चंद्र	06/05/2024	मंगल	22/12/2025	राहु	26/01/2028
सूर्य	07/09/2021	चंद्र	18/06/2022	मंगल	18/06/2024	राहु	29/03/2026	गुरु	08/05/2028

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
08/05/2028		29/03/2030		07/01/2031		21/03/2031		21/07/2031	
29/03/2030		07/01/2031		21/03/2031		21/07/2031		14/10/2031	
बुध	14/08/2028	केतु	15/04/2030	सूर्य	11/01/2031	चंद्र	31/03/2031	मंगल	26/07/2031
केतु	23/09/2028	शुक्र	01/06/2030	चंद्र	17/01/2031	मंगल	07/04/2031	राहु	08/08/2031
शुक्र	16/01/2029	सूर्य	15/06/2030	मंगल	21/01/2031	राहु	26/04/2031	गुरु	19/08/2031
सूर्य	20/02/2029	चंद्र	09/07/2030	राहु	01/02/2031	गुरु	12/05/2031	शनि	02/09/2031
चंद्र	18/04/2029	मंगल	25/07/2030	गुरु	11/02/2031	शनि	31/05/2031	बुध	14/09/2031
मंगल	28/05/2029	राहु	06/09/2030	शनि	22/02/2031	बुध	17/06/2031	केतु	19/09/2031
राहु	09/09/2029	गुरु	14/10/2030	बुध	05/03/2031	केतु	25/06/2031	शुक्र	03/10/2031
गुरु	10/12/2029	शनि	28/11/2030	केतु	09/03/2031	शुक्र	15/07/2031	सूर्य	07/10/2031
शनि	29/03/2030	बुध	07/01/2031	शुक्र	21/03/2031	सूर्य	21/07/2031	चंद्र	14/10/2031

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
14/10/2031		20/05/2032		01/12/2032		20/07/2033		12/02/2034	
20/05/2032		01/12/2032		20/07/2033		12/02/2034		09/05/2034	
राहु	16/11/2031	गुरु	15/06/2032	शनि	07/01/2033	बुध	19/08/2033	केतु	17/02/2034
गुरु	15/12/2031	शनि	16/07/2032	बुध	09/02/2033	केतु	31/08/2033	शुक्र	04/03/2034
शनि	19/01/2032	बुध	13/08/2032	केतु	22/02/2033	शुक्र	04/10/2033	सूर्य	08/03/2034
बुध	19/02/2032	केतु	24/08/2032	शुक्र	02/04/2033	सूर्य	15/10/2033	चंद्र	15/03/2034
केतु	03/03/2032	शुक्र	26/09/2032	सूर्य	13/04/2033	चंद्र	01/11/2033	मंगल	20/03/2034
शुक्र	08/04/2032	सूर्य	05/10/2032	चंद्र	02/05/2033	मंगल	13/11/2033	राहु	02/04/2034
सूर्य	19/04/2032	चंद्र	22/10/2032	मंगल	16/05/2033	राहु	14/12/2033	गुरु	13/04/2034
चंद्र	08/05/2032	मंगल	02/11/2032	राहु	20/06/2033	गुरु	11/01/2034	शनि	27/04/2034
मंगल	20/05/2032	राहु	01/12/2032	गुरु	20/07/2033	शनि	12/02/2034	बुध	09/05/2034

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
09/05/2034		07/01/2035		29/07/2035		18/12/2035		17/12/2036	
07/01/2035		29/07/2035		18/12/2035		17/12/2036		07/11/2037	
शुक्र	18/06/2034	चंद्र	24/01/2035	मंगल	06/08/2035	राहु	11/02/2036	गुरु	30/01/2037
सूर्य	30/06/2034	मंगल	05/02/2035	राहु	28/08/2035	गुरु	31/03/2036	शनि	22/03/2037
चंद्र	21/07/2034	राहु	07/03/2035	गुरु	16/09/2035	शनि	27/05/2036	बुध	07/05/2037
मंगल	04/08/2034	गुरु	03/04/2035	शनि	08/10/2035	बुध	18/07/2036	केतु	26/05/2037
राहु	09/09/2034	शनि	06/05/2035	बुध	28/10/2035	केतु	08/08/2036	शुक्र	19/07/2037
गुरु	12/10/2034	बुध	03/06/2035	केतु	05/11/2035	शुक्र	08/10/2036	सूर्य	04/08/2037
शनि	19/11/2034	केतु	15/06/2035	शुक्र	29/11/2035	सूर्य	27/10/2036	चंद्र	31/08/2037
बुध	24/12/2034	शुक्र	19/07/2035	सूर्य	06/12/2035	चंद्र	26/11/2036	मंगल	19/09/2037
केतु	07/01/2035	सूर्य	29/07/2035	चंद्र	18/12/2035	मंगल	17/12/2036	राहु	07/11/2037

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 1 वर्ष 8 मास 30 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष	
09/04/1962		08/01/1964		08/01/1979		08/01/1987		08/01/2004	
08/01/1964		08/01/1979		08/01/1987		08/01/2004		07/01/2014	
	00/00/0000	चंद्र	07/02/1966	मंगल	12/08/1979	बुध	11/09/1989	शनि	11/12/2004
	00/00/0000	मंगल	20/03/1967	बुध	14/11/1980	शनि	09/04/1991	गुरु	15/09/2006
	00/00/0000	बुध	29/07/1969	शनि	12/08/1981	गुरु	05/04/1994	राहु	25/10/2007
	00/00/0000	शनि	18/12/1970	गुरु	08/01/1983	राहु	24/02/1996	शुक्र	05/10/2009
	00/00/0000	गुरु	08/08/1973	राहु	28/11/1983	शुक्र	16/06/1999	सूर्य	26/04/2010
	09/04/1962	राहु	09/04/1975	शुक्र	18/06/1985	सूर्य	25/05/2000	चंद्र	15/09/2011
राहु	08/11/1962	शुक्र	09/03/1978	सूर्य	28/11/1985	चंद्र	05/10/2002	मंगल	11/06/2012
शुक्र	08/01/1964	सूर्य	08/01/1979	चंद्र	08/01/1987	मंगल	08/01/2004	बुध	07/01/2014

गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
07/01/2014		07/01/2033		07/01/2045		07/01/2066	
07/01/2033		07/01/2045		07/01/2066		00/00/0000	
गुरु	12/05/2017	राहु	09/05/2034	शुक्र	07/02/2049	सूर्य	09/05/2066
राहु	22/06/2019	शुक्र	07/09/2036	सूर्य	09/04/2050	चंद्र	09/03/2067
शुक्र	03/03/2023	सूर्य	09/05/2037	चंद्र	09/03/2053	मंगल	19/08/2067
सूर्य	22/03/2024	चंद्र	08/01/2039	मंगल	28/09/2054	बुध	29/07/2068
चंद्र	11/11/2026	मंगल	28/11/2039	बुध	17/01/2058	शनि	17/02/2069
मंगल	08/04/2028	बुध	18/10/2041	शनि	29/12/2059	गुरु	09/03/2070
बुध	06/04/2031	शनि	28/11/2042	गुरु	08/09/2063	राहु	09/04/2070
शनि	07/01/2033	गुरु	07/01/2045	राहु	07/01/2066		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - राहु	
09/04/1962	
08/11/1962	
	09/04/1962
शुक्र	23/05/1962
सूर्य	05/06/1962
चंद्र	09/07/1962
मंगल	27/07/1962
बुध	03/09/1962
शनि	26/09/1962
गुरु	08/11/1962

सूर्य - शुक्र	
08/11/1962	
08/01/1964	
शुक्र	30/01/1963
सूर्य	22/02/1963
चंद्र	22/04/1963
मंगल	24/05/1963
बुध	30/07/1963
शनि	08/09/1963
गुरु	21/11/1963
राहु	08/01/1964

चंद्र - चंद्र	
08/01/1964	
07/02/1966	
चंद्र	23/04/1964
मंगल	18/06/1964
बुध	16/10/1964
शनि	25/12/1964
गुरु	08/05/1965
राहु	01/08/1965
शुक्र	26/12/1965
सूर्य	07/02/1966

चंद्र - मंगल	
07/02/1966	
20/03/1967	
मंगल	09/03/1966
बुध	12/05/1966
शनि	18/06/1966
गुरु	29/08/1966
राहु	13/10/1966
शुक्र	31/12/1966
सूर्य	22/01/1967
चंद्र	20/03/1967

चंद्र - बुध	
20/03/1967	
29/07/1969	
बुध	02/08/1967
शनि	21/10/1967
गुरु	21/03/1968
राहु	25/06/1968
शुक्र	09/12/1968
सूर्य	26/01/1969
चंद्र	26/05/1969
मंगल	29/07/1969

चंद्र - शनि	
29/07/1969	
18/12/1970	
शनि	14/09/1969
गुरु	12/12/1969
राहु	07/02/1970
शुक्र	16/05/1970
सूर्य	13/06/1970
चंद्र	23/08/1970
मंगल	29/09/1970
बुध	18/12/1970

चंद्र - गुरु	
18/12/1970	
08/08/1973	
गुरु	06/06/1971
राहु	21/09/1971
शुक्र	26/03/1972
सूर्य	19/05/1972
चंद्र	30/09/1972
मंगल	10/12/1972
बुध	11/05/1973
शनि	08/08/1973

चंद्र - राहु	
08/08/1973	
09/04/1975	
राहु	15/10/1973
शुक्र	10/02/1974
सूर्य	16/03/1974
चंद्र	09/06/1974
मंगल	24/07/1974
बुध	27/10/1974
शनि	23/12/1974
गुरु	09/04/1975

चंद्र - शुक्र	
09/04/1975	
09/03/1978	
शुक्र	02/11/1975
सूर्य	31/12/1975
चंद्र	27/05/1976
मंगल	14/08/1976
बुध	29/01/1977
शनि	07/05/1977
गुरु	11/11/1977
राहु	09/03/1978

चंद्र - सूर्य	
09/03/1978	
08/01/1979	
सूर्य	26/03/1978
चंद्र	07/05/1978
मंगल	30/05/1978
बुध	17/07/1978
शनि	14/08/1978
गुरु	07/10/1978
राहु	09/11/1978
शुक्र	08/01/1979

मंगल - मंगल	
08/01/1979	
12/08/1979	
मंगल	24/01/1979
बुध	27/02/1979
शनि	19/03/1979
गुरु	26/04/1979
राहु	20/05/1979
शुक्र	01/07/1979
सूर्य	13/07/1979
चंद्र	12/08/1979

मंगल - बुध	
12/08/1979	
14/11/1980	
बुध	23/10/1979
शनि	05/12/1979
गुरु	24/02/1980
राहु	15/04/1980
शुक्र	13/07/1980
सूर्य	08/08/1980
चंद्र	11/10/1980
मंगल	14/11/1980

मंगल - शनि	
14/11/1980	
12/08/1981	
शनि	09/12/1980
गुरु	26/01/1981
राहु	25/02/1981
शुक्र	18/04/1981
सूर्य	03/05/1981
चंद्र	10/06/1981
मंगल	30/06/1981
बुध	12/08/1981

मंगल - गुरु	
12/08/1981	
08/01/1983	
गुरु	10/11/1981
राहु	06/01/1982
शुक्र	16/04/1982
सूर्य	15/05/1982
चंद्र	25/07/1982
मंगल	01/09/1982
बुध	21/11/1982
शनि	08/01/1983

मंगल - राहु	
08/01/1983	
28/11/1983	
राहु	13/02/1983
शुक्र	17/04/1983
सूर्य	05/05/1983
चंद्र	19/06/1983
मंगल	13/07/1983
बुध	02/09/1983
शनि	02/10/1983
गुरु	28/11/1983

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		बुध - बुध		बुध - शनि	
28/11/1983		18/06/1985		28/11/1985		08/01/1987		11/09/1989	
18/06/1985		28/11/1985		08/01/1987		11/09/1989		09/04/1991	
शुक्र	18/03/1984	सूर्य	27/06/1985	चंद्र	23/01/1986	बुध	10/06/1987	शनि	03/11/1989
सूर्य	18/04/1984	चंद्र	20/07/1985	मंगल	22/02/1986	शनि	09/09/1987	गुरु	12/02/1990
चंद्र	06/07/1984	मंगल	01/08/1985	बुध	27/04/1986	गुरु	28/02/1988	राहु	17/04/1990
मंगल	17/08/1984	बुध	27/08/1985	शनि	04/06/1986	राहु	15/06/1988	शुक्र	07/08/1990
बुध	15/11/1984	शनि	11/09/1985	गुरु	14/08/1986	शुक्र	23/12/1988	सूर्य	08/09/1990
शनि	06/01/1985	गुरु	09/10/1985	राहु	28/09/1986	सूर्य	15/02/1989	चंद्र	27/11/1990
गुरु	16/04/1985	राहु	27/10/1985	शुक्र	16/12/1986	चंद्र	01/07/1989	मंगल	08/01/1991
राहु	18/06/1985	शुक्र	28/11/1985	सूर्य	08/01/1987	मंगल	11/09/1989	बुध	09/04/1991

बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
09/04/1991		05/04/1994		24/02/1996		16/06/1999		25/05/2000	
05/04/1994		24/02/1996		16/06/1999		25/05/2000		05/10/2002	
गुरु	18/10/1991	राहु	21/06/1994	शुक्र	16/10/1996	सूर्य	05/07/1999	चंद्र	22/09/2000
राहु	16/02/1992	शुक्र	02/11/1994	सूर्य	22/12/1996	चंद्र	22/08/1999	मंगल	25/11/2000
शुक्र	16/09/1992	सूर्य	10/12/1994	चंद्र	08/06/1997	मंगल	16/09/1999	बुध	10/04/2001
सूर्य	16/11/1992	चंद्र	16/03/1995	मंगल	05/09/1997	बुध	09/11/1999	शनि	29/06/2001
चंद्र	16/04/1993	मंगल	06/05/1995	बुध	14/03/1998	शनि	11/12/1999	गुरु	27/11/2001
मंगल	06/07/1993	बुध	23/08/1995	शनि	04/07/1998	गुरु	10/02/2000	राहु	03/03/2002
बुध	25/12/1993	शनि	26/10/1995	गुरु	01/02/1999	राहु	19/03/2000	शुक्र	18/08/2002
शनि	05/04/1994	गुरु	24/02/1996	राहु	16/06/1999	शुक्र	25/05/2000	सूर्य	05/10/2002

बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र	
05/10/2002		08/01/2004		11/12/2004		15/09/2006		25/10/2007	
08/01/2004		11/12/2004		15/09/2006		25/10/2007		05/10/2009	
मंगल	08/11/2002	शनि	08/02/2004	गुरु	03/04/2005	राहु	30/10/2006	शुक्र	12/03/2008
बुध	19/01/2003	गुरु	08/04/2004	राहु	13/06/2005	शुक्र	17/01/2007	सूर्य	20/04/2008
शनि	03/03/2003	राहु	15/05/2004	शुक्र	16/10/2005	सूर्य	08/02/2007	चंद्र	28/07/2008
गुरु	23/05/2003	शुक्र	20/07/2004	सूर्य	21/11/2005	चंद्र	06/04/2007	मंगल	18/09/2008
राहु	13/07/2003	सूर्य	08/08/2004	चंद्र	18/02/2006	मंगल	06/05/2007	बुध	08/01/2009
शुक्र	10/10/2003	चंद्र	24/09/2004	मंगल	07/04/2006	बुध	08/07/2007	शनि	15/03/2009
सूर्य	05/11/2003	मंगल	19/10/2004	बुध	17/07/2006	शनि	15/08/2007	गुरु	18/07/2009
चंद्र	08/01/2004	बुध	11/12/2004	शनि	15/09/2006	गुरु	25/10/2007	राहु	05/10/2009

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध		गुरु - गुरु	
05/10/2009		26/04/2010		15/09/2011		11/06/2012		07/01/2014	
26/04/2010		15/09/2011		11/06/2012		07/01/2014		12/05/2017	
सूर्य	16/10/2009	चंद्र	05/07/2010	मंगल	05/10/2011	बुध	10/09/2012	गुरु	10/08/2014
चंद्र	13/11/2009	मंगल	12/08/2010	बुध	16/11/2011	शनि	02/11/2012	राहु	24/12/2014
मंगल	28/11/2009	बुध	30/10/2010	शनि	12/12/2011	गुरु	11/02/2013	शुक्र	18/08/2015
बुध	30/12/2009	शनि	16/12/2010	गुरु	28/01/2012	राहु	16/04/2013	सूर्य	25/10/2015
शनि	18/01/2010	गुरु	16/03/2011	राहु	27/02/2012	शुक्र	06/08/2013	चंद्र	12/04/2016
गुरु	23/02/2010	राहु	11/05/2011	शुक्र	20/04/2012	सूर्य	07/09/2013	मंगल	11/07/2016
राहु	17/03/2010	शुक्र	18/08/2011	सूर्य	05/05/2012	चंद्र	26/11/2013	बुध	19/01/2017
शुक्र	26/04/2010	सूर्य	15/09/2011	चंद्र	11/06/2012	मंगल	07/01/2014	शनि	12/05/2017

गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल	
12/05/2017		22/06/2019		03/03/2023		22/03/2024		11/11/2026	
22/06/2019		03/03/2023		22/03/2024		11/11/2026		08/04/2028	
राहु	06/08/2017	शुक्र	11/03/2020	सूर्य	24/03/2023	चंद्र	03/08/2024	मंगल	19/12/2026
शुक्र	03/01/2018	सूर्य	25/05/2020	चंद्र	17/05/2023	मंगल	14/10/2024	बुध	10/03/2027
सूर्य	15/02/2018	चंद्र	28/11/2020	मंगल	14/06/2023	बुध	14/03/2025	शनि	27/04/2027
चंद्र	02/06/2018	मंगल	08/03/2021	बुध	14/08/2023	शनि	11/06/2025	गुरु	26/07/2027
मंगल	29/07/2018	बुध	06/10/2021	शनि	19/09/2023	गुरु	28/11/2025	राहु	21/09/2027
बुध	27/11/2018	शनि	08/02/2022	गुरु	25/11/2023	राहु	15/03/2026	शुक्र	30/12/2027
शनि	07/02/2019	गुरु	04/10/2022	राहु	07/01/2024	शुक्र	19/09/2026	सूर्य	28/01/2028
गुरु	22/06/2019	राहु	03/03/2023	शुक्र	22/03/2024	सूर्य	11/11/2026	चंद्र	08/04/2028

गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
08/04/2028		06/04/2031		07/01/2033		09/05/2034		07/09/2036	
06/04/2031		07/01/2033		09/05/2034		07/09/2036		09/05/2037	
बुध	27/09/2028	शनि	04/06/2031	राहु	02/03/2033	शुक्र	22/10/2034	सूर्य	21/09/2036
शनि	06/01/2029	गुरु	25/09/2031	शुक्र	05/06/2033	सूर्य	08/12/2034	चंद्र	25/10/2036
गुरु	17/07/2029	राहु	05/12/2031	सूर्य	02/07/2033	चंद्र	06/04/2035	मंगल	12/11/2036
राहु	16/11/2029	शुक्र	08/04/2032	चंद्र	08/09/2033	मंगल	08/06/2035	बुध	20/12/2036
शुक्र	16/06/2030	सूर्य	14/05/2032	मंगल	14/10/2033	बुध	20/10/2035	शनि	12/01/2037
सूर्य	16/08/2030	चंद्र	11/08/2032	बुध	29/12/2033	शनि	07/01/2036	गुरु	23/02/2037
चंद्र	15/01/2031	मंगल	28/09/2032	शनि	12/02/2034	गुरु	05/06/2036	राहु	22/03/2037
मंगल	06/04/2031	बुध	07/01/2033	गुरु	09/05/2034	राहु	07/09/2036	शुक्र	09/05/2037

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि		राहु - गुरु	
09/05/2037		08/01/2039		28/11/2039		18/10/2041		28/11/2042	
08/01/2039		28/11/2039		18/10/2041		28/11/2042		07/01/2045	
चंद्र	01/08/2037	मंगल	01/02/2039	बुध	16/03/2040	शनि	25/11/2041	गुरु	13/04/2043
मंगल	15/09/2037	बुध	24/03/2039	शनि	19/05/2040	गुरु	04/02/2042	राहु	07/07/2043
बुध	20/12/2037	शनि	23/04/2039	गुरु	17/09/2040	राहु	21/03/2042	शुक्र	04/12/2043
शनि	15/02/2038	गुरु	19/06/2039	राहु	03/12/2040	शुक्र	08/06/2042	सूर्य	16/01/2044
गुरु	02/06/2038	राहु	25/07/2039	शुक्र	16/04/2041	सूर्य	01/07/2042	चंद्र	02/05/2044
राहु	08/08/2038	शुक्र	26/09/2039	सूर्य	24/05/2041	चंद्र	26/08/2042	मंगल	28/06/2044
शुक्र	05/12/2038	सूर्य	14/10/2039	चंद्र	28/08/2041	मंगल	25/09/2042	बुध	28/10/2044
सूर्य	08/01/2039	चंद्र	28/11/2039	मंगल	18/10/2041	बुध	28/11/2042	शनि	07/01/2045

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध	
07/01/2045		07/02/2049		09/04/2050		09/03/2053		28/09/2054	
07/02/2049		09/04/2050		09/03/2053		28/09/2054		17/01/2058	
शुक्र	24/10/2045	सूर्य	02/03/2049	चंद्र	04/09/2050	मंगल	20/04/2053	बुध	06/04/2055
सूर्य	15/01/2046	चंद्र	30/04/2049	मंगल	22/11/2050	बुध	18/07/2053	शनि	27/07/2055
चंद्र	10/08/2046	मंगल	01/06/2049	बुध	08/05/2051	शनि	09/09/2053	गुरु	24/02/2056
मंगल	29/11/2046	बुध	07/08/2049	शनि	15/08/2051	गुरु	18/12/2053	राहु	08/07/2056
बुध	21/07/2047	शनि	15/09/2049	गुरु	18/02/2052	राहु	19/02/2054	शुक्र	27/02/2057
शनि	06/12/2047	गुरु	29/11/2049	राहु	16/06/2052	शुक्र	10/06/2054	सूर्य	05/05/2057
गुरु	25/08/2048	राहु	16/01/2050	शुक्र	09/01/2053	सूर्य	11/07/2054	चंद्र	20/10/2057
राहु	07/02/2049	शुक्र	09/04/2050	सूर्य	09/03/2053	चंद्र	28/09/2054	मंगल	17/01/2058

शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
17/01/2058		29/12/2059		08/09/2063		07/01/2066		09/05/2066	
29/12/2059		08/09/2063		07/01/2066		09/05/2066		09/03/2067	
शनि	24/03/2058	गुरु	22/08/2060	राहु	12/12/2063	सूर्य	14/01/2066	चंद्र	20/06/2066
गुरु	27/07/2058	राहु	19/01/2061	शुक्र	25/05/2064	चंद्र	31/01/2066	मंगल	13/07/2066
राहु	14/10/2058	शुक्र	08/10/2061	सूर्य	12/07/2064	मंगल	09/02/2066	बुध	30/08/2066
शुक्र	01/03/2059	सूर्य	22/12/2061	चंद्र	07/11/2064	बुध	28/02/2066	शनि	27/09/2066
सूर्य	10/04/2059	चंद्र	28/06/2062	मंगल	09/01/2065	शनि	11/03/2066	गुरु	20/11/2066
चंद्र	17/07/2059	मंगल	06/10/2062	बुध	23/05/2065	गुरु	02/04/2066	राहु	23/12/2066
मंगल	08/09/2059	बुध	06/05/2063	शनि	10/08/2065	राहु	15/04/2066	शुक्र	21/02/2067
बुध	29/12/2059	शनि	08/09/2063	गुरु	07/01/2066	शुक्र	09/05/2066	सूर्य	09/03/2067

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : संकटा 6 वर्ष 11 मास 29 दिन

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
09/04/1962		07/04/1969		08/04/1970		07/04/1972		08/04/1975	
07/04/1969		08/04/1970		07/04/1972		08/04/1975		08/04/1979	
संक	17/01/1963	मंग	18/04/1969	पिंग	18/05/1970	धांय	07/07/1972	भ्राम	17/09/1975
मंग	08/04/1963	पिंग	08/05/1969	धांय	18/07/1970	भ्राम	06/11/1972	भद्रि	07/04/1976
पिंग	17/09/1963	धांय	07/06/1969	भ्राम	07/10/1970	भद्रि	07/04/1973	उल्क	07/12/1976
धांय	18/05/1964	भ्राम	18/07/1969	भद्रि	17/01/1971	उल्क	07/10/1973	सिद्ध	17/09/1977
भ्राम	07/04/1965	भद्रि	07/09/1969	उल्क	18/05/1971	सिद्ध	08/05/1974	संक	07/08/1978
भद्रि	18/05/1966	उल्क	06/11/1969	सिद्ध	08/10/1971	संक	07/01/1975	मंग	17/09/1978
उल्क	17/09/1967	सिद्ध	16/01/1970	संक	18/03/1972	मंग	06/02/1975	पिंग	07/12/1978
सिद्ध	07/04/1969	संक	08/04/1970	मंग	07/04/1972	पिंग	08/04/1975	धांय	08/04/1979

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
08/04/1979		07/04/1984		08/04/1990		07/04/1997		07/04/2005	
07/04/1984		08/04/1990		07/04/1997		07/04/2005		08/04/2006	
भद्रि	18/12/1979	उल्क	07/04/1985	सिद्ध	18/08/1991	संक	17/01/1999	मंग	18/04/2005
उल्क	17/10/1980	सिद्ध	08/06/1986	संक	08/03/1993	मंग	08/04/1999	पिंग	08/05/2005
सिद्ध	07/10/1981	संक	08/10/1987	मंग	18/05/1993	पिंग	17/09/1999	धांय	07/06/2005
संक	17/11/1982	मंग	07/12/1987	पिंग	07/10/1993	धांय	18/05/2000	भ्राम	18/07/2005
मंग	07/01/1983	पिंग	07/04/1988	धांय	08/05/1994	भ्राम	07/04/2001	भद्रि	07/09/2005
पिंग	18/04/1983	धांय	07/10/1988	भ्राम	16/02/1995	भद्रि	18/05/2002	उल्क	06/11/2005
धांय	17/09/1983	भ्राम	07/06/1989	भद्रि	06/02/1996	उल्क	17/09/2003	सिद्ध	16/01/2006
भ्राम	07/04/1984	भद्रि	08/04/1990	उल्क	07/04/1997	सिद्ध	07/04/2005	संक	08/04/2006

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
08/04/2006		07/04/2008		08/04/2011		08/04/2015		07/04/2020	
07/04/2008		08/04/2011		08/04/2015		07/04/2020		08/04/2026	
पिंग	18/05/2006	धांय	07/07/2008	भ्राम	17/09/2011	भद्रि	18/12/2015	उल्क	07/04/2021
धांय	18/07/2006	भ्राम	06/11/2008	भद्रि	07/04/2012	उल्क	17/10/2016	सिद्ध	08/06/2022
भ्राम	07/10/2006	भद्रि	07/04/2009	उल्क	07/12/2012	सिद्ध	07/10/2017	संक	08/10/2023
भद्रि	17/01/2007	उल्क	07/10/2009	सिद्ध	17/09/2013	संक	17/11/2018	मंग	07/12/2023
उल्क	18/05/2007	सिद्ध	08/05/2010	संक	07/08/2014	मंग	07/01/2019	पिंग	07/04/2024
सिद्ध	08/10/2007	संक	07/01/2011	मंग	17/09/2014	पिंग	18/04/2019	धांय	07/10/2024
संक	18/03/2008	मंग	06/02/2011	पिंग	07/12/2014	धांय	17/09/2019	भ्राम	07/06/2025
मंग	07/04/2008	पिंग	08/04/2011	धांय	08/04/2015	भ्राम	07/04/2020	भद्रि	08/04/2026

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
08/04/2026		07/04/2033		07/04/2041		08/04/2042		07/04/2044	
07/04/2033		07/04/2041		08/04/2042		07/04/2044		08/04/2047	
सिद्ध	18/08/2027	संक	17/01/2035	मंग	18/04/2041	पिंग	18/05/2042	धांय	07/07/2044
संक	08/03/2029	मंग	08/04/2035	पिंग	08/05/2041	धांय	18/07/2042	भ्राम	06/11/2044
मंग	18/05/2029	पिंग	17/09/2035	धांय	07/06/2041	भ्राम	07/10/2042	भद्रि	07/04/2045
पिंग	07/10/2029	धांय	18/05/2036	भ्राम	18/07/2041	भद्रि	17/01/2043	उल्क	07/10/2045
धांय	08/05/2030	भ्राम	07/04/2037	भद्रि	07/09/2041	उल्क	18/05/2043	सिद्ध	08/05/2046
भ्राम	16/02/2031	भद्रि	18/05/2038	उल्क	06/11/2041	सिद्ध	08/10/2043	संक	07/01/2047
भद्रि	06/02/2032	उल्क	17/09/2039	सिद्ध	16/01/2042	संक	18/03/2044	मंग	06/02/2047
उल्क	07/04/2033	सिद्ध	07/04/2041	संक	08/04/2042	मंग	07/04/2044	पिंग	08/04/2047

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
08/04/2047		08/04/2051		07/04/2056		08/04/2062		07/04/2069	
08/04/2051		07/04/2056		08/04/2062		07/04/2069		00/00/0000	
भ्राम	17/09/2047	भद्रि	18/12/2051	उल्क	07/04/2057	सिद्ध	18/08/2063	संक	09/04/2070
भद्रि	07/04/2048	उल्क	17/10/2052	सिद्ध	08/06/2058	संक	08/03/2065		00/00/0000
उल्क	07/12/2048	सिद्ध	07/10/2053	संक	08/10/2059	मंग	18/05/2065		00/00/0000
सिद्ध	17/09/2049	संक	17/11/2054	मंग	07/12/2059	पिंग	07/10/2065		00/00/0000
संक	07/08/2050	मंग	07/01/2055	पिंग	07/04/2060	धांय	08/05/2066		00/00/0000
मंग	17/09/2050	पिंग	18/04/2055	धांय	07/10/2060	भ्राम	16/02/2067		00/00/0000
पिंग	07/12/2050	धांय	17/09/2055	भ्राम	07/06/2061	भद्रि	06/02/2068		00/00/0000
धांय	08/04/2051	भ्राम	07/04/2056	भद्रि	08/04/2062	उल्क	07/04/2069		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

उल्क - भद्रि		सिद्ध - सिद्ध		सिद्ध - संक		सिद्ध - मंग		सिद्ध - पिंग	
07/06/2025		08/04/2026		18/08/2027		08/03/2029		18/05/2029	
08/04/2026		18/08/2027		08/03/2029		18/05/2029		07/10/2029	
भद्रि	20/07/2025	सिद्ध	13/07/2026	संक	22/12/2027	मंग	10/03/2029	पिंग	26/05/2029
उल्क	08/09/2025	संक	01/11/2026	मंग	07/01/2028	पिंग	14/03/2029	धांय	07/06/2029
सिद्ध	06/11/2025	मंग	15/11/2026	पिंग	07/02/2028	धांय	20/03/2029	भ्राम	22/06/2029
संक	13/01/2026	पिंग	12/12/2026	धांय	26/03/2028	भ्राम	28/03/2029	भद्रि	12/07/2029
मंग	22/01/2026	धांय	23/01/2027	भ्राम	28/05/2028	भद्रि	07/04/2029	उल्क	05/08/2029
पिंग	07/02/2026	भ्राम	19/03/2027	भद्रि	15/08/2028	उल्क	18/04/2029	सिद्ध	02/09/2029
धांय	05/03/2026	भद्रि	27/05/2027	उल्क	17/11/2028	सिद्ध	02/05/2029	संक	03/10/2029
भ्राम	08/04/2026	उल्क	18/08/2027	सिद्ध	08/03/2029	संक	18/05/2029	मंग	07/10/2029

सिद्ध - धांय		सिद्ध - भ्राम		सिद्ध - भद्रि		सिद्ध - उल्क		संक - संक	
07/10/2029		08/05/2030		16/02/2031		06/02/2032		07/04/2033	
08/05/2030		16/02/2031		06/02/2032		07/04/2033		17/01/2035	
धांय	25/10/2029	भ्राम	09/06/2030	भद्रि	06/04/2031	उल्क	17/04/2032	संक	30/08/2033
भ्राम	17/11/2029	भद्रि	18/07/2030	उल्क	05/06/2031	सिद्ध	09/07/2032	मंग	17/09/2033
भद्रि	17/12/2029	उल्क	03/09/2030	सिद्ध	13/08/2031	संक	12/10/2032	पिंग	23/10/2033
उल्क	22/01/2030	सिद्ध	29/10/2030	संक	31/10/2031	मंग	24/10/2032	धांय	16/12/2033
सिद्ध	04/03/2030	संक	31/12/2030	मंग	09/11/2031	पिंग	16/11/2032	भ्राम	26/02/2034
संक	20/04/2030	मंग	08/01/2031	पिंग	29/11/2031	धांय	22/12/2032	भद्रि	27/05/2034
मंग	26/04/2030	पिंग	23/01/2031	धांय	29/12/2031	भ्राम	07/02/2033	उल्क	12/09/2034
पिंग	08/05/2030	धांय	16/02/2031	भ्राम	06/02/2032	भद्रि	07/04/2033	सिद्ध	17/01/2035

संक - मंग		संक - पिंग		संक - धांय		संक - भ्राम		संक - भद्रि	
17/01/2035		08/04/2035		17/09/2035		18/05/2036		07/04/2037	
08/04/2035		17/09/2035		18/05/2036		07/04/2037		18/05/2038	
मंग	19/01/2035	पिंग	17/04/2035	धांय	08/10/2035	भ्राम	23/06/2036	भद्रि	03/06/2037
पिंग	23/01/2035	धांय	30/04/2035	भ्राम	04/11/2035	भद्रि	07/08/2036	उल्क	09/08/2037
धांय	30/01/2035	भ्राम	18/05/2035	भद्रि	07/12/2035	उल्क	30/09/2036	सिद्ध	27/10/2037
भ्राम	08/02/2035	भद्रि	10/06/2035	उल्क	17/01/2036	सिद्ध	02/12/2036	संक	25/01/2038
भद्रि	20/02/2035	उल्क	07/07/2035	सिद्ध	04/03/2036	संक	12/02/2037	मंग	06/02/2038
उल्क	05/03/2035	सिद्ध	08/08/2035	संक	27/04/2036	मंग	21/02/2037	पिंग	28/02/2038
सिद्ध	21/03/2035	संक	13/09/2035	मंग	04/05/2036	पिंग	11/03/2037	धांय	03/04/2038
संक	08/04/2035	मंग	17/09/2035	पिंग	18/05/2036	धांय	07/04/2037	भ्राम	18/05/2038

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - उल्क		संक - सिद्ध		मंग - मंग		मंग - पिंग		मंग - धांय	
18/05/2038		17/09/2039		07/04/2041		18/04/2041		08/05/2041	
17/09/2039		07/04/2041		18/04/2041		08/05/2041		07/06/2041	
उल्क	07/08/2038	सिद्ध	06/01/2040	मंग	08/04/2041	पिंग	19/04/2041	धांय	10/05/2041
सिद्ध	10/11/2038	संक	11/05/2040	पिंग	08/04/2041	धांय	20/04/2041	भ्राम	14/05/2041
संक	26/02/2039	मंग	27/05/2040	धांय	09/04/2041	भ्राम	23/04/2041	भद्रि	18/05/2041
मंग	12/03/2039	पिंग	27/06/2040	भ्राम	10/04/2041	भद्रि	25/04/2041	उल्क	23/05/2041
पिंग	08/04/2039	धांय	14/08/2040	भद्रि	12/04/2041	उल्क	29/04/2041	सिद्ध	29/05/2041
धांय	18/05/2039	भ्राम	16/10/2040	उल्क	13/04/2041	सिद्ध	03/05/2041	संक	05/06/2041
भ्राम	12/07/2039	भद्रि	03/01/2041	सिद्ध	15/04/2041	संक	07/05/2041	मंग	06/06/2041
भद्रि	17/09/2039	उल्क	07/04/2041	संक	18/04/2041	मंग	08/05/2041	पिंग	07/06/2041

मंग - भ्राम		मंग - भद्रि		मंग - उल्क		मंग - सिद्ध		मंग - संक	
07/06/2041		18/07/2041		07/09/2041		06/11/2041		16/01/2042	
18/07/2041		07/09/2041		06/11/2041		16/01/2042		08/04/2042	
भ्राम	12/06/2041	भद्रि	25/07/2041	उल्क	17/09/2041	सिद्ध	20/11/2041	संक	04/02/2042
भद्रि	17/06/2041	उल्क	02/08/2041	सिद्ध	29/09/2041	संक	06/12/2041	मंग	06/02/2042
उल्क	24/06/2041	सिद्ध	12/08/2041	संक	12/10/2041	मंग	08/12/2041	पिंग	10/02/2042
सिद्ध	02/07/2041	संक	23/08/2041	मंग	14/10/2041	पिंग	12/12/2041	धांय	17/02/2042
संक	11/07/2041	मंग	25/08/2041	पिंग	17/10/2041	धांय	18/12/2041	भ्राम	26/02/2042
मंग	12/07/2041	पिंग	28/08/2041	धांय	22/10/2041	भ्राम	26/12/2041	भद्रि	09/03/2042
पिंग	14/07/2041	धांय	01/09/2041	भ्राम	29/10/2041	भद्रि	05/01/2042	उल्क	23/03/2042
धांय	18/07/2041	भ्राम	07/09/2041	भद्रि	06/11/2041	उल्क	16/01/2042	सिद्ध	08/04/2042

पिंग - पिंग		पिंग - धांय		पिंग - भ्राम		पिंग - भद्रि		पिंग - उल्क	
08/04/2042		18/05/2042		18/07/2042		07/10/2042		17/01/2043	
18/05/2042		18/07/2042		07/10/2042		17/01/2043		18/05/2043	
पिंग	10/04/2042	धांय	23/05/2042	भ्राम	27/07/2042	भद्रि	21/10/2042	उल्क	06/02/2043
धांय	13/04/2042	भ्राम	30/05/2042	भद्रि	07/08/2042	उल्क	07/11/2042	सिद्ध	02/03/2043
भ्राम	18/04/2042	भद्रि	08/06/2042	उल्क	21/08/2042	सिद्ध	27/11/2042	संक	29/03/2043
भद्रि	23/04/2042	उल्क	18/06/2042	सिद्ध	06/09/2042	संक	20/12/2042	मंग	01/04/2043
उल्क	30/04/2042	सिद्ध	30/06/2042	संक	24/09/2042	मंग	22/12/2042	पिंग	08/04/2043
सिद्ध	08/05/2042	संक	13/07/2042	मंग	26/09/2042	पिंग	28/12/2042	धांय	18/04/2043
संक	17/05/2042	मंग	15/07/2042	पिंग	01/10/2042	धांय	05/01/2043	भ्राम	02/05/2043
मंग	18/05/2042	पिंग	18/07/2042	धांय	07/10/2042	भ्राम	17/01/2043	भद्रि	18/05/2043

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : तुला 7 वर्ष 10 मास 3 दिन
कुल दशाकाल : 86 वर्ष
तिथि : मृगशिरा - 1 अपसव्य
देह : कर्क जीव : धनु

तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		मीन 10 वर्ष	
09/04/1962		11/02/1970		11/02/1979		11/02/1984		10/02/2005	
11/02/1970		11/02/1979		11/02/1984		10/02/2005		11/02/2015	
	00/00/0000	कन्या	21/01/1971	सिंह	28/05/1979	कर्क	29/03/1989	मीन	11/04/2006
	00/00/0000	सिंह	31/07/1971	कर्क	16/08/1980	मीन	07/09/1991	कुंभ	28/09/2006
	09/04/1962	कर्क	10/10/1973	मीन	16/03/1981	कुंभ	29/08/1992	मक	17/03/2007
कर्क	08/08/1963	मीन	28/10/1974	कुंभ	09/06/1981	मक	20/08/1993	धनु	15/05/2008
मीन	18/06/1965	कुंभ	30/03/1975	मक	02/09/1981	धनु	29/01/1996	वृश्चि	08/03/2009
कुंभ	17/03/1966	मक	29/08/1975	धनु	03/04/1982	वृश्चि	15/10/1997	तुला	16/01/2011
मक	13/12/1966	धनु	15/09/1976	वृश्चि	29/08/1982	तुला	11/09/2001	कन्या	03/02/2012
धनु	23/10/1968	वृश्चि	09/06/1977	तुला	04/08/1983	कन्या	22/11/2003	सिंह	02/09/2012
वृश्चि	11/02/1970	तुला	11/02/1979	कन्या	11/02/1984	सिंह	10/02/2005	कर्क	11/02/2015

कुम्भ 4 वर्ष		मकर 4 वर्ष		धनु 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष	
11/02/2015		11/02/2019		11/02/2023		10/02/2033		11/02/2040	
11/02/2019		11/02/2023		10/02/2033		11/02/2040		00/00/0000	
कुंभ	20/04/2015	मक	20/04/2019	धनु	11/04/2024	वृश्चि	06/09/2033	तुला	02/02/2043
मक	27/06/2015	धनु	07/10/2019	वृश्चि	02/02/2025	तुला	26/12/2034	कन्या	06/10/2044
धनु	14/12/2015	वृश्चि	03/02/2020	तुला	13/12/2026	कन्या	20/09/2035	सिंह	11/09/2045
वृश्चि	11/04/2016	तुला	31/10/2020	कन्या	31/12/2027	सिंह	15/02/2036	कर्क	08/04/2048
तुला	07/01/2017	कन्या	02/04/2021	सिंह	30/07/2028	कर्क	01/11/2037		00/00/0000
कन्या	09/06/2017	सिंह	26/06/2021	कर्क	08/01/2031	मीन	25/08/2038		00/00/0000
सिंह	02/09/2017	कर्क	18/06/2022	मीन	08/03/2032	कुंभ	22/12/2038		00/00/0000
कर्क	25/08/2018	मीन	05/12/2022	कुंभ	24/08/2032	मक	20/04/2039		00/00/0000
मीन	11/02/2019	कुंभ	11/02/2023	मक	10/02/2033	धनु	11/02/2040		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

धनु - तुला		धनु - कन्या		धनु - सिंह		धनु - कर्क		धनु - मीन	
02/02/2025		13/12/2026		31/12/2027		30/07/2028		08/01/2031	
13/12/2026		31/12/2027		30/07/2028		08/01/2031		08/03/2032	
तुला	08/06/2025	कन्या	22/01/2027	सिंह	12/01/2028	कर्क	05/03/2029	मीन	26/02/2031
कन्या	18/08/2025	सिंह	14/02/2027	कर्क	04/03/2028	मीन	16/06/2029	कुंभ	18/03/2031
सिंह	27/09/2025	कर्क	18/05/2027	मीन	29/03/2028	कुंभ	28/07/2029	मक	07/04/2031
कर्क	12/03/2026	मीन	01/07/2027	कुंभ	07/04/2028	मक	07/09/2029	धनु	26/05/2031
मीन	30/05/2026	कुंभ	19/07/2027	मक	17/04/2028	धनु	20/12/2029	वृश्चि	30/06/2031
कुंभ	30/06/2026	मक	06/08/2027	धनु	12/05/2028	वृश्चि	03/03/2030	तुला	17/09/2031
मक	01/08/2026	धनु	19/09/2027	वृश्चि	29/05/2028	तुला	16/08/2030	कन्या	31/10/2031
धनु	19/10/2026	वृश्चि	21/10/2027	तुला	08/07/2028	कन्या	17/11/2030	सिंह	25/11/2031
वृश्चि	13/12/2026	तुला	31/12/2027	कन्या	30/07/2028	सिंह	08/01/2031	कर्क	08/03/2032

धनु - कुंभ		धनु - मक		वृश्चि - वृश्चि		वृश्चि - तुला		वृश्चि - कन्या	
08/03/2032		24/08/2032		10/02/2033		06/09/2033		26/12/2034	
24/08/2032		10/02/2033		06/09/2033		26/12/2034		20/09/2035	
कुंभ	15/03/2032	मक	01/09/2032	वृश्चि	27/02/2033	तुला	04/12/2033	कन्या	23/01/2035
मक	23/03/2032	धनु	21/09/2032	तुला	07/04/2033	कन्या	23/01/2034	सिंह	08/02/2035
धनु	12/04/2032	वृश्चि	05/10/2032	कन्या	29/04/2033	सिंह	19/02/2034	कर्क	14/04/2035
वृश्चि	26/04/2032	तुला	06/11/2032	सिंह	11/05/2033	कर्क	16/06/2034	मीन	15/05/2035
तुला	28/05/2032	कन्या	23/11/2032	कर्क	01/07/2033	मीन	10/08/2034	कुंभ	28/05/2035
कन्या	14/06/2032	सिंह	03/12/2032	मीन	25/07/2033	कुंभ	01/09/2034	मक	09/06/2035
सिंह	24/06/2032	कर्क	14/01/2033	कुंभ	04/08/2033	मक	23/09/2034	धनु	10/07/2035
कर्क	05/08/2032	मीन	02/02/2033	मक	13/08/2033	धनु	17/11/2034	वृश्चि	01/08/2035
मीन	24/08/2032	कुंभ	10/02/2033	धनु	06/09/2033	वृश्चि	26/12/2034	तुला	20/09/2035

वृश्चि - सिंह		वृश्चि - कर्क		वृश्चि - मीन		वृश्चि - कुंभ		वृश्चि - मक	
20/09/2035		15/02/2036		01/11/2037		25/08/2038		22/12/2038	
15/02/2036		01/11/2037		25/08/2038		22/12/2038		20/04/2039	
सिंह	28/09/2035	कर्क	17/07/2036	मीन	05/12/2037	कुंभ	31/08/2038	मक	27/12/2038
कर्क	04/11/2035	मीन	27/09/2036	कुंभ	19/12/2037	मक	05/09/2038	धनु	10/01/2039
मीन	21/11/2035	कुंभ	26/10/2036	मक	02/01/2038	धनु	19/09/2038	वृश्चि	20/01/2039
कुंभ	28/11/2035	मक	24/11/2036	धनु	05/02/2038	वृश्चि	29/09/2038	तुला	11/02/2039
मक	05/12/2035	धनु	05/02/2037	वृश्चि	02/03/2038	तुला	21/10/2038	कन्या	23/02/2039
धनु	22/12/2035	वृश्चि	28/03/2037	तुला	26/04/2038	कन्या	02/11/2038	सिंह	02/03/2039
वृश्चि	03/01/2036	तुला	22/07/2037	कन्या	27/05/2038	सिंह	09/11/2038	कर्क	31/03/2039
तुला	31/01/2036	कन्या	25/09/2037	सिंह	13/06/2038	कर्क	08/12/2038	मीन	14/04/2039
कन्या	15/02/2036	सिंह	01/11/2037	कर्क	25/08/2038	मीन	22/12/2038	कुंभ	20/04/2039

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृश्चि - धनु		तुला - तुला		तुला - कन्या		तुला - सिंह		तुला - कर्क	
20/04/2039		11/02/2040		02/02/2043		06/10/2044		11/09/2045	
11/02/2040		02/02/2043		06/10/2044		11/09/2045		00/00/0000	
धनु	24/05/2039	तुला	31/08/2040	कन्या	07/04/2043	सिंह	26/10/2044	कर्क	25/08/2046
वृश्चि	18/06/2039	कन्या	23/12/2040	सिंह	13/05/2043	कर्क	17/01/2045	मीन	07/02/2047
तुला	12/08/2039	सिंह	24/02/2041	कर्क	09/10/2043	मीन	25/02/2045	कुंभ	14/04/2047
कन्या	12/09/2039	कर्क	17/11/2041	मीन	19/12/2043	कुंभ	13/03/2045	मक	20/06/2047
सिंह	29/09/2039	मीन	23/03/2042	कुंभ	17/01/2044	मक	29/03/2045	धनु	03/12/2047
कर्क	11/12/2039	कुंभ	13/05/2042	मक	14/02/2044	धनु	07/05/2045	वृश्चि	28/03/2048
मीन	14/01/2040	मक	02/07/2042	धनु	25/04/2044	वृश्चि	04/06/2045	तुला	08/04/2048
कुंभ	28/01/2040	धनु	06/11/2042	वृश्चि	14/06/2044	तुला	06/08/2045		00/00/0000
मक	11/02/2040	वृश्चि	02/02/2043	तुला	06/10/2044	कन्या	11/09/2045		00/00/0000

चर दशा

भोग्य दशा काल : मिथुन 9 वर्ष 0 मास 0 दिन

मिथुन 9 वर्ष	
09/04/1962	
09/04/1971	
वृष	08/01/1963
मेष	09/10/1963
मीन	09/07/1964
कुंभ	09/04/1965
मक	08/01/1966
धनु	09/10/1966
वृश्चि	10/07/1967
तुला	08/04/1968
कन्या	07/01/1969
सिंह	08/10/1969
कर्क	09/07/1970
मिथु	09/04/1971

वृष 11 वर्ष	
09/04/1971	
09/04/1982	
मेष	09/03/1972
मीन	07/02/1973
कुंभ	08/01/1974
मक	08/12/1974
धनु	08/11/1975
वृश्चि	08/10/1976
तुला	08/09/1977
कन्या	09/08/1978
सिंह	10/07/1979
कर्क	08/06/1980
मिथु	09/05/1981
वृष	09/04/1982

मेष 10 वर्ष	
09/04/1982	
08/04/1992	
वृष	07/02/1983
मिथु	09/12/1983
कर्क	08/10/1984
सिंह	08/08/1985
कन्या	09/06/1986
तुला	09/04/1987
वृश्चि	08/02/1988
धनु	08/12/1988
मक	08/10/1989
कुंभ	09/08/1990
मीन	09/06/1991
मेष	08/04/1992

मीन 1 वर्ष	
08/04/1992	
09/04/1993	
मेष	09/05/1992
वृष	08/06/1992
मिथु	09/07/1992
कर्क	08/08/1992
सिंह	08/09/1992
कन्या	08/10/1992
तुला	08/11/1992
वृश्चि	08/12/1992
धनु	07/01/1993
मक	07/02/1993
कुंभ	09/03/1993
मीन	09/04/1993

कुम्भ 1 वर्ष	
09/04/1993	
09/04/1994	
मीन	09/05/1993
मेष	09/06/1993
वृष	09/07/1993
मिथु	08/08/1993
कर्क	08/09/1993
सिंह	08/10/1993
कन्या	08/11/1993
तुला	08/12/1993
वृश्चि	08/01/1994
धनु	07/02/1994
मक	10/03/1994
कुंभ	09/04/1994

मकर 12 वर्ष	
09/04/1994	
09/04/2006	
धनु	09/04/1995
वृश्चि	08/04/1996
तुला	09/04/1997
कन्या	09/04/1998
सिंह	09/04/1999
कर्क	08/04/2000
मिथु	09/04/2001
वृष	09/04/2002
मेष	09/04/2003
मीन	08/04/2004
कुंभ	09/04/2005
मक	09/04/2006

धनु 2 वर्ष	
09/04/2006	
08/04/2008	
वृश्चि	09/06/2006
तुला	09/08/2006
कन्या	09/10/2006
सिंह	08/12/2006
कर्क	07/02/2007
मिथु	09/04/2007
वृष	09/06/2007
मेष	09/08/2007
मीन	09/10/2007
कुंभ	09/12/2007
मक	08/02/2008
धनु	08/04/2008

वृश्चिक 3 वर्ष	
08/04/2008	
09/04/2011	
तुला	09/07/2008
कन्या	08/10/2008
सिंह	07/01/2009
कर्क	09/04/2009
मिथु	09/07/2009
वृष	08/10/2009
मेष	08/01/2010
मीन	09/04/2010
कुंभ	09/07/2010
मक	09/10/2010
धनु	08/01/2011
वृश्चि	09/04/2011

तुला 6 वर्ष	
09/04/2011	
09/04/2017	
वृश्चि	09/10/2011
धनु	08/04/2012
मक	08/10/2012
कुंभ	09/04/2013
मीन	08/10/2013
मेष	09/04/2014
वृष	09/10/2014
मिथु	09/04/2015
कर्क	09/10/2015
सिंह	08/04/2016
कन्या	08/10/2016
तुला	09/04/2017

कन्या 6 वर्ष	
09/04/2017	
09/04/2023	
तुला	08/10/2017
वृश्चि	09/04/2018
धनु	09/10/2018
मक	09/04/2019
कुंभ	09/10/2019
मीन	08/04/2020
मेष	08/10/2020
वृष	09/04/2021
मिथु	08/10/2021
कर्क	09/04/2022
सिंह	09/10/2022
कन्या	09/04/2023

सिंह 5 वर्ष	
09/04/2023	
08/04/2028	
कन्या	08/09/2023
तुला	08/02/2024
वृश्चि	09/07/2024
धनु	08/12/2024
मक	09/05/2025
कुंभ	08/10/2025
मीन	10/03/2026
मेष	09/08/2026
वृष	08/01/2027
मिथु	09/06/2027
कर्क	08/11/2027
सिंह	08/04/2028

कर्क 2 वर्ष	
08/04/2028	
09/04/2030	
मिथु	08/06/2028
वृष	08/08/2028
मेष	08/10/2028
मीन	08/12/2028
कुंभ	07/02/2029
मक	09/04/2029
धनु	09/06/2029
वृश्चि	08/08/2029
तुला	08/10/2029
कन्या	08/12/2029
सिंह	07/02/2030
कर्क	09/04/2030

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

सिंह - मेष	
10/03/2026	
09/08/2026	
वृष	22/03/2026
मिथु	04/04/2026
कर्क	17/04/2026
सिंह	29/04/2026
कन्या	12/05/2026
तुला	25/05/2026
वृश्चि	06/06/2026
धनु	19/06/2026
मक	02/07/2026
कुंभ	14/07/2026
मीन	27/07/2026
मेष	09/08/2026

सिंह - वृष	
09/08/2026	
08/01/2027	
मेष	21/08/2026
मीन	03/09/2026
कुंभ	16/09/2026
मक	28/09/2026
धनु	11/10/2026
वृश्चि	24/10/2026
तुला	06/11/2026
कन्या	18/11/2026
सिंह	01/12/2026
कर्क	14/12/2026
मिथु	26/12/2026
वृष	08/01/2027

सिंह - मिथु	
08/01/2027	
09/06/2027	
वृष	21/01/2027
मेष	02/02/2027
मीन	15/02/2027
कुंभ	28/02/2027
मक	12/03/2027
धनु	25/03/2027
वृश्चि	07/04/2027
तुला	19/04/2027
कन्या	02/05/2027
सिंह	15/05/2027
कर्क	27/05/2027
मिथु	09/06/2027

सिंह - कर्क	
09/06/2027	
08/11/2027	
मिथु	22/06/2027
वृष	04/07/2027
मेष	17/07/2027
मीन	30/07/2027
कुंभ	12/08/2027
मक	24/08/2027
धनु	06/09/2027
वृश्चि	19/09/2027
तुला	01/10/2027
कन्या	14/10/2027
सिंह	27/10/2027
कर्क	08/11/2027

सिंह - सिंह	
08/11/2027	
08/04/2028	
कन्या	21/11/2027
तुला	04/12/2027
वृश्चि	16/12/2027
धनु	29/12/2027
मक	11/01/2028
कुंभ	23/01/2028
मीन	05/02/2028
मेष	18/02/2028
वृष	01/03/2028
मिथु	14/03/2028
कर्क	27/03/2028
सिंह	08/04/2028

कर्क - मिथु	
08/04/2028	
08/06/2028	
वृष	14/04/2028
मेष	19/04/2028
मीन	24/04/2028
कुंभ	29/04/2028
मक	04/05/2028
धनु	09/05/2028
वृश्चि	14/05/2028
तुला	19/05/2028
कन्या	24/05/2028
सिंह	29/05/2028
कर्क	03/06/2028
मिथु	08/06/2028

कर्क - वृष	
08/06/2028	
08/08/2028	
मेष	13/06/2028
मीन	19/06/2028
कुंभ	24/06/2028
मक	29/06/2028
धनु	04/07/2028
वृश्चि	09/07/2028
तुला	14/07/2028
कन्या	19/07/2028
सिंह	24/07/2028
कर्क	29/07/2028
मिथु	03/08/2028
वृष	08/08/2028

कर्क - मेष	
08/08/2028	
08/10/2028	
वृष	13/08/2028
मिथु	18/08/2028
कर्क	23/08/2028
सिंह	29/08/2028
कन्या	03/09/2028
तुला	08/09/2028
वृश्चि	13/09/2028
धनु	18/09/2028
मक	23/09/2028
कुंभ	28/09/2028
मीन	03/10/2028
मेष	08/10/2028

कर्क - मीन	
08/10/2028	
08/12/2028	
मेष	13/10/2028
वृष	18/10/2028
मिथु	23/10/2028
कर्क	28/10/2028
सिंह	02/11/2028
कन्या	08/11/2028
तुला	13/11/2028
वृश्चि	18/11/2028
धनु	23/11/2028
मक	28/11/2028
कुंभ	03/12/2028
मीन	08/12/2028

कर्क - कुंभ	
08/12/2028	
07/02/2029	
मीन	13/12/2028
मेष	18/12/2028
वृष	23/12/2028
मिथु	28/12/2028
कर्क	02/01/2029
सिंह	07/01/2029
कन्या	12/01/2029
तुला	18/01/2029
वृश्चि	23/01/2029
धनु	28/01/2029
मक	02/02/2029
कुंभ	07/02/2029

कर्क - मक	
07/02/2029	
09/04/2029	
धनु	12/02/2029
वृश्चि	17/02/2029
तुला	22/02/2029
कन्या	27/02/2029
सिंह	04/03/2029
कर्क	09/03/2029
मिथु	14/03/2029
वृष	19/03/2029
मेष	25/03/2029
मीन	30/03/2029
कुंभ	04/04/2029
मक	09/04/2029

कर्क - धनु	
09/04/2029	
09/06/2029	
वृश्चि	14/04/2029
तुला	19/04/2029
कन्या	24/04/2029
सिंह	29/04/2029
कर्क	04/05/2029
मिथु	09/05/2029
वृष	14/05/2029
मेष	19/05/2029
मीन	24/05/2029
कुंभ	29/05/2029
मक	04/06/2029
धनु	09/06/2029

कर्क - वृश्चि	
09/06/2029	
08/08/2029	
तुला	14/06/2029
कन्या	19/06/2029
सिंह	24/06/2029
कर्क	29/06/2029
मिथु	04/07/2029
वृष	09/07/2029
मेष	14/07/2029
मीन	19/07/2029
कुंभ	24/07/2029
मक	29/07/2029
धनु	03/08/2029
वृश्चि	08/08/2029

कर्क - तुला	
08/08/2029	
08/10/2029	
वृश्चि	14/08/2029
धनु	19/08/2029
मक	24/08/2029
कुंभ	29/08/2029
मीन	03/09/2029
मेष	08/09/2029
वृष	13/09/2029
मिथु	18/09/2029
कर्क	23/09/2029
सिंह	28/09/2029
कन्या	03/10/2029
तुला	08/10/2029

कर्क - कन्या	
08/10/2029	
08/12/2029	
तुला	13/10/2029
वृश्चि	19/10/2029
धनु	24/10/2029
मक	29/10/2029
कुंभ	03/11/2029
मीन	08/11/2029
मेष	13/11/2029
वृष	18/11/2029
मिथु	23/11/2029
कर्क	28/11/2029
सिंह	03/12/2029
कन्या	08/12/2029

चर दशा - प्रत्यन्तर

कर्क - सिंह	
08/12/2029	
07/02/2030	
कन्या	13/12/2029
तुला	18/12/2029
वृश्चि	23/12/2029
धनु	29/12/2029
मक	03/01/2030
कुंभ	08/01/2030
मीन	13/01/2030
मेष	18/01/2030
वृष	23/01/2030
मिथु	28/01/2030
कर्क	02/02/2030
सिंह	07/02/2030

कर्क - कर्क	
07/02/2030	
09/04/2030	
मिथु	12/02/2030
वृष	17/02/2030
मेष	22/02/2030
मीन	27/02/2030
कुंभ	04/03/2030
मक	10/03/2030
धनु	15/03/2030
वृश्चि	20/03/2030
तुला	25/03/2030
कन्या	30/03/2030
सिंह	04/04/2030
कर्क	09/04/2030

कर्क - कर्क	
07/02/2030	
09/04/2030	
मिथु	12/02/2030
वृष	17/02/2030
मेष	22/02/2030
मीन	27/02/2030
कुंभ	04/03/2030
मक	10/03/2030
धनु	15/03/2030
वृश्चि	20/03/2030
तुला	25/03/2030
कन्या	30/03/2030
सिंह	04/04/2030
कर्क	09/04/2030

कर्क - कर्क	
07/02/2030	
09/04/2030	
मिथु	12/02/2030
वृष	17/02/2030
मेष	22/02/2030
मीन	27/02/2030
कुंभ	04/03/2030
मक	10/03/2030
धनु	15/03/2030
वृश्चि	20/03/2030
तुला	25/03/2030
कन्या	30/03/2030
सिंह	04/04/2030
कर्क	09/04/2030

कर्क - कर्क	
07/02/2030	
09/04/2030	
मिथु	12/02/2030
वृष	17/02/2030
मेष	22/02/2030
मीन	27/02/2030
कुंभ	04/03/2030
मक	10/03/2030
धनु	15/03/2030
वृश्चि	20/03/2030
तुला	25/03/2030
कन्या	30/03/2030
सिंह	04/04/2030
कर्क	09/04/2030

कर्क - कर्क	
07/02/2030	
09/04/2030	
मिथु	12/02/2030
वृष	17/02/2030
मेष	22/02/2030
मीन	27/02/2030
कुंभ	04/03/2030
मक	10/03/2030
धनु	15/03/2030
वृश्चि	20/03/2030
तुला	25/03/2030
कन्या	30/03/2030
सिंह	04/04/2030
कर्क	09/04/2030

कर्क - कर्क	
07/02/2030	
09/04/2030	
मिथु	12/02/2030
वृष	17/02/2030
मेष	22/02/2030
मीन	27/02/2030
कुंभ	04/03/2030
मक	10/03/2030
धनु	15/03/2030
वृश्चि	20/03/2030
तुला	25/03/2030
कन्या	30/03/2030
सिंह	04/04/2030
कर्क	09/04/2030

कर्क - कर्क	
07/02/2030	
09/04/2030	
मिथु	12/02/2030
वृष	17/02/2030
मेष	22/02/2030
मीन	27/02/2030
कुंभ	04/03/2030
मक	10/03/2030
धनु	15/03/2030
वृश्चि	20/03/2030
तुला	25/03/2030
कन्या	30/03/2030
सिंह	04/04/2030
कर्क	09/04/2030

कर्क - कर्क	
07/02/2030	
09/04/2030	
मिथु	12/02/2030
वृष	17/02/2030
मेष	22/02/2030
मीन	27/02/2030
कुंभ	04/03/2030
मक	10/03/2030
धनु	15/03/2030
वृश्चि	20/03/2030
तुला	25/03/2030
कन्या	30/03/2030
सिंह	04/04/2030
कर्क	09/04/2030

कर्क - कर्क	
07/02/2030	
09/04/2030	
मिथु	12/02/2030
वृष	17/02/2030
मेष	22/02/2030
मीन	27/02/2030
कुंभ	04/03/2030
मक	10/03/2030
धनु	15/03/2030
वृश्चि	20/03/2030
तुला	25/03/2030
कन्या	30/03/2030
सिंह	04/04/2030
कर्क	09/04/2030

कर्क - कर्क	
07/02/2030	
09/04/2030	
मिथु	12/02/2030
वृष	17/02/2030
मेष	22/02/2030
मीन	27/02/2030
कुंभ	04/03/2030
मक	10/03/2030
धनु	15/03/2030
वृश्चि	20/03/2030
तुला	25/03/2030
कन्या	30/03/2030
सिंह	04/04/2030
कर्क	09/04/2030

कर्क - कर्क	
07/02/2030	
09/04/2030	
मिथु	12/02/2030
वृष	17/02/2030
मेष	22/02/2030
मीन	27/02/2030
कुंभ	04/03/2030
मक	10/03/2030
धनु	15/03/2030
वृश्चि	20/03/2030
तुला	25/03/2030
कन्या	30/03/2030
सिंह	04/04/2030
कर्क	09/04/2030

कर्क - कर्क	
07/02/2030	
09/04/2030	
मिथु	12/02/2030
वृष	17/02/2030
मेष	22/02/2030
मीन	27/02/2030
कुंभ	04/03/2030
मक	10/03/2030
धनु	15/03/2030
वृश्चि	20/03/2030
तुला	25/03/2030
कन्या	30/03/2030
सिंह	04/04/2030
कर्क	09/04/2030

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	9
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 3, 6, 9, 4
शत्रु अंक	5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	98%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, सुख
हीरा	शुक्र	69%	धनार्जन, कम खर्च, सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	66%	भाग्योदय, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	64%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
मूंगा	मंगल	50%	भाग्योदय, धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति
मोती	चंद्र	47%	व्यय, धन हानि
नीलम	शनि	37%	दुर्घटना, नेष्ट भाग्य
गोमेद	राहु	34%	धन हानि, व्यय
लहसुनिया	केतु	0%	दुर्घटना

रत्न की शुभता

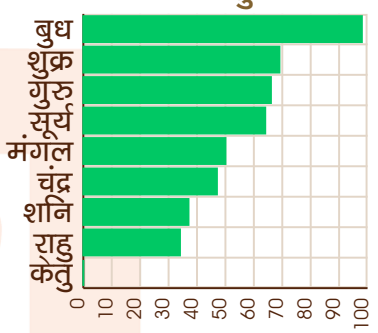

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	23/05/1968	70%	55%	62%	86%	72%	69%	37%	9%	0%
राहु	23/05/1986	52%	22%	25%	98%	66%	75%	49%	55%	0%
गुरु	23/05/2002	70%	55%	56%	86%	78%	56%	37%	34%	0%
शनि	23/05/2021	52%	22%	25%	100%	66%	75%	56%	47%	0%
बुध	23/05/2038	70%	22%	50%	100%	66%	75%	37%	34%	0%
केतु	23/05/2045	52%	22%	56%	98%	66%	75%	12%	9%	0%
शुक्र	23/05/2065	52%	22%	50%	100%	66%	81%	49%	47%	0%
सूर्य	24/05/2071	77%	55%	56%	98%	72%	56%	12%	9%	0%
चंद्र	23/05/2081	70%	61%	50%	100%	66%	69%	37%	9%	0%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पन्ना रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए हीरा, पुखराज, माणिक्य एवं मूंगा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मोती, नीलम व गोमेद रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

लहसुनिया पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंड़ली में बुध दशम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपकी न्यायप्रियता और नीतिनिपुणता में वृद्धि करेगा। रत्न शुभता आपको

विवेकवान। गुणवान और सत्यवादी व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपके धैर्य और विनम्रता को बढ़ाएगा। परिस्थिति अनुसार बोलने का कौशल यह रत्न पन्ना आपको दे सकता है। रत्न प्रभाव आपको यशस्वी और व्यवहार कुशल बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। रत्न शुभता आपको धनाढ्य और संपतिवान बनाएगी। व्यापार के माध्यम से लाभ, सफलता दोनों देगा।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं चतुर्थेश होते है। लग्नेश बुध का रत्न पन्ना आपके लिए जीवन रत्न के समान कार्य करेगा। पन्ना रत्न आपको उत्तम स्वास्थ्य, बौद्धिक योग्यता दे सकता है। पन्ना रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य सुख में वृद्धि होगी। बुध आपके लिए चतुर्थेश है इसलिए पन्ना रत्न धारण करने से मातृ पक्ष एवं भू-संपति पक्ष बलवान हो सकता है। यह रत्न आपको विनोदी, बुद्धिमान एवं गणितीय कौशल को भी बढ़ायेगा। पन्ना रत्न की शुभता से आप दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का ९ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र एकादश भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको उदार, सदाचार संपन्न, सुशील और परोपकारी बनाएगा। हीरा रत्न से आप अपने वाकचातुर्य के कारण प्रसिद्ध होंगे। अनेक वाहनों का सुख आपको यह रत्न दे सकता है। शुक्र रत्न हीरे की शुभता आपको समृद्धि और सम्पन्नता देगी। इस रत्न प्रभाव से नियमित रूप से आपके पास धनागमन होता रहेगा और दिनों दिन धनवृद्धि होती जाएगी।

आपकी मिथुन लग्न की कुंड़ली में शुक्र पंचमेश एवं द्वादशेश है। शुक्र लग्नेश बुध के मित्र भी है। त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण शुभ ग्रह है। शुक्र ग्रह की शुभता को बढ़ाने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न आपको संतान से सुखी, विद्वान बना सकता है। हीरा रत्न प्रभाव से आप को विदेश जाने के अवसर, व्ययों पर नियंत्रण लगायें रखने में सफल हो सकते है। शुक्र रत्न हीरे से आप भोगविलास के आदी नहीं होंगे। यह रत्न आपके दांपत्य जीवन को सुखमय बनाए रखने में सहयोगी हो सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु नवम भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए शुभफल प्रदान करेगा। पुखराज रत्न की शुभता से आप नीतिमान, विचारशील और माननीय व्यक्ति बनेंगे। देवताओं, ब्राह्मणों और गुरुजनों में आपकी श्रद्धा का विस्तार होगा। रत्न शुभता आपको दान-पुण्य कार्यो में सहभागिता देगी। पुखराज रत्न प्रभाव से आप शांत, सदाचारी, और उच्च विचार वाले व्यक्ति बनेंगे। रत्न शक्तियां आपको तीर्थ यात्रा और धार्मिक कार्यो से जोड़े रखेगी। आपको विदेश गमन से लाभ प्राप्त हो सकता है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंड़ली में गुरु सप्तमेश एवं दशमेश है। गुरु की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आप पुखराज रत्न धारण करें। पुखराज रत्न धारण करने से आपके जीवन के सुखों में बढ़ोतरी हो सकती है। यह रत्न आपको स्वाभिमानी, उच्च मनोबल, पिता सुख, कार्यक्षेत्र में लाभ दे सकता है। सप्तमेश का रत्न होने के कारण पुखराज आपका दांपत्य जीवन सुखी, भाग्य वृद्धि व धर्म के क्षेत्र में सम्मान दे सकता है। गुरु रत्न की शुभता से आपको आजीविका क्षेत्र में पद और धन दोनों की प्राप्ति हो सकती है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य दशम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपको बुद्धिमान, विद्वान और प्रसिद्ध बनाएगा। इसकी शुभता से आप आत्मविश्वास से भरे हुए आर्थिक रूप से सुदृढ़ व्यक्ति होंगे। रत्न शक्तियां आपको कार्यक्षत्र में अधिकारिक शक्तियां प्राप्त करने में सहयोग करेंगी। आपको सरकारी क्षेत्र में नौकरी प्राप्त हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में भी आपको उच्चाधिकारियों का सुख-सहयोग सहजता से प्राप्त होगा। यह रत्न आपको कार्यक्षेत्र में बड़ी सफलता दिला सकता है। रत्न शुभता से नेतृत्त्व करने की अद्भुत योग्यता सामने आयेगी।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में सूर्य तृतीय भाव का स्वामी है। पराक्रमेश सूर्य का माणिक्य रत्न धारण कर आप अपने पुरुषार्थ से अपने अधिकारिक शक्तियों में बढ़ोतरी कर सकते है। माणिक्य रत्न धारण बाहुबल द्वारा धन व परिवार में वृद्धि, भाई-बहनों से सुख प्राप्त करा सकता है। माणिक्य की शुभता आपको धनी, साहसी, प्रभावशाली व्यक्तित्व भी प्रदान कर सकती है। इस रत्न को धारण कर आप यात्राओं में सुख का अनुभव करेंगे। सूर्य की सभी शुभता प्राप्त करने के लिए आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल ग्रह की शुभता प्राप्त करें। मूंगा रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति बढ़ाकर आपको उच्चाधिकारी बनाएगा। मूंगा रत्न से आप स्वाभिमानी बनेंगे। मूंगा रत्न आपको मित्रों में श्रेष्ठ बनाएगा। रत्न शुभता विदेशी यात्राओं को सफल कर आपको लाभ दिलाएगी। रत्न शक्तियां आपको आत्मिक रूप से धार्मिक बनाए रखेंगी। यह रत्न आपके पुरुषार्थ भाव को बढ़ाकर आपको साहसपूर्ण कार्य करने की ओर प्रेरित करेगा। मूंगा रत्न धारण से भूमि-भवन के कार्य भी पूरे होंगे।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में मंगल षष्ठ भाव एवं आय भाव के स्वामी है।

मंगल की सभी शाक्तियों को प्राप्त करने के लिए आप मूंगा रत्न धारण कर सकते है। मूंगा रत्न धारण कर आप दैहिक परिश्रम से धनागम, कूटनीति से लाभों में वृद्धि, शत्रु पक्ष पर साहस के साथ विजय प्राप्त कर सकते है। साथ ही मूंगा रत्न मातृ एवं संपति से सुख पाने में सफल हो सकते है। मूंगा रत्न आपको दीर्घायु, होशियार एवं दैनिक जीवन में मस्तीपूर्ण बना सकता है। मंगल की शुभता मूंगा रत्न से आप को मनोकूल आय प्राप्त हो सकती है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपकी आयु में कमी हो सकती है। धन और स्वास्थ्य दोनों के पक्ष से यह रत्न आपको सहयोग नहीं कर रहा है। मोती रत्न आपकी मानसिक चिंताओं को बढ़ा सकता है। सृजनात्मक कार्यों में आय प्राप्ति के प्रयास आपकी दिक्कतें बढ़ा सकते है। कला से जुड़े क्षेत्रों में भी आय प्राप्ति के प्रयास असफल हो सकते है। मोती रत्न आपको अत्यधिक संवेदनशील बना सकता है। इसके प्रभाव से आपकी मानसिक स्वास्थ्यता में कमी हो सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपके पिता का आर्थिक स्तर आंशिक रूप से कुछ कमजोर हो सकता है। पिता से मिले धन और सुख का आप लाभ नहीं उठा पाएंगे। संतान संबंधी चिंताएं बढ़ सकती है। मोती रत्न आपके व्ययों में अस्थिरता का भाव दे सकता है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में चंद्र दूसरे भाव के स्वामी है। चंद्र की अशुभता प्राप्ति से बचाव के लिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना सही नहीं होगा। यह रत्न आपको यात्राप्रिय बना सकता है। पर्यटन का शौक आपको वन, पर्वत तथा दर्शनीय स्थलों पर विचरण करने की प्रवृति दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी परोपकार भावना में आंशिक रूप से कमी हो सकती है। यह रत्न आपको कलाहीन बना सकता है। मोती रत्न आपके मन में अस्थिरता का भाव ला सकता है। यह रत्न आपको विनयरहित बना सकता है। आप प्रवासी और बंधुशत्रु हो सकते है। मोती रत्न धारण करने पर आप को सात्विक भोजन की कमी का अनुभव हो सकता है। यह रत्न कुटुंब स्नेह में भी उतार-चड़ाव ला सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम धारण करने पर आप मानसिक रूप से कुछ हद तक असंतुष्ट हो सकते हैं। रत्न धारण से आपमें क्रोध की अधिकता और उत्साहहीनता आपमें देखने को मिलेगी। आप दूसरे के दोषों को शीघ्रता से सामने लायेंगे। नीलम रत्न से आपकी रुचि गूढ शास्त्रों में हो सकती है। यह रत्न आपको आलसी बना सकता है। इस रत्न का प्रभाव आपको ससुराल पक्ष के कारण हानि करा सकता है। यह रत्न आपके भाग्य में बाधक बन सकता है। नौकरी के क्षेत्र में बाधाएं और तनाव दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपका शिक्षा क्षेत्र बाधित हो सकता है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं अष्टमेश है। नीलम रत्न अष्टमेश शनि का रत्न होने के कारण इस रत्न में शुभता की आंशिक कमी हो सकती है। नीलम पहनने पर आपको स्वास्थ्य के पक्ष से पीड़ा का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपको वात, पित्त एवं चमरीग से परेशान कर सकता है। इसके अतिरिक्त नीलम धारण से आपको भाग्य का सहयोग कुछ कम प्राप्त होगा। ईष्ट फल प्राप्त होने में विलम्ब हो सकता है। यह रत्न आपको राज्य पक्ष से दंड एवं कष्ट दे सकता है। माता-पिता के स्नेह में कमी कर सकता है। नीलम रत्न आपकी परिश्रम क्षमता को प्रभावित कर सकता है। शनि रत्न नीलम आपकी विदेश यात्राओं में बाधाएं दे सकता है।

गोमेद

आपकी कुंड़ली में राहु दूसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू का गोमेद रत्न धारण करने पर आप धन संचय के लिए असत्य वचन कह सकते है। आपके पारिवारिक कार्यो में अस्थिरता रहेगी। रत्न धारण से धनार्जन करना भी आपके लिए कष्टकारी रहेगा। घर में बने भोजन से अधिक आपको फास्ट फूड अधिक रुचिकर लग सकता है। संतान कम संख्या में हो सकती है। आपके कामों में अक्सर रुकावटें आ सकती हैं। आप असत्य बोलने में अधिक विश्वास कर सकते हैं। व्यर्थ बोलने की आपको आदत हो सकती है। रत्न प्रभाव से वाणी में किसी प्रकार का दोष हो सकता है। रत्न प्रभाव से किसी अखाद्य य अपेय का सेवन आपके द्वारा हो सकता हैं। आपके द्वारा पैतृक सम्पदा का विनाश हो सकता हैं। पैसों का दुरुपयोग हो सकता हैं। आप कुपात्रों पर धन खर्च कर सकते हैं।

राहु कर्क राशि में स्थित है व इसका स्वामी चन्द्र द्वादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती है। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी

रहेगी।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने आप कुछ विषयों में आप लोभी और चालाक हो सकते है। आपके द्वारा दूसरों को शारीरिक और मानसिक कष्ट हो सकते है। अनजाने में आपसे पाप हो सकते है। आपके द्वारा किये गये कार्यो से विवेकहीनता परिलक्षित हो सकती है। रत्न प्रतिकूलता से आपको मुखरोग या दंत रोग हो सकता है। केतु रत्न आपको अकस्मात हानि करा सकता है। यह रत्न आपका ऑपरेशन करा सकता है। आपको विरासत मिलने में तकलीफ हो सकती है। सरकार के द्वारा आपकी धन हानि हो सकती है।

केतु मकर राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि आठवें भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरूसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

दशानुसार रत्न विचार

बुध
(23/05/2021 - 23/05/2038)

बुध की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, पुखराज व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मोती व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(23/05/2038 - 23/05/2045)

केतु की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, मूंगा व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु

इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, नीलम, गोमेद व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(23/05/2045 - 23/05/2065)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, माणिक्य व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मोती व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(23/05/2065 - 24/05/2071)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, मूंगा, हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम, गोमेद व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(24/05/2071 - 23/05/2081)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, हीरा, पुखराज, मोती व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और गोमेद व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

मंगल - 23/05/1968

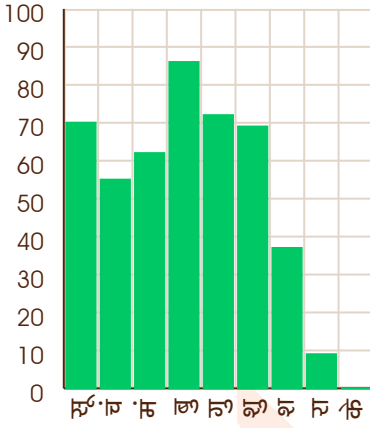

राहु - 23/05/1986

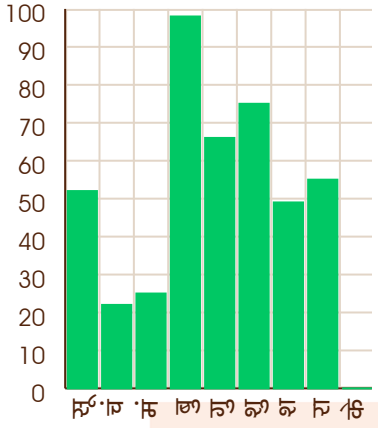

गुरु - 23/05/2002

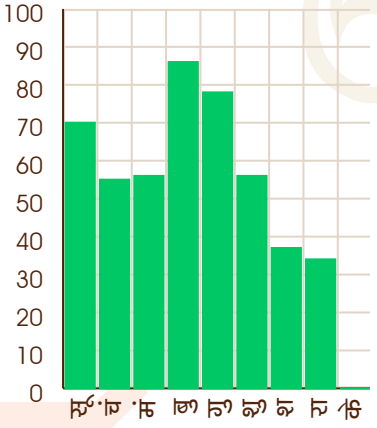

शनि - 23/05/2021

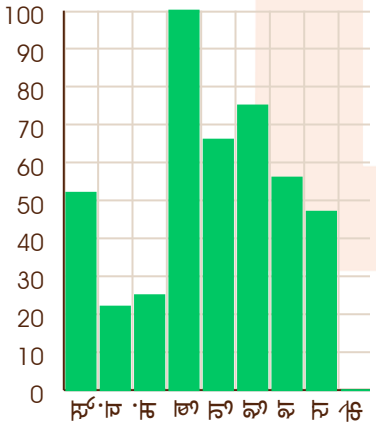

बुध - 23/05/2038

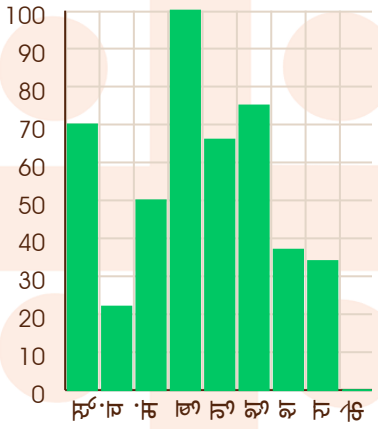

केतु - 23/05/2045

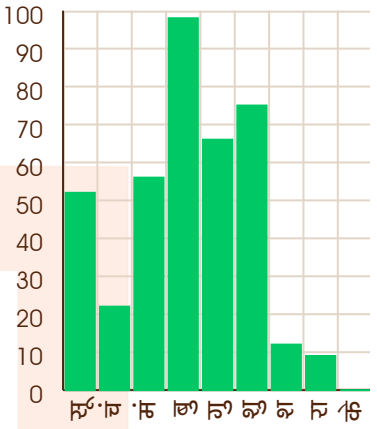

शुक्र - 23/05/2065

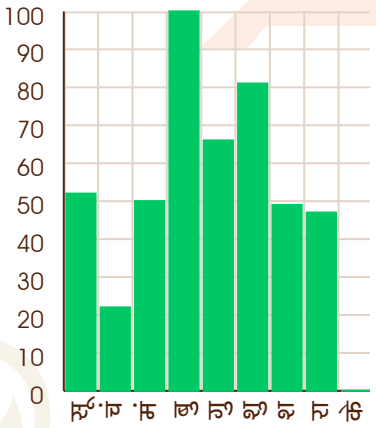

सूर्य - 24/05/2071

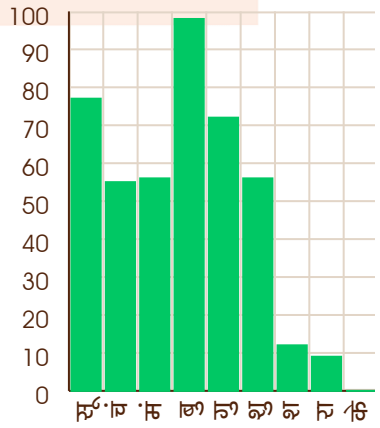

चन्द्र - 23/05/2081

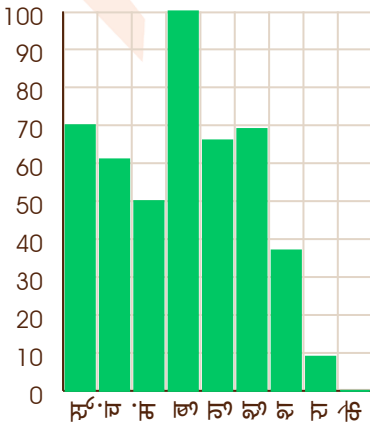

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - पन्ना

आपका जन्म मिथुन राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी बुध होता है। बुध सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह सूर्य के सबसे अधिक नजदीक है और सूर्य ग्रहों का राजा होता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मिथुन राशि के लग्न वाले जातकों को मिथुन राशि के स्वामी ग्रह बुध को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। बुध ग्रह के लिये पन्ना रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी बुध राजकुमार व व्यापार का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा व्यापार में आशातीत लाभ व विद्यार्थियों को बुद्धिबल प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को बड़ी बहन, बुआ और मौसी का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। बुध ग्रह वाणी एवं बुद्धि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको वाणी दोष या आत्मविश्वास से संबंधित परेशानी हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा बुद्धि बल की प्राप्ति होती है जिससे विद्यार्थीगण अपनी परीक्षाओं में अच्छे अंकों से सफलता प्राप्त करते हैं।

पन्ना रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है । पन्ना रत्न बुध का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात बुधवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल बुध की होरा में श्रेष्ठ होता है। बुधवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय बुध की होरा का होता है। पन्ना को यदि बुधवार के साथ-साथ बुध के नक्षत्र अर्थात् आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

पन्ना को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर हरे रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, बुध के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

बुध का मंत्र - ऊँ बुं बुधाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि बुध से संबंधित पदार्थ जैसे मूंग दाल, पीतल,

सवा मीटर हरे कपड़े का दान करें तो पन्ना रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन बुध का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और हिजड़ों को यथोचित समय-समय पर वस्त्र या पैसे आदि का दान करें तो यह पन्ना रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक बुधवार को गणेश जी की उपासना करें तथा गणेश जी को मोदक का भोग लगायें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

मिथुन लग्न वाले जातक यदि पन्ना रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली मिथुन लग्न की हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं आपका मस्तिष्क सदैव विचारमान व गतिमान रहता है इसलिए हर समय कुछ न कुछ आपके मस्तिष्क में चलता रहता है। लग्न स्वामी बुध होने की वजह से कठिन से कठिन काम को भी आप अपनी बुद्धि कौशल से आसान बना लेते हैं। द्विस्वभाव लग्न होने से आपके स्वभाव में भी दोहरापन (वास्तव में लचीलापन) होता है। समय के अनुसार अपने व्यवहार को बदल लेना अथवा हर परिस्थिति में स्वयं को ढाल लेना, वातावरण को अपने अनुसार ढाल लेना या स्वयं वातावरण के अनुसार ढल जाना आपके स्वभाव की विशेषता होती है। आपका व्यवहारिक ज्ञान अच्छा होता है। हर चीज को सीखने एवं पाने की ललक आप मे रहती है। आप खाली नहीं बैठ सकते हैं। हर

समय व्यस्त रहना कुछ नया करने की इच्छा आपमें रहती है। आपका हँसमुख स्वभाव आपको हर जगह लोकप्रिय बनाता है।

6, 8, व 12 भाव त्रिक भाव के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

मिथुन लग्न में छठे भाव व एकादश भाव के स्वामी मंगल हैं। आप अपने साहस का उपयोग अनैतिक कार्यो के लिए कर सकते हैं, मिथ्या वचन बोलने से भी आप बचे, तथा युद्ध अथवा लड़ाई हेतु सदैव तत्पर हो सकते हैं। शत्रुओन पर विजय प्राप्ति सहज हो जाती हैं। अपने बड़े भाई-बहनों से वैर-भाव रखने वाले हो सकते हैं। विष, अग्नि, शास्त्र सेपीड़ित हो सकते हैं।

अष्टम व नवम भाव के स्वामी शनि हैं। अष्टम भाव के स्वामी शनि के प्रभाव से आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी, भाग्यवृद्धि में बाधक, अधिनस्थों की ओर से सहयोग मेंकमी, लम्बी अवधि के रोग, ऋण आपके कायी में व्यर्थ का विलम्ब कर सकते हैं। इस योग की अशुभता से रोजगार प्राप्ति में व्यवधान, धन संग्रह में बाधा का सामना करना पड़ सकता है।

पंचम भाव और द्वादश भाव के स्वामी शुक्र हैं। शुक्र पंचमेश व द्वादशेश होकर आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता हैं। इसके अतिरिक्त शुक्र व्यय, हानि, दंड व अलगाव दे सकता हैं।

शनि के अष्टम भाव में होने से आप दीर्घ अवधि के लिए रोगी हो सकते है, यह योग मानसिक सुखो में भी कमी कर रहा है। धन में कमी, व्यवसाय में हानि, पैतृक संपति प्राप्ति में बाधक, संतान कष्ट दे सकता है।

अष्टम भाव में केतु अशुभ फलदायक होते है। आपको अपनी बुद्धि को गलत कार्यो में लगाने से बचना चाहिए। आपका उद्यम बाधित हो सकता है। साथ ही यह योग आपको परिश्रम का उचित प्रतिफल नहीं देता। जीवन साथी से शत्रुता भाव उत्पन्न हो सकता है। स्वजनों से संबंधों को मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते है।

चन्द्र द्वादश भाव में आपको बचपन में रोगी, कष्टों को सहने वाला, शत्रुओ की अधिकता, धन-हानि, असत्य वक्ता बना सकता है। स्वास्थ्य के पक्ष से भी चन्द्र की यह स्थिति शुभ फलदायी नहीं है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 6, 7, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान

करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	17/06/1968-17/06/1968	07/03/1969-28/04/1971	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	28/04/1971-10/06/1973	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	10/06/1973-23/07/1975	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/09/1977-04/11/1979	15/03/1980-27/07/1980	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	अल्प बचत
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	कम खर्च
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	पराक्रम हानि
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में स्थित है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगे तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगे। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्य का उदय नहीं होता अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि को भी कम ही करेंगे। आयु के साथ साथ आप जीवन में इनके महत्व को भी अवश्य स्वीकार करेंगे। आपको समाज में विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त होगा लेकिन इसमें विलम्ब हो सकता है। आप एक पराक्रमी एवं उत्साही व्यक्ति है अतः आपको इस ओर से कोई चिन्ता नहीं होगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक रहेगा साथ ही शुभाशुभ कार्यों पर आप व्यय करेंगे। जमीन जायदाद पर अधिक से अधिक व्यय करने के इच्छुक रहेंगे इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ की प्राप्ति हो सकती है। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपके पराक्रम से प्रभावित रहेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सांसारिक सुख संसाधनों की भी आपको परिश्रम पूर्वक प्राप्ति होगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव से आप कर्म योगी रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके भाग्योदय करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जन भी आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। आप भी उचित रूप से उनका लालन पालन करेंगे। साथ ही आपसी संबंधों में मधुरता भी बनी रहेगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कुलिक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। परन्तु यह केवल आंशिक रूप में ही विद्यमान है। परिणामस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर आर्थिक स्थिति नाजुक रहती है जिस कारण थोड़ा बहुत कष्ट जातक को सहन करना पड़ता है और अपयश का भय बना रहता है।

इस योग के कारण जातक का विद्याध्ययन सामान्य रहता है और वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। परिवारिक सदस्यों से समय-समय पर थोड़ा बहुत मनमुटाव हो जाता है। मित्रगण समय पर धोखा एवं कष्ट पहुँचाते हैं। जीवन में आगे बढ़ने के लिए विशेष रूप से संघर्ष नहीं करना पड़ता है। सन्तान सुख में किंचित बाधा आती है। पुत्र आज्ञा का पालन करने में असमर्थ होता है। वह थोड़ा बहुत क्रूर एवं दुष्ट स्वभाव का होता है तथा मनमानी करता रहता है, जिससे जातक प्रभावित हो जाता है। सामाजिक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा में आंशिक नुकसान होता है और जातक भूत प्रेतों से कभी कभी परेशान हो जाता है।

इस योग के कारण जातक को कभी-कभी रोग व्याधि भी घेर लेती है जिससे स्वास्थ्य असामान्य हो जाता है और मानसिक रूप से चिन्तित होना पड़ता है। जातक अपनी वृद्धावस्था को लेकर चिन्तित रहता है और वह समय आने पर कष्ट को भोगता है। जातक परोपकार की भावना से ओतप्रोत रहता है, परन्तु लोग इसका नाजायज फायदा उठाते हैं, जिससे इन्हें थोड़ा बहुत क्षति ही मिलती है। जीवन यापन मध्यम रहता है और जातक पराक्रमहीन हो जाता है। सुखभोग का आंशिक अभाव रहता है। लेकिन इतना सब कुछ होते हुए भी जातक व्यापार में मनोभिलषित (इच्छित) सफलता प्राप्त करता है और जातक के जीवन में मान-सम्मान भी मिलता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- नवम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।

आपकी कुडली में सूर्य, बुध और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यह्रदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष

सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक नौ होने से आपका मूलांक नौ होता है। मूलांक नौ का स्वामी मंगल है। मंगल को ग्रहों का सेनापति माना गया है। अतः आपके अन्दर भी सेनापति, नायक, मुखिया इत्यादि बनने की चाह सामाजिक क्षेत्रों में बनी रहेगी। रोजगार व्यवसाय मे एकाधिकार की प्रवृत्ति आपमें पाई जायेगी। आपके अन्दर साहस अधिक होने से आप अपने कार्यों को अदम्य साहस से करते हुये कठिनाईयों को आसानी से पार कर लेंगे। स्वभाव में आपके तेजी रहेगी। फुर्ती एवं जल्दबाजी रहेगी। आपकी सदैव यही कोशिश रहेगी कि आप जो भी कार्य हाथ में लें वह शीघ्र समाप्त हो जाये।

आपके स्वभाव में साहसीपन होने से आपको दुःसाहस के कार्यों से सदैव दूर रहना हितकर रहेगा। आप अनुशासन प्रिय रहेंगे एवं दूसरों से अनुशासन रखने की अपेक्षा करेंगे। खुशामद एवं चापलूसी से आप प्रभावित होकर कभी-कभी नुकसान भी उठायेंगे। अतः खुशामदी एवं चापलूस व्यक्तियों से सदैव बचें। मंगल ग्रह के प्रभाव से क्रोध की मात्रा भी आपमें रहेगी। इससे आपके विरोधी उत्पन्न होंगे। शत्रुओं की संख्या कम रहेगी एवं आप में शत्रुओं को दमन करने का बल हमेशा बना रहेगा।

मंगल के मूलांक के प्रभाववश आप अग्नितत्व प्रधान रोगों के शिकार होंगे। अतः आपको सौम्यता का व्यवहार रखना भाग्य में वृद्धि कारक रहेगा।

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षलग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय अचानक होगा। आपके जीवन में कई कार्य ऐसे होंगे जिनमें अथक परिश्रम के बाद चाही गई अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जायें। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन के हिमायती होंगे एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना आपकी आदत में शुमार होगा। आप रूढ़ि वादिता से थोड़े दूर तथा आधुनिक होंगे।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा एवं ऐसे कार्यों को संपादन करने में आनन्द आयेगा जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझेंगे। आपके कार्यों में विस्फोटकता रहेगी तथा आप अचानक चर्चित होंगे। लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार-बार का परिवर्तन आपकी उन्नति में बाधक रहेगा। अचानक सफलता या असफलता से आपको सबक लेना होगा कि भाग्य आपका परिवर्तनशील है। अतः आपको अधिक विस्फोटक, जोखिम युक्त कार्यों से दूर रहना या सोच-समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

आपका मूलांक 9 है तथा भाग्यांक 4 है। मूलांक 9 का स्वामी मंगल है तथा भाग्यांक 4 का स्वामी हर्षल है। मूलांक 9 एवं भाग्यांक 4 के बीच सम संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक एवं भाग्यांक के मिलेजुले फल प्राप्त होंगे। कभी आपका मूलांक साथ देगा, तो कभी आपका भाग्यांक साथ देगा। आप ऐसा ही रोजगार-व्यापार पसंद करेंगे, जिसमें धनार्जन साहस भरे कार्यों से होता रहे। जोखिम भरे कार्य एवं चुनौती से परिपूर्ण कार्यों की ओर आपका स्वाभाविक रुझान रहेगा। आप अपने कार्यक्षेत्र में एक मुखिया की तरह से कार्य संपन्न

करेंगे। आपका रुझान विशेष तौर पर ज्ञान-विज्ञान अथवा तकनीकी क्षेत्रों की ओर रहेगा। यदि आप तकनीकी क्षेत्र में कार्य करते हैं, तो आपको उच्च कोटि की सफलताएं प्राप्त होंगी। आप युवा अवस्था से जीविकोपार्जन हेतु धन कमाना प्रारंभ कर देंगे तथा प्रौढ़ावस्था तक आपकी आर्थिक स्थिति काफी अच्छी हो जाएंगी। आपको भूमि-संपदा जीवन के मध्य भाग में प्राप्त होगी एवं आप इनका भरपूर सुख भोगेंगे। आपकी सामाजिक स्थिति अच्छी बनेगी तथा समाज में आपको समयोचित मान-सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी।

आपका भाग्योदय 22 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा तथा 31 वर्ष की अवस्था से आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी एवं 40 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 9 की 3 एवं 6 से मित्रता है तथा भाग्यांक 4 की 1 एवं 8 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 6, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे तथा इनसे आपके जीवन में प्रमुख घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, अप्रैल, जून, अगस्त, सितंबर, माह विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब तारीख, दिन, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर दोनों शुभ रहें।

मूलांक 9 एवं भाग्यांक 4 के प्रभाववश, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए विशेष शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ विशेष महत्वपूर्ण घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बनेंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

मंगल दिनांक 23 मार्च से 20 अप्रैल तक एवं 24 अक्तूबर से 21 नवंबर तक पाश्चात्य मत से, सूर्य मेष तथा वृश्चिक राशि में रहता है। भारतीय मत से यह समय 13 अप्रैल से 12 मई एवं 14 नवंबर से 14 दिसंबर होता है। मेष एवं वृश्चिक मंगल की अपनी राशियां हैं। दिनांक 14 जनवरी से 13 फरवरी तक सूर्य मकर राशि में रहता है, जो मंगल कि उच्च राशि है अतः उपर्युक्त समय मूलांक 9 के लिए कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

मंगलवार, शुक्रवार एवं गुरुवार आपके लिए ठीक दिन रहेंगे। आप यदि किसी भी कार्य को करते हैं तो इन्ही दिवसों में प्रारंभ करें और यदि इन दिवसों में अनुकूल तारीखें भी आ जाएं तो श्रेष्ठ फलदायक रहेगा।

शुभ तारीखें

आपके लिए किसी भी अंग्रेजी मास की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 29 एवं 30 तारीखें अधिक अनुकूल रहेंगी। इन तारीखों में महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार-व्यापार के कार्य, अधिकारी या विशिष्ट व्यक्तियों से संबंधित कार्य अथवा पत्र इत्यादि लिखना आपके लिए अधिक उपयुक्त तथा सफलतादायक होंगे।

अशुभ तारीखें

आपके लिए किसी भी अंग्रेजी माह की 1, 7, 10, 16, 19, 20, 25 एवं 28 तारीखें ठीक नहीं हैं। आपके लिए पत्र इत्यादि लिखना या दस्तावेज लिखने हेतु अथवा विशिष्ट अधिकारी से मिलने हेतु या कोई भी नया कार्य प्रारंभ करना हो तो इन तारीखों में प्रारंभ न करें।

मित्रता या साझेदारी

जिन व्यक्तियों का जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखों को अथवा 13 अप्रैल से 12 मई एवं 14 नवंबर से 14 दिसंबर तथा 14 जनवरी से 13 फरवरी के मध्य हुआ हो, ऐसे व्यक्तियों से आपकी मित्रता अच्छी रहेगी तथा रोजगार, व्यापार के क्षेत्र में भी आप उच्चता के शिखर पर पहुंचेगें। ऐसे व्यक्ति आपके लिए विशेष फलदायी रहेंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

मूलांक 3, 6, 9 वाली महिलाएं तथा जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 दिनांकों में हुआ हो पर वे आपके लिए विश्वसनीय सिद्ध होंगी। ऐसी स्त्रियों से ही आप प्रेम अथवा विवाह संबंध स्थापित कर सकते हैं जो आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा।

अनुकूल रंग

आपके लिए अनुकूल रंग गुलाबी, गहरा लाल होने के कारण आपको चाहिए की अपने घर में दीवारें, खिड़कियां, पर्दे आदि का चुनाव करते समय इन रंगों को ध्यान में रखें तथा यदि आपका स्वास्थ्य साथ नहीं दे रहा है तब आप इन रंगों का रुमाल बना कर अपने पास हमेशा रखें तथा कोई भी रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य करते समय इन रंगों के वस्त्र धारण करना न भूलें, जो आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए अच्छा रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए दक्षिण दिशा उत्तमकारी है। अतः आपके लिए मकान या कॉम्पलेक्स वही शुभ रहेगा जो दक्षिण में स्थित हो। अतः आप शहर की दक्षिण दिशा या भवन की दक्षिण दिशा का चुनाव कर सकते हैं एवं रोजगार-व्यापार की बैठक भी दक्षिण दिशा में रख सकते हैं, जो आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए अच्छा रहेगा। भवन के फ्लैट का क्रमांक का योग 3, 6 या 9 रखना लाभप्रद रहेगा।

शुभ वाहन नं

नये वाहन का पंजीकरण क्रमांक आपके मूलांक 9 या मूलांक के मित्र अंक 6 तथा 3 में से कोई एक लेना हितकर रहेगा, जैसे वाहन पंजीकरण क्रमांक 5238 = 9 इत्यादि होना चाहिए। यदि आप होटल में कमरा आदि बुक करते हैं, तो उसके लिए अंक 108 = 9 होना आपके लिए हितकर रहेगा। अथवा आप वाहन द्वारा यात्रा करते हैं, तो सीट इत्यादि क्रमांक आपके मूलांक या मित्र अंक भाग्यशाली अंक साबित होंगे। इन्हीं शुभ अंकों के प्रभाव से ही आपकी यात्रा सफल हो सकती है।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको क्रोध, झल्लाहट, दुर्घटना, चोट, अंग शैथिल्य, हृदय रोग, रक्तचाप इत्यादि पीड़ा देंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट और विपत्ति के समय आप हनुमान की उपासना तथा आराधना करें, मंगलवार का व्रत करें और एक समय भोजन करें।

व्यवसाय

संगठन, संघ संचालक, नियंत्रक, चिकित्सा, ज्योतिष, धर्मोपदेशक, सैन्य विभाग, गोला-बारूद, आतिशबाजी का व्यवसाय, वकालत, औषधि विक्रेता, लौह तथा अन्य धातु संबंधी कार्य अथवा प्रभुता के कार्य। इन सबको अंक 9 में समाविष्ट कर सकते हैं।

व्रतोपवास

मंगलवार को भौम अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। यह व्रत पैंतालीस मंगलवार या कम से कम इक्कीस मंगलवारों को करें। लाल वस्त्र धारण करें एवं लाल वस्तुओं का दान करें। यथाशक्ति मंगल के मंत्र का मूंगे की माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आप मूंगा धारण करें। इसके न मिलने पर संगसितारा, लाल हकीक, लाल मून स्टोन धारण कर सकते हैं। इसे आप मंगलवार के दिन, शुक्ल पक्ष में, शुभ चौघड़िया मुहूर्त में, तांबा, सोना, मिश्रित धातु या चांदी में छह से नौ रत्ती का मूंगा बनवा कर, दाहिने हाथ की अनामिका उंगली में त्वचा को स्पर्श करते हुए धारण करें।

अनुकूल देवता

आप मंगल ग्रह की उपासना करें अथवा हनुमान जी की उपासना करने से आपके सभी प्रकार के अरिष्ट दूर होंगे। आप प्रति मंगलवार एवं शनिवार को सुंदर कांड का पाठ किया करें। साथ में हनुमान जी के मंत्र का नित्य एक सौ आठ बार मूंगे की माला पर जप किया करें। हनुमान जी का मंत्र इस प्रकार है : 'हं हनुमत रुद्रात्मकाय हुं फट्'। मंगलवार को एक समय भोजन करें तथा चने एवं मिष्ठान का प्रसाद हनुमान जी को अर्पण करने से आपके सभी कार्य बनेंगे।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए मंगल के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, मंगल गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद, ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

भौम गायत्री मंत्र - ऊँ अंगारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप मंगल का ध्यान करें, मन में मंगल की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें :

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कांतिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ मंगल को अनुकूल बनाने हेतु मंगल के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान सौ माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ क्रौं क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।। जप संख्या 10000।।

वनस्पति धारण

आप मंगलवार के दिन एक इंच लंबी अनंतमूल की जड़ ला कर, लाल धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधें या स्वर्ण या तांबे के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे

मंगल के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक मंगलवार को एक बाल्टी या बर्तन में सौंठ, सौंफ, लाल चंदन, सिंगरफ, माल कांगनी और मौलसरी के फूल आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ मंगल के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, को मिला कर, चूर्ण कर किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए, स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

मंगल की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को मंगल के पदार्थ-तांबा, सोना, गेहूं, लाल वस्त्र, गुड़, लाल चंदन, लाल पुष्प, केसर, कस्तूरी, लाल वृषभ, मसूर की दाल, पृथ्वी, विद्रुम आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

मंगल को अनुकूल बनाए रखने हेतु मंगल यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म पुनर्वसु नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ था। आपके जन्म समय मिथुन लग्न के साथ-साथ वृषभ का नवमांश एवं कुंभ राशि का द्रेष्काण भी उदित हुआ था। आपके जन्म प्रभाव से यह स्पष्ट हो रहा है कि आप भाग्यशाली व्यक्ति हैं। क्योंकि आप आरामदायक एवं प्रसन्नतम जीवन व्यतीत करेंगे। परंतु आप कार्य करने से विमुख हो जाते हैं फिर आप किस प्रकार उपयुक्त कार्य सुनिश्चित कर सकेंगे। अतः आप कार्य के संबंध में पूर्णरूपेण विचार कर उपयुक्त एवं अनुकल कार्य सुनिश्चित कर लें।

आपकी ढुल-मुल नीति के कारण आप मानसिक रूप से व्यस्त रहते हैं एवं प्रतिक्षण अन्य लुभावने कार्य-व्यवसाय को प्रारंभ करने हेतु व्यग्रता पूर्वक प्रवृत हो जाते हैं। इसलिए आप अधीर होकर, तत्काल ही परिणाम प्राप्त करना चाहते हैं। जिस वजह से आप प्रलोभन में पड़ कर अनेकों कार्यों को अपूर्ण छोड़ देते हैं। फलस्वरूप आपके कठिन श्रम से कोई लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है। अतः आप भविष्यकाल के लिए निर्णय करके सुदृढता पूर्वक कार्य संपादन करें।

आप में आश्चर्य जनक ग्रहणात्मक शक्ति विद्यमान है। आप दूसरो की बातों को समझने एवं ग्रहण करने में समर्थ हैं। आप किसी भी प्रकार का अंदाज लगाने के बाद भी अपने अनुकूल और विचार पूर्वक कार्य संपादन करते हैं।

आपके पास लोग निर्देशन प्राप्त करने तथा आपकी राय जानने आयेंगे। सामान्यतया किसी भी वस्तु विषय में आपका निर्णय ले लेना तथा पुनः निर्णय बदल देना यह उपयुक्त है।

आपका अच्छा स्वभाव आपको अपने मित्रों एवं संबंधियों के मध्य प्रसिद्धि प्रदान करता हैं। आपके संबंधित सभी लोग आपको प्रतिष्ठित करते हैं। अर्थात् प्रतिष्ठा प्रदान करते हैं। अन्य दूसरी बात यह है कि आपकी प्रसिद्धि आपको तेज, कुशग्र बुद्धि का, निष्कपट, विश्वासी एवं दानशील प्रवृत्ति का बनाता है।

आप अपनी उच्च महत्वकांक्षा की प्राप्ति हेतु समर्पित हो कर कोई भी कार्य प्रारंभ करें। आप चांद को स्पर्श करने की अभिलाषा नही करते परंतु आप कुछ भी चाहे जो कुछ भी प्राप्त करके ही संतुष्टि एवं प्रसन्नता का अनुभव करना चाहते हैं।

यदि आप एकाग्रता पूर्वक कार्य संपादन करें तो आपके अपने रास्ते से धन की प्राप्ति होगी। आप मुख्यतः अपने जीवन के 25वें वर्ष में अति समृद्ध हो जाएंगे। साथ ही धन का अपव्यय निरर्थक हो जाने से बहुत बड़ी उदासीनता एवं चिंता का कारण भी बनेगा।

आप पारिवारिक सदस्यों के साथ बहुत आरामदेह एवं सुखप्रद जीवन बिताएंगे। आपका शांति प्रदायक अपना भवन होगा तथा बच्चों के साथ अनेक प्रकार से सुविधाजनक एवं आरामदायक जीवन व्यतीत करेंगे। उत्तम तो यह है कि आप अपने लिए अनुकूल जीवन संगिनी का चयन कर लें जिसका जन्म लग्न/राशि तुला, कुंभ, सिंह एवं मेष राशि हो।

आप भ्रमण प्रिय हैं। आप अपने मित्र मंडली का विस्तार करेंगे। आपके संपर्क के अनेक मित्रगण विस्तृत रूपेण पूर्ण समर्पित भाव से आपका सहयोग करेंगे। स्पष्टतया आपके उत्तम स्वास्थ्य की सुनिश्चितता बनी हुई है। परंतु आपको संभाव्य शारीरिक आघात के प्रति रक्षित करना चाहिए। ताकि यक्ष्मा तपेदिक, श्वांस नली की विकृति एवं उदर संबंधी विकृति रोग की परेशानी से सुरक्षित रह सकें। आपके लिए पेशा, वकालत, शैक्षणिक कार्य, पुस्तक प्रकाशन एवं पत्रकारिता के व्यवसाय अनुकूल हैं।

आपके लिए बुधवार, एवं शुक्रवार, का दिन अनुकूल हैं, तथा मंगलवार रविवार, गुरुवार एवं सोमवार का दिन कठिन एवं हानिप्रद प्रमाणित होगा। शनिवार मध्य फलदायक है।

आपके लिए लाभदायक, प्रभावी एवं अनुकूल अंक 3 एवं 7 अंक है। इसके अतिरिक्त अंक 4 एवं अंक 8 सर्वथा प्रतिकूल अंक है।

आप सफेद रंग के प्रति आकर्षित हैं परंतु इसे त्यागकर अपने लिए अनुकूल रंग पीला गुलाबी, बैगनी, हरा एवं नीला रंग के वस्त्रादि का व्यवहार करें। काला एवं लाल रंग आपके लिए प्रतिकूल रंग है।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्तप्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।,

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पडेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोडकर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

कुम्भ राशि में मंगल हो तो जातक व्यसनी, लोभी, सटटे से धननाशक, आचारहीन, मत्सरवृत्ति एवं बुद्धिहीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराकमी, धर्मात्मा, पुत्रवान, बुद्धिमान, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया मिथुन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ विग्रम शांत एवं हास्य प्रवृति से युक्त होते है। वे बुद्धिमान होते है तथा उनके मुख पर बुद्धिमता की झलक स्पष्ट परिलक्षित होती है परन्तु यदा कदा चंचलता का भाव भी इनमें पाया जाता है ये स्वाभिमानी व्यक्ति होते हैं तथा स्वपरिश्रम योग्यता एवं पराक्रम से जीवन में वांछित सफलताएं अर्जित करते हैं तथा सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों को प्राप्त करके सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं। संगीत एवं कला के प्रति इनकी अभिरूचि रहती है तथा नए सिद्धांतों एवं मूल्यों का प्रतिपादन करने में भी समर्थ रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा अपने समस्त सांसारिक महत्व के कार्यों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे। इससे समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आप में सहिष्णुता तथा उदारता का भाव भी विद्यमान रहेगा। अतः अवसरानुकूल सुख दुःख में अन्य लोगों को अपना सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगे।

मित्रों के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा सरकारी या उच्चाधिकारी वर्ग से आपके नित्य सम्पर्क रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य लोग आपसे आकर्षित एवं प्रभावित रहेंगे। लेखन गणित तथा व्यापारिक कार्यों में आपकी विशेष रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से इन क्षेत्रों में इच्छित उन्नति प्राप्त करके अपना जीवन यापन करेंगे।

लग्न में लग्नेश बुध की राशि के प्रभाव से आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। आपकी वाणी भी मधुर रहेगी तथा अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का उपयोग करेंगे एवं अपने वाक्चातुर्य से अपने कार्यों को सिद्ध करने में समर्थ होंगे। आपका स्वभाव परिश्रमी होगा तथा परिश्रमपूर्वक आप अपने उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे जिससे समाज या कार्यक्षेत्र में आप एक सम्मानित पुरूष समझे जाएंगे।

जीवन में इच्छित धनैश्वर्य एवं वैभव को अर्जित करने में आप समर्थ होंगे तथा आयस्रोत भी आपके एक से अधिक होंगे फलतः आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी संगीत कला साहित्य एवं अन्य शास्त्रों पर आपका अधिकार रहेगा तथा अपनी उत्साही एवं पराक्रमी प्रवृति से आप इनमें इच्छित यश तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होने की संभावना रहेगी। साथ ही कृषि या जमीन जायदाद संबंधी लाभ भी आप जीवन में अर्जित कर सकते हैं।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा निष्ठापूर्वक समय समय पर धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। आप एक सदाचारी पुरूष होंगे तथा नैतिकता का अनुपालन करने में सदैव तत्पर रहेंगे। अतः अन्य जन आपको हार्दिक आदर प्रदान करेंगे तथा एक सम्मानित व्यक्ति के रूप में आपका अपने क्षेत्र में प्रभाव रहेगा।

इस प्रकार आप परिश्रमी, उत्साही, साहसी एवं पराक्रम के भाव से युक्त होकर सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कर्क राशि स्थित है जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप भावुक प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा यदाकदा अधिक बोलने वाली प्रवृति भी रहेगी। समाज में आप एक सम्माननीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथायोग्य सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी वाणी भी मधुर होगी तथा अपने विचारों को आप स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में समर्थ रहेंगे। फलतः सभी लोग आपकी वाणी से प्रभावित होंगे।

पारिवार में सुख शान्ति तथा समृद्धि उत्तम रहेगी तथा परिवार की शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही संतति से भी आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपको सुन्दर तथा स्वादिष्ट भोजन करना रूचिकर लगेगा। विशेष रूप से मिष्ठान के आप प्रिय रहेंगे तथा रूचिपूर्वक इनका भक्षण करेंगे लेकिन इससे यदा कदा आपको स्वास्थ्य संबंधी परेशानी भी हो सकती है अतः इनकी अधिकता की उपेक्षा करनी चाहिए। साथ ही धार्मिक उत्सवों को भी आप समय समय पर परिवार में आयोजन करते रहेंगे। आप अपने विचारों की पुष्टि में हमेशा ठोस तर्को को प्रस्तुत करेंगे जिसे सभी लोग स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त लकड़ी के व्यापार से आप लाभ अर्जित कर सकते है। इसके अतिरिक्त पुत्रों का आपके प्रति विशेष स्नेह रहेगा तथा आपकी सेवा में वे सर्वदा तत्पर रहेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। इसके प्रभाव से आप एक आदर्श विशाल हृदय तथा साहसी व्यक्ति होंगे तथा अपने संबंधियों, भाई.बहिनों तथा चचेरे भाईयों के प्रति पूर्ण विश्वास रहेगा। आप किसी भी कार्य में उनसे सहयोग या सलाह लेना उचित समझेंगे तथा तभी किसी महत्वपूर्ण कार्य को सम्पन्न करेंगे। साथ ही उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगे। आप हमेशा उनकी गलतियों को भूल जाने की सीमा तक क्षमा करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही इस राशि के प्रभाव से आप उच्चाधिकार तथा प्रशासनिक सेवा को प्राप्त करने में भी सफल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त भाई बहिनों से सदा आज्ञापालन तथा कर्तव्य परायणता की अपेक्षा करेंगे। यदि वे ऐसा नहीं करते तो आप अत्यन्त ही क्रोधित तथा नाराज होंगे।

आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा आपकी नजर तथा स्मरण शक्ति प्रबल रहेगी तथा काफी समय तक आप किसी भी बात को याद करने में समर्थ रहेंगे। आप उच्च शिक्षा, दर्शन शास्त्र तथा लेखन कार्य संबंधी सफलताएं भी अर्जित करने के लिए यत्नशील रहेंगे। संचार साधनों से भी आप युक्त रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही वाहन आदि का सुख भी आपको प्राप्त होगा। आप नीति के भी ज्ञाता होंगे तथा पत्राचार, समाचार.पत्र या लेखन संबंधी कार्यो में रूचिशील रहेंगे। आप प्रायः यात्राशील रहेंगे तथा दूर समीप की यात्राओं से आपको लाभ तथा ख्याति अर्जित होगी । संगीत के प्रति भी सामान्यतया आपकी रूचि रहेगी। प्रकाशन के क्षेत्र में भी आप इच्छुक रहेंगे क्योंकि आपके अन्दर लेखन क्षमता विद्यमान है अतः आप उच्च कोटि के संपादक भी हो सकते है। इसके अतिरिक्त एक योग्य सूचना अधिकारी या संवाद दाता के रूप में भी सफल हो सकते हैं। साथ ही आप शूरवीर, मित्र प्रेमी यदा कदा कटुवक्ता परन्तु अभिमान हीन रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों एवं उपकरणों से युक्त रहेंगे तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। बुध के प्रभाव से आप में बुद्धिमता एवं व्यावहारिकता के भाव की प्रधानता होगी फलतः अपने इन्हीं गुणों से जीवन में ऐश्वर्य एवं वैभव की प्राप्ति करेंगे तथा समाज में आपका सम्माननीय स्तर रहेगा।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल संपत्ति को अवश्य प्राप्त करेंगे। संबंधीवर्ग से भी आपको न्यूनाधिक मात्रा में चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आप स्वयं एक बुद्धिमान एवं योग्य व्यक्ति होंगे तथा अपने इन ही गुणों से भी वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करके अपने ऐश्वर्य एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगे।

जीवन में आपको उत्तम गृह की प्राप्ति होगी तथा आपका घर समस्त आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित होगा। घर की सफाई के प्रति आप पूर्ण रूपेण तत्पर होंगे तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा उनसे संबंधो में पर्याप्त मधुरता होगी। इसके अतिरिक्त युवावस्था में ही आपको उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी तथा जीवन में विभिन्न प्रकार से आप वाहन सुख अर्जित करने में समर्थ होंगे।

आपकी माता बुद्धिमान शिक्षित एवं आदर्शवादी महिला होंगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं व्यावहारिकता से सभी पारिवारिक जनों को अपनी ओर से सन्तुष्ट रखेंगी। सभी लोग उनका सम्मान एवं आज्ञा का पालन करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट स्नेह एवं वात्सल्य की भावना होगी तथा अवसरानुकूल आपको आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आपका भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होग एवं सुख-दुख में उन्हें पूर्ण रूप से सहयोग प्रदान करेंगे जिससे आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी।

आप प्रारंभ से ही बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अध्ययन के प्रति आपकी पूर्ण रूचि होगी एवं प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करेंगे। अतः स्नातक परीक्षा आप अच्छे अंकों से उतीर्ण करेंगे तथा अपने उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेंगे। इससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा अन्य संबंधियों एवं मित्रों से उचित सम्मान एवं प्रोत्साहन मिलेगा जिससे कार्य क्षेत्र में आप आशातीत उन्नति प्राप्त करेंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में तुला राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगें। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे साथ ही कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान आप अपनी बुद्धि से करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में भी आपकी रुचि होगी तथा इन ग्रंथों का अध्ययन करके वांछित मात्रा में ज्ञान अर्जित करेंगे। बुध के प्रभाव से साहित्य या कविता लेखन, गणित एवं ज्यौतिष शास्त्र का ज्ञान भी आपको होगा तथा इस क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि भी अर्जित कर सकते है जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा एक विद्वान के रूप में आपकी प्रतिष्ठा होगी ।

शुक्र की राशि की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी परंतु आपका प्रेम आदर्शवाद एवं मर्यादा की सीमा में होगा तथा इसको आप केवल मनोरंजन या समय व्यतीत करने का समाधान नहीं मानेगे। अतः आपका प्रेम प्रसंग विवाह के रूप में भी परिवर्तित हो सकता है जिससे आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा संतति में कन्याओं की संख्या पुत्र से अधिक होगी लेकिन सभी बच्चे बुद्धिमान एवं गुणवान होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से जीवन में उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता पिता के वे आज्ञाकारी होंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को माता पिता की सलाह से ही सम्पन्न करेंगे जिससे परस्पर सद्भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति उनमें विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्या का समाधान माता से ही करवाना अधिक पसंद करेंगे लेकिन मान सम्मान एवं श्रद्धा का भाव माता पिता के प्रति समान रूप से रहेगा।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे आशातीत उन्नति करेंगे तथा अच्छे अंको से अपनी परिक्षाओं को उत्तीर्ण करके उज्जवल भविष्य का निर्माण करेंगे। वे उच्च पदों पर भी नियुक्त हो सकते है। इसके वे स्वभाव से विनम्र एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे जिससे आपके सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। अपने बच्चों पर आपको गौरव होगा तथा वे भी वृद्धावस्था में आपकी श्द्धा पूर्वक सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने स्वास्थ्य को अनावश्यक चिन्ताओं एवं उत्तेजनाओं से खराब करेंगे। साथ ही आपको अपने स्वास्थ्य की स्वस्थता के लिए हमेशा सीमित कार्य करना चाहिए क्योंकि अधिक कार्य करना आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। सामान्यतया आप सर्दगर्म से उत्पन्न जुकाम तथा वृद्धावस्था में श्वास संबन्धी रोगों से परेशानी की अनुभूति कर सकते है। इसके साथ ही कन्धों या जोड़ों में भी दर्द की उत्पति हो सकती है। अतः स्वास्थ्य के प्रति आपको पूर्ण सतर्क रहना चाहिए।

मंगल एक तेजस्वी तथा उग्र ग्रह है अतः आपको अनावश्यक रूप से वार्तालाप में कठोर शब्दों की उपेक्षा करनी चाहिए तथा यत्नपूर्वक मधुर वाणी ही बोलनी चाहिए अन्यथा आपको कई प्रकार से अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। आपके उन्नति मार्ग में शत्रु हमेशा व्यवधान उत्पन्न करेंगे अतः आपका जीवन अत्यंत ही परिश्रम पूर्ण रहेगा परन्तु अपनी तेजस्विता एवं चतुरता से शत्रुपक्ष का दमन करने में समर्थ होंगे तथा आपकी कठिनाइयां भी दूर होंगी।

आपके सेवक भी क्रोधी स्वभाव के होंगे तथा आपकी गुप्त बातों को अन्य जनों से कहकर आपके मान सम्मान में न्यूनता करेंगे। अतः आपको नौकरों पर पूर्ण निगरानी रखनी चाहिए तथा उनके सामने कोई भी व्यक्तिगत वार्तालाप नहीं करना चाहिए। आप जीवन की खुशहाली पर निरन्तर व्ययशील रहेंगे अतः कभी कभी व्ययाधिक्य के कारण आर्थिक विषमता उत्तपन्न हो सकती है। साथ ही बीमारी के कारण आपको कर्जा आदि भी लेना पड़ेगा तथा समय पर वापिस न कर पाने के कारण सामाजिक अवमानना होगी। आपको मुकद्दमेबाजी की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। मामा मामियों से आपको इच्छित सुख एवं सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा तथापि उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। आपको सुन्दर स्वादिष्ट भोजन करना अच्छा लगेगा तथा मिष्ठान एवं नमकीन के प्रति विशेष रूचि होगी। परन्तु इनकी अधिक मात्रा तथा नशीली वस्तुओं से हमेशा परहेज रखें अन्यथा शारीरिक परेशानी उत्पन्न होगी तथा वृद्धावस्था में आपको न्यूनाधिक मात्रा में कष्ट भी होगा ।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है सामान्यतया धनु राशि की सप्तम भाव में स्थिति के कारण जातक का सहयोगी पुष्ट शरीर वाला बुद्धिमान एवं कार्य कुशल होता है तथा बुध के प्रभाव से उसमें विद्वता कलाप्रियता एवं सहिष्णुता का भाव भी रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी बुद्धिमान विदुषी एवं सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा कला के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा। साथ ही सांसारिक कार्यो में वह निपुण होंगी तथा कुशलता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न धर्म के प्रति भी उनके मन में श्रद्धा होगी तथा सहिष्णुता के भाव से भी युक्त होंगी इसके अतिरिक्त वह एक कर्तव्य परायण महिला होंगी एवं समाज तथा परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी गौरवर्ण की सुंदर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य होगा। शारीरिक रूप से पुष्ट होंगी एवं अंग प्रत्यंग भी सुडौल रहेंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा एवं कला के प्रति समर्पण की भावना रहेगी सौन्दर्य में अभिवृद्धि के लिए वह अवसरनुकूल सौन्दर्य प्रसाधनों का भी उपयोग करेंगी। उनके शरीर में अग्नि तत्व राशि के प्रभाव से पतलापन रहेगा जिससे सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व आकर्षक बना रहेगा।

आपका विवाह विज्ञापन के द्वारा सम्पन्न होगा या आप स्वेच्छा से प्रेम विवाह सम्पन्न करेंगे। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव होगा। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सलाह एवं सहमति से पूरा करेंगे। आप दोनों सहनशील स्वभाव के होंगे अतः एक ही प्रवृति होने के कारण आपसी संबंधों में मधुरता होगी तथा दाम्पत्य जीवन का पूर्ण आनंद उठाएंगे।

आपका ससुराल किसी धनाढ्य एवं सम्मानित परिवार से होगा फलतः विवाह के समय आपको ससुराल से प्रचुर मात्रा में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। सास ससुर से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनको वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। वे भी आपको पुत्रवत स्नेह देंगे तथा महत्वपूर्ण मामलों में सलाह या सहमति का भी आदान प्रदान होगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की सेवा एवं सम्मान की भावना होगी तथा श्रद्धा पूर्वक उनकी सेवा में तत्पर रहेंगी एवं अपनी और से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी साथ ही देवर एवं ननदों को भी अपने सद्व्यवहार एवं मृदुवाणी से प्रसन्न रखेंगी तथा वे भी उनको वांछित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इससे पारिवारिक शांति बनी रहेगी।

व्यापार या किसी महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप व्यावहारिक तथा आधुनिक विचार धारा के व्यक्ति होंगे फलतः ज्यौतिष या तंत्र मंत्र के प्रति आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। साथ ही जीवन में अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को स्वपराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न करने में व्यस्त रहेंगे तथा मित्रों के कहने पर भी आप की ज्योतिष आदि पर कोई श्रद्धा नहीं होगी। आपको पैतृक सम्पत्ति प्रचुर मात्रा में प्राप्त होगी तथा परिश्रम पूर्वक धीरे धीरे इसमें उन्नति करेंगे। अपने कौशल से आप एक धनवान पुरूष माने जाएंगे लेकिन जुए या सट्टे आदि की आपको प्रायः उपेक्षा करनी चाहिए।

शादी के समय आपको ससुराल पक्ष से इच्छित दहेज की प्राप्ति होगी तथा वे लोग आपसे अत्यधिक प्रभावित रहेंगे फलतः सामान्य से अधिक धन एवं लाभ आभूषण आदि की आपको प्राप्ति होगी। इससे आप आराम दायक जीवन व्यतीत करने में सफल रहेंगे। बीमे आदि से आपको लाभ होगा अतः मकान गाड़ी या स्वयं का आपको बीमा अवश्य कराना चाहिए। यद्य पि इसमें आपको हानि अधिक नहीं होगी परन्तु बीमे से आपको धन अधिक मात्रा में प्राप्त होगा। जीवन में आपके यहां चोरी आदि की बड़ी घटनाएं नहीं होगी तथापि यदा कदा सामान्य घटनाएं घटित हो सकती है। अतः सुरक्षा की दृष्टि से बहूमूल्य वस्तुओं को संभालकर रखना चाहिए। आप सजग प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे। अतः जीवन में दुर्घटनाएं नहीं होगी। आपकी आयु दीर्घ होगी तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आप जीवन व्यतीत करेंगे। शारीरिक स्वस्थता को बनाए रखने के लिए आपको नित्य प्रति व्यायाम भी करना चाहिए।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा धार्मिक साहित्य का रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगे साथ ही उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी रूचिशील रहेंगे। आपका मुख्य उददेश्य कोई सिद्धि प्राप्त करना रहेगा जिसके द्वारा आप समाज में मान सम्मान धन एवं ख्याति अर्जित कर सकेंगे। ज्योतिष अथवा तंत्र मंत्र शास्त्र में भी आपकी रूचि हो सकती है।

ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा पूर्ण विश्वास भी रहेगा। आपके विचार में कर्म की कोई विशेषमहत्ता नहीं है जब तक कि उसे भाग्य की पूर्ण सहायता न मिलें तभी कर्म करके मनुष्य विशिष्ट सफलताएं प्राप्त कर सकता है। अतः अपने इष्ट देव की नियमित रूप से पूजा करेंगे। आपके विचार में परिवार में समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करने से बच्चों के शुभ संस्कारों के वृद्धि होती है। जीवन में आप कई तीर्थ स्थलों की यात्रा करेंगे। साथ ही विद्वान एवं साधु महात्माओं की संगति से आपको प्रसन्नता तथा सन्तुष्टि प्राप्त होगी।

आपको व्यावसयिक तथा आनन्द प्रदान करने वाली लम्बी दूरी की यात्राओं से काफी ज्ञान प्राप्त होगा। अतिथि को आप भगवान का स्वरूप समझकर उनकी सेवा करेंगे। पौत्रों से आपको इच्छित सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी। वास्तव में इस जीवन में आप पूर्व जन्म के कर्मों के फल को प्राप्त करते है। आपके स्तर धनऐश्वर्य आराम तथा उपलब्धियों से संकेत मिलता है कि निश्चित ही आपने पूर्व जन्म में कोई शुभ कर्म किए होंगे। वृद्धावस्था में आपके मन में वैराग्य की भावना भी उत्पन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप दैवी कृपा से धनार्जन करने वाले, रास्ता, बगीचा, तालाब तथा मन्दिर आदि परोपकार के लिए बनवाने में भी सफल रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्मसमय में दशमभाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। साथ ही बुध भी दशम भाव में स्थित है। मीन राशि जलतत्व युक्त तथा बुध ग्रह पृथ्वीतत्व से युक्त है अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र श्रमसाध्य होने के साथ साथ वौद्धिकता से भी युक्त होगा। कार्यक्षेत्र में आप समयानुसार परिवर्तन के भी इच्छुक होंगे तथा ऐसे परिवर्तनों से आपको समय समय पर वांछित लाभ एवं उन्नति प्राप्त होती रहेगी जिससे मानसिक सन्तुष्टि मिलेगी।

बुध की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से आजीविका की दृष्टि से आप के लिए लिपिकीय कार्य, लेखन, साहित्य, चित्रकारी, जिल्दसाजी, शिक्षक, ज्यौतिषी पुस्तक विक्रेता, सम्पादन, संशोधन आदि वकील, संदेश वाहक (दूत) राजदूत, टेलीफोन आपरेटर आदि कार्य शुभ एवं अनुकूल रहेगे यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में अपना कार्यक्षेत्र बनाएंगे तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्र ही अपनी आजीविका के लिए चयन करना चाहिए।

वाणिज्यकारक ग्रह बुध के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में आपको वांछित सफलता की प्राप्ति होगी। आपके लिए व्यापारिक दृष्टिकोण से पुस्तकों का क्रय विक्रय या प्रकाशन कार्य, अगरबत्ती,पुष्प मालाएं, कागज के खिलौने, किसी एंजेसी अथवा कमीशन का कार्य, कला एवं चित्रकारीका स्वतंत्र कार्य तथा यंत्रों के निमार्ण का कार्य विशेष शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इन क्षेत्रों में व्यापार करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभार्जन होगा जिससे आपकी सन्तुष्टि बनी रहेगी।

लग्नेश एवं चतुर्थेश बुध की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान सम्मान की प्राप्ति होगी तथा स्वपराक्रम एवं योग्यता से आप प्रतिष्ठा एवं यश अर्जित करने में भी समर्थ होंगे परन्तु बुध की नीच स्थिति के प्रभाव से इसमें न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब एवं व्यवधान भी आ सकते है परन्तु इससे आपको विचलित नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करने में तत्पर रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण संस्थाओं या संस्था में भी आप किसी सम्मानीय पद को अर्जित कर सकते है।

आपके पिता बुद्धिमान योग्य एवं मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा अपने उत्तम कार्यकलापों से सामाजिक जनों का प्रभावित करने में समर्थ होंगे फलतः उनकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा दीक्षा का समुचित प्रबंध करके आपको योग्य बनाएंगे। आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका मुख्य योगदान होगा तथा उनके प्रभाव से भी आप प्रचुर मात्रा में लाभ एवं उन्नति अर्जित करेंगे। आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं आज्ञाकारिता का भाव होगा एवं उनकी सेवा करने में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथापि नीचस्थ बुध के प्रभाव से परस्पर संबंधों में किंचित तनाव हो सकता है लेकिन यह क्षणिक होगा तथा

परस्पर सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ होंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा आपकी इच्छाएं अधिक रहेंगी। साथ ही इच्छाओं एवं महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करने में भी सामान्यतया सफल ही रहेंगे। आपके अन्दर संगठनात्मक शक्ति विद्यमान रहेगी तथा अन्य लोगों को संगठित एवं नियंत्रित करके उनसे अपना कार्य करवाने में समर्थ रहेंगे। अतः आप प्रबन्धक, पुलिस या मिलिटरी आदि में विशिष्ट सफलता अर्जित कर सकते है। साथ ही होटल आदि के व्यवसाय से भी आपको प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित हो सकता है। बड़े भाईयों से आपको विशेष सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा तथा आपात्काल में भी वे आपकी सहायता करेंगे।

आप अच्छी एवं अधिक मित्र मंडली को पसन्द करेंगे। साथ ही उत्साही पराक्रमी निडर तथा शिक्षित व्यक्तियों को अपना मित्र बनाना पसन्द करेंगे। आपकी प्रवृत्ति स्वछन्द रहेगी तथापि अन्य जनों के साथ कार्य करने में आपको आनन्दानुभूति होगी। आपके सामाजिक सम्पर्क विस्तृत रहेंगे तथा सभी सामाजिक जन आपको यथोचित मात्रा में सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे तथा एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में आपकी ख्याति रहेगी। आपके आय स्रोत भी विस्तृत रहेंगे एवं समाज में विशिष्ट ख्याति एवं सम्मान के भी योग बनेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः अच्छी रहेगी तथा अपने कार्यो से प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा परन्तु यदा कदा बाएं कान से आपको किंचित परेशानी हो सकती है परन्तु सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक ही व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है अतः इसके प्रभाव से आपका जीवन परिवर्तशील रहेगा तथा सामान्यतया आप खुशहाल जिंदगी व्यतीत करेंगे। धनार्जन के लिए आप विभिन्न स्रोतों को बनाने में सफल रहेंगे अतः आपकी आय के स्रोत एक से अधिक होंगे परन्तु आप उन्मुक्त रूप से धन का व्यय करेंगे तथा पारिवारिक शान शौकत एवं विलासमय वस्तुओं पर आपका विशेष व्यय होगा। यदा कदा आप पूंजी निवेश भी करेंगे जिससे आपको भविष्य में लाभ होगा।

आधुनिक भौतिक उपकरणों के प्रति आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा इन पर धन का अधिकांश व्यय करेंगे इससे आप मानसिक सन्तुष्टि, आनन्द तथा खुशहाली की अनुभूति करेंगे। आप समय समय पर दूर समीप की यात्राओं को सम्पन्न करते रहेंगे। इनमें तीर्थ यात्राओं की भी प्रबल संभावना रहेगी। आपकी यात्राएं सामान्यतया व्यापार या आफिस कार्य से संबंधित रहेंगी तथा एक स्थान से दूसरे स्थान पर यात्रा करना रुचिकर समझेंगे। यात्राओं के मध्य यदि आप शीघ्र ही सक्रिय रहेंगे तो इससे आपको इच्छित लाभ की प्राप्ति भी हो सकती है। यात्रा में आपकी कई पुराने तथा नए लोगों से मुलाकात होगी तथा हर जगह उचित वातावरण बनाने में समर्थ रहेंगे।

जीवन में आपकी विदेश यात्रा भी होगी तथा इससे आपके भाग्य में वृद्धि होगी कुछ समय के पश्चात आप विदेश में भी प्रवास कर सकते हैं जहां आपका जीवन सुखऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त रहेगा। इससे आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा आनंद पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे ।

नक्षत्रफल

आपका जन्म मृगशिरा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण वैश्य, वर्ग मूषक, नाड़ी मध्य, गण देव तथा योनि सर्प होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम का आद्याअक्षर "वे" अक्षर से प्रारम्भ होगा। यथा- वेलीराम, बेअन्त सिँह इत्यादि।

आप स्वभाव से ही चतुर एवं चंचल होंगे। तथा जो भी कार्य करेंगे चतुराई से करेंगे। संयम तथा धैर्य का पालन करना आपका गुण होगा लेकिन आप अच्छे कार्य कम ही करेंगे। अधिकांश आप क्रूर एवं कठोर कार्य करेंगे। आपके मन में यदा कदा अहंकार की मात्रा अत्यधिक होगी जिसके कारण आप अपने समक्ष किसी अन्य को कोई भी महत्व प्रदान नहीं करेंगे।

चतुरश्चपलो धीरः क्रूरकर्मा क्षुधातुरः।
अहंकारी परद्वेषी मृगशीर्णि भवेन्नरः।।
जातकदीपिका

अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र में उत्पन्न जातक चतुर चंचल धैर्यवान, क्रूरकर्म करने वाला, भूख से व्याकुल, अहंकारी तथा अन्य जनों से द्वेष करने वाला होता है।

आप नकली वस्तुओं के बनाने के कार्य में सिद्धहस्त हो सकते हैं। साथ ही आपकी कार्यशैली भी स्वयं पर केन्द्रित रहेगी तथा अपनी बुद्धि तथा योग्यता के अनुसार कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे।

चपलश्चतुरो धीरः कूटकर्मस्वकर्मकृत।
अहंकारी परद्वेषी मृगे भवति मानवः।।
मानसागर

अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र का जातक चंचल, चतुर, धैर्यवान, नकली वस्तु बनाने वाला, स्वार्थी, अहंकारी और द्वेषी होता है।

नैसर्गिक रूप से आप डरपोक रहेंगे। भय आपके अन्दर हमेशा व्याप्त रहेगा। आप चतुर एवं विद्वान भी होंगे तथा उत्साह से आप हमेशा सम्पन्न रहेंगे। धन एवं ऐश्वर्य का आपके पास अभाव नहीं रहेगा एवं इससे आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे।

चपलश्चतुरोभीरुः पटुरुत्साही धनी मृगे भोगी।
बृहज्जातकम्

अर्थात मृगशिरा नक्षत्रोत्पन्न व्यक्ति चंचल, चतुर, डरपोक, विद्वान, उत्साही धन, वैभव तथा ऐश्वर्य को भोगने वाला होता है।

अस्त्र शस्त्र चलाने की विद्या में आप निपुण हो सकते हैं। साथ ही प्रत्येक प्रकार के

अस्त्र शस्त्र के विषय में आपको विषद ज्ञान रहेगा। आपका स्वभाव विनय से परिपूर्ण रहेगा तथा सबसे नम्रता का व्यवहार करेंगे। आप गुणों का सम्मान करने वाले व्यक्ति होंगे तथा गुणवान व्यक्तियों का श्रद्धापूर्वक सम्मान करेंगे तथा उनसे आपका विशेष अनुराग रहेगा। सर्व प्रकार की भौतिक संपदा तथा सुखों का आप उपभोग करने वाले होंगे। आपकी प्रवृति भी विलासी होगी। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग या मंत्री वर्ग के आप प्रिय होंगे। उनसे आपको उचित सम्मान तथा सहयोग मिलेगा। आप सत्य के या अच्छे मार्ग पर चलने के लिए आजीवन प्रयत्नशील रहेंगे।

शरासनाभ्यासरतो विनीतः सदानुरक्तो गुणिनां गणेषु।
भोक्तानृपस्नेहभरेण पूर्णः सन्मार्गवृतो मृगजात जन्मा।
जातकाभरणम्

अर्थात मृगशिरा नक्षत्र का मानव अस्त्र शस्त्र विद्या में पारंगत, नम्र, गुणों का आदर करने वाला, विलासी राजा का प्रिय और सन्मार्गगामी होता है।

आपका हृदय शान्त रहेगा तथा आप इधर उधर घूमने फिरने या यात्रा करने के शौकीन रहेंगे। फलतः आपका अधिकांश समय यात्रा या भ्रमण में ही व्यतीत होगा।

चान्द्रे सौम्यमनोळटनः कुटिलदृक् कामातुरो रोगवान।
जातकपरिजातः

अर्थात मृगशिरा में उत्पन्न जातक सौम्यचित्त वाला घूमने फिरने या यात्रा करने वाला, कुटिल दृष्टि युक्त, कामपीड़ित तथा रोगी होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी दुःखी, धन एवं सुख संसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करते है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा दान देने के लिए सदैव उद्यत रहेंगे। आप एक गुणवान पुरूष होंगे तथा अपने सद्गुणों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। आप शुभ कार्यों पर अधिक व्यय करेंगे। अनावश्यक या अन्य अशुभ कार्यों पर व्यय करना आपको अच्छा नहीं लगेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक एवं विलासमय सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। इन्ही विलासमय वस्तुओं पर आपका व्ययाधिक होता रहेगा।

आप वृष राशि में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपका वर्ण लालिमायुक्त गौरवर्ण तथा गाल स्थूलता लिए हुए होंगे। आपके नेत्र बड़े तथा मोटे होंगे। स्वाभाविक रूप से आलस्य का भी आपमें समावेश रहेगा। उत्तम कुल उत्पन्न लोगों के प्रति आपके अन्तर्मन में सेवा तथा श्रद्धा का भाव व्याप्त रहेगा। गुरू तथा ब्राहमण वर्ग के भी आप आज्ञाकारी होंगे तथा श्रद्धा पूर्वक उनके आदेशों का पालन करेंगे। प्रकृति आपकी वात तथा कफ मिश्रित होगी। बुद्धिमता से युक्त होकर आप आजीवन सुख से रहेंगे तथा दानशीलता का स्वभाव भी रहेगा। साथ ही बाल भी आपके

घुँघराले होंगे।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरूजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

आप आजीवन विभिन्न प्रकार के भौतिक सुखों का उपयोग करेंगे। दानशीलता भी आपकी स्वाभाविक प्रवृति होगी तथा यत्न पूर्वक आप इसका पालन करते रहेंगे। आप शुद्धता तथा सफाई के प्रति विशेष रूप से सजग रहेंगे। अपने समस्त कार्यों को आप दक्षतापूर्ण तरीके से सम्पन्न करने में समर्थ होंगे। आप बलवान तथा विलासी प्रवृति वाले भी होंगे। धनार्जन आपके पास प्रचुर मात्रा में होगा। अतः भौतिक सुख साधनों तथा विलास युक्त वस्तुओं पर आप पूर्ण रूपेण उन्मुक्त भाव से व्यय करेंगे। तेजस्विता से भी आप युक्त रहेंगे तथा आपका आचरण भी उत्तम होगा। आपके मित्र सदगुणों से युक्त रहेंगे तथा मित्रता संबध दीर्घकाल तक स्थाई रहेंगे।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपके मुख एवं जानु का आकार दीर्घ होगा। आपके जीवन के प्रथम दो भाग सामान्य रूप से कष्टदायक रहेंगे। परन्तु अन्तिम दो भाग सामान्यता सुख पूर्वक व्यतीत होंगे। स्त्री वर्ग से आपका विशेष आकर्षण रहेगा। आप त्यागी तथा क्षमाशीलता के गुणों से सुशोभित रहेंगे। प्रारम्भिक अवस्था में आपको दुःख तथा कष्ट उठाने पड़ेंगे तथा परिश्रम भी अधिक ही करना पड़ेगा। आपके मुख पीठ तथा बगल में तिल मस्सा तथा व्रणादि के चिन्ह हो सकते हैं।

पृथूरूवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

आपकी सन्तति में कन्याओं की संख्या अधिक रहेगी। आप अपने उत्तम आचरण तथा व्यवहार के कारण प्रशंसा के पात्र होंगे। धन तथा ऐश्वर्य का उपभोग करते हुए आपकी कीर्ति चारों तरफ फैली रहेगी।

दाताकान्त यशोधनोरूचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आप विशाल वक्षस्थल से युक्त रहेंगे तथा बाल भी आपके घने तथा घुँघराले होंगे।

आपकी प्रवृति न्याय प्रिय होगी तथा गलत सही का निर्णय करने में आप सक्षम रहेंगे। आपकी चाल मनमोहक तथा शरीर के सर्वांग दीर्घ तथा सम्पूर्णता से युक्त रहेंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप धीरे धीरे चलना पसन्द करेंगे। अपने कार्यों को आप बुद्धिमता तथा चतुराई से सम्पन्न करेंगे। आप अन्य जनों का उपकार करने की इच्छा करेंगे। इस प्रकार अपने अच्छे तथा पुण्य के कार्यों से जीवन में सुखी रहेंगे।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

आपकी मुखाकृति दीर्घ तथा रूप दर्शनीय होगा। कष्ट सहने में आप सक्षम होंगे तथा आप सविलास गमन प्रिय व्यक्ति होंगे। आप उच्चाधिकार प्राप्त कोई भी गणमान्य व्यक्ति हो सकते हैं। आपके पेट में जठराग्नि की प्रबलता रहेगी तथा युवावस्था एवं वृद्धावस्था में सुख प्राप्त करेंगे। आप स्त्री प्रिय तथा दीर्घ काल तक मित्रता वाले रहेंगे। इसके अतिक्ति आप सुन्दर स्वभाव से युक्त तथा भगवान विष्णु तथा शिव की अर्चना करने वाले होंगे।

कान्तः खेलगतिः पृथूरूवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी मधुर एवं श्रेष्ठ होगी। आप प्रायः सत्य ही बोलेंगे तथा सत्य का ही अनुशरण करेंगे। आपकी बुद्धि सादगी से युक्त होगी आप किसी भी बात को बड़ी सुगमता से ग्रहण करने की क्षमता रखेंगे तथा सुगमता से ही अपने विचारों को प्रकट करने में कुशल होंगे। आपको सात्विक एवं अल्प मात्रा में भोजन करना रूचिकर लगेगा। गुणों के आप पूर्ण रूप से जानने वाले होंगे तथा महान एवं विद्वानों द्वारा प्रतिपादित सद्गुणों से आप युक्त होंगे। भौतिक सुख साधनों का आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा आपका जीवन सुख एवं शान्ति से व्यतीत होगा।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

देखने में आपका शरीर स्वस्थ और सुन्दर होगा। दान देना आपकी स्वाभाविक

प्रवृति होगी तथा जरूरत मन्द लोगों तथा संस्थाओं को आप श्रद्धापूर्वक दान करेंगे। आप अत्यन्त सरलहृदय के होंगे तथा छल कपट एवं प्रयत्नों से दूर रहेंगे। समाज में आप श्रेष्ठ विद्वान के रूप में जाने जाएंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

सर्प योनि में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी क्रोध का भी प्रदर्शन करेंगे। आप चंचल प्रवृति के होंगे तथा कार्यों को चपलता पूर्वक ही सम्पन्न करेंगे। जिसके इच्छित परिणाम कभी कभी ही प्राप्त होंगे। जिह्वा से भी आप चपलता का प्रदर्शन करेंगे अर्थात् खट्टी, मीठी, तीखी स्वाद वाली वस्तुएं आपको प्रिय लगेंगी।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पडेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोडकर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की

प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

मार्ग शीर्ष मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग, शकुनि करण, शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि में स्थित चन्द्रमा यह समय आपके लिए अनिष्ट फल देने वाला है। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य पंचमी, दशमी, पौर्णमासी एवं अमावस्यां तिथियां, हस्त नक्षत्र सुकर्मा योग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभकार्य, व्यापार प्रारम्भ नवगृह निर्माण, क्रय विक्रय, लेन-देन आदि कार्य सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही अधिक होगी। साथ ही शनिवार चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा में भी शुभ कार्य आरम्भ न करें तथा इन दिनों तथा समय पर शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

यदि समय आपके अनुकूल न हो आपको मानसिक अशान्ति या शारीरिक अस्वस्थता प्रतीत हो रही हो तो ऐसे समय पर आपको नियमित रूप से शुक्रवार के व्रत रखने चाहिए तथा श्वेत मोती, श्वेत वस्त्र, चावल, शहद, कपूर, श्वेत पुष्प इत्यादि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक दान करना करना चाहिए। इससे आपके अशुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा आपको राहत महसूस होगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20 हजार जप कराने से भी लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। श्रद्धानुसार आप अपने इष्ट के रूप में भगवान विष्णु या शिव की भी आराधना कर सकते हैं।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर-बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का

उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य दसवें खाने में बैठा है। इसकी वजह से आप किसी संस्था के प्रधान, जज, सरपंच, नेता भी हो सकते हैं। आप किसी से धोखा-फरेब नहीं करेंगे। सरकारी विभाग, नौकरी-व्यापार में धन-लाभ, मान-सम्मान मिलेगा। नौकर-चाकरों का अच्छा सुख मिलेगा। राज्य पक्ष से लाभान्वित होंगे। आप बहुत वहम करेंगे। संतान पक्ष कमजोर रहेगा। 19 वर्ष की उम्र के लगभग पिता से दूर होना पड़ सकता है। आपको इज्जत, सेहत और दौलत का सुख मिलेगा। परिवार में कोई व्यक्ति उच्चपद पर संस्था प्रधान या सरकार द्वारा सम्मानित होगा।

यदि आपके मकान का मुख्य दरवाजा पश्चिम दिशा में हुआ, नंगा सिर रखने की आदत रही, अपना भेद दूसरों को बताया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से 34 वर्ष की आयु तक का समय कष्टमय रहेगा। आप मशीनरी या लकड़ी से संबंधित नौकरी-व्यापार करेंगे तो हानि होगी। खानदानी विरासत और पिता का सुख कम मिलेगा। लकड़ी, लोहा, भैंसों से संबंधित व्यापार या काली चीजों के व्यापार से नुकसान होगा। आपके घुटने में दर्द हो सकता है। आपकी आंखों की नजर और उम्र पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। ससुराल में रहना ससुराल पक्ष वालों के साथ कोयले, बिजली का धंधा करने से हानि होगी। सत्ता से परेशानियां भी रहेंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. अपना भेद किसी को भी न देवें।
2. सूर्य की रोशनी नंगे सिर पर न पड़े।

उपाय :

1. सिर पर सफेद या शरबती पगड़ी या टोपी पहनें।
2. बुजुर्गी मकान में हैंड पंप लगावें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपके मन की बहुत बातें पूरी नहीं हो सकती हैं या तरस-तरस कर सभी काम बनेंगे। आपकी पढ़ाई-लिखाई बहुत अच्छी होगी और आप बहुत होशियार रहेंगे। एक बात पर कायम नहीं रहेंगे या आपको बात करते-करते बात बदलने की आदत होगी। आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं रहेगी। पढ़ाई-लिखाई का उपयोग आपके जीवन में कम होगा। वर्तमान समय अच्छा गुजरता रहेगा। भविष्य की बातें स्वप्न में देखेंगे। लोग आप पर विश्वास करके अपना भेद भी बता देंगे। आप उनकी बातों को गुप्त रखेंगे। आपके आश्वासन से लोगों को राहत मिलेगी।

आप अपने पूर्वजों के हालात बढ़ा-चढ़ा कर बताएंगे। अपनी कमाई का धन जमा रहेगा। 48 वर्ष आयु के बाद बहुत सुखी रहेंगे।

यदि आपने घर में हैंड पंप या पानी का साधन छत के नीचे रख, नीम का वृक्ष काटा, चाल-चलन ठीक न रखा, बुजुर्गों के काम को नष्ट किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आप बीते समय को याद करके अपना समय खराब करेंगे। जीवन में ऐसे काम भी हो सकते हैं जो अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने जैसे होंगे। जमीन-जायदाद आदि का कोर्ट में झगड़ा होगा, फैसला बहुत देर बाद होगा और आपके हक में होगा। आपकी संतान निकम्मी हो सकती है। आपकी पैतृक संपत्ति नष्ट हो सकती है और आप मुसीबत पर मुसीबत उठायेंगे। खुशी के बाद की घटना खुशी को समाप्त कर देगी। आपकी आंखों पर बुरा असर पड़ सकता है। दिमागी परेशानियों के कारण नींद हराम हो सकती है। मातृ सुख का अभाव हो सकता है। आपको पानी से भय है आप अपनी और ससुराल की संपत्ति पर भारी पड़ेंगे। धन का नाश कर देंगे। आपके जीवन में दुःख का कारण परस्त्री हो सकती है। इस मामले में आप दुर्बल हैं। आप आलसी, धनहीन एवं अस्वस्थ्य रहेंगे आपको हर प्रसन्नता के बाद कोई न कोई दुःख भोगना पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. छत के नीचे हैंड पंप आदि न लगायें।
2. बीता हुआ समय याद न करें।

उपाय :

1. नीम के वृक्ष का पानी घर पर रखें।
2. 16 लीटर वर्षा के पानी में चांदी के चार चौरस टुकड़े को डाल कर रखें।
3. आसमानी बर्फ (ओले) शीशे के बर्तन में रखें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में नौवें खाने में मंगल पड़ा है। इसकी वजह से आप बड़े ही भाग्यशाली हैं। आपको पैतृक संपत्ति का लाभ मिलेगा। आपकी 13-14 वर्ष की आयु में आपके पिता को बहुत बड़ा लाभ होगा। 28वें वर्ष की आयु में आप पूर्ण भाग्यशाली होंगे। आप एक योग्य प्रशासक होंगे। आपको धन कमाने के बहुत अच्छे अवसर मिलेंगे या अच्छी नौकरी या अच्छे व्यवसाय से धन इकट्ठा होगा। आपको भाई के साथ रहना शुभ होगा। आपको भाई की पत्नी से लाभ होगा। बड़े भाई के साथ व्यवसाय करने से लाभ होगा। आपको होटल, मिठाई आदि के व्यवसाय से बहुत लाभ हो सकता है। आपको पैसे के लिए किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा। माता की सेहत अच्छी रहेगी और उसका सुख भी प्राप्त होगा। आपको पैतृक संपत्ति मिलेगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सत्ता पक्ष से लाभ प्राप्त करेंगे। आपको धर्म-कर्म करते रहने से अच्छा फल मिलेगा। धर्म करने से तथा घर में उत्सव मनाने से

भाग्य में वृद्धि होगी।

यदि आपने पिता से झगड़ा किया या पिता का विरोध किया, धर्म के खिलाफ काम किया, समाज विरोधी काम किया, भाई और भाई की पत्नी से झगड़ा किया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आप कभी-कभी नास्तिकवाद की वकालत करेंगे। आप पर कोई बड़ा कलंक भी लग सकता है। आपके धर्म के विरुद्ध आचरण करने से बदनामी हो सकती है। अगर आप परदेश में रहेंगे तो दुःखी रहेंगे। आपकी कितनी भी ताकत हो, चाहे आपके पास बॉस का दर्जा हो आपको अपने से छोटे लोगों से मांग कर खाना पड़ेगा अर्थात् शेर को गीदड़ से मांग कर खाना पड़ेगा, ऐसी कहावत आप पर चरितार्थ होगी। सभा समाज में आपको अपनी गलतियों द्वारा तिरस्कृत होना पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. परदेश में रिहाइश न करें।
2. भाई से झगड़ा न करें।

उपाय :
1. भाई की पत्नी की सेवा करें।
2. लाल रंग का रुमाल पास रखें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप अपने विभाग में अधिकारी के प्रिय रहेंगे। आप व्यवहार कुशल, ठीक से जीवन निर्वाह करने वाले होंगे। आप खुशामदी और नीतिशास्त्र में निपुण होंगे। आप लेखक-संपादक, अनेक विद्याओं के जानने वाले हो सकते हैं। ठेकेदारी के काम से धन कमाने वाले होंगे। आप पूरा धन कमाने वाले हैं। आप अव्वल दर्जे के खुशामदी होंगे। आप अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से स्वार्थ सिद्ध करेंगे। आप समुद्री यात्रा या विदेश की यात्रा अवश्य करेंगे। आप शरारती और मतलब परस्त होंगे। परंतु दूसरों के हां में हां मिलाने या खुशामद करने में माहिर होंगे। आप मीठी-मीठी बातें करके सबको मोहित कर लिया करेंगे। व्यापार करने से घर के लोगों को भी बरकत होगी। आप हुनरमंद और बेशर्म स्वभाव के है। 50 वर्ष की उम्र के बाद आपका अच्छा जीवन बीतेगा और आर्थिक स्थिति में सुधार हो जाएगा।

यदि आपने मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया, हरे रंग की बोतल में विदेशी शराब या परफ्यूम अपने घर में रखा, मछली का शिकार किया तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से शराब-पीना और मांस खाना आपके लिए नुकसानदेह है। आपको अपनी नजर में दोष उत्पन्न हो सकता है। आप दूसरों के लिए बेवकूफ दोस्त के समान होंगे। आपकी दूसरों के साथ चालबाजी की आदत

रहेगी। 48 वर्ष की आयु तक पिता के सुख में अभाव हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चौड़े पत्तों का वृक्ष, तुलसी-मनीप्लांट न लगावें।
2. शराब-मछली का सेवन न करें।
3. मछली का शिकार न करें या मछली न पकड़ें।

उपाय :

1. मजदूर पेशा व्यक्ति की सेवा करें।
2. मछलियों को भोजन का हिस्सा खिलायें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति नौंवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप धनी होंगे अर्थात् बड़े भाग्यशाली होंगे। आप अपने धर्म पर अडिग और वचन के पक्के होंगे परंतु आपके जीवन में कभी भी धन की कमी महसूस नहीं होगी। आपको जौहरी या सर्राफी के काम करने से बहुत लाभ होगा। आपके घर की प्रतिष्ठा बनी रहेगी। आप तीर्थ स्थान की यात्रा के शौकीन होंगे। आप धर्मात्मा, ज्योतिषी, वैद्य, सिद्ध पुरुष होंगे। आप अपने पूर्वजों के माध्यम से प्रगति के पथ पर अग्रसर होंगे। भाग्य का श्रेष्ठ प्रभाव आपके ऊपर पड़ेगा यानि 36 वर्ष की उम्र में धन की प्राप्ति होगी। आप अच्छे, सम्मानित एवं अमीर खानदान में जन्म लेंगे। आप अपनी मेहनत से भी धन कमाएंगे। आपकी आदतें राजाओं जैसी होंगी। आप आध्यात्मिक तौर पर योगी स्वभाव के होंगे। आपकी सेहत अच्छी रहेगी। आपकी आयु के साढ़े सोलह वर्ष, 19, 33, 49 विशेष और धन प्राप्त करने वाले होंगे। आप तमाम दुनिया से लड़ कर अपनी किस्मत बना लेंगे अर्थात् आप स्वयं अपने भाग्य के निर्माता होंगे। आपकी आर्थिक स्थिति को शुभ करने के लिए भाग्य पूरा साथ देगा। आपके गृहस्थ जीवन में सुख बढ़ेंगे। इसका शुभ असर पूरे परिवार पर अच्छा रहेगा।

यदि आपने धर्म छोड़ दिया या धर्म विरोधी कार्य किये, पिता से झगड़ा या विरोध किया, किया हुआ वायदा पूरा न किया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आपके जीवन में बुरा समय आए उससे पहले आप दुनिया से कूच कर जाएंगे। आप अपनी औलाद से कई बार दुःखी होंगे। आपको दिल की बीमारी की आशंका है। आपका सोना गिर जाये, चोरी हो, लूटा जाये, गिरवी पड़े या बिक जाएगा, यह बहुत अशुभ लक्षण है। आलस्य करने से आपके महत्वपूर्ण कार्य अधूरे रह जाएंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. दिया हुआ वचन पूरा करें।
2. सोना गिरवी न रखें, गुम होने से बचायें।

उपाय :
1. गंगा स्नान करें (हर महीने में एक बार 9 महीने लगातार)।
2. धर्म की पालना करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आपको कन्या संतान अधिक होगी। आपकी पत्नी दिखने में भोली-भाली परंतु काम धंधे में स्वभाव से अच्छी होगी। शादी के बाद खूब आमदनी होगी। आपको कन्या सुख अधिक होगा। विलंब से पुत्र की प्राप्ति हो, ऐसी आशंका है। आपके ससुराल पक्ष के लोग सहायक होंगे और उनसे आपको लाभ होगा। आप में और आपकी पत्नी में सामान्य कामवासना रहेगी। आप पैसे के पीछे भागते रहेंगे। आप भोले स्वभाव के प्राणी होंगे। आपमें अच्छे गुण भी रहेंगे आप गुप्त कार्य करने के आदी हो जाएंगे। आप अपनी विचारधारा को शीघ्र बदल देंगे। इसके लिए धन पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा।

यदि आप परिवार में मुखिया बन कर रहे, चाल-चलन खराब किया, अप्राकृतिक सैक्स किया, कामांध बन कर पाप किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपकी कामशक्ति कमजोर होगी। (किसी योग्य वैद्य/हकीम से सलाह करके कुश्ता फौलाद या मछली का तेल प्रयोग करें वैसे चांदी का कुश्ता भी लाभदायक रहेगा)। आपकी पत्नी के हाथों धन की बरकत नहीं होगी या स्त्री द्वारा धन हानि या अपव्यय होगा। सरकार द्वारा दंड, जेल यात्रा का भय रहेगा। आपका चाल-चलन शक्की होगा। आप यदा-कदा मूर्खता भी कर बैठेंगे। आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. पत्नी को घर की खजांची न बनाएं।
2. नौकरी-व्यापार बार-बार न बदलें।

उपाय :
1. स्त्री से सरसों का तेल दान करायें।
2. विवाह समय कपिला गाय का दान करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में आठवें खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आप नये अविष्कार या विषयों की खोज करेंगे। आप मनमौजी होंगे। आर्थिक हालत सामान्य रहेगी।

भागीदारी के काम से लाभ अधिक होगा। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं तो आपको सरकारी विभाग में धीरे-धीरे तरक्की प्राप्त होगी। आप विदेश की यात्रा भी करेंगें, ऐसी पूरी संभावना है। वैसे आपको जल से, जलीय पदार्थ या समुद्री यात्रा से लाभ हो सकता है, परंतु आपकी विदेश यात्रा पूर्ण संभावित है। आपको एक जगह बैठे रहने वाले स्थायी काम करना ही अच्छा है।

यदि आपने अपनी रिहाईश गली की नुक्कड़ पर या आगे बंद गली के घर में रखी, मकान में दरारें हुई, घर से बिच्छू निकलते रहे, आप अपने नाम पर मकान बना लेवें तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारणवश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपको पिता का सुख कम ही प्राप्त हो सकता है। किसी भी दुर्घटना की आशंका है। आपके भाई आपसे शत्रुता कर सकते हैं। आपकी टांगों पर बुरा असर पड़ सकता है। शराब-मांस, अंडे का सेवन-भोजन आपको नीच बना देगा इसका सेवन नहीं करें। आपका बुढ़ापा गरीबी से गुजरे और बुढापे में आंखों की दृष्टि कमजोर होने की आशंका है। आपके अभिमान के कारण नुकसान हो सकता है। कोई जवाबदेही पूर्ण कार्य से अथवा नीच कार्य से बहुत बड़ा नुकसान और पछतावे का कारण बन सकता है। आपको सरकार से भय रहेगा। अपने नाम पर मकान बना लेंगे तो असमय मौत को बुलावा हो सकता है। नौकरों द्वारा हानि का भय, संतान सुख में कमी हो सकती है। शराब-मांस, मछली का सेवन आपको हानि दे सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. अपने नाम से मकान न बनायें।
2. सांप न मारें।

उपाय :

1. चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।
2. 8 किलो उड़द जल प्रवाह करें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के दूसरे खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आपको पूरी मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। आप राजशाही जीवन बिताएंगे। आप दीर्घजीवी होकर ऐश की जिंदगी बिताएंगे। युवावस्था में किसी चीज की कमी नहीं रहेगी। आपकी स्त्री रूपवान एवं सुशील होगी। आप उस्तादों के भी उस्ताद होंगे। गृहस्थी अच्छी चलेगी। आपको अधिक धन प्राप्त होगा। माता के साथ मधुर संबंध, ससुराल पक्ष का सुख अच्छा हो सकता है। चोरी से सावधान रहें। पैतृक संपत्ति नहीं के बराबर प्राप्त होगी मगर अपनी कमाई द्वारा अधिक संपत्ति बना लेंगे। परिवार के लोग सुखी रहेंगे। आपके धन कोष में बहुत वृद्धि होगी। किस्मत का असर शुभ और अशुभ दोनों हालातों में ऊपर-नीचे होता रहेगा।

यदि आपने घर में मंदिर रखा, सरसों का कार्य किया, मादक चीजों-द्रव्यों का

प्रयोग किया या जुआ आदि खेला, ससुराल या साले का विरोध किया तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आप उदर रोग अर्थात् आंत रोग के मरीज होंगे। धर्मस्थान में चोरी आपके हाथों हो सकती है। आपका जीवन निर्वाह धर्मस्थान से प्राप्त अन्न से होगा। आप दान की हुई वस्तु लेने में तनिक भी नहीं हिचकेंगे या मुफ्त की वस्तुएं प्राप्त होती रहेंगी। आर्थिक एवं पारिवारिक सुख में कमी आ सकती है। आपकी कमाई का कुछ भाग खराब हो सकता है। आपको पुलिस का भय रहेगा। सजा सुन कर या सजा सुनने से पहले फरार हो जायेंगे, कैदी कभी न होंगे, ऐसी आशंका है। फौजदारी मुकद्दमें में हानि होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. सट्टा, जुआ आदि न खेलें।
2. धर्मस्थान में रिहाईश न करें/न जायें।

उपाय :

1. चांदी की ठोस गोली गले में धारण करें।
2. केसर या हल्दी का तिलक करें या शुद्ध सोना पहनें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु आठवें खाने मे पड़ा है। इसकी वजह से पत्नी का स्वास्थ्य अगर खराब रहता हो तो चारित्रिक सुधार के पश्चात् पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा हो जाएगा। आपके जीवन के 34 वर्ष आयु से पहले या 34 वर्ष आयु के बाद संतान पैदा होगी। आपकी कई संताने होंगी। पुत्र से सुख मिलेगा और पुत्र को संसार में यश-मान मिलेगा। जीवन में उत्थान होगा।

यदि आपने शराब-कबाब का सेवन किया, घर की छत पर रिहाईश हो, कुत्ता पाला या घर की छत पर कुत्ता बांधा, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से आपको संतान के बारे में चिंता बनी रहेगी। आप स्त्री से द्वेष करेंगे। आपका दगाबाजी का स्वभाव भी रहेगा। आप बवासीर रोग से ग्रसित रहेंगे। आप किसी भी व्यक्ति के सामने अपना दुःखड़ा रोयें तो आपकी और भी हानि होगी। संतानोत्तपत्ति में अवरोध उत्पन्न हो सकता है। आपके मकान की छत गिर जाए तो अशुभ समझें। उस वक्त रोटी के भी लाले पड़ सकते हैं। संतान एवं धन के संबंध में मंदा असर लग रहा है। आपके जन्म के पूर्व बड़े भाई की मृत्यु हो गई हो ऐसा लगता है। गृहस्थ जीवन में भी दरार पड़ सकती है। वैवाहिक जीवन 26वें वर्ष तक सुखी नहीं रहेगा। 48 वर्ष तक संतान से दुःखी या निःसंतान होने की आशंका है। आपके बुरे चरित्र का बुरा प्रभाव आपकी पत्नी के जीवन पर पड़ेगा। यदि दो विवाह हुए तो संतान 34 वर्ष से पहले और 34 वर्ष के बाद भी पैदा होगी। आपकी औलाद पर बुरा असर नहीं पड़ेगा। आपको मूत्र विकार की

आशंका है। आपको अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो जाएगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. घर की छत पर कुत्ता न पालें।
2. जुआ आदि न खेलें।

उपाय :

1. काले-सफेद कंबल धर्मस्थान में देवें (संतान की लंबी आयु के लिये)।
2. काले-सफेद कंबल के टुकड़े में, साथ बैठे ग्रह की चीज बांध कर शमशान में दबायें (संतान सुख के लिये)।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

इस वर्ष मीन राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें अष्टम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमेंद्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें तृतीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत उत्तमरहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपकीआय में वृद्धि होगी। लग्न स्थान का गुरु नवीन विचार धारा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने नयेव्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैंऔरकम समय में उत्तम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साझेदारी या शेयर बजार में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आपको वरिष्ठ लोगों या बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगाजिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। धन संचय करने में आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी। 02 जून के बाद आपको रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपको रुके हुए पैसे मिल सकते हैं। इस वर्ष आपके परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले होथों से खर्च करेंगे। निवेश में उत्तम फल मिलने की सम्भावना है।

31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर तृतीय स्थान में होगा। उस समय सामाजिक व धार्मिक कार्यों पर आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनिग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। यदि आप विवाह के योग्य है तो विवाह हो सकता है।

02 जूनके बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा। पिताजी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 31 अक्टूबर के बाद आप सामाजिक गतिबिधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि से आप के बच्चों कीउन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है। यदि आपकी सन्तान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। इस वर्ष आप के बच्चे अच्छे काम करेंगे। आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा सकारात्मक विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी सही रखेंगे। यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

25 नवम्बर के बाद राहु ग्रह का गोचर अष्टम स्थान में हो रहा है। उस समय अचानक आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः वर्षान्त में अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना अधिक जरूरी है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है।

पंचम स्थान परगुरु केदृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। 02 जून के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। जिन जातको की नौकरी अभी तक नहीं लगी है, 02 जून के बाद उन लोगों को नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव सेयात्राओं के प्रबल योग बन रहें है। 02 जून के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे और 31 अक्टूबर के बाद आपकी

छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने मे आप सबसे आगे रहेंगे। 02 जून के बाद मन्त्र सिद्ध व गुप्त विद्याओं की ओर आपका रूझान बढ़ेगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके समने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्रणायाम करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय स्त्री पक्ष तथा बन्धु जनों से आप कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रु की तरफ से भी चिन्ता बनी रहेगी। आप में इस समय उत्साह की न्यूनता भी परिलक्षित होगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। आप शरीर से भी अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे तथा मन में लालच के भाव की भी प्रधानता होगी। साथ ही आप अपने शरीर का पूर्ण ध्यान नहीं रखेंगे। अपने बन्धुजनों से आपके सम्बन्धों में तनाव भी उत्पन्न होगा एवं मित्र भी शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे जिससे मानसिक तनाव बना रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य जनों से भी संघर्ष होने का भय बना रहेगा।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी समय समय पर घटित होंगे।अतः आप स्त्री से सुख प्राप्त करेंगे एवं बुद्धिमत्ता से अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगे। साथ ही धर्मानुपालन में भी आप रूचिशील रहेंगे। अतः आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस समय आपको शत्रुओं से भय एवं चिन्ता बनी रहेगी साथ ही घर में चोरी होने की भी सम्भावना रहेगी। इस समय आपका अनावश्यक रूप से व्यय होगा एवं धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा में न्यूनता आएगी। शारीरिक रूप से भी आप विभिन्न प्रकार से कष्टानुभूति करेंगे परिणामतः आपके बल में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त इस मास में आप घर से दूर किसी यात्रा को सम्पन्न कर सकते हैं। सांसारिक कार्यो में भी इस समय आप कष्ट प्राप्त करेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी आपका धन व्यय हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप गर्मी के कारण बुखार आदि से भी कष्टानुभूति करेंगे। इस समय किसी प्रकार से रक्त विकार की भी सम्भावना हो सकती है। अतः शारीरिक सुरक्षा का आपको पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप धनार्जन करने में सफल रहेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न रहेगा। आपके घर में इस समय कोई धार्मिक उत्सव या कार्य भी सम्पन्न हो सकता है। सन्तति से आप सन्तुष्ट रहेंगे एवं उनसे आपको सुख की प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी एवं अवसरानुसार आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे।समाज में यशार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे तथा भाग्योदय सम्बन्धी कार्यों में भी उन्नति होगी। आपकी बुद्धि में भी इस समय वृद्धि होगी तथा लाभदायक यात्राओं का भी योग बनेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप मान सम्मान अर्जित करेंगे एवं मित्रों से मधुर

संबन्ध रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप सर्वत्र मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगे।

साथ ही आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख तथा सन्तुष्टि भी प्राप्त करेंगे। इस मास में आप नवीन वस्त्रों तथा अन्य द्रव्यों को भी अर्जित करेंगे।अतः इससे आपको मानसिक रूप से प्रसन्नता प्राप्त होगी।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्यक्षेत्र में पूर्ण मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे तथा आपके उच्चाधिकारी आपसे पूर्णरूपेण प्रसन्न रहेंगे। अपने मित्रों एवं बन्धुजनों की आप पूर्ण सहायता करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके सभी शुभ कार्य भी सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं पूजा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाज से आप पूर्ण यश प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही कई प्रकार से धन लाभ भी अर्जित करेंगे। इस समय आप स्थान या नवीन आवास आदि की भी प्राप्ति कर सकते हैं। इसके साथ ही सर्व प्रकार से शुभ फल होंगे एवं प्रसन्नतापूर्वक आप इस मास को व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिस्त पिछले महीने की असफल आशाओं में भी आप सफलता प्राप्त होगी।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी होंगे।जिससे आप वात रोग से पीड़ित हो सकते हैं तथा किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं जिससे प्रतिष्ठा में न्यूनता हो सकती है। इस समय अग्नि के द्वारा भी किंचित धन हानि होने की सम्भावना रहेगी।अतः सावधानी पूर्वक समय को व्यतीत करें।

मई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आपको शुभ फलों की अधिक मात्रा में प्राप्ति होगी। स्त्री वर्ग से आप लाभार्जन करेंगे तथा सौभाग्य से युक्त रहेंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से धन लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा हृदय से भी पूर्ण प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही ज्ञानार्जन के क्षेत्र में भी उन्नति करेंगे। इस समय मित्र वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा तथा वांछित पदार्थों का आप उपभोग करके प्रसन्न रहेंगे। संतति पक्ष से भी आप शुभ फल ही प्राप्त करेंगे एवं सम्बन्धियों में आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। साथ ही अपनी असफल आशाओं में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे। इस प्रकार यह मास आपका सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ यदा कदा अशुभ फल भी होंगे।जिसके प्रभाव से आप वातजन्य रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त कर सकते हैं एवं किसी कठोर कार्य को करने से सम्मान में अल्पता की भी अनुभूति करेंगे। साथ ही अग्नि के द्वारा धन हानि की भी संभावना रहेगी।अतः बुद्धिमता से अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आपको शुभाशुभ फल प्राप्त होंगे। इसके प्रभाव से आपका इस समय व्यय अधिक होगा एवं दुष्ट मनुष्यों की आपको संगति प्राप्त होगी। सामान्य रूप से आप शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। साथ ही अत्यंत परिश्रम एवं पराक्रम से भी अल्प मात्रा में ही कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में उपेक्षा की भावना उत्पन्न होगी तथा अन्य प्रकार से धन हानि भी हो सकती है। साथ ही मित्रों एवं संबन्धियों से सम्बन्धों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। इस समय आपकी नौकरी या व्यापार में भी अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी तथा शत्रुओं से भय एवं चिन्ता नित्य बनी रहेगी। साथ ही जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी तथा यदाकदा आप मन में बैचेनी भी अनुभव करेंगे।

साथ ही अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होंगे ।अतः आप पुत्र एवं स्त्री का सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्र या द्रव्यों की उपलब्धि भी हो सकती है।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न रहेंगे। इस समय आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा पराक्रम में भी वृद्धि होगी जिससे शत्रु वर्ग आपसे भयभीत रहेगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सम्मान प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी आपकी आय होती रहेगी जिससे आर्थिक रूप से पूर्ण रूपेण सुदृढ़ रहेंगे। इसके शुभ प्रभाव से आप समाज में पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा भाग्य में भी उन्नति होगी एवं कोई विलम्ब हुआ शुभ एवं महत्पूर्ण कार्य भी सम्पन्न हो सकेगा। इसके, अतिरिक्त सांसारिक कार्यो में सफलता प्राप्त होगी एवं सम्पूर्ण वातावरण प्रसन्नता से युक्त रहेगा।

साथ ही इस मास में न्यूनाधिक अशुभ फल भी होंगे। इससे आप गर्मी से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा किसी प्रकार से रुधिर सम्बधी विकार भी हो सकता है। अतः इस समय शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सावधानी रखनी चाहिए। साथ ही आग के द्वारा भी किसी प्रकार की हानि की सम्भावना हो सकती है। अतः सतर्क रहें।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने ही उत्साह के द्वारा धनार्जन करने में सफल रहेंगे तथा समाज से आपको पूर्ण यश तथा मान प्राप्त होगा।साथ ही अपने समस्त बन्धुओं तथा मित्रों से आप पूर्ण प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। इस समय उच्चाधिकरी वर्ग से भी आपको आश्रय मिलेगा तथा मिष्ठान्न का अधिक मात्रा में उपभोग करने में रूचिशील रहेंगे।आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा एवं बल की उसमें वृद्धि होगी। इस प्रकार आप सम्पूर्ण मास सुखोपभोग में व्यतीत करेंगे। साथ ही आपके शत्रु भी आपसे पराजित होगे एवं स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त व्यापार मेंभी आप लाभ अर्जित करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री वर्ग से पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे एवं बुद्धि में

निर्मलता का भी समावेश होगा। इसके अतिरिक्त आप प्रचुर मात्रा में धनलाभ अर्जित करेंगे तथा सुखपूर्वक धर्मानुपालन करते हुए अपना समय व्यतीत करेंगे।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों को अर्जित करने में सफल होंगे।साथ ही समाज में आपका यश भी व्याप्त होगा।धर्म के प्रति आपके मन में आस्था होगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति श्रद्धा रखेंगे तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इस समय परोपकार की भावना भी आपके मन में उत्पन्न होगी तथा उच्चाधिकारी वर्ग के आश्रय से आप पूर्ण यशार्जन करेंगे एवं आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। साथ ही भाइयों से भी आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप अपने मानसिक विचारों या संकल्पों को पूर्ण करने में भी सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य महिला सहयोगियों से भी आपको वांछित सहयोग प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि भी निर्मल होगी एवं सम्पूर्ण मास आप उचित धन लाभ एवं सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज में आप पूर्ण यश अर्जित करेंगे।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ नहीं रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। साथ ही शत्रु पक्ष के प्रबल होने से वे विभिन्न प्रकार से आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेगें। पारिवारिक जनों से भी इस समय अनावश्यक रूप से अनबन रहेगी जिससे पारिवारिक वातावरण अशान्त रहेगा। साथ ही मानसिक रूप से भी आप यदाकदा अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस मास आपके कार्य में मंदी आ सकती है या आपका कोई कार्य छूट सकता है। आपके अन्य समाजिक जनों से विवाद भी हो सकते हैं जिससे आपके सम्मान में न्यूनता आएगी तथा धनहानि की भी सम्भावना होगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में उपरोक्त अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होंगे। इससे शरीर में स्वस्थता,मन में सन्तोष एवं बुद्धि की वृद्धि होगी जिससे यह मास सामान्य रूप से व्यतीत होगा। साथ ही धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि रहेगी।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपका प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा। इस समय आपकी बुद्धि निर्मलता से युक्त रहेगी तथा सभी महत्पूर्ण कार्य बुद्धि बल से सम्पन्न होंगे। साथ ही आपको पुत्र सुख तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी होगा। इस समय आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग इसे मन से स्वीकार करेंगे। साथ ही आप अनेक प्रकार के शुभ कार्यों को सम्पन्न करेंगे एवं शुभ समाचार भी प्राप्त होंगे। देवता तथा ब्राहमण के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा

आप विधिपूर्वक इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप अनकूल लाभ प्राप्त करेंगे। इस समय आपको समाज में मान प्रतिष्ठा की भी प्राप्ति होगी एवं मानसिक चिन्ताएं भी दूर होंगी।

साथ ही इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा पदोन्नति भी मिल सकती है। इस समय आप देश विदेश की लाभदायक यात्रा भी कर सकते हैं।साथ ही अन्य प्रकार के सुखों को अर्जित करने में भी आप सफल रहंगे।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ तथा दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। साथ ही आपके शत्रु भी उत्पन्न होंगे जिससे अनावश्यक चिन्ताएं तथा समस्याएं बढ़ेंगी। इस समय चोरों से भी सावधान रहना चाहिए तथा अपने उच्चाधिकारी वर्ग की भी उपेक्षा न करें अन्यथा आप दंडित हो सकते हैं। इस मास में आपको सांसारिक कार्यों में भी असफलता मिलेगी तथा धन भी अनावश्यक रूप से व्यय होगा। इसके साथ ही आप किसी गलत कार्य को करने के लिए भी प्रेरित होंगे तथा ऐसे कार्यों को करके आप बाद में पश्चाताप करेंगे। अपने सम्बन्धियों से भी आपकी अनबन हो सकती है तथा मान हानि का भी योग बनता है एवं आशाओं में भी असफलता प्राप्त होगी।

परन्तु उपरोक्त अशुभ फलों के साथ साथ इस मास में अल्प मात्रा में शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। इससे आप स्त्री से सुखी , बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि तथा अन्य प्रकार के सुख प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा तथा किसी धार्मिक कार्य को भी सम्पन्न करेंगे।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि दशम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं दशम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष अष्टम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत बढ़िया रहेगा। दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने कार्य क्षेत्र में अच्छा सफलता प्राप्त करेंगे। बडे अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से कुछ गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रूकावट उत्पन्न करने की कोशिश कर सकते हैं। आप अपने विवेक से उन पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे।

26 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके आय के स्रोत में वृद्धि होगी। व्यापारिक व्यक्तिओं को इस समय के अंतराल में अच्छा लाभ होगा। आपको मित्रों का भी भरपूर सहयोग मिलेगा। यदि आप अपने भाई के साथ कार्य कर रहे है तो बहुत अच्छा उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यापारियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आर्थिक संपन्नता बनी रहेगी। रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता से आपकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा। इस समय के अंतराल में आप इच्छित निवेश करेंगे। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके कुछ अनावश्यक खर्चे भी हो सकते हैं।

26 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम के स्रोत में वृद्धि होगी। कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाईयों का अहम सहयोग होगा। मांगलिक कार्यों में भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। 26 नवम्बर के बाद आपको भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का पूर्वार्द्ध पारिवारिक रूपसे अच्छा रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके

परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक-दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनी रहेगी। परिवार में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। अष्टम स्थान का राहु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध खराब कर सकता है।

26 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियो में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगें। 26 नवम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। गर्भाधान के लिए समय अच्छा चल रहा है।

26 जून से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। इस समयान्तराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावानात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। आपकी शारीरिक उर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहें। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आप कभी कभी छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते है। परन्तु गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे। 26 नवम्बर से आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने कारण आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थियों के लिए यह समय शुभ रहेगा।

26 जून के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यापार के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोइ विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है। परन्तु 26 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

26 नवम्बर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। पर्यटन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। यात्रा करते समय सावधान रहें क्योंकि अष्टम स्थान का राहु अचानक दुर्घटना दे सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्य के लिए बढ़िया रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 26 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 26 नवम्बर के बाद अपने परिवार में सुख, शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्तों को रोटी में गुड़ डालकर खिलाएं या राहु ग्रह का ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सं राहवे नमः मन्त्र का जाप करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए काफी अशुभ एवं परेशानी उत्पन्न करने वाला होगा। इस समय आप स्त्री पक्ष तथा बन्धु जनों से कष्ट प्राप्त करेंगे एवं शत्रुओं की ओर से भी नित्य चिन्ता एवं भय का वातावरण बना रहेगा। आपके उत्साह में भी इस मास अल्पता रहेगी एवं धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा।जिससे आर्थिक परेशानी हो सकती है।साथ ही आप शरीर से भी अस्वस्थ रहेंगे तथा मन में लोभ के भाव की प्रबलता रहेगी। स्वबन्धुजनों से भी आपके सम्बन्धों में मधुरता का अभाव रहेगा एवं तनाव का भाव रहेगा जिससे मित्र भी शत्रु के समान व्यवहार करेंगे। अतः मानसिक तनाव से आप ग्रस्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाजिक जनों से विवाद या संघर्ष की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है अतः सावधानी पूर्वक समय अनुसार चलने का प्रयत्न करें।

साथ ही इस मास में आप गर्मी तथा पित्तजनित दोषों से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे एवं रक्त सम्बन्धी विकार से भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त शारीरिक सुरक्षा का ध्यान रखें तथा दुर्घटना से भी बचें। इस मास में अग्नि से भी किसी प्रकार की हानि हो सकती है।अतः यह मास आपके लिए सामान्यतया कष्टदायक रहेगा।

फरवरी 2027 के लिए फलादेश

समान्य रूप से इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आप शत्रुओं से अनावश्यक रूप से भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे तथा घर में किसी प्रकार से चोरी आदि की घटना भी घटित हो सकती है।साथ ही आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक रूप से परेशानी का अनुभव करेंगे। धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा में अल्पता आएगी तथा स्वास्थ्य भी इस समय विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे। इससे शारीरिक शक्ति में अल्पता आएगी। साथ ही आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते हैं। सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे एवं मुकद्दमे आदि के कार्य में भी आपका धन व्यय होगा। अतः सावधानी पूर्वक ऐसे समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी अवश्य प्राप्त करेंगे।अतः स्त्री तथा पुत्र संतति से सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्रों या द्रव्यों को भी प्राप्त कर सकते हैं जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी एवं अन्य प्रकार से भी शान्ति की अनुभूति करेंगे।

मार्च 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे।

इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्णरूपेण संतुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। साथ ही घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। संतति पक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही धार्मिक क्षेत्र में आपकी श्रद्धा में भी अभिवृद्धि होगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप यथोचित सम्मान तथा पूजन करेंगे। समाज में इस समय आपके यश की वृद्धि होगी एवं भाग्योदय सम्बंधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा एवं यात्रा से आप पूर्ण लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे। सरकारी या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सम्मान अर्जित करेंगे। इस समय मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके सम्बन्धों में मधुरता रहेगी तथा सर्वत्र माननीय एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के मध्य अशुभ फल भी होंगे। जिसके कारण आप वात रोग से पीड़ित हो सकते हैं या किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं जिससे आपकी प्रतिष्ठा प्रभावित होगी एवं बाद में आप पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक धन हानि प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानीपूर्वक कार्यो को सम्पन्न करें।

अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में अर्जित करेंगे एवं अशुभ फल न्यून ही घटित होंगे। इसके प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सहयोग तथा आदर प्राप्त करेंगे एवं वे सभी आपसे संतुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुजनों को आप पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा उनसे सम्बन्ध भी मधुर रहेंगे।आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा उनकी सेवा एवं पूजन के कार्य को आप अवश्य सम्पन्न करेंगे। संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी ।साथ ही अपनी असफल आशाओं में भी सफलता प्राप्त करके मानसिक शान्ति एवं प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। अतः यह मास आपके लिए शुभ फलदायक ही सिद्ध होगा।

साथ ही यदा कदा अशुभ फलों के प्रभाव से आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा को आंच आएगी एवं आप उसके लिए पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा धन हानि का योग भी बनता है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

मई 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्व व्यतीत करेंगे। इस समय स्त्री वर्ग से आप पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करेंगे। आपका स्वास्थ्य इस मास अच्छा रहेगा

तथा किसी भी प्रकार से शारीरिक या मानसिक अस्वस्थता नहीं रहेगी। अध्ययन या ज्ञानार्जन में आपकी रूचि बढ़ेगी तथा मित्र वर्ग से सम्बन्धों में मधुरता रहेगी एवं उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही वांछित द्रव्य पदार्थों का उपभोग करके आप प्रसन्नता को प्राप्त करेंगेत संतति पक्ष से भी आपको शुभ फल ही प्राप्त होंगे तथा किसी प्रकार से चिन्ता नहीं रहेगी। मित्रों तथा सम्बन्धियों में आपकी प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा असफल आशाओं में भी सफलता अर्जित होगी। फलतः आप आनंदपूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।

इसके साथ ही आप पुत्र एवं स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा विद्याध्ययन में भी उन्नति होगी। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्रों या द्रव्य आदि की भी आपको उपलब्धि हो सकती है। इस प्रकार आप शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्वक इस मास को व्यतीत करने में सफल रहेंगे।

जून 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आप दुष्ट मनुष्यों की संगति को प्राप्त करेंगे तथा व्यय भी काफी होगा जिससे आर्थिक एवं मानसिक रूप से आप कष्टानुभूति होगी। साथ ही शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे। काफी परिश्रम के बाद भी आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अल्प सफलता ही प्राप्त कर सकेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी एवं देवता तथा ब्राहमणों को आप उचित सम्मान प्रदान नहीं करेंगे।साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते हैं। आपके मित्रों एवं सम्बन्धियों से तनावपूर्ण सम्बन्ध रहेंगे तथा नौकरी या व्यापारिक कार्यों में भी अनावश्यक रूप से बाधाएं या रूकावटें उत्पन्न होंगी। शत्रु पक्ष से भी आपके मन में भय तथा चिन्ता रहेगी तथा जिस कार्य को भी आप प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी। अतः समय समय पर मन से बेचैनी भी रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्त आदि से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्ट प्राप्त करेंगे तथा रक्तविकार का भी योग बनता है अतः सावधानीपूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक कष्ट न हो सकें तथा शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

जुलाई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुखदायक एवं आनंदवर्द्धक रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न रहेंगे।साथ ही आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं का नाश होगा तथा लाभमार्ग भी नित्य उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे फलतः आर्थिक रूप से आप पूर्ण सुदृढ़ रहेंगे। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करेंगे।साथ ही समाजिक जनों से आप पूर्ण सम्मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। यह मास आपकी भाग्योन्नति में भी सहायक रहेगा तथा कई ऐसे शुभ कार्य जो समय से सिद्ध न हो रहे हों इस समय सिद्ध हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त बन्धु एवं मित्रों से संबन्धों में मधुरता बढ़ेगी तथा सांसारिक कार्यों में पूर्ण सफलता मिलेगी

जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग भी इस समय आपसे पूर्ण प्रसन्न रहेंगे तथा इनसे आप अनुकूल सहयोग होता रहेगा।

साथ ही आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग भी अर्जित करेंगे तथा बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा सुख पूर्वक मास को व्यतीत करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज से आप पूर्ण यश तथा सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

अगस्त 2027 के लिए फलादेश

इस मास को सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे।साथ ही आप अपने उत्साह एवं परिश्रम से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेंगे। समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा बन्धुओं एवं मित्र वर्ग से आप आदर तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनसे उचित सहयोग तथा सहायता भी अर्जित करेंगे। इस मास में आप मिष्ठान्न का भी अधिक मात्रा में उपयोग करेंगे। साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा एवं शारीरिक बल में भी वृद्धि होगी। इस समय शत्रु वर्ग भी आपसे भयभीत एवं चिन्तित रहेगा। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यों के द्वारा भी धनार्जन होगा। इस प्रकार आप सम्पूर्ण मास को सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे।

साथ ही आप स्त्री का पूर्ण सुख भी प्राप्त करेंगे एवं अन्य महिला सहयोगियों से भी उचित सहयोग तथा सहायता मिलती रहेगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता का भाव उत्पन्न होगा एवं प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाजिक जनों से भी पूर्ण यश अर्जित करेंगे।

सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए उत्तम रहेगा तथा इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपको यश तथा सम्मान की भी प्रप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूजा तथा सत्कार की भावना उत्पन्न होगी। आप अन्य जनों की भलाई के लिए भी तत्पर रहेंगे एवं यत्नपूर्वक इसे सम्पन्न करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करके यश की प्रप्ति करेंगे। साथ ही आपकी मानप्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस मास भाइयों से आप पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने मानसिक विचारों तथा संकल्पों को भी पूर्ण करने में आप सफल रहेंगे।

साथ ही अन्य शुभ फलों के प्रभाव में भी नित्य वृद्धि होती रहेगी। इससे शरीर में आरोग्यता मन में संतुष्टि एवं बुद्धि के प्रभाव में वृद्धि होगी। जिससे यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक होगा एवं मानसिक रूप से आप पूर्ण प्रसन्न रहेंगे।

अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आपके लिए मिलेजुले शुभाशुभ फल होंगे।अतः शारीरिक रूप से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे।साथ ही दुश्मनों से भी आपको भय तथा चिन्ता का वातावरण प्राप्त होगा फलतः मानसिक रूप से भी आप उद्विग्न रहेंगे। इस समय पारिवारिक जनों से भी सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे तथा अनावश्यक रूप से आपसी सम्बन्धों में तनाव का वातावरण उत्पन्न होगा। आपके व्यापार या कार्यक्षेत्र में इस मास हानि या मंदी आ सकती है साथ ही कोई परिवर्तन भी हो सकता है या संबधित कार्य छूट भी सकता है। समाज में अन्य लोगों से भी आपके संबन्धों में कटुता उत्पन्न होगी। अतः सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिकत शरीर में रोग तथा धन की हानि होने की भी सम्भावना रहेगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी घटित होंगे जिससे आप उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग प्राप्त करेंगे एवं कार्यों में किंचित उन्नति का भी आभास होगा। आप इस समय दूर समीप की यात्रा भी करेंगे एवं नवीन वस्त्रादि की भी प्राप्ति होगी। अतः आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का अभिवर्द्धन होगा तथा सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से सम्पन्न करने में आप सफल रहेंगे।साथ ही संतति पक्ष से सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी हो सकता है। इस मास में आपका प्रभुत्व बढ़ेगा तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस माह में सम्पन्न होंगे तथा अच्छे समाचारों की भी प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों का आप पूर्ण सम्मान करेंगे तथा श्रद्धापूर्वक उनका पूजन भी केरेंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करने में सफल सिद्ध होंगे।साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी एवं समस्त मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी जिससे आप मन से सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही आप स्त्री से सुख प्राप्त करेंगे एवं अन्य कई प्रकार से भी आवश्यक सुखों को प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी। इस प्रकार आप इस मास को पूर्ण सुख शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ फलों को अर्जित करेंगे। इस समय आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ एवं दुर्बलता की अनुभूति करेंगे साथ ही शत्रुपक्ष से भी अनावश्यक भय एवं चिन्ता का वातावरण रहेगा जिससे मन में अशान्ति उत्पन्न होगी। इस समय आपके घर में या अन्यत्र चोरी आदि भी हो सकती है। अतः आपको चोरों से सावधान रहना चाहिए। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी पूर्ण सहयोग रखें एवं उनकी आज्ञा का उलंघन न करें अन्यथा आप दंडित भी हो सकते हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे साथ ही

धन का भी अनावश्यक व्यय होगा तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी इस समय सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा। सम्बन्धियों एवं मित्रों से भी आपके सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा समाज से उपेक्षा प्राप्त कर सकते है। इसके अतिरिक्त आशाओं की पूर्ति में भी आप असफल ही रहेंगे।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ इस मास में आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे जिससे आप स्त्री से सुखी रहेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से अपने प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा एवं यत्नपूर्वक आप इसका अनुपालन करेंगे। इस प्रकार आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में कुछ विरोधी या गुप्त शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं।

वर्षारम्भ में उन्नति के लिए नये नये तरीके अपनाएंगे। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। प्रोपर्टी डीलर या कमीशन पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की उन्नति होगी। सप्तम स्थान का राहु साझेदारी में कार्य करने वालों के लिए अच्छा नहीं है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से भूमि, भवन व वाहन इत्यादि का सुख मिलेगा। भौतिक सुख-सुविधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। फरवरी के बाद आपके आय के स्रोतो में वृद्धि होगी। निवेश के लिए समय काफी अच्छा चल रहा है परन्तु अष्टम स्थान का राहु कभी कभी अनावश्यक खर्च करा सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी आर्थिक उन्नति में आपके भाईयों एवं परिवार के लोगों का पूर्ण सहयोग होगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। आपका पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसा खर्च हो सकता है। इस अवधि में वसीयत इत्यादि मिलने की भी संभावनाएं बन रही हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। चतुर्थ स्थान का गुरु पारिवारिक सुख प्रदान करने वाला है। पूरे परिवार में सुख शांति का वातावरण बना रहेगा। मांगलिक कार्य संपन्न होने के योग बन रहे हैं। परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो सफलता प्राप्त हो सकती है।

28 फरवरी के बाद गुरु के तृतीय भाव में गोचर करने से आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाओं को चोट पहुंच सकती है। अतः अच्छा यही है कि विपरीत परिस्थितियों के लिए अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति

विकसित करें। 24 जुलाई के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

संतान

यह वर्ष संतान की तरक्की के योग लेकर आ रहा है। शिक्षा के लिए समय बहुत अनुकूल हो रहा है। परिवार की उन्नति के लिए आपकी संतान नवीन योजनाएं बनाएंगे।

संतान के साथ प्रेम व समन्वय में मधुरता आएगी। घर का वातावरण उत्तम होने के साथ-साथ सामाजिक सम्मान बढ़ेगा। 24 जुलाई के बाद का समय आपके लिए शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में स्वास्थ्य बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। स्वास्थ्य संबंधी किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

तनाव कम करने के लिए इस अवधि में आप अपने मन को एकाग्र कर योग क्रियाएं कर सकते हैं। इससे उत्साह का संचार होगा और आप अपने को स्वस्थ बनाए रखने में कामयाब रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर के लिए उत्तम रहेगा। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार करेंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर मैं की भावना ना आने दें। 23 फरवरी के बाद समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए विशेष शुभ है। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपके माता-पिता को धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए स्थानान्तरण के प्रबल योग बने हुए हैं। यह परिवर्तन आपके हित में होगा। 28 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

24 जुलाई के बाद आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष यदि किसी तीर्थयात्रा या कोई धार्मिक कार्य करने जा रहे हैं तो

उसको योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा धार्मिक कार्य में असफलता या पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। 24 जुलाई के बाद पूरे परिवार के साथ कोई विशेष धार्मिक आयोजन जैसे- भगवती जागरण इत्यादि कर सकते हैं।

- भगवान गणेश व माँ दुर्गा की आराधना करें।
- गौ सेवा करें व अपने भोजन का पहला भाग गाय को खिलाएं।
- राहु मन्त्र का जाप करें या राहु की वस्तुओं का दान करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में ही आप कोई नया व्यापार शुरु करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। उच्चअधिकारियों या वरिष्ठ लोगों की सहयोग मिलती रहेगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 29 मार्च से आपके कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान आ सकता है। शत्रु व विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती है।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन में समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। व्यापारिक व्यक्ति अपने कर्मचारिओं व नौकरों पर विशेष ध्यान देना चाहिए नहीं तो सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक वे आपका साथ छोड़ सकते हैं। साझेदारी में काम करने वाले व्यक्ति अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम होगा। आय भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह का संयुक्त गोचरीय प्रभाव धनागम के स्रोतों में वृद्धि करेगा। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। 29 मार्च से पारिवारिक सदस्यों के स्वास्थ्य पर धन का व्यय होगा जिससे आर्थिक उन्नति रुक सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह के अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है। सट्टा, लॉटरी, या शेयर इत्यादि से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थस्थ मंगल के प्रभाव से आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी

बरतने की आवश्यकता है। आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध खराब हो सकता है। 29 मार्च के बाद आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। अतः अच्छा यही होगा कि विपरीत परिस्थितियों से लड़ने के लिए आप अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें।

25 अगस्त से आपका घरेलम वातावरण अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। परिवार में सदस्यों की बढ़ोत्तरी होगी। 05 अक्टूबर के बाद आपके प्रेम संबंधों में मधुरता आएगी। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। गर्भ धारण का अच्छा समय है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वह अपने बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे परन्तु 29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के योग बन रहे हैं। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आपका यश बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन करेंगे।

29 मार्च के बाद स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 25 अगस्त के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर चोट चपेट या दुघर्टना की स्थिति बन रही है। अतः कोई भी कार्य करते समय एकाग्रता बहुत जरूरी है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठतम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ उपलब्धी प्राप्त करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी समय उत्तम है। करियर में भी अच्छी सफलता मिलेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी सफल होंगे परन्तु 29 मार्च के बाद करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यवसायिक रूप से भी समय अच्छा नही रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। 08 अगस्त के बाद विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

यात्रा के दौरान छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। समय-समय पर आप गरीबों की सहायता करेंगे। वर्षान्त में मन्त्र साधना भी कर सकते हैं।

- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल मजदूरों या गरीबों में दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।
- अपने माता-पिता की सेवा करें एवं अपने से बड़े लोगों का सम्मान करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। 04 फरवरी से राहु एवं गुरु की युति आपके कार्यों में रुकावटें डाल सकती है। इस समय के अंतराल में आप कुछ परेशान हो सकते हैं परन्तु गुरु के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। आप सफलता पूर्ण रूप से प्राप्त करेंगे आपनी आंतरिक क्षमता, इच्छा शक्ति, संतुलन और दृढ़ता से अपने काम को आगे ले जाएंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। केवल आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ना है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होने के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। आपके अन्दर संतुष्टि और जीत की भावना बना रहेगी।

23 सितम्बर के बाद व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है आपका धैर्य ही आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और आप हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए थोड़ा चिंताजनक हो सकता है क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर अप्रैल तक अच्छा नहीं है। मई से आपका समय काफी अच्छा हो रहा है। आप को कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। आप अपनी समझ का सही उपयोग करेंगे आपकी राह में आने वाले हर अवसर का लाभ उठाने के लिए आपको सही और गलत की परख होगी।

सितम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें, किसी को उधार पैसा न दें और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। यह बढ़ोत्तरी विवाह या जन्म के माध्यम से हो सकती है। आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नही रहेगा। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी।

सामाजिक उन्नति के लिए भी समय बहुत अच्छा नहीं है। आपकी धर्मपत्नी का

स्वास्थ्य अचानक बिगड़ सकता है या उनके साथ आपका वैचारिक मदभेद हो सकता है। मई से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। आपके पिता के लिए यह समय काफी शुभ है।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिसके कारण आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं परन्तु अप्रैल के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की स्वास्थ्य संबंधित परेशानी कम होगी और शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा। गर्भाधान के लिए अच्छा समय चल रहा है। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

23 सितम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः उनको मन को एकाग्र कर शिक्षा के प्रति विशेष ध्यान देना चाहिए। खान-पान पर विशेष ध्यान दें, नहीं तो स्वास्थ्य संबंधित परेशानी आ सकती है।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी या तली हुई वस्तुओं का सेवन कम करें। अप्रैल के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। सकारात्मक ऊर्जा व रोग प्रतिरोधक शक्ति में वृद्धि होगी।

वर्षान्त में गुरु ग्रह गोचर फिर से प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। स्वास्थ अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। व्यापारिक व्यक्तियों के लिए व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

अप्रैल के बाद विद्यार्थियों के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिक यात्रा का भी योग बन रहा है। यात्रा के दौरान किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

17 अप्रैल के बाद द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी। इस यात्रा से आपको लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे। गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। 17 अप्रैल के बाद आप दान-पुण्य अधिक करेंगे धार्मिक कार्यों में आपकी रूचि बढ़ेगी। मन्त्र जप व साधना करेंगे साधु, संन्यासी एवं ईश्वर में आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें एवं शनि मन्त्र का जाप करें।

इस वर्ष वृष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आपको व्यावसायिक जीवन में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है परन्तु 18 फरवरी के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। इस समय के अंतराल में आपके काम करने का तरीका सबसे अलग होगा। इस तरीके से आपके वरिष्ठ अधिकारी प्रभावित होंगे और उनका सहयोग भी मिलेगा।

यदि आप व्यवसायी हैं तो किसी के साथ मिल कर कोई नया व्यापार शुरु कर लेंगे। उस काम में आपको अच्छा लाभ होगा। 15 अगस्त से आपका समय फिर से प्रभावित हो रहा है अतः उस समय आपको किसी पर अत्यधिक विश्वास नहीं करना चाहिए।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक प्रतिकूलता के कारण बचत कम ही कर पाएंगे। शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय होगा। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। 18 फरवरी से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। पत्नी एवं आपके मित्रों से अच्छा लाभ होगा। व्यावसायिक उन्नति करने में भी आप खर्च करेंगे।

14 जून से 15 अक्टूबर तक निवेश के मामले में सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें नहीं तो हानि हो सकती है। अक्टूबर से समय बहुत अच्छा हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्षारम्भ मिला-जुला रहेगा। दूसरे भाव पर शनि की दृष्टि रहेगी। पारिवारिक मामलों में समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़े या विवाद न करें और वाणी पर नियंत्रण रखें। मामा के साथ भी आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

18 फरवरी से आपके परिवार में अनुकूलता का वातावरण बनेगा। साथ ही धर्म पत्नी के साथ संबंधों में भी मधुरता आएगी। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। जुलाई के

बाद संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती हैं। परिवार में किसी सदस्य की बढोत्तरी हो सकती है। वर्षान्त में आपके परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। जिससे परिवार में प्रेम एवं सौहार्द का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए उत्तम नहीं रहेगा। पंचम स्थान के मंगल आपकी संतान की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न करते रहेंगे। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में रूकावटें आ सकती हैं।

गर्भवती स्त्रियों को अपने खान-पान एवं रहन-सहन पर विशेष ध्यान देना चाहिए अन्यथा गर्भपात हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। इसके बावजूद बच्चों के स्वास्थ्य पर ध्यान दें। वर्षान्त आपके दूसरे बच्चे के लिए शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ स्वास्थ्य के लिहाज से बहुत अच्छा नहीं है। आपको ऐसा अनुभव होगा आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे कम हो रही है। 18 फरवरी के बाद शारीरिक आरोग्यता में कुछ अनुकूलता आएगी परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

उदर सम्बन्धित बीमारी या मोटापा बढ़ सकता है। लेकिन आप खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित कर सकते हैं। सूर्योदय से पहले उठ कर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो यह वर्ष करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठ रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। जो लोग नौकरी की तलास में हैं उनको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

14 जून से समय कुछ प्रभावित हो रहा है। यह समय विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक भटकाव व एकाग्रता की कमी रहेगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के लिए 15 अक्टूबर के बाद समय बहुत बढ़िया हो रहा है। व्यवसाय से जुड़े व्यक्तियों को इस समयान्तराल में अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के शुरु में द्वादश स्थान के शनि विदेश यात्रा करा सकते हैं। 18 फरवरी के बाद पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होती रहेंगी।

यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें क्योंकि द्वादश स्थान में शनि का गोचर अच्छा नहीं होता।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्य के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है परन्तु फरवरी के बाद धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, योग करना एवं दान-पुण्य आपकी दिनचर्या में शामिल हो जाएगा। ईश्वर के प्रति आपकी श्रद्धा भी बढ़ेगी। 15 अक्टूबर से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा करना, गरीबों को खाना खिलाना एवं दूसरों की सहायता करने में आप सबसे आगे रहेंगे। बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु के मन्त्र का पाठ करें ।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं द्वादश भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं सप्तम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष सामान्य अनुकूल रहेगा। व्यवसाय में सफलता के लिए थोड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनों से खूब मदद मिलेगी। व्यापार द्वारा अच्छा खासा लाभ होने की सम्भावना है। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। बहुत से कार्यों को एक साथ करने से बचें। साथ ही हर काम को एकाग्रता के साथ करें।गुरु ग्रह के गोचर के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

5 मार्च के बाद आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारारूकावटें डाली जा सकती हैं। साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे और उसके साथ आपका सम्बन्ध भी खराब हो सकता है। 12 अगस्त के बाद व्यापारिक जीवन में उन्नति करने का पूर्ण प्रयास करेंगे और उसके लिए अथक परिश्रम भी करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको अच्छी सफलता मिल सकती है।

धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। द्वादश स्थान में शनि ग्रह की स्थिति धनागम के लिए अच्छी नहीं होती है। अनावश्यक निवेश करने से बचें। धन के लेन-देन में सावधानी बरतें। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

5 मार्च से समय और ज्यादाप्रभावित हो रहा हैं। धोखा, हानि या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। मई के बाद आपकी पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसा खर्च हो सकता है। ऋण इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। 12 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति को लेकर सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। घरेलू मामलों में आपको समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ाया विवाद में नहीं पड़ना चाहिए।मई के बाद मित्रता में

दरार आ सकती है।

12 अगस्त से समय अच्छा हो रहा है। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। माता पिता सहित मातुल पक्ष के लोगोंसे अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए यह समय शुभ है।

संतान

पूरे वर्ष आप संतान के मामले में चिंतित रहेंगे। पंचम का राहु संतान की तरक्की में बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां भी हो सकती हैं। नवविवाहित गर्भवती महिलाओं के लिए गर्भपात के योग बनेंगे इसलिए सावधानी बरतें।

द्वितीय संतान के लिए समय अपेक्षाकृत बेहतर होगा उसके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उसके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छी रहेगीपरन्तु 5 मार्च के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशानीउत्पन्न होती रहेगी। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव सेआपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है।आपको पेट संबंधित तकलीफें हो सकती हैं। अपने खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है।

12 अगस्त के बाद लग्न स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। 23 अक्तूबर के बाद वाहन इत्यादि से सावधान रहें और यात्रा भी कम से कम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता अभ्यार्थियों को अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए नहीं तो मानसिक भटकाव के कारण आप लक्ष्य से भटक सकते हैं। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए यह समय अच्छा है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। मई के बाद लग्नस्थ शनि के कारण आप आलसी भी हो सकते हैं।

12 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर बहुत शुभ हो रहा है। व्यवसायियों को अपना ब्राण्ड नेम मिल सकता है और प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल हो सकते हैं।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकीविदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहेहैं। 5 मार्च के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

23 अक्तूबर के बाद यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें क्योंकि चोट की प्रबल सम्भावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में सम्मिलित होंगे। 31 मई के बाद गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन पीली वस्तुएं जैसे केला आदि गरीबों में दान करें और केले के वृक्ष की पूजा करें।
- शनिवार के दिन एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।
- सरसों के तेल में बनी वस्तुओं को गरीबों को खिलाएं।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। आर्थिक तंगी के चलते व्यापार में विस्तार करने की योजनाएं वर्षारंभ में धीमी पड़ेंगी परंतु अपने परिश्रम के बल पर सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। कड़े परिश्रम एवं बौद्धिक परिश्रम की आवश्यकता है। घर से दूर अर्थात् विदेश में सफलता मिल सकती है। लग्नस्थ शनि के कारण कुछ गलत फहमियों से आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। हालाँकि 18 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है।

वरिष्ठ लोगों व अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा। फिर भी इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। चतुर्थ राहु के कारण जमीन-जायदाद से जुड़े लोगों को हानि हो सकती है। नौकरी वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। वर्ष की शुरुआत में निवेश से सम्बन्धित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

आप अपने संबंधी या दोस्तों को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। जोखिम भरा निवेश करने से बचें। कृषक वर्ग एवं फुटकर विक्रेताओं के लिए वर्षान्त अच्छा नहीं रहेगा।

घर-परिवार, समाज

यह वर्ष घर परिवार के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अधिक भाग-दौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण परिवार में किसी व्यक्ति के साथ आप का वैचारिक मतभेद हो सकता है। जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा। ऐसी स्थिति में आपको अपना पारिवारिक महौल अनूकूल बनाए रखने का पूर्ण प्रयत्न करना चहिए।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने से आपकी पारिवारिक एवं सामाजिक पद

व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा। आपकी माता के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों को लिए अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। गर्भवती स्त्रियां सावधानी बरतें अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

18 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंधों में मधुरता आएगी, जिससे घरेलु वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है।

18 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होना शुरु हो जाएगी और आप अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। स्वास्थ्य पर ध्यान दें नहीं तो 8 अक्टूबर के बाद आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। यह समय माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजस की स्थिति बनाएगा। 18 मार्च के बाद लग्न भाव पर गुरु की दृष्टि आपके मनोबल को बढ़ाएगी। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को कठिन परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी।

इस समय माता का स्वास्थ्य व घर की सुख शान्ति भी प्रभावित रहेगी। शत्रुओं को परास्त करने के लिये आपको नीतियों में बदलाव करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। परन्तु 18 मार्च के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थस्थल की यात्रा करेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है, जिससे आप असंतुष्ट व अप्रसन्न रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा। जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रियाएं कम ही कर पाएंगे। 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण अच्छे कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। दैनिक पूजा-पाठ व दिनचर्या में भी बदलाव होगा।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीब लोगों को काला कम्बल दान करें।
- अपने बजन के बराबर अन्न आदि दान करें जिससे आपको शारीरिक अनुकूलता प्राप्त होगा।
- आत्म सम्मान में वृद्धि के लिए प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं नमव भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। लग्नस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि नवीन विचारधारा, नयी योजनाओं को जन्म देगी। उसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य व्यवसाय में अच्छी उन्नति करेंगे। 23 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। लग्नस्थ शनि के कारण कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है। कुछ विरोधी आपके कार्यों में रुकावट डालने की कोशिश कर सकते हैं। परन्तु आप उन परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे।

12 अगस्त के बाद तृतीयस्थ राहु के कारण आप के अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे। व्यावसायिक व्यक्तियों को गैरकानूनी काम-धन्धों से बच के रहना चाहिए नहीं तो द्वादश स्थान का शनि आपके कार्यों में कानूनी व्यवधान डाल सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कोई कार्य बहुत ही सोच विचार करें, क्योंकि चतुर्थ स्थान का राहु जमीन-जायदाद के लिए अच्छा नहीं होता। धन हानि व धनागम के मार्ग प्रभावित होंगे। आपकी आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 28 मार्च से आपके आय के साधन बढ़ेंगे। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो इस समय के अंतराल में आपको ऋण मिल जाएगा। आप अपनी भौतिक सुख-सुविधा पर भी अधिक खर्च करेंगे।

द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध प्रतिकूल रहेगा। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी, जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। आपकी माता के लिए यह समय अशुभ है परन्तु पिता के लिए काफी शुभ है। धर्मपत्नी के साथ अच्छा संबंध नहीं रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध घरेलू वातावरण के लिए बहुत ही शुभ है। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। घर में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। गुरु ग्रह की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। माता पिता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। तृतीय स्थान का राहु सामाजिक उन्नति के लिए बहुत ही बढ़िया रहेगा। समाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे जिससे समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए उत्तम रहने वाला है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी संतान के लिए श्रेष्ठ है। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आप उन पर गर्व करेंगे। आपकी दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ शनि के प्रभाव से आप मामूली संक्रमण की चपेट में आ सकते हैं। शनि की स्थिति आपके स्वास्थ्य लिए अनुकूल नहीं रहेगी। रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण स्वस्थ रहते हुए भी आप अपने को बीमार जैसा अनुभव कर सकते हैं। मार्च के बाद आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

वर्ष का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अनुकूल रहेगा। फिर आपको दुरुस्त रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन आपके लिए लाभप्रद रहेगा। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए समय समय पर चिकित्सक की सलाह लेते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 23 मार्च के बाद सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। विद्यार्थियों को करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

दशमस्थ गुरु के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए समय अनुकूल रहेगा। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से वकील, जज एवं कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ होगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। 23 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

परिवार के साथ भ्रमण पर जा सकते हैं। यह यात्रा मनोरंजनात्मक तथा आनन्ददायक रहेगी। यात्रा के दौरान आपको कुछ परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ गुरु के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्षारम्भ में ही आप धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा अधिक करेंगे। 23 मार्च के बाद से घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे। जिससे आपको मानसिक शान्ति व समाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप मन्दिर निर्माण जैसे धार्मिक कार्य या दान-पुण्य आदि सात्विक क्रियाओं में संलग्न रहेंगे।

- किसी गरीब बच्चे को शिक्षा दान देकर या अनाथ आश्रम में भण्डारा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- चौदह मुखी रुद्राक्ष धारण करें व प्रत्येक दिन शिवजी का दुग्धाभिषेक करें।

इस वर्ष कर्क राशि का शनि द्वितीय भाव में और सिंह राशि का राहु तृतीय भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्यक्षेत्र में उन्नति व सफलता के लिए संघर्ष पूर्ण रहेगा। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके कुछ विरोधी उत्पन्न होंगे। जो कि आपके कार्यों में व्यवधान डालने की कोशिश करेंगे। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए यह समय बहुत ही शुभ है। पदोन्नति के साथ मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए 6 अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपको व्यापार में वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का भरपूर सहयोग मिलेगा। शेयर बजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। परन्तु भूमि क्रय-विक्रय या खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को सावधान रहना चाहिए। क्योंकि चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके लिए अच्छी नहीं है।

धन संपत्ति

इस वर्ष का आर्थिक रूप से सुदृढ़ रहेंगे। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं कि प्राप्ति होगी। 6 अप्रैल के बाद तो स्थिति और भी सुदृढ होने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। फिर भी किसी प्रकार का आर्थिक निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह लेना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। क्योंकि द्वितीयस्थ स्थान का शनि परिवार पर कुछ अनावश्यक खर्च करा सकता है। जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। परन्तु व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह साल आपके लिए बहुत अच्छा रहने वाला है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि के लिये वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। परिवार के सभी सदस्य प्रेम पूर्वक रहेंगे तथा एक-दूसरे को अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे जिससे परस्पर संबंधो में मधुरता रहेगी। फलतः पारिवारिक वातावरण शान्ति एवं सद्भावना से युक्त रहेगा। 5 अप्रैल के बाद पारिवारिक स्थिति के लिए समय किंचित प्रभावित हो रहा है। ये समय आपकी माता के लिए शुभ नहीं है। परन्तु धर्म पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके भाईयों के लिए बहुत ही शुभ है। इस समय के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता हो सकती है। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे उन्नति करेंगे। वे कुछ विशेष करने वाले हैं जिससे आप उन पर गर्व करेंगे।

बच्चों के माध्यम से समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपकी दूसरे संतान के लिए भी समय काफी शुभ रहेगा। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए समय बहुत ही शुभ है। यदि आपका बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपका स्वास्थ्य मिला-जुला रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से आप प्रभावित रह सकते हैं। आपको कमजोर जैसा अनुभव होगा। परन्तु गुरु ग्रह का गोचर स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

6 अप्रैल के बाद आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। अर्थात् इस समय आप रोग-मुक्त रहने वाले हैं। लेकिन आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं। क्योंकि आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए सामान्यतः मिला-जुला रहेगा। विद्यार्थियों को मेहनत करने के बावजूद भी पारिश्रमिक फल नहीं मिलेगा। अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय नए स्रोतों का सृजन करेंगे।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ेगा। दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं को अच्छा लाभ मिलेगा। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा नहीं है।

यात्रा-तबादला

6 अप्रैल के बाद आपकी अधिक से अधिक यात्राएं होंगी। छोटी-छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी। नौकरी करने वाले लोगों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपकी उन्नति के लिए शुभ संकेत है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। नवम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों में अरुचि उत्पन्न कर सकती है, जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- हनुमान चालीसा का पाठ करना आपके लिए श्रेष्ठमत रहेगा।
- सात मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- अपने घर में पारद के शिवलिंग स्थापित कर उसका पूजन करें।
- ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु एकादश भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं द्वादश भाव में आजाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अच्छा रहेगा। एकादश स्थान में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य क्षेत्र में अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। व्यापार में आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो अपने साझेदार के संतुष्ट रहेंगे। अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो सकता है।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि नौकरी करने वालों के लिए अच्छी नहीं है। क्योंकि आपका स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है। द्वादश स्थान में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रति किसी प्रकार का षड्यन्त्र या कोई बड़ी समस्या उत्पन्न की जा सकती है। इन समस्याओं के बीच आप अपने को पूर्ण रूप से फंसा हुआ महसूस करेंगे। फिर भी आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश करेंगे और इसमें आप काफी हद तक सफल भी रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आय के बंद मार्ग खुलेंगे। धन संचित करने में आपके भाई व धर्मपत्नी का अच्छा सहयोग होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। परन्तु अप्रैल के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें व धन के लेद-देन में सावधान रहें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है।

13 अप्रैल से द्वितीय स्थान में राहु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। 27 अगस्त से समय फिर से अनुकूल हो रहा है और उसके बाद अच्छा रहेगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। द्वितीयस्थ शनि की चतुर्थ स्थान पर दृष्टि पारिवारिक माहौल खराब कर सकती है। ऐसे में आपको बड़े ही विवेक से काम लेना चाहिए। सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आएं। नहीं तो आपका घरेलू माहौल ज्यादा अशान्त हो सकता है।

अप्रैल के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक भी हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहारों में संयम बरतें। 27 अगस्त के बाद तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे आपकी ख्याति और बढ़ेगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। अप्रैल के बाद उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

आपके दूसरे बच्चे का चहुंमुखी विकास होगा। उन्नति के मार्ग खुलेंगे। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। 27 अगस्त के बाद पंचम स्थान पर शनि की दृष्टि आपके बच्चे की उन्नति को रोक सकती है। अतः उस समय उन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। यदि पहले से कोई बीमारी नहीं है तो वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए अनुकूल रहेगा। परन्तु 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होगा उस समय आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधी कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। उदर से सम्बन्धित बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं। अतः आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान-पान का विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी भोजन करें। दाल, सब्जी, फल आदि का ही अधिक सेवन करें। 27 अगस्त के बाद समय किंचित अनुकूल हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल रहेगा। तृतीयस्थ राहु के कारण आपको अचानक सफलता मिल सकती है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी है। यदि अच्छी शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है।

अप्रैल से जुलाई तक आपकी उन्नति में व्यवधान आता रहेगा। परन्तु 27 अगस्त के बाद आपको अच्छी सफलता मिलेगी। जो लोग नौकरी की तालाश में हैं। उनको अचानक इच्छित नौकरी की प्राप्ति होगी। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं। उनके लिए वर्षान्त बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

तृतीय स्थान का राहु वर्ष के प्रारम्भ में ही छोटी-मोटी यात्राएं कराते रहेंगे। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी मिलेगा। द्वादश स्थान के गुरु विदेश यात्रा का भी प्रबल योग बना रहे है।

अप्रैल के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा भी हो सकती है। यह यात्रा आपके लिए बहुत ज्यादा आनन्ददायक रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक क्रिया-कलापों के लिए साल का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित होगा। दैनिक पूजा-पाठ व दिनचर्या सुधरेगी। परमात्मा की भक्ति व मन्त्र पाठ में ज्यादा रुचि लेंगे। अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भुखे को खाना खिलाना या भण्डारा इत्यादि कार्य करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थपित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- शनिवार या बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं लग्न भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

यदि आप एक व्यापारी हैं तो अप्रैल के बाद आपको काफी लाभ प्राप्त होने वाला है। सफलता आपके कदमों को चूमेगी और आपका प्रदर्शन काबिले तारीफ रहेगा। आप अपने विरोधियों को काफी पीछे छोड़ जाएंगे। आप अपने पूर्व के अनुभवों के आधार पर सफलता हासिल करेंगे। जो लोग प्रॉपर्टी डीलिंग का काम करते हैं, उनको शानदार लाभ प्राप्त होने वाला है। शेयर बाजार में पैसे लगाना, फायदे का सौदा होगा। यदि आपके प्रदेश में लॉटरी प्रतिबंधित नहीं है तो उसमें अपना भाग्य आजमा सकते हैं। सफलता मिलने की संभावना है।

यदि आप वकील, मीडिया इत्यादि से संबंधित काम कर रहे हैं तो बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिलेगी। क्योंकि द्वितीय स्थान का राहु आपकी उन्नति में व्यवधान डाल रहा है। अक्टूबर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की उन्नति होगी। आपको अपने कार्यों में नाम और शोहरत मिलेगी। आपके सहकर्मी आपकी मदद करने के लिए आगे आ जाएंगे, जो आपकी सफलता के साक्षी बनेंगे।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं होने के कारण आपको आर्थिक मामले में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। किसी के ऊपर ज्यादा विश्वास न करें, क्योंकि कुछ लोग आपके विरुद्ध षड्यंत्र रच सकते हैं। अपने क्रिया-कलापों पर ध्यान दें और बेकार में पैसे खर्च करने से बचें क्योंकि द्वादश स्थान का गुरु आपका अनावश्यक खर्च बढ़ा सकता है। 26 अप्रैल के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी वित्तीय स्थिति में कुछ सुधार होगा।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम तो होगा परन्तु द्वितीयस्थ राहु के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। वैसे चिंता करने जैसी कोई बात नहीं है, कोई बड़ा नुकसान नहीं होने वाला है। कार्यस्थल पर अपनी मौजूदगी को लेकर सजग रहें तथा अधिक व्यय करने से परहेज करें। किसी प्रकार का ऋण लेने से भी पूरी तरह दूर रहें। लोन लेकर कोई कार्य शुरू न करें। जमापूंजी से ही नए कार्य का आरंभ करें तो उचित होगा। अक्टूबर के बाद समय बहुत ही बढ़िया हो रहा है। उस समय इच्छित बचत करने में सफल हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान का राहु पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। अचानक आपके

परिवार में विषमता की परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। वर्षारम्भ आपके पिता जी के लिए शुभ नहीं है। ऐसे में आपको बड़ी ही बुद्धिमानी से काम लेना होगा। घरेलू माहौल को अनुकूल बनाये रखने के लिए आपको छोटी मोटी बातों पर ध्यान नहीं देना होगा। 26 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक स्थिति के लिए बहुत ही शुभ हो रहा है।

परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी, जिससे परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जीवनसाथी का भरपूर सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आपका अहम सहयोग होगा। सितम्बर के बाद आपके कुटुम्ब में वृद्धि होगी। द्वितीयस्थ गुरु के कारण सुख, समृद्धि में बढ़ोत्तरी होगी। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से समाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप का समाजिक स्तर भी बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य करेंगे, जिससे समाज में आपका एक अलग व्यक्तित्व होगा।

संतान

द्वादश स्थान के गुरु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः वर्ष के प्रारम्भ में उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। आपके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में भी रुकावटें आ सकती हैं। 26 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपकी संतान के लिए काफी शुभ हो रहा है।

अप्रैल के बाद नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। वे अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय शुभ है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। परन्तु 26 अप्रैल के बाद अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। मानसिक सन्तुष्टि व शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देंगे। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

19 अक्टूबर के बाद अचानक सिर दर्द, गैस, व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। अपने खान पान पर भी ध्यान रखें नहीं तो आपका मोटापा बढ़ सकता है। जीवन साथी का स्वास्थ्य प्रतिकूल होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में अपने एवं धर्म पत्नी के स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 26 अप्रैल के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है। पंचम एवं नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों के लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। इंजीनियर, वकील व कानून से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता मिलेगी। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह वर्ष बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 26 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं होंगी। ये सब यात्रा व्यवसाय से संबंधित हो सकती हैं।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण यात्रा के अंतराल में किसी से आपकी मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भूखे को खाना खिलाना, गरीबों की सहायता करना ही आपका प्रथम उद्देश्य रहेगा। 26 अप्रैल के बाद आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। ईश्वर के प्रति आपका अटुट विश्वास होगा।

- दुर्गा बीसा कवच व आठ मुखी रुद्राक्ष अपने गले के धारण करें ।
- अपने से बड़े लोगों की सेवा करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं तृतीय भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और पनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस साल कारोबार में अच्छी सफलता मिलने वाली है। कार्य क्षेत्र में समय समय पर परिवर्तन करते रहेंगे। ऐसे में तात्कालिक परिवर्तनों से आपको लाभ होगा। अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना भी नहीं करना पड़ेगा। आपको बांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी। जो लोग सूद-ब्याज पर पैसे देते हैं उनको अच्छा लाभ होने वाला है। यदि आप शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं तो सफलता आपके कदम चूमेगी।

मई के बाद समय और भी रोमांचक और शानदार हो रहा है। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपकी मान-मर्यादा बढ़ेगी और सहकर्मियों का सहयोग भी मिलेगा। आपको कुछ ऐसी खुशियाँ मिलेंगी, जिसकी तलाश आपको एक लम्बे समय से थी। आप अपने काम को समय से पहले पूरा करने में सफल रहेंगे और प्रतिद्वंदियों को मुहतोड़ जबाब देंगे। हालांकि 22 अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर कुछ परेशानियाँ ला सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को किंचित परेशानी हो सकती है। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपका स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों के साथ संबंध अच्छा बनाकर रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी आर्थिक स्थिति शानदार रहने वाली है। आप अपने कार्यों के प्रति गंभीर बने रहेंगे, जिस कारण धन का आगमन भी बिना बाधा के होता रहेगा। मई के बाद स्थिति में अप्रत्याशित बदलाव होगा और आप यह पाएंगे कि आपकी जमापूंजी में वृद्धि हो रही है। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना चाहते हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

सामान्यतः आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। उसके स्वामित्व को प्राप्त करके आप श्रेष्ठता के भाव की अनुभूति करेंगे। आपके एश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। अपने पराक्रम एवं परिश्रम से भी आप यथोचित सम्पत्ति अर्जित करेंगे। 22 अक्टूबर के बाद भूमि, घर व वाहन खरीदते समय कागजी कार्यवाही पर विशेष ध्यान दें नहीं तो चतुर्थ स्थान का शनि आपको फंसा सकता है। कुछ अपने ही लोग आपके साथ धोखा-धड़ी कर सकते हैं, इसलिए अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है। जमापूंजी और लेन-देन के

मामले में किसी प्रकार की लापरवाही न करें। संभव हो तो लिखित रूप में ही लेन-देन करें।

घर-परिवार, समाज

इस साल आप अपने परिवार पर पूर्ण नियंत्रण रखेंगे तथा सभी परिवारीजनों का विशेष ख्याल भी रखेंगे। परिवार के सभी सदस्य आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप दोनों परिवारों के लिए सहयोगी सिद्ध होंगे परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधो में तनाव की अनुभूति हो सकती है। यदि दोनों आपस में सामंजस्य बनाए रखें तो संबंधों मे मधुरता बनी रहेगी। मई के बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। मातुल व ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है।

तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से पराक्रम व साख में वृद्धि होगी। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे। सामाजिक उन्नति के लिए आप कोई विशेष कार्य करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे। अक्टूबर के बाद समय किंचित प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय अपने परिवार पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो आपकी पारिवारिक स्थिति खराब हो सकती है।

संतान

साल के प्रारम्भ में पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि संतान के लिए बहुत ही श्रेष्ठ है। आपकी संतान बुद्धिमान एवं पराक्रमी होगी। अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। आज्ञा पालन में वे हमेशा तत्पर होंगे।

11 मई के बाद आप अपनी ओर से उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में सफल भी होंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। अक्टूबर के बाद आपके दूसरी संतान के लिए समय अनुकूल हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्स अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षण रहेगा। साल के प्रारम्भ से ही आप पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के होंगे। रोग व्याधि की सम्भावना कम है परन्तु 11 मई को, गुरु ग्रह के गोचर के बाद लग्न स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। मक्खन, घी और मिठाई से दूर रहना आपके लिए ज्यादा फायदेमंद होगा, अन्यथा आपका बजन बढ़ सकता है।

अक्टूबर के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों से परेशान हो सकते है। जैसे - सरदर्द और अपच आपको परेशानी में डाल सकती हैं। अतः अपनी सेहत के प्रति सावधान रहें। आँख,

किडनी और लीवर से संबंधित कुछ दिक्कतें हो सकती हैं। आलस्य भी आपके ऊपर हावी रहेगा। इस समय आपको दिमाग स्थिर रखने की आवश्यकता है। सुबह-शाम टहलना और प्रोटीनयुक्त पदार्थ अपने आहार में शामिल करना आपके लिए हितकर होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम एवं नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को परिश्रम के बाद नौकरी मिल सकती है। इंजीनियर, वकील व कानून से जुड़े लोगों को सफलता मिल सकती है। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

साल के प्रारम्भ में ही छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। मई के बाद सपरिवार किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

शनि ग्रह का गोचर नौकरी वालों के लिए अच्छा नहीं है क्योंकि आपका प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा, जिसके प्रभाव से आपके अन्दर पूजा पाठ के प्रति विशेष रुचि जाग्रत होगी। ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। मई के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। थोड़ा बहुत कुछ दिखावा भी करेंगे। जैसे जागरण करना, सांई संध्या करना इत्यादि। तीर्थ यात्रा व भण्डारा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा कवच या आठ मुखी रुद्राक्ष अपने गले के धारण करें।
- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

चतुर्थ स्थान का शनि नौकरी वालों के लिए अच्छा नहीं है। आपका स्थानान्तरण किसी प्रतिकूल स्थान पर होने की प्रबल संभावना बन रही है। कुछ लोग आपकी छवि धूमिल करने की कोशिश कर सकते हैं, इसे नजरअंदाज न करें। बेहतर परिणाम के लिए आपको कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। 5 अप्रैल के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। कारोबार सही रास्ते पर आएगा और मुनाफा भी होगा। प्रत्येक क्षेत्र में बेहतर परिणाम मिलेगा। प्रतिद्वन्दी आपको नीचा दिखाने की खूब कोशिश करेंगे लेकिन वो अपने मंसूबो में सफल नहीं होंगे। आपको अहंकार और गुस्से पर नियंत्रण करना होगा। तभी आपको नाम और पैसा दोनों की प्राप्ति होगी।

द्वादश स्थान का राहु कुछ परेशानी उत्पन्न कर सकता है। परन्तु गुरु ग्रह का गोचर शुभ स्थान में होने से आप सभी परेशानियों का हल निकाल लेंगे तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। व्यापारी व्यक्ति वर्षान्त में अच्छी उन्नति करेंगे। साथ ही विशिष्ट उपलब्धियां भी अर्जित करेंगे।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान का राहु आर्थिक उन्नति के लिए शुभ नहीं है। परन्तु मार्च के बाद द्वितीय स्थान में गुरु ग्रह का गोचर काफी अच्छा हो रहा है। रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे तथा वांछित बचत करने में भी सफल हो सकते हैं। 13 जुलाई के बाद परिवार में रोगादि की अधिकता होने के कारण धन व्यय हो सकता है। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से लेन-देन व निवेश के मामले सावधानी बरतें तथा जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। जमीन व फ्लैट खरीदते समय कागजी कार्यवाही पर पूरा ध्यान दें नहीं तो चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से धोखा मिल सकता है।

इस समय के अंतराल में आधुनिक सुख संसाधनों को प्राप्त करने में भी बहुत परिश्रम करना पड़ेगा। नवम एवं एकादश भाव पर गुरु की दृष्टि पिता एवं आपके भाईयों से भी धन लाभ करा सकती है। 4 नवम्बर के बाद भूमि व वाहन खरीदने का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु जल्दबाजी में कोई भी बड़ा निर्णय न लें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से जल्दीबाजी में कोई गलत निर्णय ले सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अच्छा नहीं रहेगा। अधिक व्यस्तता के कारण आप परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक वातावरण के लिए शुभ नहीं है। माता पिता के साथ भी संबंध अच्छे नहीं रहेंगे। सप्तम स्थान पर राहु की दृष्टि अचानक पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकती है, जिससे सब लोग परेशान हो सकते हैं।

मार्च के बाद समय अनुकूल हो रहा है। परिवार से जुड़ी सभी समस्याएं दूर होंगी। एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। भाई-बहनों के लिए समय काफी शुभ है। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। वांछित मान सम्मान मिलेगा। किसी सम्मानित उच्च पद को अर्जित करेंगे। आपकी प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त हो सकती है एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। 4 नवम्बर से माता पिता जी का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा उनसे आपको आर्थिक लाभ भी होगा।

संतान

पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण संतान संबंधित कुछ चिंताएं बनी रहेंगी। परन्तु 7 अप्रैल के बाद जैसे ही यह स्थिति समाप्त होगी आपके बच्चे वांछित लाभ एवं सफलता भी अर्जित करेंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति उसकी रुचि अल्प मात्रा में होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास इत्यादि के प्रति उनका आकर्षण बढ़ेगा।

जून से उनके मन में आपके प्रति आदर व सम्मान का भाव बढ़ेगा। प्रथम संतान की अपेक्षा आपकी दूसरे संतान ज्यादा उन्नति करेगी। यदि आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान के राहु स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे तथा अचानक आपको बीमार भी कर सकते हैं। चतुर्थस्थ शनि के कारण माता पिता का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा जिससे भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि अप्रैल से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे तथा आप निरोगी काया के स्वामी होंगे किसी गंभीर बीमारी से आपको परेशानी नहीं होगी।

13 जुलाई से आपका बजन बढ़ सकता है अतः बजन बढ़ने से बचने के लिए खान-पान पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। घी, तेल व तला हुई वस्तुओं का सेवन कम करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंतन न करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

शुरूआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन 13 अप्रैल के

बाद समय में सुधार होगा। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। उसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। परन्तु विद्यार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो 13 जुलाई के बाद प्रतिकूल स्थान पर परिवर्तन होने के प्रबल योग बन रहे हैं। मेकेनिकल इंजिनियर व हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वालों के लिए यह समय अच्छा नहीं है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में छोटी मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी अधिक होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यावसायिक यात्राएं भी कराती रहेगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। 7 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान के राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं।

4 नवम्बर के बाद आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिये अत्यधिक लाभ प्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में लग्नस्थ राहु के कारण सारे यज्ञ, अनुष्ठान प्रभावित होंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी व्यवधान आ सकता है। ये सब आपकी आलस्यता के कारण होगा। कोई भी धार्मिक कार्य करना हो तो अचानक करें क्योंकि योजनाबद्ध तरीके से कोई भी कार्य सफल नहीं होगा। अप्रैल के बाद धार्मिक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तीर्थ यात्रा का भी योग बन रहा है।

- शनिवार के दिन सुबह सुबह पीपल के वृक्ष में जल चढ़ाएं एवं शाम के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- दुर्गा सप्तशति का पाठ करें एवं आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- प्रत्येक सोमवार के दिन शिव लिंग पर जल चढ़ायें तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। राहु वृष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तररण होगा। वरिष्ठ लोग व उच्च अधिकारी आपके कार्यों से प्रसन्न रहेंगे तथा सभी प्रकार से आपकी सहायता करने में तत्पर्य रहेंगे। कार्यस्थल पर आपको मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। यह सब आपकी सकारात्मक विचारधारा के कारण होगा। व्यावसायिक व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करेंगे। अप्रैल से जून तक समय किंचित प्रभावित रहेगा। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु एवं शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आजीविका क्षेत्र में मानसिक दबाव अधिक रहेगा। आय में अनियमितता का भाव बना रहेगा। प्रतिद्वंदी आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल द्वारा सभी प्रतिद्वंदियों को पीछे छोड़कर सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। व्यावसायिक उन्नति करने में आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। भूमि, वाहन व कॉस्मेटिक से जुड़े लोगों को लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति के लिए यह साल मिला-जुला रहेगा। जोखिम उठाने से परहेज करें। वित्तीय विषयों के लिये यह समय सही नहीं है। द्वादश स्थान का राहु आपके संचित धन में भी कमी कर सकता है। 6 अप्रैल के बाद पैसे के मामले में आप ज्यादा सावधान रहें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास न करें। किसी के बहकावे में आकर अपने धन का निवेश न करें, क्योंकि धोखा होने के कारण धन डूब सकता है। द्वादश स्थान का राहु अचानक कोई ऐसा खर्च ला सकता है जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। परन्तु 28 जून से समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। व्यापारिक क्षेत्र में वांछित उन्नति करने में सफल होंगे तथा वर्षान्त में आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा। नौकरी या राजनीतिक क्षेत्र में आपको अच्छी सफलता मिलेगी। आप उचित मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगे तथा आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ता प्रदान करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक सुख, शान्ति एवं समृद्धि के लिए यह साल उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में

सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे, जिससे परिवार में शान्ति तथा सद्भावना का वातावारण विद्यामान रहेगा। आपके माता-पिता के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। 6 अप्रैल के बाद सुख एवं सहयोग में न्यूनता आयेगी परन्तु संबंधो में मधुरता बनी रहेगी। मित्र वर्ग आप से प्रसन्न रहेगा। चतुर्थस्थ शनि के कारण आप कुछ परेशान रह सकते हैं। परन्तु 28 जून के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

साल का उत्तरार्द्ध और भी श्रेष्ठ रहने वाला है। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्च पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त समाज में आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धी दूर दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ नहीं है। संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। उनकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। इस वर्ष आपके बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी, जिससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पडे गा। इसके अतिरिक्त आपके साथ भावनात्मक लगाव में भी कमी आएगी। मार्च के बाद दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है।

संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध उत्तम रहेगा। आपके बच्चे प्रतियोगिता परीक्षा या रिसर्च के कार्यों में भाग लेने पर सम्भवतः सफल होंगे। वर्षान्त आपकी संतान के लिए काफी श्रेष्ठ है। वे अध्ययन के क्षेत्र में उन्नति करेंगे तथा उनकी आय में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। वजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। यदि निरोगी काया चाहते हैं तो नियमित रूप से व्यायाम करें और खान-पान का विशेष ध्यान रखें, अन्यथा 6 अप्रैल के बाद समय प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आप अचानक बीमार हो सकते हैं। परन्तु घबराने की कोई बाद नहीं है क्योंकि 28 जून से समय फिर से अनुकूल हो रहा है और उसके बाद आप निरोगी काया के स्वामी होंगे।

आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओ की वृद्धि होगी जिससे आप तंदुरूस्त एवं सेहतमन्द बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह सैर पर जाना। 3 दिसम्बर के बाद समय और भी श्रेष्ठ हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। विद्यार्थियों की उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है।

अतः करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह वर्ष श्रेयस्कर है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 6 अप्रैल के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगे। ये सभी यात्राएं आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होंगी।

28 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। आप पूरे परिवार के साथ आनन्ददायक यात्राओ का आनन्द प्राप्त करेंगे अर्थात पूरे परिवार के साथ दर्शनहय स्थलों पर घूमने जाएंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से दैनिक पूजा-पाठ करते रहेंगे। घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए कोई विशेष पूजा का आयोजन करेंगे। उत्तरार्द्ध में गरीबों को दान देना, भिखरियों को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। योग व ध्यान के प्रति भी आपका रुझान बढ़ेगा। काला जादू, तन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपका रुझान ज्यादा होगा।

- पारद शिव लिंग अपने पूजा स्थान में रखें और नित्य उसका दर्शन करें तथा शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- बुधवार या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- चिड़ियों चींटियों व मक्खियों को दाना डालें।

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में आप कार्य व्यापार में कुछ विशेष करेंगे जिससे कार्यक्षेत्र और व्यापार का विस्तार होगा। नए उद्यमों या व्यवसायों में प्रवेश करने का मौका मिलेगा। वरिष्ठ लोगों व शक्तिवान व्यक्तियों से स्नेह व सम्मान प्राप्त होगा। 6 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। राजनीति से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में फुटकर विक्रेता व आभूषण से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को ज्यादा लाभ मिलेगा। यदि आप शेयर, लॉटरी व सट्टे से जुड़े हैं तो 25 सितम्बर के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि आपको महत्वाकांक्षी बना रही है। अधिक से अधिक आय प्राप्त करने के प्रयास करते रहेंगे तथा परिश्रम के बल पर आप अपने व्यवसाय में वृद्धि करेंगे। यदि आप साझेदारी में काई नया कार्य करना चाहते हैं तो यह समय अच्छा नहीं है। सप्तम स्थान पर राहु एवं शनि की दृष्टि मित्रता में धोखे का योग बन रही है।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में बृहस्पति का गोचर शुभ होने के कारण आपकी आमदनी में बढोत्तरी होगी। किसी वसीयत के माध्यम से धन लाभ हो सकता है। एकादशस्थ राहु के कारण अप्रत्याशित जगह से अचानक धन की प्राप्ति हो सकती है। आय के मार्ग खुलेंगे। वांछित बचत करने में भी सफल होंगे। धार्मिक कार्यों में आपका धन व्यय होगा तथा 6 मई के बाद परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में भी आप खर्च करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कोई बड़ा लाभ हो सकता है। 25 सितम्बर के बाद लॉटरी सट्टा या बीमा के माध्यम से भी धन लाभ होने का प्रबल योग बन रहे हैं। यदि आप शिक्षा, कानून व बैंक से जुड़े हैं तो इच्छित बचत करने में सफल होंगे। आर्थिक उन्नति करने में आपके भाईयों का पूर्ण सहयोग होगा।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ भाव में शनि का गोचर आपके घरेलू और पारिवारिक जीवन के लिए ठीक नहीं है। घर परिवार के लोगों से कुछ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। सामान्य तौर पर पारिवारिक

जीवन को लेकर मन अप्रसन्न रह सकता है। छोटी छोटी बातों पर झगड़े और विवाद हो सकते हैं। 6 मई के बाद आप अपने परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थल की यात्रा कर सकते हैं अथवा आपका झुकाव धार्मिक क्रिया कलापों की ओर होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में परिवार के लोगों के बर्ताव में भी आप कुछ अंतर महसूस करेंगे। 25 सितम्बर के बाद शनि ग्रह के गोचर अनुकूल होने के कारण पारिवारिक अनुकूलता में वृद्धि होगी। सामाजिक उन्नति के लिए भी यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा।

संतान

साल का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ है। आपके बच्चे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। आपके प्रति उनके मन में आदर एवं सम्मान का भाव बढ़ेगा। संतान इच्छित व्यक्तियो के लिए समय अनुकूल है। 6 मई से समय किंचित प्रभावित हो रहा है। पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि आपके बच्चो के उन्नति में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आपके बच्चे आलसी व लक्ष्य से भ्रमित हो सकते है।

जुलाई के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चो का चौमुखी विकास होगा। यदि वे विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। आपके दुसरे संतान के लिए यह साल सामान्य रहेंगा।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव देखने को मिलेगा। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर दर्द एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। यदि आप आयुर्वेद जड़ी-बूटी और योगाभ्यास आदि का सहारा लें तो जल्दी लाभ मिलेगा। सुर्योदय से पहले उठ कर पार्क में घुमना भी आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

25 सितम्बर के बाद सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि जीवन साथी के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। यद्यपि घबराने की कोई बात नहीं है क्योंकि लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि रोग प्रतिरोधक शक्ति को विकसित कर रही है। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए तुला दान श्रेष्ठ रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता में सफलता के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे जिससे आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय उत्तम है। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में नामांकन मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट,

प्रशासन व शिक्षण कार्य से जुड़े लोगों के लिए यह समय उत्तम रहेगा। वर्षान्त में रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी अधिक से अधिक यात्राएं होंगी। व्यावयायिक यात्राओं के कारण आप ज्यादातर घर से बाहर ही रहेंगे। 6 मई के बाद आप परिवार सहित अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में धार्मिक यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। यात्रा के अंतराल में किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष बहुत ही श्रेष्ठ है। पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। साधना, योग व ध्यान में अपका समय अधिक व्यतीत होगा। गरीबों की सहायता एवं बुजुर्गों की सेवा करेंगे। वर्ष के मध्य में समय किंचित प्रभावित हो रहा है, लेकिन जुलाई के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा। गुरु के प्रति निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा तथा उनके दिये गये उपदेशो का पालन करेंगे।

- महामृत्युंजय मन्त्र का पाठ करें तथा शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए तुला दान करें।
- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीबों को दान करें।
- मंलगवार को व्रत करें तथा मसूर की दाल ब्राह्मण को दान करें।
- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं पंचम भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। मालिक या किसी सत्ताधारी से संबंध बिगड़ जाने के कारण व्यापार या कार्यक्षेत्र प्रभावित रह सकता है। लेन देन के व्यापार में हानि होने की भी संभावना है। कार्यक्षेत्र से सम्बंधित कुछ न कुछ परेशानियां सदैव घेरे रहेंगी। इन तमाम कारणों के चलते इस अवधि में किसी नए काम के बारे में सोचना या नए काम की शुरुआत करना जोखिम भरा काम होगा। आप स्वयं में आत्मविश्वास की कमी का अनुभव करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध अनुकूल रहेगा। वरिष्ठ व अनुभवी लोगों का सहयोग मिलने के कारण व्यापार में कुछ विशेष करेंगे। शेयर, सट्टा व लॉटरी से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। यदि आप नौकरी में हैं तो पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा तथा आपसे बड़े अधिकारी आपकी पूर्ण सहायता करेंगे। कार्य स्थल पर मान सम्मान में वृद्धि होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। एकादश स्थान के राहु धनागम कराते रहेंगे। अचानक धन प्राप्ति के योग बन रहे हैं। इस अवधि में यदि कहीं से वसीयत प्राप्त होने की उम्मीद बन रही होगी और आप उसको प्राप्त करने के लिये इच्छुक होंगे तो वह आपको मिल सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में पैसे के मामले में आपको विशेष सावधानी रखनी होगी क्योंकि आमदनी की तुलना में खर्च अधिक रहेगा। वैसे आमदनी का स्रोत बना रहेगा और आपकी दैनिक आमदनी में कोई रुकावट नहीं आएगी। लेकिन धन बहुत धीमी गति से आपकी तरफ आएगा। अगर किसी को धन उधार दिया है तो फिलहाल उसके वापस मिलने की संभावना कम है। आप आकस्मिक धन लाभ की उम्मीद न रखें। महँगी एवं सुख सुविधाओं की चीजें खरीदने के लिए आप लालायित रहेंगे। परंतु धन का अपव्यय न करें अन्यथा आर्थिक तंगी का सामना भी करना पड़ सकता है ।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं कहा जा सकता, इसलिए घर परिवार से जुड़े मामलों को निबटाने में बड़ी सतर्कता बरतें। यद्यपि आप अपने पारिवारिक

उत्थान के लिये कुछ महत्वपूर्ण कार्य करना चाहते हैं और काफी हद तक उसमें सफलता भी मिलेगी। लेकिन उसका श्रेय आपको मिलने में संदेह है। आपके मित्र और सहयोगी जन अपनी बातों से मुकर सकते हैं। परन्तु आपको भाईयों का पूरा सहयोग मिलेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। परिवार के लोगों के बर्ताव में भी आप कुछ अंतर महसूस करेंगे। इन तमाम कारणों से आप मानसिक रूप से कष्ट का अनुभव करेंगे। माता-पिता का स्वास्थ्य प्रतिकूल रह सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा।

संतान

पंचमस्थ शनि के कारण संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में व्यवधान आ सकता है। उनको अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। सफतला मिलने की संभावना कम है।

10 जून से 27 अगस्त तक का समय अनुकूल रहेगा तथा उसके बाद समय फिर प्रभावित हो जाएगा। उस अवधि में आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। गर्भवती महिलाओं का गर्भ खराब हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। मौसम जनित बीमारियों के कारण आप अस्वस्थ महसूस कर सकते है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा जरूरत है। नहीं तो आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाए रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें, नहीं तो इससे भी आपको मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। सुबह जल्दी उठ कर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

10 जून से 27 अगस्त तक का समय शुभ रहने वाला है। उस समय लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी, जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां दूर होंगी और आप आरोग्य तथा तंदरूस्त बने रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रूचि कम होगी तथा आलस्य की भावना इनकी सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

जिस व्यक्ति को अभी तक नौकरी नहीं मिला है। उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो वर्ष का उत्तरार्द्ध

श्रेष्ठ रहने वाला है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। तीर्थ यात्राएं प्रभावित होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक व आध्यात्मिक कार्य के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। गुप्त विद्याओं के प्रति आपकी रुचि होना स्वाभाविक है। आप एक आदर्शवादी व्यक्ति हैं। लेकिन कई बार दुनिया के कठोर सत्य से दूर भागकर उनसे बचने के उपाय ढूंढने के बजाय आप दिवास्वप्नों में खो जाना चाहते हैं। आपमें जनकल्याण की भावना है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप जनकल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य करेंगे। गरीबों की सहायता व दुखियों के दुख निवारण के लिए कोई संस्था बना सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चन्दन तथा चावल डाल कर सूर्य को अर्घ्य दें।)
- शनिवार के दिन गरीबों को काला कम्बल दान करें।
- वीरवार का व्रत करें तथा बेसन के लड्डू दान करें।
- विष्णु सहस्त्रनाम का प्रतिदिन पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्ष के प्रारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्यक्षेत्र में इस वर्ष आपको नई उपलब्धियां हासिल होंगी। सही समय पर सही निर्णय लेकर व्यापार को आगे बढ़ाएंगे। अपने व्यापार में आप नई तकनीकियों का उपयोग कर सकते हैं। कर्मचारियों की गतिविधियों पर नजर रखेंगे। इस समय आप अपने व्यावसायिक प्रतिद्वन्दियों को काफी पीछे छोड़ देंगे। कुछ नवीन व्यवसायों में आप निवेश करेंगे। काम-काज में आप किसी के साथ कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी तथा कोई बड़ा ऑर्डर भी मिल सकता है। 30 जुलाई से 11 सितम्बर तक समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद पुनः अच्छा हो जाएगा।

सितम्बर के बाद आमदनी के नये स्रोत मिलेंगे। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद बढ़ जाएगी। आपके सहयोगियों को भी धन लाभ होगा। नौकरीपेसा लोगों की पदोन्नति होगी, परन्तु काम का दबाव बना रहेगा। आपसे बड़े अधिकारी आपको परेशान कर सकते हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेगें। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पत्नी एवं आपके भाईयों का पूर्ण सहयोग होगा।

30 जुलाई से 11 सितम्बर तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा। इस अवधि में आप अपव्यय अधिक करेंगे। अतः आर्थिक मामले को लेकर थोड़ी सतर्कता बरतने की आवश्यकता है। अतिव्ययी न बने और न ही किसी को उधार दें। वर्षान्त में आपके विवाह आदि मांगलिक कार्य में धन अधिक खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी पारिवारिक स्थिति कुछ अनुकूल नहीं रहेगी। हालांकि इससे परिवार के किसी सदस्य के साथ आपके रिश्ते खराब नहीं होंगे, परन्तु माता के साथ आपकी कुछ अनबन हो सकती है तथा उनकी सेहत भी खराब हो सकती है। अतः उनका ख्याल

रखें। पिता के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने जीवनसाथी के साथ रिश्ते मधुर व मजबूत करें नहीं तो दाम्पत्य जीवन में परेशानी उत्पन्न हो सकती है क्योंकि सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छी नहीं है। यदि आप अविवाहित हैं तो 11 सितम्बर के बाद विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष शुभ है। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। मान-सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

संतान

उच्च का शनि पंचमस्थ होने के कारण आपके बच्चों के पराक्रम में वृद्धि करेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम व पराक्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय और ज्यादा अनुकूल है। उनका चौमुखी विकास होगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो उनका विवाह भी हो सकता है।

30 जुलाई के बाद आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी पढ़ाई-लिखाई पर पड़ सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध अत्यधिक अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। जिससे आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती भी है तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी भुगत रहे हैं तो इस वर्ष उससे भी छुटकारा मिल सकता है।

30 जुलाई के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अपने खान पान पर ध्यान दें नहीं तो आपका वजन बढ़ सकता है। नियमित रूप से व्यायाम करने की आदत डालें वरना पेट, आंत, घुटने, आंख दर्द और सरदर्द जैसी समस्याओं से जूझना पड़ सकता है। वैसे कुल मिलाकर देखा जाए तो आपका स्वास्थ्य अच्छा ही रहेगा। इसलिए चिंता करने जैसी कोई बात नहीं है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। दशम स्थान में राहु के प्रभाव से आप अचानक प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक्स या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। उनको अपने करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल जाएगी।

आप अपने सारे शत्रुओं को परास्त कर आगे निकलेंगे। व्यापारिक व्यक्तियों को अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है। 30 जुलाई से 11 सितम्बर तक व्यापारिक वर्ग का समय

थोड़ा प्रभावित रहेगा। उसके बाद वांछित उन्नति करेंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि छोटी मोटी यात्रा कराती रहेगी। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से व्यवसाय से सम्बन्धित यात्राएं अधिक होंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी विदेश यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्रा से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। नौकरी वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप अपनी पत्नी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे। पंचमस्थ शनि के प्रभाव से आपके मन में ईश्वर के प्रति श्रद्धा व विश्वास बढ़ेगा, जिससे आप मन्त्र जाप, यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि अच्छे कर्म करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय या गरीब बच्चों की पढ़ाई लिखाई पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें तथा सूर्य को जल चढ़ाएं।
- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना करें और उसके सामने घी का दीपक जलाएं।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और वीरवार का व्रत करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहने वाला है। नौकरी करने लोगों को अपनी कुशलता के बल पर आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे। जो नौकरी या व्यवसाय आप कर रहे हैं, उसमे पूर्ण सफलता मिलने की संभावना है। कार्यों की सफलता आपके आत्मविश्वास को प्रोत्साहन देगी। व्यवसाय से जुड़े मामलों में आप अपने कौशल से एवं अनुभव से काफी सुधार लेकर आएंगे। नई कार्यशैली या तकनीक को अपनाने से आपके व्यापार में वृद्धि होगी और आपका उत्पादन बढ़ेगा। व्यावसायिक मामलों में अच्छी सफलता मिल सकती है। कोई उच्चपदस्थ सरकारी अधिकारी या प्रभावशाली व्यक्ति का सहयोग आपको नौकरी या व्यावसायिक मामलों में काफी अच्छा लाभ प्रदान करेगा।

फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है अतः उस समय कारोबार में मुनाफे के लिए यह आवश्यक है कि सोच समझ कर निवेश करें। किसी के ऊपर आंख बंद करके विश्वास न करें अन्यथा नुकसान हो सकता है, क्योंकि कोई करीबी या दोस्त ही आपको धोखा दे सकता है। व्यवसायिक लेन-देन को लिखित रूप में ही पूरा करें नहीं तो बाद में आपको नुकसान होने की संभावना है।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में धन प्राप्ति का अच्छा योग बन रहा है। कोई पुराना उधार वापिस मिलने से आर्थिक स्थिति में काफी सुधार होगा, जिसके चलते आप अपने व्यवसाय को विस्तार देने के बारे में सोच सकते हैं या किसी नए व्यापार में निवेश कर सकते हैं। आपके ऋण में कमी आएगी। आर्थिक सुधार के कारण व्यापार में सम्मान बना रहेगा।

फरवरी के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। गलत निवेश नीति के कारण नुकसान होने की संभावना है। अतः पूरी एहतियात बरतें। किसी भी अंजाम पर पहुंचन से पहने तथ्यों की पूरी तरह से जांच-पड़ताल कर लें। धन प्राप्ति के लिए भाग-दौड़ करेंगे और अपेक्षित लाभ प्राप्त करेंगे।

घर-परिवार, समाज

आपका पारिवारिक जीवन आनंदमय बना रहेगा। घर परिवार में मेहमानों का आना-जाना लगा रह सकता है। परिवार के साथ यात्राओं पर जाकर आपको आत्मिक शांति का अनुभव होगा। कुछ पुराने विवादों से जुड़े मामलों में आपको राहत मिल सकती है। परिवार में

सौहार्द बना रहेगा व पैतृक संपत्ति से जुड़े मामलों का कोई निष्कर्ष निकलेगा। किसी भी महत्वपूर्ण कार्य को करने से पहले घर के बड़े-बुजुर्गों की सलाह आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

फरवरी के बाद परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाएं आहत हो सकती हैं। हालांकि इससे परिवार के किसी सदस्य के साथ आपके रिश्ते खराब नहीं होंगे। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह साल काफी शुभ है। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ .-चढ़ के भाग लेंगे। मान-सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

संतान

पंचम भाव पर राहु की दृष्टि संतान के लिए अच्छा नहीं है। आपकी संतान को लेकर चिन्ताएं बढ़ सकती हैं। उनका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। विशेषतः उनको पित्त, कफ व उदर संबंधित बीमारियां हो सकती हैं, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा-दीक्षा पर भी पड़ेगा। निर्णय लेने की शक्ति में कमी व उन्नति में व्यवधान आ सकते हैं। आपकी दूसरी संतान के लिए यह साल सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप सेहतमंद और सक्रिय बने रहेंगे। आप दृढ़ निश्चयी और सशक्त इच्छाशक्ति वाले जातक हैं। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। सुबह-शाम टहलना और ऊर्जावान रहना आपको पंसद है।

फरवरी के बाद स्वास्थ्य को लेकर सतर्क रहें। मधुमेह और मोटापे की समस्या से पीड़ित जातक इस समय अधिक प्रभावित रह सकते हैं अपने आप पर आवश्यकता से अधिक बोझ न डालें और व्यर्थ की बातों से स्वयं को दूर रखें। देव पूजा, मंत्र आराधना और योगाभ्यास से आप मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष विद्यार्थियों के लिए कड़ी मेहनत करने का है। शिक्षा में आपकी धीमी गति से प्रगति होगी। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आप लंबे समय तक पढ़ने में ध्यान केंद्रित नहीं कर पाएंगे। इस दौरान मानसिक व्याकुलता आपको परेशान करेगी। यदि आप कोई उच्च शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो किसी भी महत्वपूर्ण फैसले को लेते वक्त सतर्कता बरतें क्योंकि उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों को महत्वपूर्ण निर्णय लेने में अवरोधों का सामना करना पड़ सकता है।

छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए शुभ है। यदि आप तकनीकी, कानून, इंजीनियरिंग व मेडीकल से संबंधित प्रतियोगिता परीक्षा दे रहे हैं तो सफलता मिलने की प्रबल सम्भावना है। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं, उनको वांछित नौकरी मिलने की संभावना है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। राहु केतु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ आपके लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। अधिकांश यात्राएं आपकी अचानक होंगी।

इन यात्राओं के दौरान आपको छोटी मोटी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। 16 फरवरी के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। मानसिक द्वन्दता के कारण आपका मन पूजा-पाठ में नहीं लगेगा। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि होने के कारण पूजा पाठ यज्ञ अनुष्ठान अपेक्षाकृत कम ही कर पाएंगे। घर में साफ-सफाई, पूजा-पाठ व पवित्रता का माहौल बनाने व छोटे लोगों की सेवा करने से राहु के अशुभ प्रभाव को कम किया जा सकता है। ऐसा करने से कार्यों में आने वाले व्यवधानों तथा संतान संबंधी चिंताओं से भी छुटकारा मिल जाएगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।
- नित्य दुर्गा कवच का पाठ करें।
- पूजा घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।

वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरु कुम्भ राशि एंव नवम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए मिला-जुला रहेगा। व्यापार में सफतला पाने के लिए आपको अथक परिश्रक करना पड़ेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में राहु एवं गुरु की युति आपकी परेशानियों का कारण बन सकती है। कार्यस्थल पर सभी गलत कार्यों के लिए आपका अहंकारपूर्ण रवैया जिम्मेदार होगा। 15 जून तक अपने गुस्से पर काबू रखें वरना इसके गलत परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। किसी वरिष्ठ अधिकारी के साथ तकरार की प्रबल संभावना बन रही है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको अच्छा मुनाफा मिलेगा। व्यवसाय संबंधित सभी व्यवधान दूर होंगे तथा उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। लघु व्यपार में भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा। इस अवधि में भाग्य पूर्ण रूप से आपका साथ देगा। दोस्तों एवं चाहने वालों की मदद से आपके कई महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण होंगे। अष्टमस्थ राहु के कारण कुछ विरोधी व गुप्त शत्रु आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे।

धन संपत्ति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आर्थिक मामलों से संबंधित कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। राहु गुरु की युति धनागम के मार्ग प्रभावित कर सकती है। अनावश्यक रूप से पैसे खर्च करने से बचें तथा किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास न करें। पैसे के देन लेन करते समय सावधानी बरतें तथा जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें। हालांकि 15 जून के बाद समय अनुकूल हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक उन्नति के लिए अनुकूल रहने वाला है। पैसे का आगमन निर्विवाद रूप से होता रहेगा। आप अपने कार्यों के प्रति सजग रहेंगे जिसके फलस्वरूप जमापूंजी में तेजी से वृद्धि होगी। व्यापारी बंधुओं को किसी मित्र या पारिवारिक व्यक्ति से आर्थिक मदद मिल सकती है।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपकी पारिवारिक स्थिति बेहतर रहने वाली है। परिजनों के साथ आप आनंदित रहेंगे। परिवार के सभी लोग आपकी मदद करेंगे। पारिवारिक समस्याओं का समाधान सुगमता से करने में सफल रहेंगे। परिवार में किसी प्रकार के झगड़े-झंझट होने की संभावना नजर नहीं आ रही है। वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके मातुल पक्ष के लोगों के लिए बहुत ही श्रेष्ठ है

परन्तु ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है।

वर्ष के दूसरे भाग में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य व मांगलिक कार्य होते रहेंगे जिसमें परिवार के सभी लोग सम्मिलित होंगे। सभी कार्यों में आपको धर्मपत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा इस अवधि में आप सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय होंगे। समाज में आपका दबदबा बना रहेगा। कोई भी व्यक्ति आपके विरुद्ध जाने का साहस नहीं कर पाएगा तथा आपको वांछित सम्मान प्रदान करेगा।

संतान

वर्षारम्भ में आप संतान के मामले में अत्यधिक चिंतित रहेंगे क्योंकि आपके बच्चे पढ़ाई के मामले में लापरवाही बरतेंगे। अधिक डांट-डपट करने से वे जिद्दी हो सकते हैं जिससे घ ार के वातावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। नवविवाहित गर्भवती महिलाओं के लिए यह समय शुभ नहीं है।

द्वितीय संतान के लिए समय अपेक्षाकृत बेहतर होगा। उसके कार्य व्यवसाय के विषय में शुभ समाचार तो प्राप्त होंगे परंतु स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां रह सकती हैं।

स्वास्थ्य

वर्ष का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। अचानक मौसम संबंधित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। मोटापा तथा पेट से सम्बन्धित बीमारियां भी परेशान कर सकती हैं। अतः घी या तली हुई वस्तुओं का सेवन कम करें नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके स्वास्थ्य के लिए शुभ है। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी जो आपको शारीरिक रूप से आरोग्य रखने में सहायता करेगी तथा आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ अनुभव करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। जो विद्यार्थी विदेश या दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। आध्यात्मिक शिक्षा, योग शिक्षा तथा शोध कार्य करने वालों के लिए वर्ष का प्रारम्भ शुभ है। इन लोगों को वांछित सफलता मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ विदेश यात्रा के लिए शुभ है। द्वादश स्थान पर शनि एवं गुरु की दृष्टि अचानक विदेश यात्रा करा सकती है। 2 मार्च के बाद धार्मिक व व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। आप किसी लम्बी यात्रा पर भी जा सकते हैं। इस वर्ष की मुख्यतः सारी यात्राएं आपके लिए लाभप्रद होंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय एकाग्रता बहुत ही जरूरी है क्योंकि अष्टम स्थान में राहु ग्रह का गोचर दुर्घटना इत्यादि की संभावना बनाता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप अत्यधिक व्यस्त रहेंगे, परन्तु उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ रहने वाला है। धार्मिक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा तथा दैनिक पूजा पाठ में भी सुधार होंगा। साधना, योग के माध्यम से आप अपनी अध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाने की कोशिश करेंगे।

- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें तथा नित्य उनका पूजन करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- प्रति शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- अपने से बड़े लोगों की सेवा करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(23/05/2021 - 23/05/2038)

बुध की महादशा 23/05/2021 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 23/05/2038 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध दशम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के कारण सन्तान से सुख और शत्रु पर विजय मिली होगी तथा कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल रही होगी। बुध की इस दशा में आप को यश तथा ख्याति मिलेगी, जीवन में प्रगति होगी, सम्मान और उत्तम शिक्षा मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें भरपूर शक्ति, उत्साह तथा क्रियाशीलता रहेगी। मौसम में परिवर्तन के कारण हल्का ज्वर, विषाणु जन्य संक्रामक बीमारी, त्वचा रोग तथा स्नायविक दुर्बलता हो सकती है। अधिक मानसिक तथा शारीरिक श्रम से बचे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थित अत्यन्त सुदृढ़ होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से आय में वृद्धि होगी। जमीन-जायदाद से भी आय में वृद्धि होगी। आपको माता-पिता से लाभ मिल सकता है। सट्टे में लेन-देन लाभदायक होगा। जीविकोपार्जन के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर तथा हाथ से बने सामानों का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सम्मान मिलेगा, आय में वृद्धि होगी तथा वरिष्ठ कर्मचारियों और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और अधीनस्थ कर्मचारियों तथा सहकर्मियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार तथा व्यवसायियाँ के कार्य-क्षेत्र में वृद्धि होगी। आर्थिक तथा व्यावसायिक समृद्धि के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित लेन-देन लाभदायक होगा। चल-अचल सम्पत्ति से लाभ मिलेगा। वाहन सुख भी मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा तथा सूर्य की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी। कार्य के सिलसिले में यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा अत्ति उत्तम होगी। आपकी शैक्षिक उपलब्धि आपकी जीविका की संभावना में वृद्धि करेगी। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा व्यापार के विषय में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि

है। आपका दिमाग विवेक पूर्ण व विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। अपके जीवन साथी की अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और सुख की प्राप्ति होगी। आपका जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता की विदेश यात्रा, साझेदारों से लाभ तथा आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपके पिता का धन-संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में शुभ परिवर्तन और अचानक लाभ मिलेगा जबकि बड़ों का शुभ उद्देश्य के लिए व्यय होगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध अति उत्तम रहेगा। इस दशा के दौरान आपको यश, सम्मान तथा सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको व्यवसाय में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में धन और समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि सूर्य को अन्तर्दशा में व्यय तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और कुछ बाधाएं हो सकती हैं। राहु की अन्तर्दशा में कुछ बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप बच्चों से सुख मिलेगा।

अंर्तदशा :- बुध - शुक्र
(16/10/2024 - 17/08/2027)

आपके लिए बुध की महादशा 23/05/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 16/10/2024 को प्रारंभ होकर 17/08/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। उच्चपद और सम्मान प्राप्त होंगे। सट्टेबाजी या निवेश से लाभ हो सकता है। आप धनी बनेंगे, खुद का मकान और वाहन हो सकते हैं। किस्मत साथ देगी। सुअवसर खूब मिलेंगे। कला में रुचि होगी। सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। घरेलू सुख होगा।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे, धनी बनेंगे, खुश रहेंगे और उच्चपद प्राप्त करेंगे। आपके पिता प्रसन्न और समृद्ध होंगे। माता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, अचानक धनागम होगा, सुख के साधन क्रय करेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, पिता से मधुर संबंध, खुशी, धन, कला में रुचि, सौभाग्य, घर और कार्यालय में सुखद वातावरण और सुखी जीवन का संकेत है।

आपकी संतान को कार्यों में सफलता मिलेगी, परिश्रम से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो साझेदारी से लाभ होगा, व्यापार में फ़ायदा होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में प्रसन्नता व्याप्त रहेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा। व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों में मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- बुध - सूर्य
(17/08/2027 - 22/06/2028)

आपके लिए बुध की महादशा 23/05/2021 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 17/08/2027 को प्रारंभ होकर 22/06/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चपद प्राप्त करेंगे। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी; स्पर्धियों पर विजयी होंगे। उच्चाधिकारियों से सहयोग और लाभ प्राप्त होंगे। माता-पिता से संबंध मधुर रहेंगे ; उनसे लाभ होगा। तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं। प्रोन्नति संभव है। रिश्तेदारों से संबंध मधुर रहेंगे। अध्यात्म में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी को अचल संपत्ति और वाहन प्राप्त होंगे, शत्रुओं पर विजय

होगी, गृहसुख नसीब होगा।

आपके पिता को विभिन्न प्रकार से लाभ होगा, साख बढ़ेगी, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। आपके भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन आ सकता है, अचानक लाभ हो सकता है; वसीयत, उपहार आदि से धन कमा सकते हैं, खर्चे बढ़ेंगे, यात्रा हो सकती है।

आपकी संतान का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शिक्षा अच्छी रहेगी, सफल होंगे। स्पर्धियों पर विजयी होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे; उच्च पद प्राप्त कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, धनागम होगा। परामर्शदाताओं को सफलता और सम्मान का योग है। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

अंर्तदशा :- बुध - चन्द्र
(22/06/2028 - 22/11/2029)

आपकी बुध की महादशा 23/05/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 22/06/2028 को प्रारंभ होकर 22/11/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ेंगे मगर वे शुभ और धार्मिक कार्यों पर होंगे। यात्राएं हो सकती हैं। विदेश जा सकते हैं। ज्ञानार्जन में रुचि होगी। मातहत और किरायेदार सहयोग करेंगे। मुकदमे में जीत होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपके जीवनसाथी के कार्यालय में सुविधाएं उत्तम होंगी; विस्तृत कार्यों में सफल होंगे। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, उनका घरेलू जीवन सुखी रहेगा, अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, अचल संपत्ति और भूमि से लाभ होगा। माता सुखी, भाग्यशाली और धनी बनेंगी।

आपके भाई-बहन शिक्षा और कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, धन और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे; आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आपकी संतान के जीवन में परिवर्तन आ सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्रा, तबादले, परिवर्तन का संकेत है।

अगर आप सेवारत हैं तो साझेदारी से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को संचार माध्यम से लाभ हो सकता है।

स्वास्थ्य, विशेषकर नेत्रों और पैरों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए सफेद चीजें, वस्त्र, चावल और दूध का दान करें।

अंर्तदशा :- बुध - मंगल
(22/11/2029 - 19/11/2030)

आपके लिए बुध की महादशा 23/05/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 22/11/2029 को प्रारंभ होकर 19/11/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

आपकी महत्वाकांक्षाएं पूर्ण होंगी। सौभाग्यशाली रहेंगे। ज्ञान-विज्ञान के कार्यों में रुचि होगी। लंबी यात्रा हो सकती है। विविध गतिविधियों में सक्रिय रहेंगे। भाई-बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे। स्वास्थ्य और रोग प्रतिरोधक क्षमता उत्तम रहेंगे। स्पर्धियों पर विजय होगी। धन के संचय में कुछ कठिनाई हो सकती है। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। जायदाद से आय में वृद्धि होगी। आपके जीवनसाथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके पिता के आत्मविश्वास, ऊर्जा और कार्यक्षमता उत्तम होंगे। माता के लिए स्पर्धा में सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, सफलता और उच्चपद का संकेत है।

आपके भाई-बहनों को साझेदारी से लाभ होगा; व्यापार में लाभ, धन, सफलता, निवेश से लाभ का योग है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, तकनीकी विषयों में सफल हो सकते हैं। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा, उच्च पद मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भूतकाल की साख से लाभ होगा, आय में वृद्धि होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारी स्पर्धा में सफल रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पैरों में मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल वस्त्र, लाल दाल और लाल चंदन दान में दें।

अंर्तदशा :- बुध - राहु
(19/11/2030 - 07/06/2033)

आपके लिए बुध की महादशा 23/05/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 19/11/2030 को प्रारंभ होकर 07/06/2033 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है। भौतिक सुख-साधन उपलब्ध होंगे। प्रभावशाली व्यक्तियों से संपर्क होगा, उनसे सहायता मिलेगी। समृद्धि का वातावरण रहेगा। कटु वचन बोलने से बचें। साझेदार के माध्यम से धनागम हो सकता है। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है, यात्रा संभव है। अचानक, अप्रत्याशित घटना घट सकती है।

आपके जीवनसाथी को साझेदार के माध्यम से या यात्राओं से लाभ हो सकता है। आपके पिता स्पर्धियों पर विजय प्राप्त करेंगे, सम्मान बढ़ेगा, धनागम होगा और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए विदेश में निवास, अचल संपत्ति की प्राप्ति, उत्तम शिक्षा और माता से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान का ज्ञानार्जन उत्तम होगा, प्रसिद्ध बनेंगे और परीक्षा में सफल होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे, प्रसिद्ध होंगे, धन का लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रसिद्ध होंगे, आय में वृद्धि होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता स्पर्धियों पर विजयी होंगे। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ऊँ रां राहवे नमः

अंर्तदशा :- बुध - गुरु
(07/06/2033 - 13/09/2035)

आपके लिए बुध की महादशा 23/05/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 07/06/2033 को प्रारंभ होकर 13/09/2035 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आप धनी और भाग्यशाली बनेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। ज्ञान-विज्ञान, अध्ययन और धर्म में रुचि होगी। समाजसेवा और दान-धर्म में रुचि होगी। अध्यापन, लेखन और अध्ययन के लिए शुभ समय है। छोटे भाई या बहन का विवाह हो सकता है। आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी, समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। धन, कार्यों की पूर्ति और सौभाग्य का योग है।

आपके जीवनसाथी की लघुयात्राएं हो सकती हैं, सबसे संबंध सुधरेंगे। आपके पिता को सफलता मिलेगी, धनी बनेंगे, अरिष्ट से बचाव होगा। माता के मातहत, कर्मचारी वफ़ादार रहेंगे।

आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, विवाह, यात्रा, धन, प्रभावशाली मित्र और सफलता का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों से मधुर संबंध होंगे। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारी सामान बेचने में दक्षता द्वारा धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- बुध - शनि
(13/09/2035 - 23/05/2038)

आपके लिए बुध की महादशा 23/05/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा शनि की होगी जो आपके लिए 13/09/2035 को प्रारंभ होकर 23/05/2038 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु और धैर्य का कारक है।

इस अवधि में आपको जीवनसाथी या विरासत के माध्यम से धनलाभ हो सकता है। कटु वचन बोलने से बचें। मितव्ययता और बचत द्वारा अचल संपत्ति और धन में वृद्धि हो सकती है। जीवन के समस्त सुख मिलेंगे, भले ही कुछ देरी हो जाए। शिक्षा सफलतापूर्वक पूर्ण हो सकती है, संतान से सुख और धन का लाभ होगा। सावधानी से किए निवेश द्वारा लाभ हो सकता है। कार्यक्षेत्र में तरक्की के लिए समय बहुत अच्छा है।

आपके जीवनसाथी को आपके माध्यम से लाभ हो सकता है। उनकी आय बढ़ेगी, अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं। माता को निवेश से लाभ हो सकता है। उनका कार्यालय उत्तम होगा, प्रोन्नति हो सकती है, सम्मान बढ़ेगा। स्वास्थ्य उत्तम होगा, धनी बनेंगी।

आपकी संतान का उत्साह उत्तम होगा, दृढ़प्रतिज्ञ होंगे और सफलता प्राप्त करेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धन कमाएंगे; शत्रुओं पर विजयी होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकरी सहायता करेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों को बचत और निवेश से लाभ होगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर होगा। बीमारी का इलाज तुरंत करवायें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

महादशा :- केतु
(23/05/2038 - 23/05/2045)

केतु की महादशा 23/05/2038 को आरम्भ और 23/05/2045 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु अष्टम भाव में है जहाँ से उसकी दृष्टि द्वितीय भाव पर है। उसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रह थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध की दशा में आपको अप्रत्याशित धन, सभी प्रकार का लाभ, जीवन में परिवर्तन तथा मामूली स्वास्थ्य समस्या हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको मामूली स्वास्थ्य समस्या, अप्रत्याशित परिवर्तन, अचानक लाभ और हानि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपको कुछ समस्या हो सकती है। केतु के कारण आपको संक्रामक बीमारी, आँख की पीड़ा, चर्मरोग, गठिया, जननांग से संबंधित बीमारी आदि हो सकती है। कुछ सावधानी बरत कर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको कुछ अप्रत्याशित आय हो सकती है। आपको विरासती सम्पत्ति, बोनस, ग्रैच्यूइटी और सेवा-निवृत्ति से लाभ मिल सकता है। व्यापार-व्यवसाय में अच्छा लाभ हो सकता है। सट्टे और लेन-देन में साधारण लाभ होगा। जीविका और व्यवसाय के लिए इन्जीनियरिंग, कम्प्यूटर विज्ञान, वायु सैनिक के कार्य, दवा, बौद्धिक कार्य, अनुसन्धान-कार्य आदि का चयन कर सकते हैं। किताब, कम्प्यूटर, चमड़े के सामान, रत्न, समाचार पत्र, पत्रिका आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। सहकर्मी और अधीनस्थ कर्मचारी कठिनाइ उत्पन्न करेंगे। आपका मामूली परिवर्तन संभव है। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार हो सकता है और आपके लक्ष्य की पूर्ति होगी।

वाहन, यात्रा जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा के दौरान आपको आराम मिलेगा। आपकी एक सुन्दर गाड़ी होगी। सम्पत्ति का लेन-देन लाभदायक सिद्ध होगा। शनि की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और शुक्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप शोध कार्यों में अच्छा करेंगे। आपको अपन स्तर बनाये रखने तथा परीक्षा और प्रतियोगिताओं में सफलता पाने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। विज्ञान, भाषा, लेखन, मीडिया, लेखा कार्य आदि में आपकी रुचि होगी। आप बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके बच्चे प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्धा

में अच्छा करेंगे और आपको उन पर गर्व होगा। आपके जीवनसाथी को यश, ख्याति और पहचान मिलेगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध सन्तोषजनक रहेगा। आपकी माता की जमीन-जायदाद में वृद्धि और समृद्धि तथा सफलता मिलेगी जबकि आपके पिता को सभी प्रकार का लाभ मिलेगा और मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे में लाभ होगा और शिक्षा उत्तम होगी जबकि बड़ों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, यात्रा और उच्च शिक्षा होगी। उनके साथ आपका संबंध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी यात्रा, व्यवसाय में वृद्धि और वाणिज्य-व्यापार में लाभ होगा। शुक्र के कारण खर्च, लम्बी यात्रा और साझेदारों से लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में सम्मान की प्राप्ति और जीवन में प्रगति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में यात्रा, सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। मंगल के कारण स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और आय तथा समृद्धि अच्छी होगी। राहु कुछ बाधा उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान बच्चों से सुख और सम्पत्ति मिलेगी जबकि शनि के कारण कुद परिवर्तन, यात्रा और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। बुध की अन्तर्दशा में लाभ, मामूली स्वास्थ्य समस्या और परिवर्तन होगा।

अंर्तदशा :- केतु - केतु
(23/05/2038 - 20/10/2038)

आपके लिए केतु महादशा 23/05/2038 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 23/05/2038 को प्रारंभ होकर 20/10/2038 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आपके जीवन में अचानक कोई घटना घट सकती है। विरासत द्वारा धन मिल सकता है। विदेश जा सकते हैं। धन संचित होगा। शिक्षा उत्तम होगी। रिश्तेदारों से उत्तम संबंध रहेंगे। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, प्रसन्नचित्त रहेंगे। कटुवचन बोलने से बचें। खानपान में भी संयम आवश्यक है।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं। माता को निवेश द्वारा लाभ होगा, वे कर्मठ होंगी। आपके भाई-बहनों के लिए संकल्प, लक्ष्यप्राप्ति, सफलता, धनलाभ, सम्मान और धन का संकेत है।

आपकी संतान को ज्ञानार्जन द्वारा लाभ होगाः शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, सुविधा संपन्न होंगे, सफलता प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। परामर्शदाता सफल होंगे, धनार्जन उत्तम होगा। व्यापारियों को साझेदारी द्वारा लाभ होगा।

अंर्तदशा :- केतु - शुक्र
(20/10/2038 - 20/12/2039)

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी ।

इस अवधि में आपकी आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। किस्मत साथ देगी, लोकप्रियता बढ़ेगी। धनागम अच्छा होगा। धन संचित होगा, अचल संपत्ति और वाहन क्रय कर सकते हैं। सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके बहुत से ज्ञानवान और प्रभावशाली मित्र होंगे जो लाभकारी रहेंगे। कला में रुचि होगी। आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। कार्यक्षेत्र में उच्चपद प्राप्त होगा, सम्मान मिलेगा।

आपके जीवनसाथी सौभाग्यशाली होंगे। आपके पिता को स्वयं के प्रयास से सफलता मिलेगी; वे धनी बनेंगे, लघु यात्राएं होंगी। माता विरासत द्वारा अचल संपत्ति की मालिक बन सकती हैं; धनी बनेंगी। आपके छोटे भाई-बहनों के लिए यात्रा, पिता से लाभकारी संबंध, धन-समृद्धि और प्रसन्नता का योग है। बड़े भाई-बहन उच्चपद प्राप्त करेंगे, प्रसिद्ध और धनी बनेंगे।

आपकी संतान सफल रहेगी, उत्तम मित्र होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार से लाभ होगा, किस्मत साथ देगी, धनार्जन अच्छा होगा। अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम

होगा। परामर्शदाताओं को विविध माध्यमों से लाभ होगा। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

ऊँ शुं शुक्राय नमः

अंर्तदशा :- केतु - सूर्य
(20/12/2039 - 26/04/2040)

आपके लिए केतु महादशा 23/05/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 20/12/2039 को प्रारंभ होकर 26/04/2040 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्ध होंगे। स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। तीर्थयात्रा कर सकते हैं; अध्यात्म में रुचि होगी। नेकी के कार्य करेंगे। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, वाहन सुख रहेगा, शिक्षा उत्तम होगी, बहुत से मित्र होंगे। विरासत में जायदाद मिल सकती है। घरेलू सुख रहेगा; माता से उत्तम संबंध रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता धनी बनेंगे, इच्छाएं पूर्ण होंगी। माता को साझेदार के माध्यम से लाभ होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए अचानक लाभ, खर्चे, यात्रा और शत्रुओं पर विजय का संकेत है।

आपकी संतान के सम्मान में वृद्धि होगी, उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, उच्चपद प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो साख में वृद्धि होगी। परामर्शदाता सफल रहेंगे। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- केतु - चन्द्र
(26/04/2040 - 25/11/2040)

आपके लिए केतु महादशा 23/05/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 26/04/2040 से प्रारंभ होकर 25/11/2040 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आप अध्यात्म में अच्छी प्रगति कर सकते हैं। ज्ञानार्जन उत्तम होगा। धार्मिक प्रवृत्ति के होंगे। यात्राएं हो सकती हैं। मातहतों से उत्तम संबंध होंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। मामा के माध्यम से लाभ हो सकता है। वांछित वस्तुएं उपलब्ध होंगी; संतुष्ट रहेंगे।

आपके जीवनसाथी का कार्यालय उत्तम होगा, उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा, शत्रुओं पर विजय होगी। आपके पिता धनी बनेंगे, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, खेती या भूमि से लाभ हो सकता है। माता भाग्यशाली होंगी, प्रसन्न रहेंगी, उनकी यात्राएं हो सकती हैं।

आपके छोटे भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी; वे सफल होंगे, प्रसिद्ध बनेंगे। आपके बड़े भाई-बहनों का धनार्जन उत्तम होगा, सुख साधन संपन्न होंगे, उनका घरेलू जीवन सुखी होगा।

आपकी संतान के वातावरण में कुछ परिवर्तन हो सकता है; उन्हें लक्ष्य की प्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो तबादला हो सकता है, खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्रा हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो सामूहिक गतिविधियों से लाभ होगा, यात्राएं हो सकती हैं। परामर्शदाता सफल रहेंगे। व्यापारियों को स्पर्धा का सामना करना पड़ सकता है।

स्वास्थ्य का, विशेषकर नेत्रों का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के मंत्र का जाप करें।

ऊँ सों सोमाय नमः

अंतर्दशा :- केतु - मंगल
(25/11/2040 - 23/04/2041)

आपके लिए केतु की महादशा 23/05/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 25/11/2040 को प्रारंभ होकर 23/04/2041 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चकोटि का बौद्धिक कार्य कर सकते हैं, दूसरों पर आपका बहुत प्रभाव होगा विविध गतिविधियों में सक्रिय रहेंगे। भाग्य साथ देगा, धनी बनेंगे। यात्राएं हो सकती हैं, अचल संपत्ति के मालिक बन सकते हैं। कला में रुचि होगी, साहसी बनेंगे।

आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं होंगी, साहस में वृद्धि होगी, उत्साही रहेंगे, कार्य पूर्ण होंगे। आपके पिता विश्वासी और उत्साही होंगे। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा, बाधाएं पार करेंगी, मुकदमे में जीत होगी।

आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, विवाह, यात्रा, व्यापार में लाभ का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, सफलता मिलेगी, तकनीकी विषयों में रुचि हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए मंगल के मंत्र का जाप करें।

ऊँ अं अंगारकाय नमः

अंर्तदशा :- केतु - राहु
(23/04/2041 - 11/05/2042)

आपके लिए केतु महादशा 23/05/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 23/04/2041 को प्रारंभ होकर 11/05/2042 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सुख-साधन उपलब्ध होंगे। प्रभावशाली व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। वे आपके लिए लाभकारी रहेंगे। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। अचानक धनागम हो सकता है। कार्यक्षेत्र में अप्रत्याशित परिवर्तन द्वारा धन आ सकता है। विदेश से भी लाभ हो सकता है। विदेश यात्रा संभव है।

आपके जीवनसाथी को अचानक अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। पिता धनी बनेंगे, उनके सम्मान में वृद्धि होगी। माता धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए अधिक खर्च, कार्यों में असफलता, अचल संपत्ति की प्राप्ति, उत्तम शिक्षा, प्रसन्नता और माता से उत्तम संबंधों का संकेत है।

आपकी संतान प्रसिद्ध होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो परिश्रम करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को आर्थिक प्रगति के अवसर मिलेंगे। व्यापारियों के कार्य में परिवर्तन आ सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। दांतों की देखभाल करना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द, सतनजा और नीले वस्त्र दान करें।

अंर्तदशा :- केतु - गुरु
(11/05/2042 - 17/04/2043)

आपके लिए केतु महादशा 23/05/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 11/05/2042 को प्रारंभ होकर 17/04/2043 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। मानवता की भलाई और दान धर्म के कार्य करेंगे। भाग्य साथ देगा। अध्यात्म में रुचि होगी। स्वास्थ्य उत्तम होगा। संतान सुखकारी होगी, निवेश से लाभ होगा। वेद और मंत्रों में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं हो सकती हैं; उन्हें परिवारजनों से सुख मिलेगा। आपके पिता भाग्यशाली और धनी होंगे। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा; उन्हें शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, धन में वृद्धि, प्रभावशाली मित्र आदि का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्रा हो सकती है, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भूतकाल की साख से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं। व्यापारियों की आय अच्छी होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :- केतु - शनि
(17/04/2043 - 26/05/2044)

आपके लिए केतु महादशा 23/05/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 17/04/2043 को प्रारंभ होकर 26/05/2044 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आपको अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। मितव्ययता द्वारा काफी बचत कर सकते हैं। अदालत में जीत होगी। सम्मान बढ़ेगा, उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। नौकरी या व्यापार में कुछ परिवर्तन हो सकता है। कार्यक्षेत्र की उपलब्धियों के कारण प्रसिद्ध बनेंगे, समृद्धि आएगी। सब काम बन जाएंगे।

आपके जीवनसाथी का धनार्जन उत्तम होगा; उनकी कार्यक्षमता बढ़ेगी, धन संचित होगा। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी, परिवर्तन हो सकते हैं। माता को परंपरागत निवेश से लाभ होगा; संतान से सुख मिलेगा। आपके भाई-बहनों के लिए स्पर्धियों पर विजय, अधीनस्थ कर्मचारियों का सहयोग और कार्यों में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान की नींव मजबूत होगी; शिक्षा उत्तम रहेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो उत्साही होंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा।

मामूली बीमारी बढ़ कर गंभीर हो सकती है अतः सतर्कता आवश्यक है। अरिष्ट से बचाव के लिए काली दाल, काले वस्त्र, तेल, तिल और काली गाय दान करे।

महादशा :- शुक्र
(23/05/2045 - 23/05/2065)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 23/05/2045 को आरम्भ और 23/05/2065 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र सामान्य रुप से एक शुभ ग्रह कहा जाता है जो संगीत, ड्रामा, भावनात्मक आनन्द, स्वाद, फैशन तथा सुखमय जीवन का द्योतक है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में निम्न का तथा मीन राशि में उच्च का होता है। आपकी कुण्डली में यह एकादश भाव में स्थित है। यह आपकी जन्म कुण्डली के पंचम भाव को देख रहा है तथा उस पर भाव के कारकत्व का प्रभाव पड़ रहा है। यह विवाह का कारक भी है। भाव जिसमें यह स्थित है मित्र, समुदाय, लक्ष्य, इच्छा और उसकी पूर्ति, धन की प्राप्ति, समृद्धि, बड़े भाई,

भाग्योदय तथा दखनों का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र एकादश अर्थात् आय भाव में स्थित है जहाँ से यह पंचम भाव को देख रहा है। इसके फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा तथा इस दशा काल में आपको कोई बड़ी या छोटी समस्या नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र एकादश भाव अर्थात् आय भाव के अतिरिक्त चतुर्थ अर्थात् अपने ही भाव में स्थित होकर भाव के कारकत्व को प्रबलित कर रहा है। इस दशा काल में आपकी आय में वृद्धि होगी। आप वाहन खरीद सकते हैं और चल-अचल संपत्ति अर्जित करेंगे।

व्यवसाय :

आप अपना व्यवसाय स्वयं आरंभ करेंगे। आप मवेशियों की खरीद-विक्री और जमीन-जायदाद का कारोबार करेंगे जो आपके लिए लाभदायक होगा। आपके मित्रों के अतिरिक्त आपके बड़े भाई सहयोगी स्वभाव के होंगे जो आपकी सहायता करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन आनन्दमय होगा। आप स्त्रियों के प्रति आकर्षित होंगे। आप पुरुषों से अधिक स्त्रियों से मित्रता करेंगे और स्त्रियों का साथ पाने को उत्सुक रहेंगे। आपके बच्चे आपके सहयोगी होंगे जो अपनी मेहनत के बल पर समाज में आपका नाम रौशन करेंगे। यह दशा अति आनन्ददायक होगी।

अंर्तदशा :- शुक्र - शुक्र
(23/05/2045 - 22/09/2048)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 23/05/2045 को प्रारंभ होकर 23/05/2065 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 23/05/2045 को प्रारंभ होकर 22/09/2048 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। एकादश भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 5वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके बहुत से मित्र होंगे, लोकप्रियता बढ़ेगी। यात्राएं खूब होंगी। बहुत से लोगों से संपर्क होगा, इनमें विपरीत लिंग के व्यक्ति भी शामिल रहेंगे। धनागम उत्तम रहेगा। यह अंतर्दशा बहुत शुभ रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 64000 जाप करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2026

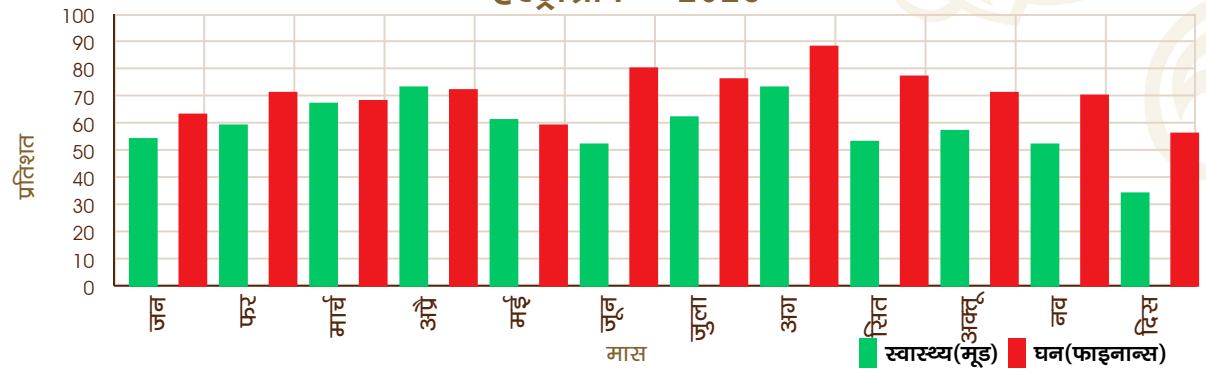

एस्ट्रोग्राफ - 2027

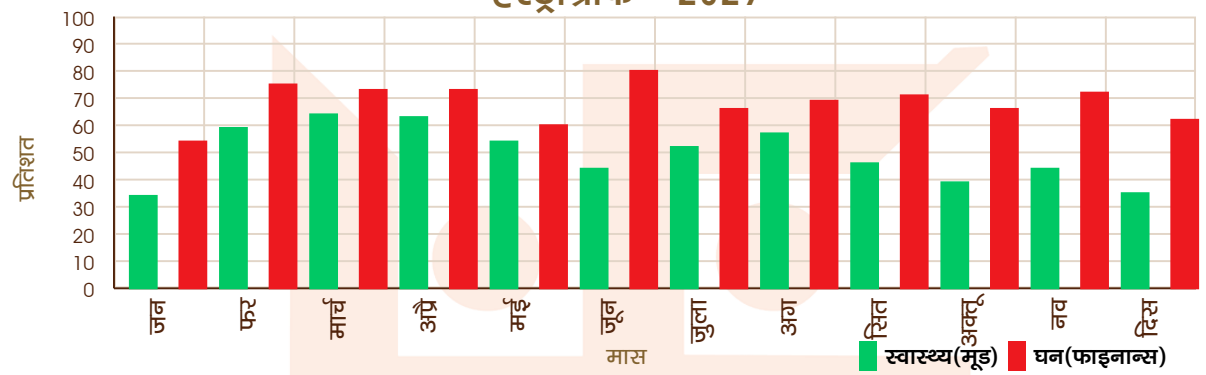

एस्ट्रोग्राफ - 2028

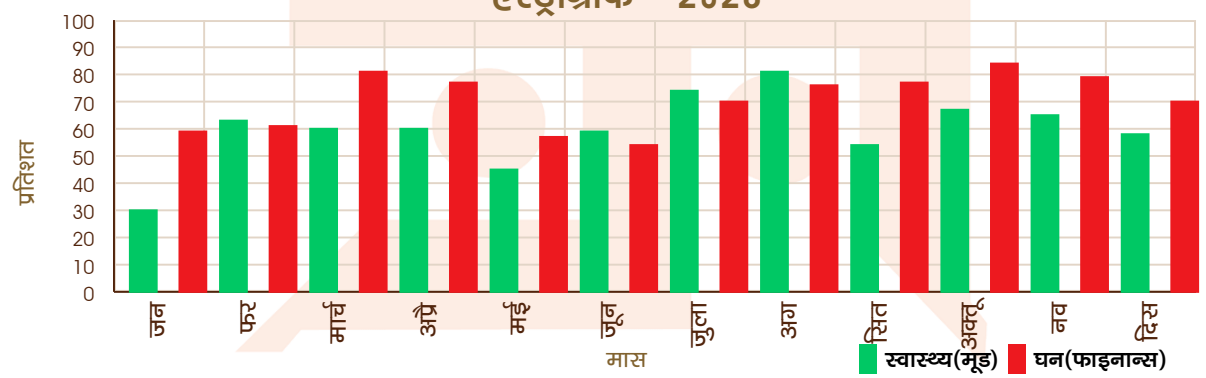

एस्ट्रोग्राफ - 2029

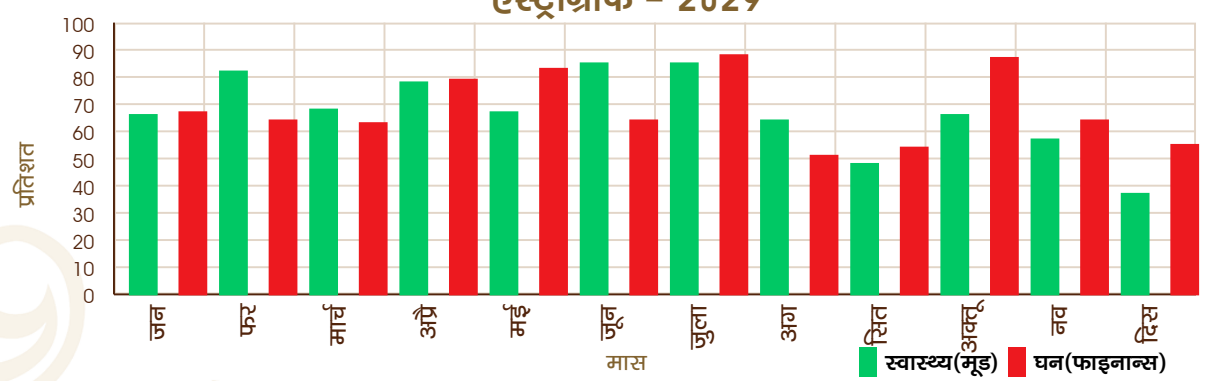

एस्ट्रोग्राफ - 2030

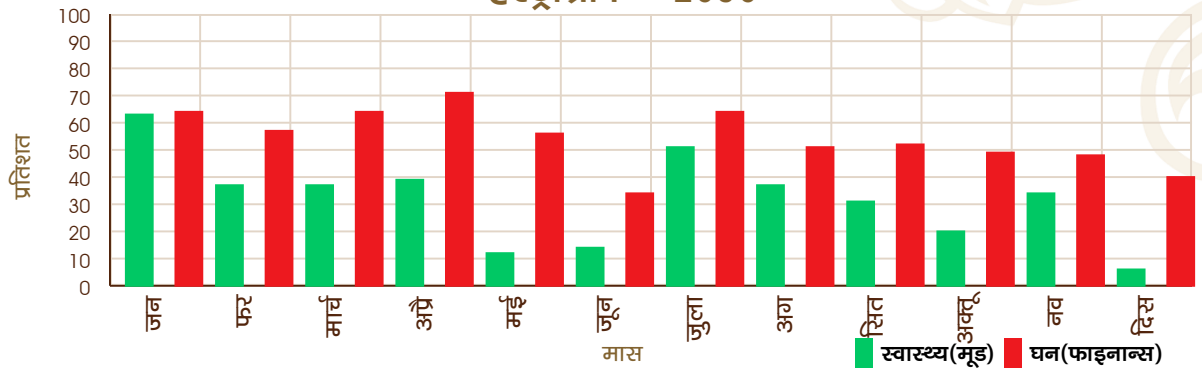

एस्ट्रोग्राफ - 2031

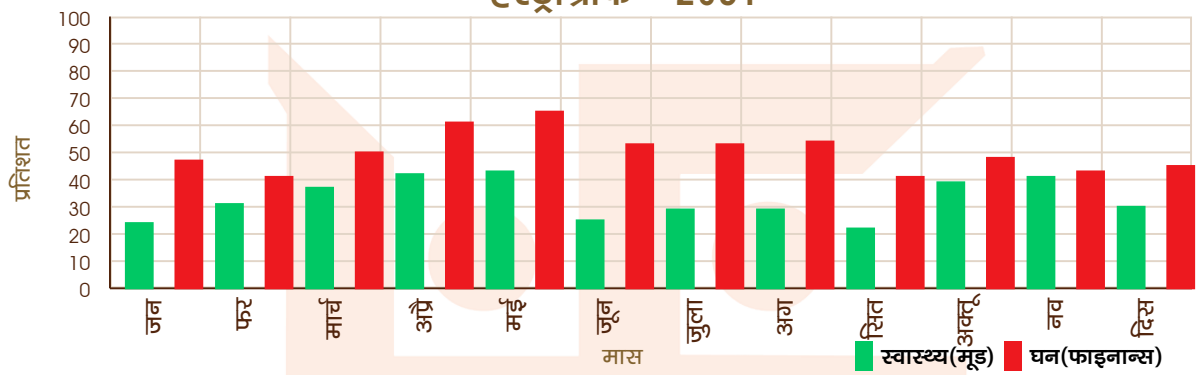

एस्ट्रोग्राफ - 2032

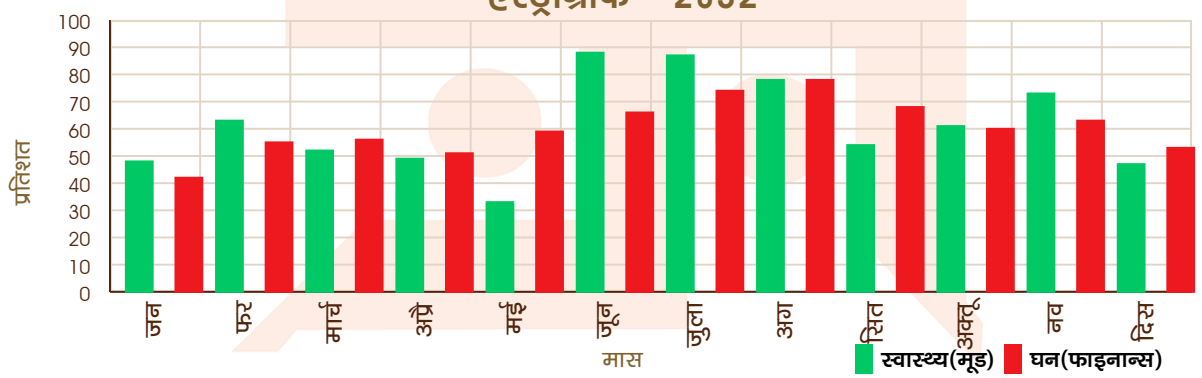

एस्ट्रोग्राफ - 2033

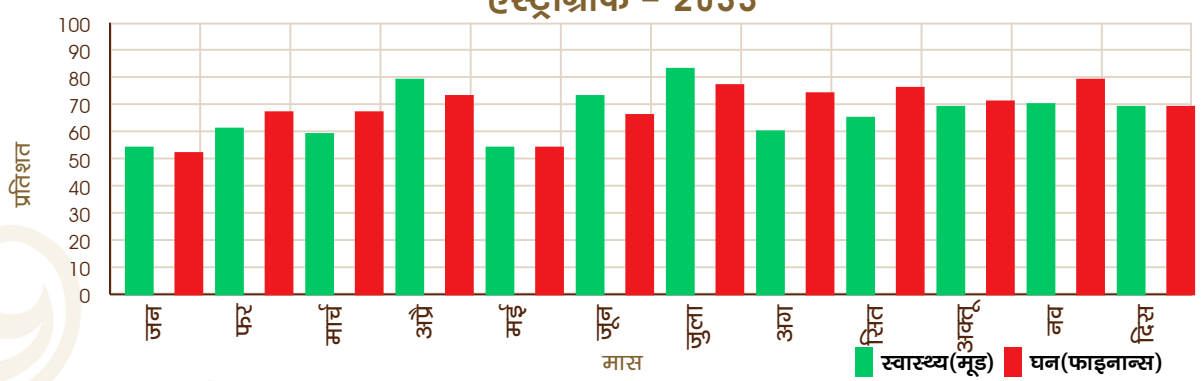

एस्ट्रोग्राफ - 2034

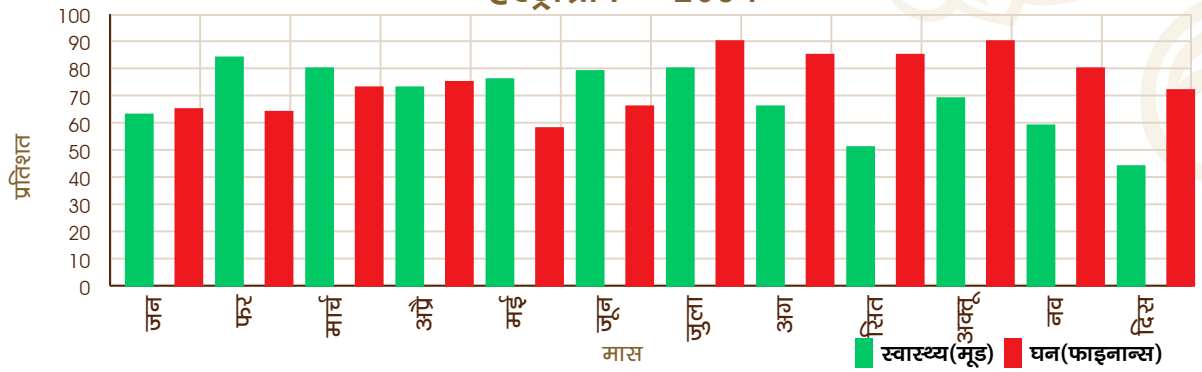

एस्ट्रोग्राफ - 2035

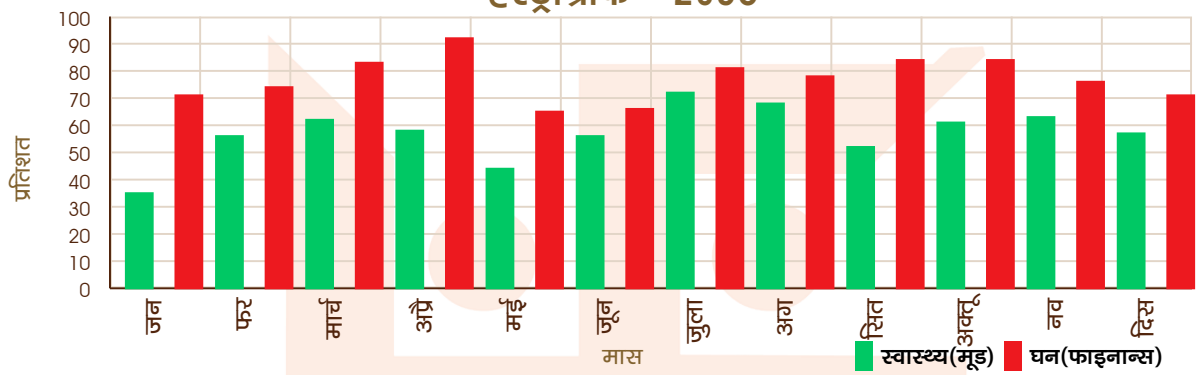

एस्ट्रोग्राफ - 2036

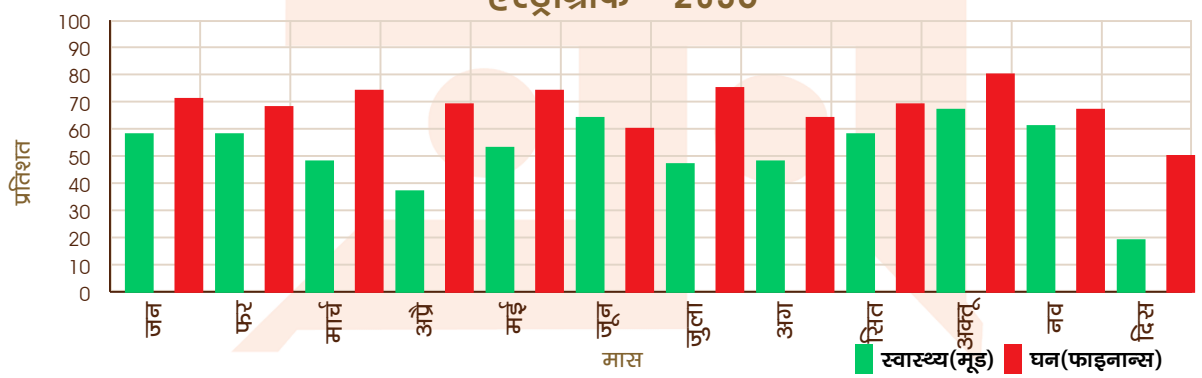

एस्ट्रोग्राफ - 2037

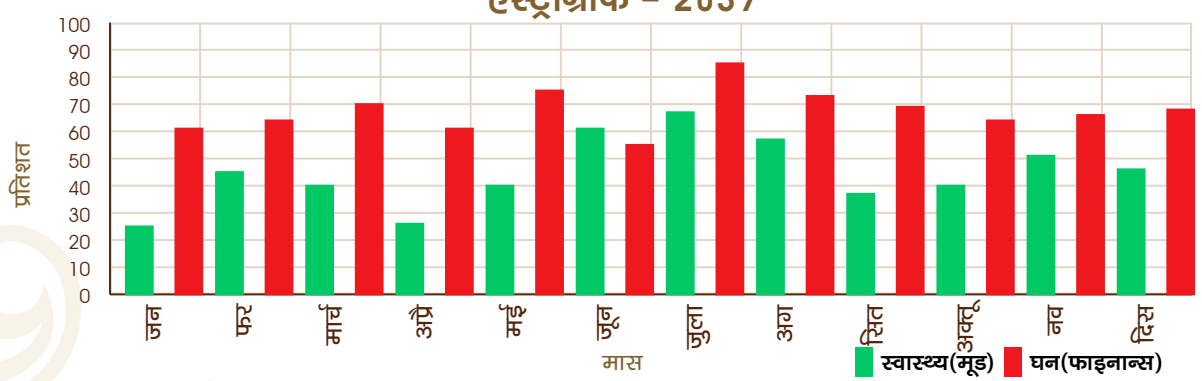

एस्ट्रोग्राफ - 2038

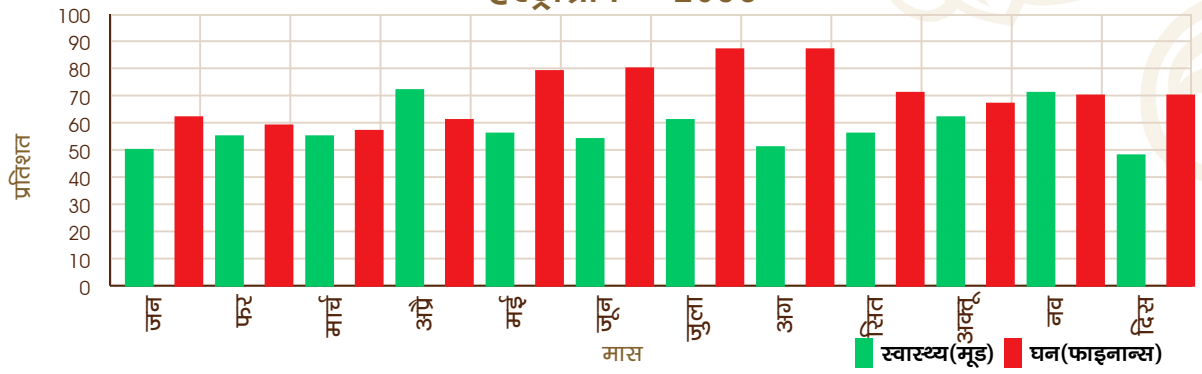

एस्ट्रोग्राफ - 2039

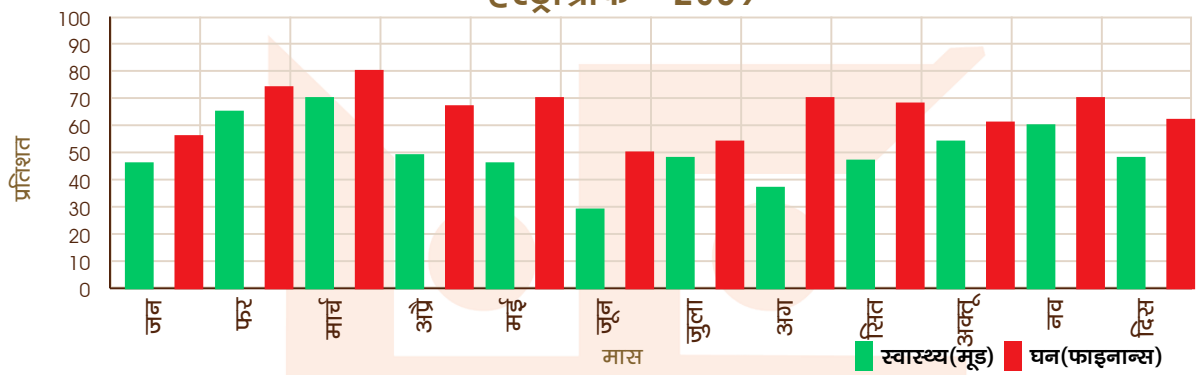

एस्ट्रोग्राफ - 2040

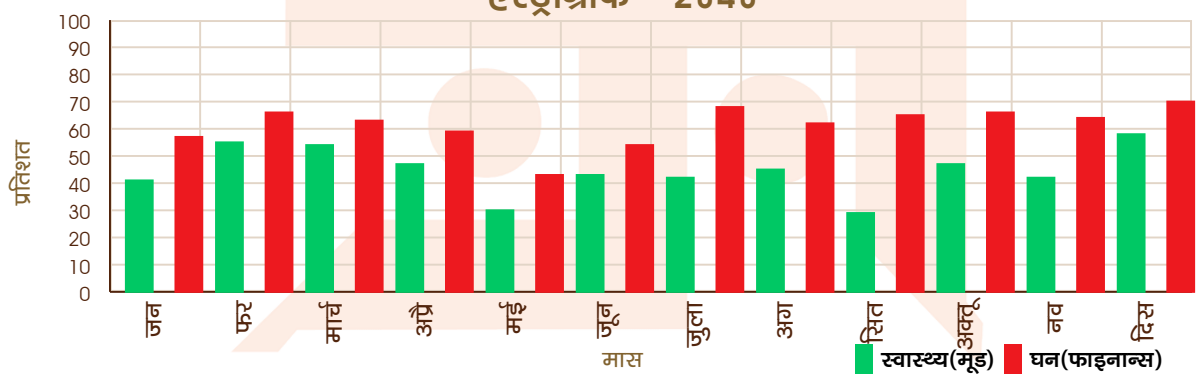

एस्ट्रोग्राफ - 2041

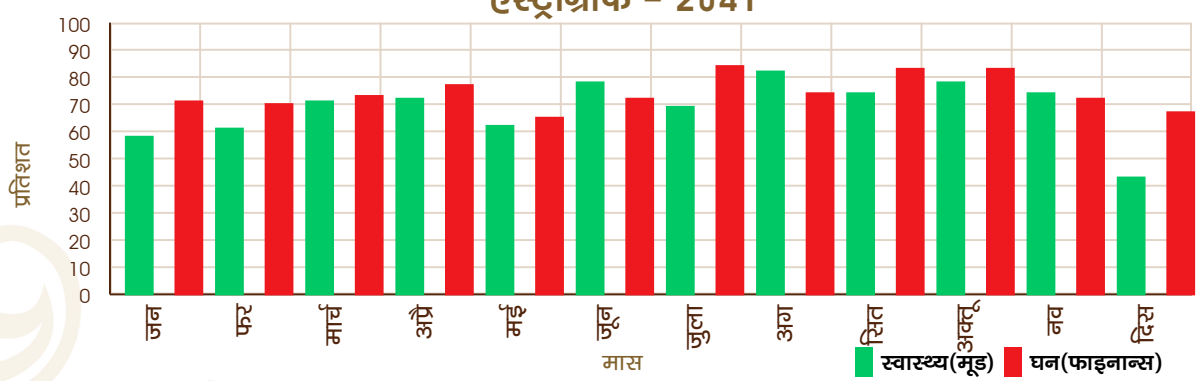

एस्ट्रोग्राफ - 2042

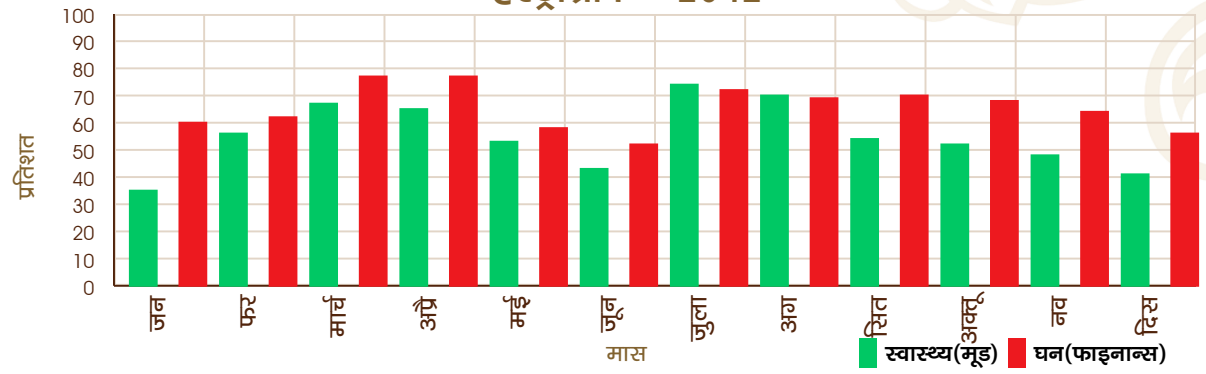

एस्ट्रोग्राफ - 2043

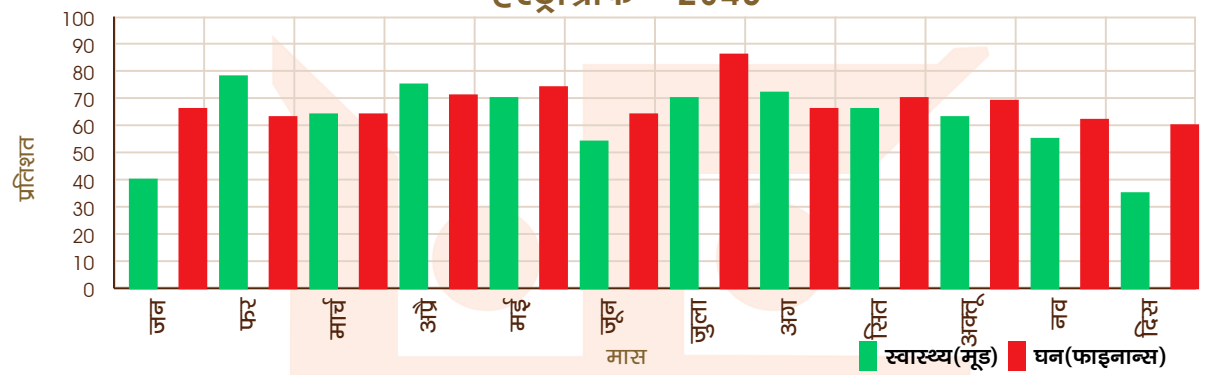

एस्ट्रोग्राफ - 2044

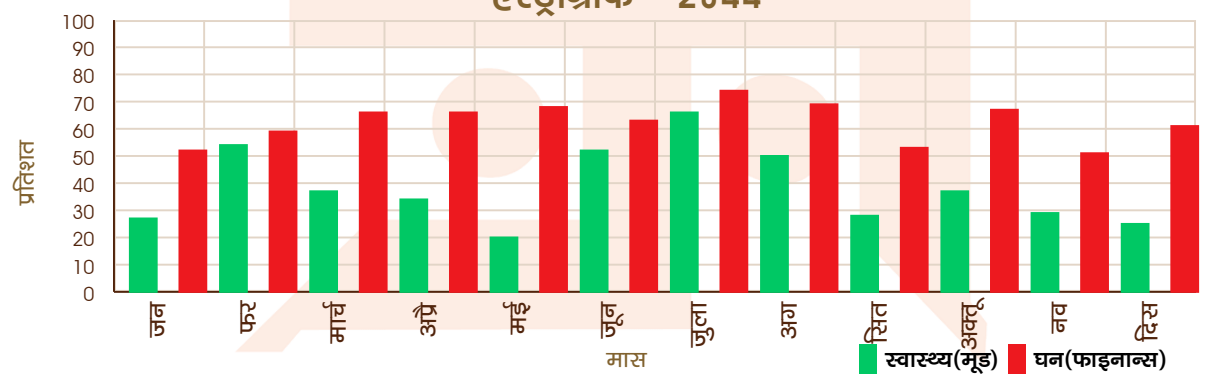

एस्ट्रोग्राफ - 2045

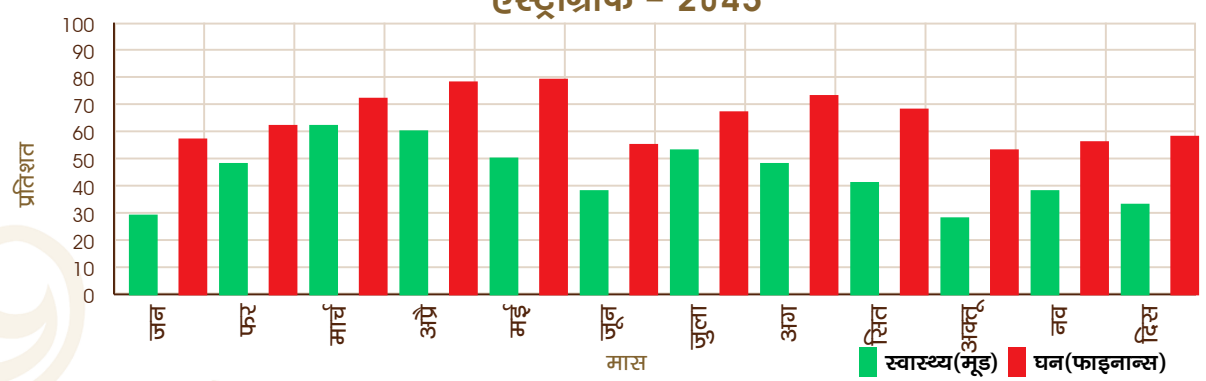

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

सरल योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः सरलयोगः।
दीर्घायुष्मान् दृढमतिरभयः श्रीमान्विद्यासुतधनसहितः।
सिद्धारम्भो जितरिपुरमलो विख्याताख्यः प्रभवति सरले।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 57, 65।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश या अष्टम भाव अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो और अष्टम भाव का स्वामी 6ठे, 8वें, 12वें भाव में स्थित हों तो सरलयोग बनता है। अष्टमस्थ पाप ग्रह (शनि के अतिरिक्त) अच्छा फल नहीं देगा।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु, दृढ़ निश्चयी, निडर, धनवान, विद्या, पुत्र से युत अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला, शत्रुजीत एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक 17।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,चंद्र योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

अनफा योग

अनफा रविरहितैः।
अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्विहगैः।।
वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो

योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 5।।

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. -16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,राहु,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.- 293 ।।

यदि जन्मपत्रिका में संतान भाव में वृष, कर्क और तुला में से कोई राशि हो, पंचम भाव में शुक्र या चंद्रमा स्थित हों अथवा इनकी दृष्टि पंचम भाव पर हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अनेक पुत्रों के सुख प्राप्त करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

वात (वायु) रोग योग

षष्ठाष्टमे मन्दे वातामयम्।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-11।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठ या अष्टम भाव में शनि स्थित हो तो वात रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप वात रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

शास्त्राग्निव्याघ्रसर्पादि पीड़ा योग

पापर्क्षयुक्ते निधने सपापे
शस्त्रानलव्याघ्रभुजङ्गपीडा।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-20।।

यदि जन्मकुंडली में अष्टमेश पाप ग्रह हो और आठवें भाव में पापग्रह भी हों तो शस्त्र, अस्त्र, अग्नि, व्याघ्र, सर्पादि की पीड़ा होती है।

योग कारक ग्रह : शनि,केतु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शस्त्र/ अस्त्र/अग्नि/व्याघ्र या सर्पादि से पीड़ा होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे क्षयभे क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में सौम्य ग्रह स्थित हो और द्वादश भाव का स्वामी भी सौम्य ग्रह हो तो मृत्यु काल में विशेष पीड़ा नहीं होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मृत्युकाल में अधिक पीड़ा नहीं होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

केन्द्रत्रिकोणे दारेशे स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ।
कर्माधिपेन वा युक्ते बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-30 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमेश केन्द्र या त्रिकोण में उच्च या मित्र राशि में या अपने अंशादि में हो अथवा दशमेश से युक्त हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका अनेक से संबंध स्थापित होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-31 ।।

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।